

लड़की को देखते ही लड़के के दिल में कुछ-कुछ होने लगता था. हृदय की मीठी धड़कन उसे लड़की की तरफ खींचती, परन्तु वह उससे कुछ कह न पाता. बस निगाहों ही निगाहों में उन दोनों में बात होती. वह लड़की को देखता और लड़की उसे देखकर शरमाती, फिर दोनों शरमाते और नज़रें चुरा-चुराकर एक दूसरे को देखते.

लड़का समझ गया कि लड़की उसे प्यार करती है और उसका हृदय भी धड़क-धड़क कर यही बात बार-बार कह रहा था कि वह भी लड़की को प्यार करने लगा है.

**इसी संग्रह में से....**

# वह लड़की

(कहानी-संग्रह)

राकेश भ्रमर



प्रज्ञा प्रकाशन

24, जगदीशपुरम्, लखनऊ मार्ग,  
निकट त्रिपुला चौराहा, रायबरेली-229001

## प्राक्कथन

ISBN : 978-81-929522-7-7



### प्रज्ञा प्रकाशन

24, जगदीशपुरम्, लखनऊ मार्ग,

निकट त्रिपुला चौराहा, रायबरेली-229001

शाखा: 7, श्री होम्स, बचपन स्कूल के पास,  
कंचन विहार, विजय नगर, जबलपुर-482002 (म.प्र.)

मूल्य: ₹ 150

आवरण: राकेश भ्रमर

प्रथम संस्करण: 2016 © राकेश भ्रमर

---

Vah Ladki (Stories)

Rakesh Bhramar

---

### मुद्रक:

ग्रेनेडियर्स एसोसियेशन प्रिंटिंग प्रेस, डिफेन्स सिनेमा के पास  
कैन्ट, जबलपुर (म.प्र.)

‘वह लड़की’ मेरा छठा कहानी संग्रह है. इसमें सन् 2013 में लिखित कहानियां संग्रहीत हैं. इनमें से अधिकांश कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं, यथा- सरिता (आंखों में इंद्रधनुष और मन की खुशी), जनसत्ता (कप्पू), शुक्रवार (दायों के बीच), समाज कल्याण (गाय और स्त्री), नीली आंखों का आसमान (मुक्ता) और साहित्य अमृत (वह लड़की). इन सभी कहानियों को पाठकों ने भरपूर सराहा. ‘वह लड़की’ के प्रकाशित होने पर जब आदरणीया पद्मा सचदेव, वरिष्ठ लेखिका का मेरे पास फोन आया तो मैं चकित रह गया. उन्होंने इस कहानी के लिए मुझे बधाई दी और कहा कि वह काफी समय से चाहती थीं कि ऐसी कहानी कोई लिखे और आज जब उन्होंने मेरी कहानी पढ़ी तो बहुत खुशी के साथ मुझे फोन किया. मैं फोन पर उनका आशीर्वाद पाकर धन्य हो गया.

यहां मैं आप सभी को बताना चाहूंगा कि पद्मा सचदेव की कहानियां और धर्मवीर भारती पर उनके लेख धर्मयुग तथा अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं. मैं उनकी लेखनी, भाषा और शैली का हमेशा मुरीद रहा हूं. एक लेखक को जब किसी वरिष्ठ लेखक या लेखिका की प्रशंसा और आशीर्वाद प्राप्त होता है, तो यह एक प्रकार से आपकी लेखनी की सफलता होती है. गुटबंदी वाले लेखकों की बात जाने दें. वह तो एक दूसरे को आगे बढ़ाने और उछालने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं. परन्तु जब आप किसी वरिष्ठ लेखक को व्यक्तिगत रूप से न जानते हों और ऐसी स्थिति में वह आपकी किसी रचना की प्रशंसा करता है, तो वही सही समीक्षा और प्रशंसा होती है. मैं आदरणीया पद्मा सचदेवजी का हृदय से आभारी हूं और उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूं.

इस संग्रह की कहानियां मेरी पिछली कहानियों से किस तरह भिन्न हैं, यह

यह तो पाठक ही बता सकते हैं. कहानियां लिखते समय मेरी कोशिश यही रहती है कि इनमें जीवन के किसी न पहलू का चित्रण हो. इस संग्रह की मेरी ज्यादातर कहानियां व्यक्तिगत और पारिवारिक समस्याओं की कहानियां हैं. समाज और देश उनमें कम दिखाई देता है, परन्तु व्यक्तिगत और पारिवारिक समस्याएँ भी कहीं न कहीं समाज और देश की स्थिति को प्रकट करती हैं, क्योंकि व्यक्ति और परिवार को लेकर ही समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है.

इस संग्रह की कहानियों में सामाजिक शोषण, अत्याचार और दमन का चित्रण कहीं से भी दिखाई नहीं देगा, जैसा कि मेरी पिछली कहानियों में परिलक्षित होता है. इसका कोई विशेष कारण नहीं है. मैं यह सोचकर नहीं लिखता कि मुझे किसी विशेष विषय पर ही कहानी लिखनी है. जब भी कोई विषय या प्रसंग मेरे दिमाग में हलचल मचाता है, मैं अपनी कलम उठाकर कागज पर शब्द अंकित करने लगता हूँ. कई बार मेरे दिमाग में कोई स्पष्ट चित्र नहीं होता, बस एक शीर्षक या पात्र होता है. उसे लेकर मैं कहानी लिखना आरंभ करता हूँ, तो कथानक, संवाद, पात्रों का चरित्र-चित्रण और घटनाएं अपने आप ही बनती चली जाती हैं.

अपनी कहानियों के बारे में लेखक को स्वयं कितना कहना चाहिए, इसकी कोई सीमा रेखा नहीं है, परन्तु मैं अपनी बात यही समाप्त करता हूँ. कहानियों की रोचकता, पठनीयता और संग्रहणीयता को परखने का दायित्व मैं पाठकों के ऊपर छोड़ता हूँ. कहानियां अच्छी लगें तो दो शब्द अवश्य लिख भेजें. इंतजार रहेगा.

राकेश भ्रमर

7, श्री होम्स, कंचन विहार,  
बचपन स्कूल के पास, लामटी,  
विजय नगर, जबलपुर-482002  
मो: 9968020930

## अनुक्रमिका

कहानी	पृष्ठ
आंखों में इन्द्रधनुष	9
बंधनहीन रिश्ता	20
कफर्यू	45
दायों के बीच	54
गाय और स्त्री	67
मन की खुशी	84
नौकरानी	97
नीली आंखों का आसमान	111
रेगिस्तान में बारिश	133
सामने वाला कमरा	148
सेब	163
शाश्वत प्रेम	174
वह लड़की	189



## समर्पण

उन सभी सहृदय व्यक्तियों को  
जो  
मेरे जीवन में  
मेरे नजदीक रहकर  
मुझे  
लिखने के लिए  
प्रेरित करते रहे,  
और उन सभी शुभचिंतकों को भी  
जिन्होंने  
मेरी कहानियों को पढ़कर  
मुझे  
प्रोत्साहन और प्रेरणा दी.

## आंखों में इन्द्रधनुष

उसकी आंखों में इन्द्रधनुष था।  
उसके जीवन में पहली बार वसन्त के फूल खिले थे, पहली बार चारों तरफ बिखरे हुए रंग उसकी आंखों को चटकीले, चमकदार और सुन्दर लगे थे, पहली बार उसे पंखियों की चहचहाहट मधुर लगी थी, पहली बार उसने आमों में बौर खिलते हुए देखे थे और रातों को उनकी खुशबू अपने नथुनों में भरी थी, पहली बार उसने कोयल को कूकते हुए सुना था और पहली बार उसे आसमान बहुत प्यारा और शीतल लगा था।

अपने चारों तरफ बिखरे हुए प्रकृति के इतने सारे रूप और रंग उसने पहली बार देखे थे और उन्हें बाहरी आंखों से ही नहीं, मन की आंखों से भी अपने अन्दर भरकर उनकी सुन्दरता और शीतलता को महसूस किया था, क्योंकि वह जवान हो चुकी थी।

उसका मन अब पुस्तकों में नहीं लगता था। सफेद कागज के काले अक्षरों पर अब उसकी निगाह नहीं टिकती थी, और उसका मन पता नहीं कहाँ-कहाँ, किन जंगलों, पर्वत-पहाड़ों, रेगिस्तान, मैदानों और बीहड़ राहों में भटकता रहता था। उसके मन को निगाहों के रास्ते पता नहीं किस चीज की तलाश थी कि वह रात-दिन बेचैन रहती थी, खोई-खोई रहती थी। लोगों के टोंकने पर उसे होश आता कि वह स्वयं में ही कहीं खो गयी थी। उसकी अवस्था पर लोग हँसते, परन्तु वह तनिक भी विचलित न होती। वह खोई रहती, बस खोई रहती, एक ऐसी दुनिया में, जहाँ केवल वह थी, फूल थे, नाना प्रकार के रंग थे और आंखों को शीतलता प्रदान करनेवाला खुला आसमान था।

आसमान पर उसकी निगाहें टिकी रहतीं। वहाँ धुनी हुई रूई से सफेद बादलों के टुकड़े हल्के-हल्के तैरा करते, उन बादल के टुकड़ों की मंद गति उसके मन को

बहुत भाती. देखते-देखते आषाण आ गया और आसमान में बादलों की घटाएं घिरने लगीं. उन घटाओं ने नीले आसमान को अपनी काली-काली जुल्फों से ढंक लिया, परन्तु उसे बुरा न लगा, क्योंकि यह काली घटाएं भी उसके मन को बहुत भाने लगी थीं. फिर घटाओं ने अपनी जुल्फों को लहराते हुए छोटी-छोटी बूंदें प्यासी धरती के आंचल पर बिखरा दीं. उन बूंदों के धरती पर गिरते ही एक सौंधी और मीठी सी खुशबू उसके नथुनों में समा गयी और वह बावली सी हो गयी. वह और ज्यादा भटक गयी और इसी भटकन के दौरान उसने आसमान में एक शाम को इन्द्रधनुष देखा, जो इतना मोहक और सुन्दर था कि वह उस इन्द्रधनुष के गहरे रंगों में बहुत देर तक खोई रही और फिर उसे पता ही न चला कि धीरे-धीरे वह इन्द्रधनुष कब उसकी आंखों में आकर बैठ गया.

उसकी आंखों में इन्द्रधनुष के आते ही वह अपने में खो-सी गयी. उसका मन कुछ पाने की तलाश में भटकता रहा, भटकता ही रहा और फिर एक दिन उसकी आंखों के सात रंगों में एक और रंग आकर बैठ गया, यह उसे बहुत भला लगा, परन्तु अपनी आंखों में बसे इन्द्रधनुष के कारण वह यह नहीं देख सकी कि जो नया रंग उसकी आंखों में आकर बस गया है, उसका रंग बहुत ही भद्दा और काला-सा है. इस अवस्था में एक मासूम और जवान हो रही लड़की के लिए केवल रंग महत्वपूर्ण होते हैं. वह उनके प्रभाव से अपरिचित होती है. उसे पता नहीं चलता कि उन रंगों के साथ वह एक खतरनाक खेल खेलने जा रही है. खैर, उस वक्त उसे वह काला रंग भी इन्द्रधनुष के सात रंगों में से एक लगा...इतना मोहक, सुंदर, सुखद और प्यारा कि वह उसके रंग में रंग गयी.

वह काला रंग उसकी आंखों के इन्द्रधनुष के रंगों में इस कदर घुल-मिल गया था कि वह उसे गुलाबी रंग जैसा लगता. अपनी सपनीली आंखों से जब-जब वह उस काले रंग को देखती तो वह गुलाबी रंग बनकर उसकी आंखों के रास्ते दिल में उतर जाता, क्योंकि वह स्वयं सुनहरे रंग की होती हुई भी दूसरों की निगाहों को गुलाबी रंग जैसी लगती थी. उसने उस रंग को अपने जीवन के हर पल में सम्मिलित कर लिया था.

काले रंग ने एक दिन उससे कहा, “क्या हम यूँ ही इन्द्रधनुष देखकर अपने मन को बहलाते रहेंगे? बादलों के उमड़ने-धुमड़ने से क्या हमारे मन को सुख प्राप्त हो सकेगा? बारिश की फुहारों से भीगकर क्या हम अपने मन को तृप्त करते रहेंगे? क्या यही हमारा जीवन है?”

“तो हम और क्या करें?” गुलाबी रंगवाली लड़की ने, जिसकी आंखों में इन्द्रधनुष था, उदास स्वर में कहा.

आजकल घर में उसे डांट पड़ने लगी थी. उसकी उदासी भरी चुप्पी से घरवालों को उसके चरित्र के ऊपर संदेह होने लगा था और कई चौकन्नी आंखें उसके इर्द-गिर्द मंडराने लगी थीं. उन सतर्क और जासूस निगाहों से उसे कोई कष्ट नहीं होता था, क्योंकि उसकी स्वयं की निगाहें ही इस कदर भटकी हुई थीं कि दूसरों की निगाहों को वह देख नहीं पाती थी, परन्तु जब उसके आचार-व्यवहार को देखकर घरवाले, विशेषकर उसकी मां उसे बार-बार टोंकती, बातों-बातों में कुछ ऐसा कह देती, कि उसके कोमल हृदय को गहरी ठेस लगती और वह कराह कर रह जाती. उसकी कराह को मम्मी नहीं सुन पाती या सुनकर भी अनसुना कर देती और उसे डांटती ही चली जाती, उसके दिल में होनेवाले घावों की परवाह किए बिना, तब उसको बेहद कष्ट होता; परन्तु अपने दिल का हाल न वह मां को बता सकती थी, न किसी और को...अपने मन की तकलीफ को वह काले रंग से भी कैसे कहती, क्योंकि वह जब भी उससे अकेले में मिलता, उसके अपने रंग होते और वह उन रंगों को चटकदार बनाने के प्रयास में लगा रहता. वह कुछ ऐसे रंगों की बात करता, जो गुलाबी रंगवाली लड़की के रंगों से मेल नहीं खाते थे.

“प्यार के कुछ रंग हम अपने जीवन में भी भर लें, तो...” काले रंग ने उसे अपनी जद में लेते हुए कहा.

“वह तो हमारे जीवन में हैं, इतने सारे रंग, जो चारों तरफ बिखरे पड़े हैं, मेरी आंखों में बस गए हैं, वह सब प्यार के ही तो रंग हैं, जिनके सहारे हम जी रहे हैं.” उसने भोलेपन से कहा. वह सचमुच भोली थी, क्योंकि उसका रंग गुलाबी था और गुलाबी रंग प्यार का प्रतीक होता है. इस रंग में छल-कपट नहीं होता.

परन्तु काला रंग बहुत शातिर, चतुर और चालाक था. उसे पता था कि गुलाबी रंग को किस प्रकार मटियामेट करके काला बनाया जा सकता है.

“तुम बहुत भोली हो,” काले रंग ने उसके ऊपर घटाओं की तरह छाते हुए कहा. उसने उसका हाथ पकड़ लिया और अपने सीने पर रखते हुए आगे कहा, “इतने सारे रंग जो प्रकृति में चारों तरफ बिखरे पड़े हैं, इन्हें देखकर हम अपने मन को संतोष भरा सुख प्रदान कर सकते हैं, परन्तु हमारे तन को सुख देनेवाले रंग कुछ और ही होते हैं.”

“वह रंग कहां मिलेंगे?” गुलाबी रंग ने उत्साह से उसके हाथ को दोनों हाथों से पकड़कर जोर से दबा दिया, “चलो मुझे वहां ले चलो. मैं उन रंगों को भी अपने तन-मन में बसा लेना चाहती हूं.”

लड़की सचमुच बहुत भोली थी और काले रंग की चाल को नहीं समझ पा रही थी. लड़कियां जब अपनी आंखों में इन्द्रधनुष बसा लेती हैं, तो उनकी आंखों में जीवन के वास्तविक रंग खो जाते हैं और वह ऐसे काल्पनिक रंगों की विविधता में खो जाती हैं कि उनको पाने के चक्कर में अपना बहुत कुछ गंवा देती हैं.

काले रंग ने उसे अपने रंग में रंगते हुए कहा, “इन रंगों को पाने के लिए हमें एकान्त की अंधेरी गलियों में जाना होगा. वहां हमें कुछ दिखाई नहीं देगा, परन्तु हम अपने हाथों से उन रंगों को प्राप्त कर सकते हैं. अगर तुम सहमत हो तो हम चलें और उन रंगों को खोजकर अपने हाथों से अपने तन-बदन में भर लें. देखना, बहुत अच्छे लगेंगे तुमको वह रंग, जब वह तुम्हारी पकड़ में आ जायेंगे.”

गुलाबी रंगवाली लड़की को काले रंग की मंशा का अंदाजा नहीं था. वह बस जीवन को सुख प्रदान करने वाले कुछ और रंगों को अपने तन-बदन में समेट लेना चाहती थी. इन्द्रधनुष के रंग उसकी आंखों में कम पड़ने लगे थे. अब उसे उन रंगों की तलाश थी, जो उसके तन-बदन से लिपटकर उसे जीवन के अभी तक अपरिचित सुख से सराबोर कर दें.

वह भोली थी, परन्तु उत्सुक थी, और जहां यह दोनों चीजों हों, वहां बुद्धिमत्ता नहीं हो सकती, सतर्कता नाम की किसी चीज से इनका कोई वास्ता नहीं होता.

और फिर अपनी आंखों में इन्द्रधनुष लिए वह यहां-वहां भटकती रही, जंगल के वीरान सन्नाटे में, होटल के बदबूदार नीम अंधेरे कमरे में, बगीचों के पौधों के पीछे की नर्म मिट्टी पर उगी गुदगुदी घास पर...और न जाने कहां-कहां, क्योंकि उसे जीवन के सुखद रंगों की तलाश थी और इस तलाश में वह बहुत कुछ भूल गयी थी, अपने घर-परिवार को, नाते-रिश्तेदारों को, सगे-संबंधियों को और कॉलेज के दोस्तों को...उसे कुछ रंग पाने थे. वह रंग जिनको उसने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था. वह उस काले रंग के माध्यम से उन रंगों को खोजने निकली थी, परन्तु वह स्वयं भटक गयी थी, ऐसी अंधेरी गलियों में जहां काले रंग ने अपने खुरदरे हाथों से उसके बदन में कुछ ऐसे बीज बो दिए थे, जो धीरे-धीरे उग रहे थे और उसके बदन में कुछ ऐसी मिटास भर रहे थे कि वह दिनोदिन मदहोश होती जा रही थी. उसके होश-हवाश गुम थे और उसे पता नहीं था कि वह किस दुनिया में विचरण

कर रही थी. परन्तु जो भी हो रहा था, उसे अच्छा लग रहा था. फिर एक दिन काले रंग ने उसके बदन के सारे रंग चुरा लिए और उसके अंदर एक काला रंग भर दिया. गुलाबी रंग को पता नहीं चला कि उसे सुख प्रदान करनेवाले कौन से रंग प्राप्त हुए थे, परन्तु ये जो भी रंग थे, उसे सुखद ही लग रहे थे. उन रंगों को वह पहचान नहीं पा रही थी और शायद जीवन के अंत तक न पहचान पाये, परन्तु इन बदरंग रंगों में खोने का उसे कोई अफसोस नहीं था.

उसकी आंखों के इन्द्रधनुष में काला रंग पूरी तरह से घटाओं की तरह छा गया और वह भी उन घटाओं की फुहारों में भीगकर प्रफुल्लित अनुभव कर रही थी.

एक दिन गुलाबी रंग के अंदर एक दूसरा काला रंग उभरने लगा. वह चिन्तित हुई और उसने काले रंग को इस संबंध में बताया कि वह अपने अन्दर कुछ परिवर्तन अनुभव कर रही थी और उसे लग रहा था कि उसके अन्दर एक काला रंग धीरे-धीरे कागज पर फैली स्याही की तरह फैलने लगा था.

काला रंग थोड़ी देर के लिए सन्न-सा रह गया. उसने अविश्वसनीय भाव से गुलाबी रंग को देखा, उसकी आंखों में इन्द्रधनुष ढूँढ़ने का प्रयास किया, परन्तु उसकी आंखों का इन्द्रधनुष फीका-सा लगा. वह भयभीत हो गया, परन्तु चतुराई से उसने अपने चेहरे के भावों को गुलाबी रंगवाली लड़की से छिपा लिया. फिर धीरे से ज़मीन की तरफ देखता हुआ बोला, “नहीं, कुछ नहीं हुआ. तुम ठीक हो.”

“नहीं, कुछ तो हुआ है. मेरे मन में एक अजीब सी बेचैनी घर कर गयी है. मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता...मेरे शरीर में कुछ परिवर्तन हो रहा है, जिसे मैं ठीक से समझ नहीं पा रही हूं.”

“यह तुम्हारा भ्रम है. तुमने बहुत सारे रंग एक साथ अपने हाथों से समेट कर अपने बदन में भर लिए हैं, इसीलिए तुम्हें ऐसा लग रहा है. धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा.”

“काश, सब कुछ ठीक हो जाए, परन्तु मैं अपने मन को कैसे समझाऊं? मेरे घरवाले भी अब तो और ज्यादा सतर्क और चौकन्ने होकर मेरी हरकतों पर नज़र रख रहे हैं. उनकी आंखों में ऐसे रंग उभर आते हैं कि कभी-कभी मैं डर जाती हूं.” उसने काले रंग को जोर से पकड़ते हुए कहा.

काला रंग यह बात सुनकर और अधिक भयभीत हो गया. अगर गुलाबी रंग के घरवालों को सब कुछ पता चल गया, तो उसका क्या होगा? वह तो बेमौत मारा जाएगा. वह लोग पता नहीं क्या करेंगे उसके साथ? कहीं यह मासूम लड़की घरवालों

के दबाव में आकर सब कुछ बता न दे. उसने लड़की की पकड़ से धीरे से अपने को छुड़ाया और चौकन्नी निगाहों से चारों तरफ इस तरह देखने लगा, जैसे उसी वक्त वहां से भाग जाना चाहता हो.

उस दिन लड़की को डेर सारी सांत्वना और झूठे आश्वासन देकर उसने अपने को उसके चंगुल से छुड़ाया और फिर वह काला रंग पता नहीं कहां गुम हो गया? प्रत्यक्ष रूप से तो वह अवश्य लुप्त हो गया था, परन्तु पूरी तरह से कैसे गुम हो सकता था वह? उसका प्रतिरूप लड़की के अन्दर धीमी गति से अपने पैर पसारने लगा था और गुलाबी रंगवाली लड़की यह बात अच्छी तरह समझ गयी थी कि उसके जीवन में अब कुछ ठीक नहीं होनेवाला था. अपनी निगाहों और हाथों से सुख प्रदान करनेवाले जितने रंग उसने पकड़कर अपने बदन में भरे थे, वह सारे पिघलकर बह गए थे और अब केवल एक ही रंग बचा था, जो उसके अंदर धीरे-धीरे गाढ़ा होता जा रहा था. वह था काला रंग.

संसार में बहुत सारे रंग होते हैं और यह सारे रंग सभी को खुशियां प्रदान करते हैं, परन्तु कभी-कभी कुछ रंग किसी के जीवन में कष्ट और आंखों में आंसू भर जाते हैं.

वह काला रंग, जिसने उसकी आंखों से इन्द्रधनुष के सारे रंग चुरा लिए थे और उसके बदन के खिले हुए फूलों को तोड़कर मसल दिया था, आजकल कहीं नज़र नहीं आता था. वह उससे मिलने के लिए बेताब थी. बेकरारी से उससे मिलने के लिए निर्धारित स्थल पर इंतजार करती, परन्तु वह न आता. वह निराश हो जाती और हताश होकर घर वापस लौट आती. वह उसकी गली में भी कई बार गयी, परन्तु वह एक बार भी अपने कमरे में नहीं मिला. पड़ोस में किसी से पूछने का साहस वह न कर पाई. फोन पर भी वह नहीं मिलता था. अक्सर उसका फोन बंद मिलता, कभी अगर मिल जाता तो बहाना बना देता कि काम के सिलसिले में कुछ अधिक व्यस्त है, खाली होते ही मिलेगा और वह उसे स्वयं ही फोन कर लेगा, वह परेशान न हो.

परन्तु वह परेशान क्यों न होती. काले रंग ने उसके लिए परेशान होने के बहुत सारे रास्ते खोल दिए थे. वह उन रास्तों से गुजरने के लिए बाध्य थी.

उसके शरीर में व्याप्त काला रंग अपना आकार बढ़ाता जा रहा था. वह इतना ज्यादा चिन्तित रहने लगी थी कि उसकी सुन्दर काली आंखों के नीचे काले घेरे पड़ने लगे थे, चेहरा मुरझाने लगा था, ओंठ सूखकर पपड़ियां गए थे, जैसे पूरे चेहरे पर किसी ने बहुत सारी बर्फ डाल दी हो.

उसकी यह स्थिति देखकर उसके घर के लोगों के चेहरों के रंग भी बदल गए थे. उसकी निगाह उन लोगों की तरफ नहीं उठ पाती थी, परन्तु जब भी उठती तो उसे अपने ही परिजनों के चेहरों पर इतने सारे रंग नज़र आते कि वह डर जाती...उन सभी की आंखों में घृणा, क्रोध, आक्रोश, वितृष्णा, तिरस्कार और अविश्वास के गहरे रंग भरे हुए थे और यह सभी रंग उससे एक ही प्रश्न बार-बार पूछ रहे थे, “क्या हुआ है तुम्हारे साथ? क्या कर डाला है तुमने? इतना सारा काला रंग कहां से ले आई हो कि हम सबका दम घुटने लगा है. कुछ बताओ तो सही...” परन्तु वह कुछ न बता पाती. किसी भी प्रश्न का उत्तर देने का साहस उसके पास नहीं था. उसने जो किया था, वह किसी भी तरह क्षम्य नहीं था.

वह एक संपन्न, सुशिक्षित, सुसंस्कृत और सभ्य परिवार था. उस परिवार के लोग भयभीत थे, इस बात से नहीं कि उसके घर के गुलाबी रंग ने अपने ऊपर बहुत सारा काला रंग डाल लिया था और उसने इस कदर इस रंग को ओढ़ रखा था कि उसका प्राकृतिक गुलाबी रंग कहीं खो गया था. काले रंग के अलावा कोई और रंग उसमें नज़र भी नहीं आता था. वह इस बात से डर रहे थे कि अगर यह काला रंग घर के बाहर फैल गया तो किस प्रकार समाज में अपना मुंह दिखाएंगे और किस प्रकार अपने सिर को ऊंचा करके चल सकेंगे. किसी भी परिवार के लिए ऐसे क्षण आत्मघाती होते हैं.

स्थिति दयनीय ही नहीं, भयावह भी थी. सबको किसी न किसी दिन एक विस्फोट की प्रतीक्षा थी. कब होगा यह विस्फोट, कोई नहीं जानता था. विस्फोट हो जाता तो उसके प्रभाव से होने वाले नुकसान का अंदाज़ा लगाया जा सकता था, परन्तु यहां तो सभी कुछ अनिश्चित सा था और अनिश्चय की घड़ियां बहुत कष्टदायी होती हैं.

कुछ न कुछ तो करना ही होगा. यूं डरे-सहमे से, आंखों में संदेह के बादलों का गांव बसाकर किस तरह जिया जा सकता था. उस घर के तीन रंगों- लाल, पीले और हरे रंग ने आपस में सलाह-मशविरा किया. नीला रंग अभी छोटा था और वह बहुत सारी चिन्ताओं से मुक्त था, अतः उसे चर्चा में सम्मिलित नहीं किया गया.

लाल रंग गुस्सैल स्वभाव का था. उसने कड़ककर कहा, “मैं अभी उसकी हड्डी-पसली तोड़कर एक कर देता हूं. पूछता हूं कि कौन है वह जिसके साथ उसने अपना मुंह काला किया है.”

“यह कोई समस्या का समाधान नहीं है. इससे बात बिगड़ सकती है और बाहर तक जा सकती है. मैं उससे बात करती हूं.” पीले रंगवाली स्त्री ने शांत भाव से कहा.



“मुझे बस एक बार पता चल जाय कि वह कौन कमीना रंग है जिसने हमारे घर के रंग के साथ काले रंग से होली खेली है, उसको चलने-फिरने लायक नहीं छोड़ूंगा.” हरे रंग ने अपनी युवावस्था के जोश में कहा.

“तुम अपने हथियारों को संभाल कर रखो. उनसे बाद में काम लेना. अभी तो हमें अहिंसा के साथ मामले को सुलझाने का प्रयास करना है, जब बात नहीं बनेगी तो आप दोनों को कमान सौंप दूंगी.”

और अन्त में पीले रंगवाली स्त्री ने कमान अपने हाथ में संभाल ली. वह परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए कमर कसकर गुलाबी रंगवाली लड़की, जो उसकी बेटी थी, के कमरे में जा पहुंची.

गुलाबी रंगवाली काले रंग के प्रभाव और चिन्ता में स्वयं बहुत पीली हो गयी थी, जैसे पीलिया की रोगी हो. उसकी अधिकतर दिनचर्या उसके कमरे और बिस्तर तक ही सीमित हो कर रह गयी थी. उसने पीले रंग को कमरे में आते देखा तो उसका रंग और अधिक पीला हो गया. वह हड़बड़ा कर उठ खड़ी हुई और अनायास उसके मुख से निकला- “आप!” उसकी आंखें हैरत से फट सी गयी थीं.

“हां, मैं? क्या मैं तुम्हारे कमरे में नहीं आ सकती?” पीले रंग ने कठोर स्वर में कहा. वह सच का सामना करने आई थी और आज उसे किसी भी तरह गुलाबी रंग से सच उगलवाना था. सच प्रकट नहीं होगा तो अनिश्चय की स्थिति में सभी लोग घुलते हुए भयंकर रोगी बन जायेंगे.

गुलाबी रंग की आंखों में भय की पर्त और अधिक गहरी हो गयी. पीला रंग पलंग पर बैठ गया, “बैठो न! तुमसे कुछ बातें करनी हैं.”

वह बैठ गयी, नीची निगाहें, हृदय में असामान्य धड़कन, शरीर में अजीब सी सनसनी भरा कंपन...पता नहीं आज क्या होनेवाला है? उसने इस दिन की कल्पना कभी नहीं की थी, तब भी नहीं जब उसने अपनी आंखों में इन्द्रधनुष के रंग भरने शुरू किए थे और तब भी नहीं जब काला रंग उसके जीवन के रंगों के साथ घुलने लगा था और तब भी नहीं जब काले रंग ने मीठी-मीठी बातों के रंग उसके ऊपर बिखराकर उसे मदहोश कर दिया था और उसके पवित्र और कोमल बदन के सारे फूल चुरा लिए थे. वह एक वीरान बगीचे के समान हो गयी थी, जहां से अभी-अभी पतझड़ गुजर कर गया था.

पीले रंग के चेहरे के भाव और उसके स्वर की कठोरता ने गुलाबी रंग पर यह स्पष्ट कर दिया था कि आज हर प्रकार की ऊहापोह और अविश्वास की डोर

कटनेवाली थी, अनिश्चय का अंत होने वाला था. आज हर वह बात खुल जायेगी, जिसे उसने अभी तक अपने हृदय की तमाम पर्तों के भीतर छिपा रखा था. उसने भले ही बहुत सारे रहस्य अपने बदन की पर्तों के अन्दर छिपा रखे हों, परन्तु उसके बदन में होनेवाले बाहरी परिवर्तनों से बहुत सारे रहस्यों को सुबह की रोशनी की तरह स्पष्ट कर दिया था. सबकी धुंधलाई आंखों में चमक आ गयी थी.

वह डरते-सहमते पीले रंग के पास बैठ गयी. आज उसे उसके पास बैठते हुए डर लग रहा था. वह इसी रंग की कोख से पैदा हुई थी, उसके आंचल का दूध पिया था और उसकी बांहों में झूलते हुए लोरियों को सुना था. बचपन से लेकर जवान होने तक बहुत सारी बातों को दोनों ने साथ-साथ जिया था, परन्तु आज इस अनहोनी बात से मां-बेटी के बीच की दूरियां बढ़ गयी थीं. वह एक-दूसरे से अपरिचित हो गयी थीं.

फिर भी मां मां होती है. पीले रंग ने उसके सिर पर सांत्वना देने वाले भाव से सहलाया. गुलाबी रंग कांप गया. पीले रंग का स्थिर स्वर उभरा, “घबराओ मत, सब कुछ साफ-साफ बता दो. अब छिपाने से कोई फायदा नहीं है. घर के सभी लोगों को तुम्हारी स्थिति का आभास है, परन्तु हम तुम्हारे मुंह से सुनना चाहते हैं कि यह सब कैसे हुआ? क्या किसी ने जोर-जबरदस्ती की है तुम्हारे साथ या तुमने पूरी समझदारी को ताक पर रखकर यह कालिख अपने मुंह पर पोत ली है और अब यह कालिख तुम्हारे पेट में फैलकर बड़ी हो रही है.”

गुलाबी रंग का बदन कांपने लगा. उसके मन में बहुत सारे चित्र उभरने लगे, जैसे मन के पर्दे पर बायस्कोप चल रहा हो. इन विभिन्न चित्रों के रंग उसे और ज्यादा डराने लगे और उसने एक निरीह चिड़िया, जो बाज के पंजों में फंसी हो, की तरह पीले रंग की आंखों में देखा. पीले रंगवाली स्त्री उसकी भयभीत आंखों की बेबसी और लाचारी देखकर पिघल गयी और उसने सिसकते हुए गुलाबी रंग को अपने अंक में समेट लिया. इसके बाद कमरे में केवल करुण क्रंदन का दिल दहला देने वाला स्वर भर गया और पता नहीं चल रहा था कि दोनों महिलाएं एक साथ इतने सुर, लय और ताल में किस प्रकार रो सकती थीं कि दोनों का स्वर एक जैसा लगे...परन्तु यह संभव था, क्योंकि वह दोनों नारियां थी और सबसे बड़ी बात यह थी कि वे दोनों आपस में मां-बेटी थीं. वह एक दूसरे के दर्द को बिना किसी शब्द और स्वर के भी तीव्रता के साथ महसूस कर सकती थीं.

“मम्मी, मुझे माफ कर दो. रंगों की चकाचौंध में मैं भटक गयी थी. मुझे पता नहीं था कि जीवन के कुछ रंग चमकीले और लुभावने होने के साथ-साथ जहरीले

भी होते हैं. यौवन के उसी एक रंग ने मुझमें जहर घोल दिया और मैं उसे जीवन का अद्भुत सुख समझकर जीती रही. जीवन में ऐसी खुशियां भरती रही, जो बाद में मुझे दुःख देनेवाली थीं.”

“जवानी के रंगों के बीच भटककर लड़कियां जो जहर पीती हैं, वह उनके मुंह में ही कालिख नहीं पोतता, बल्कि उसके घर-परिवार के ऊपर भी एक बदनुमा दाग छोड़ जाता है. खैर, इन सब बातों पर चर्चा करने का यह उचित समय नहीं है. ये बताओ, वो कौन है, कहां रहता है और क्या करता है?”

“पहले मैंने उसके बारे में अधिक कुछ जानने का प्रयास नहीं किया था. मेरी आंखों में इतने सारे रंग भरे हुए थे कि वह मुझे हर कोण से सुन्दर, शिक्षित, सभ्य और सुसंस्कृत लगता, परन्तु जब रंग फीके पड़ने लगे और मेरी आंखों के ऊपर से पर्दे उठे तो पता चला कि वह एक ऐसा युवक था, जिसका कोई सामाजिक या आर्थिक आधार नहीं था. वह एक कम्पनी का साधारण सा सेल्समैन है और शहर की एक गन्दी बस्ती के एक छोटे से कमरे में किराए पर रहता है.”

पीले रंगवाली स्त्री यह सुनकर और ज्यादा पीली पड़ गयी, परन्तु मुसीबत की इस घड़ी में उसे अपने धैर्य को बचाए रखना था. वह मां थी और बेटी के जीवन की सुरक्षा के लिए उसे हर संभव उपाय करने थे, वरना कलंक का अमिट धब्बा उसकी बेटी के माथे पर सदा के लिए चिपक कर रह जाता. तब उसे धोना असंभव हो जाता. उसने पूछा, “क्या वह तुमसे ब्याह करने के लिए राजी है?”

गुलाबी रंग की आंखों में अविश्वास के रंग तैर गए, “पता नहीं, कई दिनों से वह मुझसे कतराने लगा है. फोन पर बात नहीं करता. कभी बात हो भी जाए तो मिलने नहीं आता. काम का बहाना बना देता है.”

“तब तो मुश्किल है.” वह चिन्तित हो उठी.

“क्या मुश्किल है?” बेटी का शरीर फिर कांपने लगा.

“तुम दोनों का मिलन... तुम्हारा कलंक मिटाने के लिए मैं उस साधारण युवक से भी तुम्हारी शादी कर देती, परन्तु लगता है कि उसके मन में पहले से ही छल था. वह तुम्हारे यौवन और सौन्दर्य का रसपान करना चाहता था. वह उसे प्राप्त हो गया, तो अब तुमसे दूर हो गया. जो लड़कियां जवानी में अपनी आंखों में प्रेम का इन्द्रधनुष बसा लेती हैं, उनकी आंखों और बदन के रंगों को चुराने के लिए मानवरूपी दैत्य राजकुमार का भेष बदनकर यौवन से भरपूर राजकुमारियों को प्रेम के जादू से अपने वश में करके उनके सतीत्व का धन छीनकर उसके दीप्त यौवन

का रसपान करते हैं. तुम जाने-अनजाने में एक दैत्य की कुटिल चालों के जाल में फंस गयी और अपना सब कुछ लुटा बैठी. इस गलती की सजा केवल तुम्हें ही नहीं, हमें भी जीवन भर भुगतनी पड़ेगी.”

“काश, मैं उसे पहचान पाती.” गुलाबी रंग ने अफसोस जताते हुए कहा, परन्तु अब अफसोस करने से भी क्या फायदा था? जवानी में कोई भी विवेक से काम नहीं लेता.

“गलती हमारी भी है. हर जवान हो रही बेटी की मां को इतना ध्यान रखना ही चाहिए कि जवानी में उसकी बेटी के कदम बहक सकते हैं. सचेत रहकर मुझे तुम्हारी हर गतिविधि का ध्यान रखना चाहिए था. तुम्हारी आंखों में गलत रंग भरते, इसके पहले ही अगर हमें पता चल जाता...” मां भी अफसोस करने लगी.

गुलाबी रंग चुप...

“तुमने उसका कमरा देखा है?”

“हां.”

“तो चलो...”

उन्हें विश्वास नहीं था, फिर भी अविश्वास की घड़ी में मनुष्य विश्वास का दामन नहीं छोड़ता. वह उस काले रंग के कमरे पर गए. वहां जाकर पता चला कि वह उस कमरे में अकेला रहता था. कहीं बाहर का रहने वाला था और अब उसे छोड़कर पता नहीं कहां चला गया था. किसी को भी उसके गांव का पता नहीं मालूम था और न यहीं मालूम था कि वह कहां गया था. मकान मालिक को भी उसने कुछ नहीं बताया था. अब तो उसका फोन नियमित रूप से बंद था.

काले रंग की मंशा का पता चल गया था.

सबके चेहरे लटक गए. गुलाबी रंग ने अपनी नासमझी और नादानी के कारण न केवल अपने जीवन की बहुत बड़ी निधि खो दी थी, बल्कि परिवारवालों को झोली में भी एक कभी खत्म न होने वाला दुःख भर दिया था.

लड़कियां अपनी आंखों में इन्द्रधनुष के रंग न भरें, अगर भरें तो पूरी तरह से सचेत रहें कि उन रंगों में कोई काला रंग न मिल जाए, वरना बाद में उनकी आंखों में इन्द्रधनुष के रंगों की जगह केवल आंसू होते हैं.



## बंधनहीन रिश्ता

सुबोध ने अंजलि से निगाहें चुराते हुए दबे स्वर में कहा, “मैं कुछ कहना चाहता हूँ तुमसे?”

अंजलि उसी की तरफ देख रही थी. सुबोध का ऐसा दबा और डरा-सहमा स्वर उसने पहले कभी नहीं सुना था. वह खुलकर बोलता था और ठहाके मारकर हंसता था. दोस्तों के बीच उसकी हंसी, बेबाकी और मजाहिया बातें चर्चा का विषय हुआ करती थीं. ऐसा क्या हो गया था कि आज वह अंजलि से इस तरह डर-डर कर बात कर रहा था?

पिछले कई दिनों से वह महसूस कर रही थी कि सुबोध के व्यवहार में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ था. वह उदास और गुमसुम-सा रहने लगा था, उससे कम बातें करता था; परन्तु फोन पर अक्सर किसी से बातें करता रहता था. उसके पूछने पर भी वह कुछ नहीं बताता था और वह यह सोचकर चुप रह जाती थी कि एक न एक दिन वह अपनी परेशानी से उसे अवगत करायेगा. उनके बीच कुछ भी छुपा हुआ नहीं था. वह दोनों साथ रहते थे, स्वयं की मर्जी से, बिना विवाह किये. विवाह की उन्हें आवश्यकता भी नहीं थी. वह दोनों एक ही कम्पनी में काम करते थे, लगभग एक ही पोজीशन पर. साथ-साथ काम करते हुए सम्बन्ध बनने स्वाभाविक होते हैं. परिचय के तुरन्त बात जवान लड़के-लड़कियों के बीच दोस्ती हो जाती है और पलक झपकते यह दोस्ती प्यार में बदल जाती है. सब कुछ इतना जल्दी होता है कि उनके प्यार के बीच में सामाजिक बंधन, नैतिकता, मान-मर्यादा कोई मायने नहीं रखती और वह अपनी मर्जी से साथ-साथ रहना आरंभ कर देते हैं. ऐसे सम्बन्धों के लिए मां-बाप की सहमति की भी कोई आवश्यकता नहीं होती. समाज भले ही इन सम्बन्धों को मान्यता न देता हो, परन्तु कानून ने इन्हें पूरी सुरक्षा

और मान्यता दे रखी है. कानून न होता तो भी इस तरह के सम्बन्ध समाज में पनपते रहे हैं और चोरी-छिपे लोगों ने इन्हें निभाया भी है.

परन्तु क्या ऐसे सम्बन्धों में स्थायित्व होता है? बिना किसी बंधन के बहुत कुछ टूट जाता है. बांध के बिना नदी का जल भी उच्छृंखल हो जाता है और ऐसी स्थिति में रिश्ते ही नहीं, बहुत कुछ तहस-नहस हो जाता है.

सात साल पहले जब अंजलि और सुबोध के बीच प्यार के अंकुर पनपे और उन्होंने एक दूसरे की आंखों में प्यार के रंगीन फूल खिलते देखे, तो उन्हें लगा कि दुनिया बहुत खूबसूरत है. इस खूबसूरत जीवन को और भी सुन्दर ढंग से जीने के लिए दोनों का साथ परम आवश्यक है. तब उन्होंने थोड़े से विमर्श के बाद साथ-साथ रहने का निर्णय ले लिया.

वह एक खुशगवार सर्दी का दिन था. वह दोनों पार्क के एकान्त कोने में बैठे थे. वह लोगों की नज़रों की जद में थे, परन्तु वह अपने-आपमें इतने खोये हुए थे कि उन्हें लगता था कि दुनिया की किसी शै की नज़र उन पर नहीं पड़ रही थी.

सुबोध उसकी जाँघों पर सिर रखकर आसमान की तरफ देखते हुए बोला था, “अंजू, ऊपर देखो, आसमान कितना साफ-सुथरा और नीला दिख रहा है. उसका यह नीला रंग आंखों को कितनी शीतलता प्रदान करता है. प्यार का रंग गुलाबी होता है, परन्तु यह नीला रंग भी हमारे हृदय में प्यार का अथाह सागर सा भरता दिखाई दे रहा है. चलो हम दोनों यह सारे रंग अपनी आंखों में भर लें और आंखें बंद करके एक दूसरे में खो जाएं, डूब जाये स्वयं में इस तरह कि दुनिया की नज़रों से ओझल हो जायें. हम किसी और को नज़र न आयें, बस एक दूसरे को प्यार भरी नज़रों से देखते रहें, देखते ही रहें और हमारा प्यार कभी खत्म न हो.”

“बिल्कुल सुबी,” वह प्यार से उसे इसी नाम से पुकारती थी. उसने भी आसमान को अपनी आंखों में भर लिया और नीचे की तरफ सुबोध की आंखों में आंखें डालती हुई बोली, “सचमुच, तुम सही कह रहे हो. अब हम न तो इन रंगों के बिना जी सकते हैं और न एक दूसरे के बिना. चलो, हम प्यार के गुलाबी और हृदय को शीतलता प्रदान करने वाले रंगों को मिलाकर अपने नये जीवन का प्रारंभ करें.”

“तो क्या तुम मेरे साथ रहने के लिए तैयार हो?” वह उठकर बैठ गया और अंजलि को अपनी बांहों के घेरे में ले लिया.

“हां,” वह उसकी बांहों में सिमटती हुई बोली, “मैं तैयार हूँ, परन्तु क्या तुम्हारे घरवाले मान जायेंगे?”

“हमारे बीच में घरवाले कहां से आते हैं? यह हम दोनों का स्वतंत्र फैसला है. यह हमारा जीवन है और हम इसे अपने ढंग से जीना चाहते हैं, मां-बाप की मर्जी और इच्छा से नहीं.”

“तो क्या हम कोर्ट-मैरिज करेंगे या आर्य-समाज मंदिर में विवाह?” अंजलि थोड़ा दुविधा में नज़र आ रही थी.

“अरे नहीं माई डियर, तुम किस दुनिया में जी रही हो. आज हम इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में हैं और तुम बात मध्यकाल की कर रही हो. आज के ज़माने में शादी-ब्याह मूर्ख लोग करते हैं. जीवन का असली आनंद उठाना है तो खुलकर जियो. हम दोनों एक दूसरे को प्यार करते हैं, क्या यह काफी नहीं है साथ रहने के लिए. शादी-ब्याह के झंझट में वह लोग पड़ते हैं, जो एक दूसरे को जानते-समझते नहीं और उनके बीच कोई प्यार नहीं होता है. उन्हें ही विवाह के द्वारा प्यार पाने के लिए सामाजिक मान्यता की आवश्यकता होती है.”

अंजलि कुछ पल तक असमंजस में रही, “परन्तु मां-बाप को बिना बताये? उन्हें जब पता चलेगा तो क्या हमें माफ़ कर देंगे?”

“कम ऑन अंजलि, जब हम बिना उन्हें बताये एक दूसरे को प्यार कर सकते हैं, तो फिर बिना उनकी मर्जी के साथ-साथ क्यों नहीं रह सकते. वैसे भी हम मां-बाप और नाते-रिश्तेदारों से दूर इस पराये शहर में अनजानों की तरह रह रहे हैं. यहां हमारे सहकर्मियों के अलावा और कौन हमें जानता-पहचानता है. हम साथ-साथ रहेंगे तो भी किसी को क्या फर्क पड़ता है?” सुबोध ने जोरदार तर्कों से अंजलि के डगमगाते आत्मविश्वास को पत्थर की चट्टान के सहारे खड़ा करने की कोशिश की. लड़कों की बातें लड़कियों को सदैव उनके इरादों से डिगा देती हैं.

अंजलि के मन में विचारों का बवण्डर चल रहा था. इतनी समझदार वह हो चुकी थी कि अपने अच्छे-बुरे को समझ चुके. वह जानती थी कि ज़माना चाहे कितना भी आधुनिक हो जायें, परन्तु मां-बाप बच्चों के प्यार के प्रति अपने विचारों में कभी भी आधुनिक नहीं हो पाते. इसीलिए समाज में खुलेआम प्यार करने की छूट अभी भी नहीं है, प्रेम-विवाह को कोई दिल से स्वीकार नहीं कर पाता, मां-बाप तो हर्गिज नहीं. तब प्यार करने वाले युवाओं के पास चारा क्या रह जाता है? या तो वह घर से भागकर शादी करके अपना घर बसा लें या फिर आपसी सहमति से बिना किसी बंधन के साथ-साथ रहने लगे. आधुनिक युवाओं को यह रास्ता ज्यादा आसान लगता है, खासकर लड़कों को, क्योंकि जब उनका मन होता है, यह कच्चे धागे का बंधन भी आसानी से तोड़कर किसी और से जोड़ लेते हैं.

दुविधा के साथ ही सही, परन्तु अंत में अंजलि ने सुबोध के हट के आगे सिर झुका दिया और फिर वह दोनों अपना-अपना पेइंग-गेस्ट वाला कमरा छोड़कर दो कमरे के एक फ्लैट में आकर रहने लगे, पति-पत्नी की तरह. बहुत सुखद था यह सब. उनके बीच परिवार और समाज का कोई बंधन नहीं था, कोई रोकने-टोकने वाला नहीं था और कोई उनके व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप नहीं करता था. वह हर प्रकार की जिम्मेदारियों से मुक्त एक आनंददायी जीवन व्यतीत कर रहे थे.

तब से अब तक सात साल बिना किसी बाधा के बीत गये थे. बीच-बीच में अंजलि अपने मां-बाप के घर जाती थी, परन्तु एकाध दिन के लिये. तब मां-बाप शादी की बात करते, परन्तु वह कोई न कोई बहाना बनाकर टाल जाती. अक्सर उसका जवाब होता, “अभी जल्दी क्या है, मुझे मेरा करियर बनाने दो. तीस साल के बाद सोचूंगी शादी के बारे में.” मां-बाप उसकी जिद्द के आगे चुप हो जाते. उनके चुप रहने का एक बड़ा कारण यह था कि अंजलि आर्थिक रूप से उनकी मदद कर रही थी. धन, सम्पत्ति और अर्थ के आगे सभी की आंखें और कान बंद हो जाते हैं.

सुबोध के साथ ऐसी स्थिति नहीं थी. उसके मां-बाप उसकी इच्छा के अनुसार शादी करना चाहते थे, परन्तु सुबोध को अभी शादी करने की ज़रूरत ही क्या थी. जब अंजलि जैसी खूबसूरत लड़की उसके जीवन में बिना किसी बंधन के रहने के लिए तैयार थी, तो क्यों वह जिम्मेदारियों की जंजीर अपने गले में डालता.

दोनों चूंकि एक ही कम्पनी में काम करते थे, इसलिए साथ-साथ निकलते थे, साथ-साथ वापस आते थे. एक तरह से चौबीस घंटों का उनका साथ था, बस ऑफिस में ही वह अलग-अलग बैठते और काम करते थे, परन्तु तब भी एकाध बार उनका आमना-सामना हो जाता था.

सुबोध के डूबे हुए स्वर को सुनकर अंजलि विचारों के भंवर में डूबने-उतराने लगी थी. उससे निकल कर उसने पूछा, “सुबी, कोई परेशानी है क्या तुम्हें? बताते क्यों नहीं?”

सुबोध ने सीधी करवट ले ली और छत की तरफ देखते हुए बोला, “समझ में नहीं आता, कैसे तुमसे कहूं? कहीं तुम उसका गलत अर्थ न लगा लो?” सुनकर अंजलि का हृदय अनायास धड़क उठा. उसके मन में आशंका के बादल उमड़ने लगे- क्या सुबोध उसको लेकर परेशान है? उसको छोड़ना चाहता है या और कोई बात है? या कोई और लड़की उसके जीवन में आ गयी है. विवाहित पुरुष के जीवन में

कोई लड़की आ जाये, तो वह दाम्पत्य-जीवन को निभाते हुए भी कुछ हद तक विवाहेतर सम्बन्धों को निभा सकता है, परन्तु स्वैच्छिक जीवन में अगर ऐसी स्थिति आ जाये तो दोनों ही स्वतंत्र होते हैं, एक दूसरे को छोड़ने के लिए. तब उनके सम्बन्धों को जोड़ने या बचाये रखने के लिए कोई भी समाज या कानून उनका साथ नहीं देता.

“बात क्या है, बताओ तो सही. जब तक बताओगे नहीं, मेरी समझ में कैसे आएगा?” वह उकड़ूँ बैठकर उसके भावहीन चेहरे को देखने लगी. चेहरा भावहीन होते हुए भी सुबोध तनाव में लग रहा था. अंजलि स्वयं तनाव की स्थिति में आ गई.

वह गहन चिन्ता में था, परन्तु फिर पता नहीं अचानक उसके दिमाग में क्या आया कि उसने अपने सिर को झटका दिया और उठकर बैठता हुआ बोला, “कोई बात नहीं अंजू, मैं स्वयं इस समस्या को हल कर लूंगा. मैं तुम्हें बेकार में परेशान नहीं करना चाहता. सॉरी, मैंने तुम्हें खाहम-खाह चिन्ता में डाल दिया.” और उसने निश्चिंतता के भाव से अंजलि को दायें हाथ से लपेटकर बिस्तर पर लिटा दिया.

परन्तु अंजलि के मन में चिन्ता के बादल छा चुके थे और उनके छोटे-छोटे टुकड़े हौले-हौले उसके नरम दिल में कदम रखते हुए गहरे निशान बनाते जा रहे थे. यह आज की ही बात नहीं थी. पहले भी कभी-कदा जब सुबोध तनाव की स्थिति से गुजरता था तो अंजलि उससे उसकी परेशानी के बारे में पूछती थी, तब या तो वह लापरवाही से बात को टाल दिया करता था या हंसकर निश्चिंत होने का भाव जाहिर कर देता था, परन्तु अंजलि इतनी बेवकूफ और नामसझ नहीं थी. इतने सालों से वह एक दूसरे के साथ रह रहे थे और न केवल एक दूसरे के मन को जानते-समझते थे, बल्कि एक दूसरे की तन की ज़रूरतों को भी अच्छी तरह समझ चुके थे. ऐसे में एक दूसरे से मन की बात भले छिपी रह जाये, परन्तु चेहरे के भाव आदमी कैसे छिपा सकता था.

बंधनहीन प्यार का रिश्ता कभी न कभी दरकता अवश्य है, यह बात अब अंजलि के मन में धीरे-धीरे घर करती जा रही थी. उसने इसका विश्लेषण करने की कोशिश तो उसे लगा, सचमुच उसके और सुबोध के जीवन में दरार पड़ चुकी है और यह दरार धीरे-धीरे बढ़ती ही जा रही है. इस दरार को भरने के लिए उनके बीच का प्यार शायद कम पड़ गया था. दाम्पत्य-जीवन में पति-पत्नी के बीच आई दरार को भरने के लिए बच्चे होते हैं, जो उनके रिश्तों को दरकने नहीं देते और

उनके बीच आई कड़वाहट को अपनी मासूमियत और प्यार भरी बातों से समाप्त कर देते हैं. इसके अलावा समाज और परिवार में दादा-दादी, नाना-नानी, मामा-मामी, बुआ-फूफा, चाचा-चाची, दीदी-जीजा, साली-सलहज, आदि ऐसे तमाम रिश्ते होते हैं, जो जीवन की तमाम कटुताओं को पनपने ही नहीं देते और कभी अगर ऐसी कटुताएं रिश्तों के बीच में पनप भी जाती हैं, तो कुछ ही दिनों में समाप्त भी हो जाती हैं, क्योंकि व्यक्ति के बीच रिश्तों का प्यार एक अमृत के समान होता है, जो कड़वाहट की जड़ों को समूल नष्ट कर देता है.

अफ़सोस कि अंजलि और सुबोध के बीच में इस प्रकार के रिश्तेदार नहीं थे और अब समय के लम्बे अन्तराल के बाद उनको इन रिश्तों का अभाव खलने लगा था, विशेषकर अंजलि को, क्योंकि वह एक नारी थी और नारी पूरी गंभीरता से न केवल रिश्तों को निभाती है, बल्कि उनकी गरमाहट को शिद्दत से महसूस करती है? उसके मन में अक्सर यह बात आती थी, क्या सुबोध को भी इन रिश्तों का खालीपन महसूस होता है? क्या इसी खालीपन को लेकर वह परेशान रहता है या उसके मन में कोई और बात है? वह अपनी बात को खुलकर बताता क्यों नहीं? अंजलि ने बिना किसी औपचारिकता के अपना सब कुछ उस पर न्योछावर कर दिया था. तब उनके बीच में कौन सी दूरी बची थी, जिसके कारण सुबोध अभी भी खुलकर अपने मन की बात उससे नहीं बता पाता था?

अंजलि अपने दिमाग को इधर-उधर दौड़ा रही थी और सोच रही थी कि ऐसा क्या कारण हो सकता था, जिसके हेतु सुबोध परेशान था और वह उसके मन से ही नहीं तन से भी दूर होता जा रहा था. क्या पारिवारिक रिश्तों से दूरी और उनका अभाव उसके मन को साल रहा था? पिछले कई महीनों में उसने अपने घर के कई चक्कर लगाये थे और मां-बाप से मिलकर आया था. क्या यही एक कारण था कि रिश्तों के खालीपन को वह भरने में लग गया था. अगर यह सही था तो उसके मन का खालीपन अवश्य भर रहा होगा, परन्तु उन दोनों के रिश्ते की दरार चौड़ी-दर-चौड़ी होती जा रही थी.

जब मन शंका के दरिया में डूबता है, तो वह कुशंकाओं को जन्म देता है. ऐसी-ऐसी कुशंकायें मन में पनपने लगती हैं, जो मन में कभी खुशियां नहीं लाती हैं. वह तो यहां तक सोचने लगी थी कि सुबोध उससे ऊबने लगा था, उसके सौन्दर्य से और उसके तन से, क्योंकि उसने उसके सौन्दर्य का भरपूर रसपान कर लिया था और तन को पूरी तरह से भोग लिया था. इतने अंतराल के बाद तो

दाम्पत्य-जीवन में भी तन और मन की दूरियां पनपने लगती हैं, वह दोनों तो खैर किसी सामाजिक और पारिवारिक बंधन में नहीं बंधे थे. उनको आपस में जोड़नेवाला केवल उनका मन और तन था. इसी के बीच अगर दूरियां आ गईं तो फिर और कोई बंधन उन्हें एक दूसरे से जोड़ नहीं सकता था.

या फिर सुबोध के जीवन में कोई नई लड़की आ गयी है, ताजा खिले फूल की तरह, जिस पर अभी तक ओस की नमी थी और सुबह की सुनहरी धूप में वह अपने रंगों और सुन्दरता की आभा बिखेरती हुई उसके जीवन में प्रवेश करने को आतुर थी. सुबोध उसके चटक रंगों में खो गया था और अब अंजलि उसे उस बासी फूल की तरह लग रही थी, जिसे पूजा की थाली से निकालकर बाहर फेंक दिया गया था. सुबोध को किस तरह वह अपने बंधन में बांधे रख सकती थी. उसके मन में तो कोई और नहीं था. उसने अपने जीवन में केवल सुबोध को चाहा और उसे ही अपना सब कुछ मानकर सर्वस्व न्यौछावर कर दिया. अब क्या वह भी उसे छोड़कर अलग हो जायेगा? सुबोध द्वारा टुकराये जाने के बाद उसकी क्या स्थिति होगी? वह कहां जायेगी? तब क्या सबकुछ भूलकर एक नये जीवन में प्रवेश करना होगा? क्या यह इतना आसान होगा? सुबोध के बिना उसने अभी तक अकेले या किसी अन्य व्यक्ति के साथ जीवन बिताने की कल्पना तक नहीं की थी. क्या अब करेगी?

भविष्य की परिस्थितियों की भयावहता के बारे में सोचकर ही वह कांप गयी. बिना किसी बंधन के अगर वह सुबोध के साथ उसकी भोग्या की तरह रह रही थी, तो उसने इस रिश्ते को मन से स्वीकार कर लिया था और अब तक वह इस रिश्ते को अटूट समझ रही थी. मां-बाप को उसके इस रिश्ते के बारे में पता नहीं था तो इस बारे में वह अधिक चिन्तित भी नहीं थी. जब उसके विवाह की उम्र निकल जायेगी और वह एक प्रौढ़ा की सीढ़ी पर कदम रख चुकी होगी, तब वह मां-बाप को बता सकती थी कि उसने जिस राह पर चलना आरंभ किया था, वहीं रास्ता अब उसके लिए उचित था. उससे डिग नहीं सकती थी. उसे विश्वास था कि मां-बाप उसके इस रिश्ते को स्वीकार कर लेंगे.

परन्तु क्या सचमुच सुबोध उसके साथ रिश्ता तोड़ने के लिए आमादा है? उसके मन की बात वह पता नहीं कर सकती थी और अगर सुबोध ने ठान रखा है कि वह उसे नहीं बतायेगा तो उसके पास कोई ऐसा रास्ता नहीं है कि वह उसके मन की बात जान सके. तब वह क्या करे?

आरंभ में ही उन्होंने तय कर लिया था कि साथ-साथ रहने और प्यार करने के सिवा वह किसी अन्य प्रकार की जिम्मेदारी अकेले या मिलकर नहीं उठायेंगे और इसके लिये ज़रूरी था कि वह बच्चे न पैदा करें. अंजलि भी उसकी बात से सहमत थी. सुरक्षा के लिए सुबोध कण्डोम का प्रयोग नहीं करता था, परन्तु अंजलि को सावधानीवश गर्भरोधक गोлияं नियमानुसार लेनी पड़ती थी. इस कारण वह थोड़ी मोटी और थुलथुल हो गयी थी. इसका आभास उसे तब होता था, जब वह अपने पुराने कपड़े पहनती थी.

मन में कुशंका के जन्म लेते ही अंजलि ने सुबोध के मन को कई प्रकार से टटोलना प्रारंभ किया. एक दिन बोली, “सुबी, क्या तुम्हें नहीं लगता कि हमारे सम्बन्धों में कहीं न कहीं अरुचि सी व्याप्त होती जा रही है, एक ठहराव आ गया है और नीरसता का भाव है? ऐसा क्यों हो रहा है?”

सुबोध ने उसे आश्चर्य से देखा. उसके चेहरे के आश्चर्यजन्य भाव कुछ उसी प्रकार के थे, जैसे उसे तो पता था, परन्तु अंजलि को कैसे पता चला? अंजलि एकटक उसके चेहरे को ताक रही थी और सुबोध सोच रहा था कि उसकी बात का वह क्या जवाब दे? यह ऐसा प्रश्न था, जिसका जवाब दोनों को मालूम था, परन्तु आज अंजलि ने पहल की थी कि उनके जीवन में आए ठहराव, नीरसता और अरुचि का वह विश्लेषण करें और अगर संभव हो तो उस समस्या का समाधान ढूंढें.

वह कुछ नहीं बोला, तो अंजलि ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, “तुम शायद किसी वज़ह से वास्तविकता से दूर भागने की कोशिश कर रहे हो, परन्तु मैं ऐसा नहीं कर सकती. मैं एक नारी हूँ और किसी पुरुष के साथ जुड़ने पर उस नारी की अस्मिता ही नहीं, उसका पूरा जीवन ही दांव पर लग जाता है.”

सुबोध ने उसकी शंका को मिटाने का कोई प्रयत्न नहीं किया.

अंजलि का मन गहरे अवसाद में डूब गया, दुःख से ज्यादा उसे हैरानी हो रही थी. हैरानी सुबोध के आचरण पर थी. जिस व्यक्ति पर उसने विश्वास किया, जिसकी प्रेम भरी मीठी-मीठी बातों पर उसने अपना तन-मन वार दिया, वहीं आज उससे छल कर रहा था. उसके मन में ऐसा कुछ था, जो उसको अंजलि से दूर करता जा रहा था. इस बात का संभवतः उसे अपराध-बोध भी था, क्योंकि वह अपने मन की बात अंजलि को बताना भी चाहता था, परन्तु उसके मन में कोई उलझन भी थी, जिसके कारण वह अपने मन की बात अंजलि पर प्रकट करने से हिचक रहा था.

अंजलि उसे अपने मन की बात जाहिर करने के लिए मजबूर नहीं कर सकती थी. उसने कहा, “सुबी, मैंने अपनी तरफ से अपने प्रेम-समर्पण में कोई कमी नहीं रखी, परन्तु अगर तुम्हारे मन में मुझे लेकर कोई उलझन हो तो साफ-साफ बता दो. तुम्हारी बात अगर मुझे दुःख देगी, तब भी मैं उसे बर्दाश्त कर लूंगी, परन्तु अपने मन में कोई बात छिपाकर मत रखो.”

“अंजू, मैं तुम्हें दुःखी नहीं देखना चाहता.” उसने अंजलि को अपनी बांहों में कसते हुए कहा.

“फिर भी अपने मन की बात नहीं बता सकते?”

“बात ही कुछ ऐसी है. मैं तुम्हें धोखा भी नहीं देना चाहता, न दुःखी देखना चाहता हूँ.”

अंजलि सहम गयी. एक अनजाना डर उसके हृदय में बैठ गया. साहस करके पूछा, “क्या कोई और लड़की तुम्हारे जीवन में आ गई है?”

वह चुप रहा. कई पल उनके बीच में सन्नाटा पसरा रहा. अंजलि एकटक उसे देख रही थी, परन्तु सुबोध की जुबान नहीं खुली. अंजलि ने ही कहा, “अगर ऐसी बात है तो मैं नहीं पूछूंगी कि वह कौन है? परन्तु एक बात अवश्य जानना चाहूंगी कि क्या तुम उससे शादी करना चाहते हो या मीठी-मीठी बातों से बहला-फुसलाकर ‘लिव-इन-रिलेशनशिप’ में रहकर उसकी अस्मिता और सौन्दर्य से खिलवाड़ करना चाहते हो; ताकि कुछ वर्षों तक यौन-सुख भोगकर जब उससे तुम्हारा मन ऊब जाये तो फिर किसी और लड़की को इसी रिश्ते के नाम पर अपने जाल में फंसा सको.” अंजलि की आवाज़ में कठोरता के साथ-साथ कटुता भी भर गयी थी.

सुबोध की आंखों में आहत होने का भाव था, परन्तु फिर भी कुछ नहीं बोला.

“मुझे पता है, तुम कुछ नहीं बोलोगे. बोल भी नहीं सकते, क्योंकि तुममें इतना नैतिक साहस नहीं है. मैंने अपने मां-बाप को तुम्हारे लिए धोखा दिया, उनके विश्वास को धोखा दिया, क्या यह दिन देखने के लिए कि एक दिन सब कुछ लुटाने के बाद मेरे पास मेरा कुछ भी न बचे. बचा भी क्या है, परन्तु सब कुछ लुटाकर एक बात बहुत अच्छी तरह से मेरी समझ में आ गई है कि बिना किसी बन्धन के किसी स्त्री का पुरुष के साथ रहना उसे कहीं का नहीं छोड़ता. पुरुष का तो कुछ नहीं जाता, परन्तु स्त्री हर प्रकार से लुट-पिट जाती है. उसकी आस्था के फूल मुरझा जाते हैं और विश्वास का धरातल डगमगा कर खिसकने लगता है.”

अंजलि बोलते-बोलते हांफने लगी थी, जैसे मीलों दौड़कर आई हो. वह बहुत थकी और बीमार-सी लग रही थी. उसने निरीह भाव से सुबोध की तरफ देखा,

परन्तु उसने शायद टान रखी थी कि वह कुछ नहीं बोलेगा, न अंजलि की किसी बात का प्रतिवाद करेगा. जबकि बात उसी ने शुरू की थी और बिगड़ते-बिगड़ते यहां तक आ पहुंची थी कि अंजलि के मन को गहरी ठेस पहुंची थी. बात अब समापन पर थी, परन्तु रहस्य पहले की तरह बरकरार था.

वह रात बहुत कष्ट की रात थी. दोनों के मन में विचारों की आंधियां चल रही थीं. उन आंधियों के आगे कोई चट्टान नहीं थी कि उनके प्रवाह को रोक सकती.

उस रात अंजलि ने एक निर्णय लिया. सुबह उसने दृढ़ स्वर में सुबोध से कहा, “कुछ दिन के लिए मैं घर जाना चाहती हूँ.” बस इतना ही. सुबोध ने भी कोई प्रतिरोध व्यक्त नहीं किया. यह भी नहीं पूछा कि कब आएगी. अंजलि ने स्वयं भी नहीं बताया. रहस्य के पर्दे और घने होते जा रहे थे.

ऑफिस से छुट्टी लेकर अंजलि उसके दूसरे दिन भोपाल चली गई. सुबोध अकेला रह गया. जिस तरह से अंजलि गई थी, उसको अच्छा नहीं लग रहा था. वह रूठकर गई थी और वह उसे मना भी नहीं सका था. गलती उसी की थी. जो बात उसके मन में थी, वह अंजलि को बता देता तो बात इतनी आगे नहीं बढ़ती. परन्तु वह अपने हृदय में साहस का संचार नहीं कर सका. वह अंजलि को बहुत प्यार करता था, इसीलिए वह अपने दिल की बात बताकर उसे दुःखी नहीं करना चाहता था.

कुछ दिन पूर्व वह अपने घर गया था. तब माता-पिता ने उसे पास बिठाकर कहा था, “सुबोध! अब हम बहुत दिनों तक इंतजार नहीं कर सकते.”

“किस बारे में...?” उसने आश्चर्य से पूछा.

“क्यों जानकर अनजान बनता है?” मां ने तल्खी से कहा, “तीस साल का हो गया है. तेरा छोटा भाई 28 वर्ष का और बहन 26 की हो चुकी है. तेरी शादी के बाद इन दोनों की शादी करनी है. अब क्या तू अपनी शादी हमारी अर्थी उठने के बाद करेगा? न करे तो साफ-साफ बता दे, हम बेटी को कुंवारा घर में नहीं बिठा सकते.”

मां कभी उससे कड़वी बात नहीं करती थीं. आज पता नहीं क्या बात हो गई थी कि वह उससे इस तरह पेश आ रही थीं. वह थोड़ी देर चुप रहा, फिर कुछ विचार कर बोला, “आप लतिका की शादी कर दीजिए. उसकी शादी में मैं रुकावट कहां बन रहा हूँ?”

“और नाते-रिश्तेदारों तथा पड़ोसियों को क्या जवाब दूंगी कि बहन के दो मुस्टंडे जवान भाई घर में कुंवारे क्यों बैठे हुए हैं. हम कोई जंगल में नहीं रहते हैं कि अपनी मर्जी से कुछ भी करते रहें और किसी को पता न चले.”

पिताजी भी भरे बैठे थे. कड़क कर बोले, “बरखुरदार! अब हम तुम्हारा कोई बहाना नहीं सुननेवाले. या तो शादी के लिए ‘हां’ कह दो या साफ इंकार कर दो. फिर जहां चाहे जाकर रहो. हमारी तरफ से पूरी छूट है. कम से कम लोगों को बता तो सकेंगे कि बेटे ने शादी करने से मना कर दिया है और वह अपनी मर्जी से अकेले या छिपकर किसी लड़की के साथ रहना चाहता है. तुम्हारे भाई और बहन का रास्ता तो खुल जाएगा.”

सारे लोग उत्सुकता से सुबोध को ताक रहे थे. उसके मन में तमाम तरह के विचार चल रहे थे. उसके विचारों में अंजलि का मासूमियत-भरा चेहरा घूम रहा था, उसका निश्चल और प्रेमिल समर्पण याद आ रहा था, परन्तु शादी? इसके बारे में तो उसने सोचा भी नहीं था, अंजलि के साथ भी नहीं. अब तक के जीवन में उसने स्वतंत्र रूप से रहना सीखा था और इसी रूप में वह रहना चाहता था. किसी बंधन में रहना उसे स्वीकार नहीं था. पत्नी और बच्चों का बंधन, परिवार की जिम्मेदारियां और सामाजिक सरोकारों से सम्बन्ध उसे मंजूर नहीं था. इनके बारे में सोचकर लगता जैसे कोई पहाड़ उसके सिर पर रख दिया गया है.

“भैया, कुछ तो बोलो.” इस बार प्रबोध ने कहा, “आपकी वजह से मेरी बात नहीं बन पा रही है. रुचि के घरवाले तैयार बैठे हैं, परन्तु आपकी वजह से मम्मी-पापा उन्हें हां नहीं कह पा रहे हैं. आप अपने बारे में कुछ कहो तो हमारा भी रास्ता खुले. लतिका की उम्र भी काफी हो चुकी है. उसके लिए अच्छे-अच्छे लड़कों के प्रस्ताव आ रहे हैं, परन्तु किसी को साफ-तौर पर मम्मी-पापा ‘हां’ नहीं कह पा रहे हैं.”

“बेटा, सोच-समझकर जल्दी ही कोई निर्णय लो. यह हमारे परिवार की परम्परा नहीं है कि छोटों की शादी हो जाए और बड़ा भाई कुंवारा बैठा रहे. तुम कहोगे तो हम तुम्हारी पसंद की लड़की से तुम्हारा विवाह खुशी-खुशी कर देंगे.” मम्मी ने कहा.

“परम्परा से इसे क्या लेना-देना. इसे तो बस अपनी मौज-मस्ती से मतलब है?” पिताजी ने आग में घी डाला, “न परिवार की चिन्ता, न समाज की. पता नहीं किस लड़की के फेर में पड़ा है कि शादी नहीं कर रहा है. कुछ बताओ तो सही, हम उसी के साथ तुम्हारी शादी करवा दें.”

“अगर कोई लड़की आपके मन में है तो बता दीजिए न भैया!” इस बार लतिका ने मुख खोला, “हम कोई अनपढ़-गंवार तो हैं नहीं कि आपके मन की बात नहीं समझेंगे. हम आपकी भावनाओं की कद्र करेंगे.”

सुबोध पर चारों तरफ से आक्रमण हो रहे थे और वह लहू-लुहान होकर भी सबके आक्रमण झेल रहा था. उसके मुंह से शब्द तो क्या ‘चीं’ की आवाज़ तक नहीं निकल पा रही थी. वह जवाब देता तो क्या देता? बिना शादी के उसने अंजलि के साथ पति-पत्नी का रिश्ता बना रखा है और घरवाले उसकी शादी के लिए जोर दे रहे हैं. वह असमंजस में था. अंजलि के साथ शादी करना बिल्कुल उसी प्रकार था, जिस प्रकार भगवान की मूर्ति से उतारकर फेंकी गई माला को दुबारा मूर्ति पर चढ़ाना. अंजलि को वह प्यार करता था, परन्तु उस प्यार में अब एक अरुचि का भाव पैदा होता जा रहा था. सात साल बिना किसी बंधन के किसी लड़की के साथ जीवन गुजारने के बाद उसी लड़की से शादी का विचार ही उसके मन में वितृष्णा का भाव पैदा कर रहा था. वह पिताजी को ‘हां’ कहे या अंजलि के साथ अपने रिश्ते को एक मुकम्मल मुकाम तक पहुंचाने का साहस दिखाये? वह निर्णय नहीं कर पा रहा था.

घरवालों को शान्त करने के लिए उसने कह दिया, “मुझे कुछ समय दीजिए. सोच-विचार कर बताऊंगा.”

पिताजी विफर पड़े, “जीवन के तीस वर्ष तो ले लिए, अब और कितना समय लगे जीवन को व्यवस्थित करने के लिए. हमारे पास ज्यादा समय नहीं है. एक महीने के अन्दर ही मुझे बताओ; वरना तुम्हारे साथ सारे रिश्ते तोड़कर हम छोटे भाई और बहन की शादी कर देंगे.” उनके स्वर में चेतावनी का भाव था.

और उस रात यही बात वह अंजलि को बताने जा रहा था, परन्तु दुविधा और संकोचवश बता नहीं पाया था. सच तो यह था कि अंजलि के प्रति कुछ हद तक विरक्ति का भाव होने के बावजूद वह उसे तिरस्कृत नहीं कर सकता था. जब भी वह उसका भोला और मासूम चेहरा देखता, अंजलि के साथ बिताये गए पल उसके मन में हलचल मचा देते और वह उसको छोड़ने के ख्याल से ही घबरा जाता. उससे कोई ऐसी बात कहने का साहस न होता जिससे वह आहत हो जाये. उससे दूर होता तो अंजलि उसे परायी सी लगने लगती, परन्तु जब उसके पास होता, तो अंजलि के प्रति उसके हृदय में असीम प्यार की धारा उमड़ पड़ती. वह प्यार से सराबोर हो जाता और अंजलि के साथ उसमें भीगने लगता.



सच तो यह था कि वह दो भागों में बंट गया था।

उसकी दुविधा से अंजलि के मन में संदेह के बादलों ने डेरा जमा लिया था। चाहकर भी वह उसकी शंका को नहीं मिटा सका था और वह नाराज़ होकर अपने घर चली गई थी। अंजलि के जाने के बाद उसे एक झटका-सा लगा था। ऐसा लगा जैसे उसके कलेजे का एक बड़ा टुकड़ा कटकर उसके शरीर से अलग हो गया था। पूरा घर एक वीरान तपते रेगिस्तान-सा लग रहा था। चारों तरफ एक गहरा सन्नाटा व्याप्त था, परन्तु हृदय में जैसे रेत की आंधियां भरती जा रही थीं।

कोई प्यार करनेवाला जब किसी से दूर होता है, तो घर इसी तरह वीरान लगने लगता है।

वैचैनी में उसने घर में बेतरतीबी से पड़ी हुई अंजलि की चीजों को उठाकर सहेजा और उन्हें फूल की तरह अलमारी में रखा। उसकी पहले से सहेजकर रखी हुई चीजों को उसने इस तरह छूकर देखा जैसे किसी नवजात को छू रहा हो। उसकी हर चीज को छूते हुए उसे अंजलि के बदन का अहसास हो रहा था। उसका दिल रो पड़ा और उसकी आंखों में आंसू छलक आए।

अंजलि की मां विनीता ने जब उसे देखा तो हैरान रह गईं। पिता नवीन भी उसे देखते रह गये। उसके चेहरे पर प्रसन्नता और प्रफुल्लता का कोई चिह्न नहीं था, मुस्कान पता नहीं कहां गायब हो गयी थी। पूर्णिमा के बाद के घटते चांद जैसी हो गयी थी वह, उदास, पीली और कांतिहीन।

मां ने उसे अपने आगोश में समेटते हुए कहा, “क्या हो गया बेटी तुझे? कोई परेशानी है? किस चिन्ता में घुल रही हो? मैंने तो पहले ही कहा था अकेले मत रहो। हम लोग आ जाते हैं तुम्हारे साथ रहने के लिए, परन्तु तुम मानी नहीं और आज देखो, कैसी तो हो गई है मेरी फूल जैसी बेटी। देखो, अब कोई बहाना मत करो, जल्दी से शादी के लिए हां कर दो। सैकड़ों लड़के तैयार बैठे हैं तुम्हारा हाथ थामने के लिए, बस तुम्हारी वज़ह से मना करती आ रही हूं। अब तुम्हारे पिताजी भी बूढ़े हो रहे हैं। कुछ तो सोचो, हमारे बारे में न सही, अपने बारे में सोचकर हां कह दो।” उसकी मां एक ही सांस में ढेर सारी बातें कह गयीं।

अंजलि ने गहरी सांस लेते हुए कहा, “मां, अभी कोई बात मत करो। मैं यहां आराम करने आई हूं, कुछ दिन आराम करने के बाद तय करूंगी कि आगे क्या करना है?”

मम्मी-पापा ने फिर उससे कोई सवाल जवाब नहीं किया। दोनों उसकी सेवा में लग गये। मम्मी उसकी पसंद की चीजें बनाने के लिए किचन में चली गयीं तो पापा बाज़ार से उसकी पसंद के फल, मिठाई आदि लेने चले गये। अंजलि उनकी इकलौती बेटी थी, बहुत ही लाडली और प्यारी। सर आंखों पर रखते थे उसे। मम्मी-पापा का ढेर सारा प्यार दुलार देखकर अंजलि की आंखों में आंसू छलक आए। बहुत दिनों बाद उसे इतना सारा प्यार मिल रहा था। आंसू तो उसने ज़ब्र कर लिये, परन्तु देर तक कमरे में अकेली बैठी अन्दर ही अन्दर रोती रही। फिर वह नहा-धोकर बाहर निकली और मम्मी के साथ किचन में जाकर उनका हाथ बंटाने लगी।

उसने सुबोध को फोन नहीं किया। सुबोध ने भी उसे फोन नहीं किया कि वह घर पहुंची या नहीं। दोनों ही अपनी-अपनी ऐंट में बंधे थे और अपनी तरफ से बंधन ढीला नहीं करना चाहते थे।

किचन में काम करते-करते मम्मी ने कहा, “बेटी, अगर यहां अधिक दिन रहने का इरादा है तो एक काम करो। सुमति आजकल अपने घर आई हुई है, वह तुमसे मिलने के लिए इच्छुक भी है। मन करे तो उसके यहां चली जाओ या उसे यहीं बुला लेते हैं।”

सुमति उसके मामा की बेटी थी। उसके मामा इसी शहर में रहते थे, परन्तु सुमति का विवाह इन्दौर के एक इन्जीनियर के साथ हुआ था। सुमति उसी की उम्र की थी, परन्तु उसकी शादी तीन वर्ष पूर्व परिवार की पसन्द से हो गयी थी। शादी के बाद उससे मुलाकात नहीं हुई थी। दोनों अपने-अपने जीवन में अपने-अपने तरीके से व्यस्त थीं।

शाम को उसने सुमति को फोन किया और ढेर सारी बातें कीं। सुमति से बात करके अंजलि के मन का भार काफी हद तक हल्का हो गया था। उसने सुमति से कहा, “क्या कुछ दिन के लिए तुम मेरे पास आ सकती हो?”

“क्यों नहीं रे, मैं तो तुझसे मिलने के लिए मरी जा रही हूं। मेरे वो आजकल मुंबई में हैं, एक-दो महीने बाद ही उनके पास जा पाऊंगी, जब तक कि उनको मुंबई में फ्लैट नहीं मिल जाता। कब आ जाऊं?”

“आज ही आ जाओ।” अंजलि ने उत्साह से कहा।

“आज नहीं, अब तो काफी देर हो चुकी है। भैया भी देर रात को लौटते हैं और पापा को मैं तकलीफ नहीं देना चाहती। ऐसा करते हैं, कल सुबह आती हूं। भैया मुझे ऑफिस जाते समय तुम्हारे यहां छोड़ देंगे。”

“ठीक है, तो फिर कल मिलते हैं.”

दूसरे दिन सुमति दस बजे के पहले ही अंजलि के घर आ गयी. दोनों बहुत आत्मीयता से गले लगकर मिलीं और फिर पुरानी यादों में खो गयीं. सुमति का एक डेढ़ साल का बेटा था. उसकी मीठी-मीठी प्यारी बातें सुनकर अंजलि के हृदय में तरंगें हिलोर मारने लगतीं. कहीं न कहीं उसके मन में एक कचोट भी उभरती. काश, उसने शादी की होती तो आज उसका भी एक बच्चा होता, पुत्र या पुत्री. उसके प्यार में वह अपने जीवन को उत्सर्ग कर देती. अपनी स्थिति को लेकर आज वह स्वयं को बहुत असंतुष्ट महसूस कर रही थी. बंधनहीन रिश्ते में वह यौन-सुख तो प्राप्त कर रही थी, परन्तु जीवन में क्या यौन-सुख ही प्रमुख होता है. एक व्यक्ति के लिए परिवार, समाज और देश के बहुत सारे उत्तरदायित्व होते हैं, उन्हें पूरा करना भी परम आवश्यक होता है. इनके अलावा व्यक्तिगत समस्याएँ भी होती हैं, आवश्यकताएँ होती हैं. इन सबसे कटकर क्या कोई व्यक्ति रह सकता है?

रात को दोनों साथ सोये, तो व्यक्तिगत बातें भी हुईं उन दोनों के बीच और फिर अंजलि का मन पूरी तरह खुलकर सुमति के सामने फैल गया. सुमति ने बहुत ध्यान से उसकी बातें सुनीं, उसके बारे में जाना. किसी के साथ पत्नी की तरह रहने की जानकारी अभी तक किसी को भी नहीं थी, सुमति को भी नहीं. किसी को पता चलेगा, तो उनके परिवारों और रिश्तेदारों के बीच कैसी प्रतिक्रिया होगी, यह कोई नहीं जानता था.

सब कुछ सुनने के बाद सुमति ने कहा, “अंजू, क्या तुम्हें लगता है कि अब रिश्ते को आगे नहीं ले जा सकती हो?”

“मैं तो चाहती हूँ, परन्तु सुबोध के मन में क्या है, यह मैं नहीं जानती? मुझे लेकर वह किसी असमंजस की स्थिति में है. वह खुल नहीं रहा है, अतः मैं नहीं कह सकती कि यह रिश्ता और कितनी दूर तक जा सकता है?”

“तो फिर क्या सोचा है तुमने?”

“अभी तो कुछ मेरी समझ में नहीं आ रहा है. तुम बताओ, मैं क्या करूँ?”

सुमति ने गंभीर स्वर में कहा, “देखो, अंजू, मैं चूँकि शादीशुदा हूँ और मैंने इस जीवन के तीन साल व्यतीत किए हैं, अतः मेरा अनुभव तुम्हारे अनुभव से पूरी तरह अलग हो सकता है. फिर भी मैं इतना कह सकती हूँ कि बिना किसी बंधन के एक स्त्री का किसी पुरुष के साथ पत्नी की तरह रहना किसी मुकम्मल अंजाम तक नहीं पहुँचता. चूँकि इस रिश्ते का आधार केवल सौन्दर्य और यौन-सुख होता

है, अतः एक अंतराल के बाद इसमें अरुचि पैदा हो जाती है. और एक बार स्त्री के सौन्दर्य और तन से पुरुष को अरुचि हो जाए, तो वह रिश्ता कायम रख पाना दोनों के लिए मुश्किल हो जाता है.”

“परन्तु यह अरुचि तो विवाहित जीवन में भी आ सकती है.” अंजलि ने बीच में टोंका.

“हां, मैं इसी बात पर आ रही थी. यह स्वाभाविक है. एक समय के बाद पति-पत्नी भी एक दूसरे से मन और तन से अलग होने लगते हैं. उनके सम्बन्धों के बीच अरुचि का भाव जागृत होने लगता है, परन्तु विवाहित जीवन को अटूट बनाये रखने के लिए उनके बीच और भी दूसरे प्रेमिल और स्नेहिल बंधन होते हैं कि पति-पत्नी चाहकर भी एक दूसरे से अलग नहीं हो पाते. उनके बच्चे उनके रिश्तों के बीच एक मजबूत पुल का काम करते हैं और दोनों को अलग नहीं होने देते. विवाहित जीवन में तलाक़ फिर भी होते हैं, परन्तु हमारे समाज में तलाक़ अभी भी अपवाद स्वरूप देखे जाते हैं, उनको प्रामाणिक नहीं माना जा सकता है; परन्तु लिव-इन-रिलेशनशिप का कोई रिश्ता भी पूरे जीवन एक गति से नहीं चलता, यह एक प्रमाण है. क्योंकि इन रिश्तों में न तो प्रतिबद्धता होती है, न कर्तव्यबोध. इसीलिए इनमें स्थायित्व नहीं होता. जिन रिश्तों के बीच में जिम्मेदारी का अहसास न हो, वहां रिश्तों को टूटने में वक़्त नहीं लगता.”

सुमति ने एक ही सांस में बहुत सारी बातें कह दी थीं. अंजलि को सुनकर आश्चर्य नहीं हुआ, वह इन सब बातों को जानती थी, परन्तु जीवन में मनुष्य अक्सर अपने आसपास की बातों पर ध्यान नहीं देता और एक काल्पनिक दुनिया में जीता रहता है. काल्पनिक दुनिया के सुख इतने विलक्षण होते हैं कि मनुष्य जीवन की वास्तविकताओं को भुला बैठता है. अविवाहित जीवन में होने वाले प्रेम-सम्बन्ध कुछ इसी प्रकार के होते हैं, जो हमें अति सुख प्रदान करते हैं, परन्तु जब टूटते हैं, तो उससे कई गुना अधिक कष्ट और दुःख प्रदान करते हैं. वही कष्ट आज अंजलि भुगत रही थी.

वह विचारों में गुम थी कि सुमति ने आगे कहा, “वैसे तो प्रेम-सम्बन्ध बहुत व्यक्तिगत होते हैं और इनके बीच में किसी का आना अच्छा नहीं होता और न प्रेम करने वाले व्यक्ति किसी के हस्तक्षेप को सहन ही करते हैं. अतः मैं तुमसे यही कहूँगी कि अब तक जो किया, उसके लिए पछताने से कोई फायदा नहीं, परन्तु अब जो करो, बहुत सोच-समझकर करो. बिना किसी आधार के न तो इमारत टिकती

है, न सम्बन्ध. इन्हें स्थायित्व देने के लिए परिवार और समाज बहुत आवश्यक होते हैं. मैं तुमको बता रही हूँ, प्रेम मैंने भी किया था और बहुत गहराई से किया था, परन्तु विवाह के पश्चात अब लगता है कि शादी पूर्व का वह प्यार कच्ची दीवार की तरह था, जो वर्षा की एक बौछार भी नहीं झेल सकता था. प्रेम-सम्बन्धों को अगर सामाजिक और विशेषकर पारिवारिक मान्यता मिल जाती है तो वह अटूट हो जाते हैं, परन्तु बिना बड़ों की सहमति और आशीर्वाद के ऐसे सम्बन्ध नहीं टिकते, यह मेरा मानना है. तुम सोच-विचार करके देख लो, तुम्हें स्वयं पता चल जायेगा कि जीवन में स्थायित्व आवश्यक है या खानाबदोशी. जीवन तो सभी जीते हैं, परन्तु सुख कहाँ है, यह अगर हम ढूँढ़ लें तो दुखी क्यों रहें?”

सुमति बहुत समझदारी पूर्ण बातें कर रही थी. अंजलि हैरान थी कि ऐसी बातें उसके दिमाग में अभी तक क्यों नहीं आईं, जबकि वह भी इसी दुनिया में रहती है, इसे जीती है, भोगती है. इसके सारे कष्ट, दुख और तकलीफें भी उठाती है, फिर भी जीवन के सच से वह क्यों दूर भागती रही है?

अगले कुछ दिन उसके लिए अभूतपूर्व थे. सुमति के साथ से उसके चेहरे पर मुस्कान ही नहीं, रौनक भी लौट आई. सुमति के बेटे के साथ खेलते-खेलते उसके मन में ममता का सागर हिलोरें मारने लगता और एक बच्चे की चाह पैदा होने लगती. वह समझ गयी थी कि परिवार और समाज एक ऐसी सच्चाई है, जिससे दूर रहकर कोई भी व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता. इसीलिए दुनिया के हर कोने में इसको मान्यता प्राप्त है. स्वच्छन्द रहने के बावजूद पुरुष और स्त्री अन्ततः विवाहित जीवन में ही वास्तविक सुख पाते हैं. पश्चिम में भी पुरुष और स्त्री के जोड़े बिना विवाह के बच्चे तो पैदा कर लेते हैं, परन्तु अंत में शादी करके अपने रिश्तों को एक मान्यता देते हैं. टेनिस खिलाड़ी आन्द्रे अगासी और स्टेफी ग्राफ का उदाहरण हमारे सामने है. यह दोनों कई वर्षों तक बिना विवाह के साथ रहे, बच्चा भी पैदा किया, परन्तु अंत में शादी करके घर बसाया. यह पूरे विश्व के समाज की आवश्यकता है.

अपने परिवार और सुमति के साथ रहते-रहते वह अपने पूर्व जीवन से कटती जा रही थी और सुबोध उसके मन से विस्मृत होता जा रहा था. धीरे-धीरे एक महीना भी बीत गया. सुमति के जाने का समय आ गया और इधर अंजलि की छुट्टियाँ भी समाप्त हो रही थीं.

सुमति चली गयी. जाते समय उसने अंजलि को एक सलाह दी, “अंजू, मैं तुम्हारी सहेली ही नहीं, बहन भी हूँ. मेरी बात पर ध्यान देना. भारतीय समाज में ही नहीं, पश्चिमी समाज में भी स्त्री के लिए स्वच्छन्द जीवन बिताना बहुत मुश्किल

होता है. कोई भी स्त्री अकेले कभी भी सम्मानजनक जीवन नहीं व्यतीत कर सकती. पुरुष उसका जीना मुहाल कर देता है. प्रतिक्षण वह इसी ताक में रहता है कि कब अकेली स्त्री मिले और उसे नोच-खसोट कर कच्चा चबा जाये. शादी करके स्त्री न केवल एक सम्मानजनक जीवन जीती है, बल्कि पति, बेटा-बेटी, देवर, ननद, जेठ-जिठानी, सास-ससुर तथा अन्य रिश्तेदारों के बीच वह सुरक्षित भी रहती है. व्यक्तिगत सुख के लिए हम मान्यताओं को तोड़ते हैं, परन्तु इन्हें उसी हद तक तोड़ना उचित होता है, जब तक हम अपने को सुरक्षित अनुभव करते हों. इसके बाद की हद तो हमारे लिए मुसीबत ही खड़ी करती है. तुम स्वयं समझदार हो. दूसरी बात ये कि मां-बाप अपने बच्चों का कभी अहित नहीं चाहते. उनकी सलाह लेने में हमें परेशानी नहीं होनी चाहिए.”

अंजलि ने सुमति की सलाह को गाँठ में बांध लिया.

सुमति के जाने के बाद अंजलि फिर अकेली हो गयी. मम्मी-पापा ने उसकी उदासी को भांप लिया. मम्मी ने कहा, “बेटी, अभी काम पर जाने का मन न हो तो छुट्टी बढ़वा लो.”

“देखती हूँ,” उसने टालने के भाव से कह दिया.

“बेटा, इतने दिन के बाद अब तो तुम्हारे मन में कुछ आया होगा. तुम हमारी इकलौती बेटी हो, तुम्हारे सिवा हमारा कौन है? हम तुम्हें दुखी नहीं देख सकते.” उसके पापा ने कहा, “तुम्हारे मन में शादी को लेकर कोई दुविधा हो तो हमें बताओ, हम उस पर चर्चा करके तुम्हारी शंका को दूर करने का प्रयास करेंगे. लेकिन इस तरह अकेले जीवन व्यतीत करना बहुत कठिन होगा. हमें तुम्हारी चिन्ता लगी रहती है.” उसके पापा का स्वर बहुत भावुक लग रहा था.

अंजलि ने मन को कड़ा किया और कहा, “मैंने सोच लिया है, मम्मी-पापा. अब मैं आपको और अधिक दुख नहीं दूंगी. मैं शादी के लिए तैयार हूँ, आप जहाँ कहेंगे, वहाँ शादी कर लूंगी.”

भावातिरेक में मम्मी-पापा ने एक साथ उसे गले से लगा दिया.

अंजलि को गए हुए एक सप्ताह बीत चुका था. यह एक सप्ताह सुबोध ने कितने कष्ट में काटा था, केवल उसका हृदय ही जानता था. जब तक दोनों साथ थे, एक-दूसरे की कमी किसी को नहीं खलती थी, परन्तु आज उसे ऐसा लग रहा

था जैसे किसी ने उसके हंसते-खेलते घर को तहस-नहस कर दिया था, बाग के ताजा खिले फूलों को मसल दिया था और हरे-भरे पेड़ों को आग में झुलसा दिया था।

अंजलि पहले भी यदा-कदा अपने घर जाती थी, परन्तु तब खुशी-खुशी जाती थी और दिन में कई बार उनके बीच बात होती थी। इस बार वह नाराज़ होकर गयी थी और एक सप्ताह में एक बार भी उसने फोन नहीं किया था। सुबोध ने भी नहीं किया था, यह सोचकर कि वह उसे मनाये तो किस तरह मनाये। अंजलि स्वयं फोन करती तो वह उसे मना लेता। वह इंतजार करता रहा, परन्तु अंजलि ने उसे फोन नहीं किया। उसके मन में तरह-तरह के विचार आते थे- क्या अंजलि हमेशा के लिए उसके जीवन से चली गयी है? मन में यह विचार आते ही उसका हृदय दहल जाता।

क्रमशः वह गहरे अवसाद में डूबता जा रहा था। यह स्थिति उसके लिए खतरनाक थी। दिन तो ऑफिस में किसी तरह बीत जाता, परन्तु रात उसे काटने को दौड़ती। अंजलि की यादें उसके मन में गहरी बेचैनी भर देतीं। आंखों में रात कट जाती।

अन्ततः उसने एक निर्णय लिया और ऑफिस से एक हफ्ते की छुट्टी लेकर घर चला गया।

एक महीने के अन्दर ही सुबोध फिर घर वापस आया था। सभी लोग खुश थे कि इस बार वह अपने बारे में निश्चित तौर पर कुछ बता सकेगा। सभी लोग प्रतीक्षा में थे कि वह स्वयं कुछ बतायेगा, परन्तु जब दो दिन बीत जाने पर भी उसने कुछ नहीं कहा तो तीसरे दिन मम्मी ने उसे टोंक दिया, “बेटा, इस तरह की अनिश्चितता के माहौल में हम लोग कब तक आपस में सर टकराते रहेंगे। तुम कुछ बताओगे या...” मम्मी की आवाज में कठोरता के साथ-साथ असहनीय गुस्से का भाव था।

सुबोध ने मम्मी की बात समाप्त होने के पहले ही कहा, “मम्मी, थोड़ा धैर्य रखो। हर समय इतनी उत्तेजना ठीक नहीं है। मैं शाम को साफ-साफ सबकुछ बता दूंगा।” इतना कहकर वह बाहर निकल गया। निरुद्देश्य इधर-उधर भटकता रहा, फिर भी उसके मन की बेचैनी दूर नहीं हुई। तब वह एक पार्क के एकान्त कोने में जाकर बैठ गया।

बेचैनी के आलम में उसने मोबाइल फोन निकाला और फोनबुक में जाकर नम्बर चेक करता रहा। अंजलि का नाम देखते ही उसके हृदय में एक मीठा कंपन हुआ। वह उसके नाम को लगातार देखता रहा, जैसे मंत्रमुग्ध हो गया हो। उसकी

समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? अंजलि का नम्बर डायल करे या नहीं। फोन के बटनों के साथ खेलते-खेलते उसकी उंगली अनायास या जान-बूझकर दब गयी और अंजलि का नम्बर डायल हो गया। पसोपेश में होने के बावजूद उसने नम्बर नहीं काटा। ‘जो होगा देखा जायेगा’ के भाव से उसने फोन को कान से लगा लिया।

उसे उम्मीद नहीं थी कि अंजलि फोन उठायेगी, परन्तु कभी-कभी नाउम्मीदी में भी उम्मीदों के चिराग जलकर रोशनी फैला देते हैं। उधर से किसी ने फोन उठा लिया और एक मधुर आवाज आई, “हेलो!”

अंजलि की चिर-परिचित मीठी आवाज़ सुनते ही उसके हृदय के तार झनझना उठे और पूरे शरीर में एक तरंग सी दौड़ गयी। उसे लगा पार्क में अभी-अभी गुनगुनाता हुआ बहारों का मौसम आया है, फूल खिल गये हैं, भंवरे गुनगुनाने लगे हैं और तितलियों ने फूलों की रंगत चुराकर चारों तरफ लहराती हुई एक चादर बिछा दी है।

सुबोध की आवाज में उसी प्रकार का कंपन था, जैसा किसी प्रेमी की आवाज़ में प्रेमिका से पहली बार बात करते समय होता है, “अंजू, मैं सुबोध बोल रहा हूं।”

“हां, बोलो!” अंजलि की आवाज़ स्थिर थी, कोई कंपन, कोई उत्साह नहीं था, न कोई घबराहट, न रोमांच। सुबोध को उसके ठंडे स्वर से निराशा हुई। इस तरह के व्यवहार की उसे अपेक्षा नहीं थी। फिर भी पूछा, “फोन नहीं किया?”

उधर से गहरी सांस लेने की आवाज आई। फिर अंजलि ने कहा, “आपने ने भी तो नहीं किया?”

“हां,” वह चुप हो गया।

उधर भी चुप्पी रही, जैसे दोनों एक दूसरे के मन की बात समझने का प्रयास कर रहे हों। कई पल बीत गये। सुबोध समझ गया कि अंजलि अपनी तरफ से कुछ नहीं कहेगी, तो आहत स्वर में उसने कहा, “आओगी नहीं!”

“पता नहीं!” अंजलि जैसे इस उत्तर को देने के लिए तैयार बैठी थी। सुबोध को लगा, जैसे अंजलि ने उसके दिल पर एक भारी पत्थर रख दिया था। इसके बाद वह उलझ गया कि अंजलि से क्या पूछे। हड़बड़ा कर पूछा, “तुम ठीक तो हो?”

“हां, बिल्कुल ठीक हूं।” अंजलि ने अपनी आवाज़ में चहक भरते हुए कहा और फिर जैसे औपचारिकतावश पूछा, “आप ठीक हो न!”

“तुम ठीक हो तो मैं भी ठीक हूं।” फिर उनके बीच शब्द चुक गये। समय का अन्तराल भी उनकी चुप्पी के बीच कोई संवाद स्थापित नहीं कर सका। उनके मन

में बहुत सारे सवाल थे, परन्तु मुंह के रास्ते बाहर आने के लिए सभी ने मना कर रखा था।

सुबोध ने अन्त में कहा, “मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूं.” उधर से सिसकने की आवाज़ आई, फिर फोन कट गया। सुबोध ने लाचारी के भाव से ‘हैलो, हैलौ’ कहा और फिर फोन को इस तरह ताकने लगा, जैसे वह उसका सबसे बड़ा दुश्मन था और उसी ने अंजलि के साथ संवाद-विच्छेद कर दिया था। उसने हाथ को इस प्रकार झटका, जैसे फोन को पटकने जा रहा था, परन्तु वैसा नहीं हुआ।

शाम को वह सभी खाने की मेज पर बैठे तो मम्मी ने बात प्रारंभ की, “तो बेटा, हम लोग क्या समझें? क्या तुमने शादी करने का निर्णय ले लिया है?”

उसने बिना किसी भूमिका के कहा, “मैंने सोच लिया है और अब मेरे मन में कोई दुविधा नहीं है.”

सबके चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ गयी। मां ने लपक कर सुबोध का सिर अपने हाथों में थाम लिया और उसके बालों को सहलाती हुई बोली, “मैं जानती थी, मेरा बेटा हमें निराश नहीं करेगा। जो भी करेगा, हमारी सहमति से ही करेगा.”

“आप सबकी इच्छानुसार मैं शादी के लिए तैयार हूं, परन्तु जहां मैं कहूंगा, वही आपको मेरी शादी की बात चलानी होगी.” उसने दृढ़ स्वर में कहा।

“इसमें हमें क्या आपत्ति हो सकती है? अगर तुम्हारी कोई पसंद है, तो हम उसे ही प्राथमिकता देंगे। हम तो यही चाहते थे कि तुम शादी के लिए हां कर दो, फिर जहां चाहे वहां शादी करो। हमने किसी को वचन नहीं दे रखा है.” उसके पिताजी ने उत्साह से कहा।

और उसने सभी को अपनी पसन्द बता दी।

उसी रात सुबोध अपने माता-पिता के साथ ट्रेन द्वारा भोपाल के लिए रवाना हो गया था। सुबह उजाला फटने के पहले ही वह भोपाल पहुंच गये थे। स्टेशन पर ही रिटायरिंग रूम में रुककर उन लोगों ने स्नान-ध्यान किया और दस बजे तैयार होकर बाहर आये।

स्टेशन के बाहर से उन्होंने एक ऑटो रिक्शा लिया और ड्राइवर को निर्धारित गंतव्य बताया। आधे घण्टे में वह शहर की एक नई बस्ती में पहुंचे। ऑटो से उतरकर सुबोध ने अपने मम्मी-पापा को एक तरफ इशारा करते हुए कहा, “वो है उसका घर! आप जाइए.” फिर उसने अपने पापा को कुछ समझाया। वह दोनों चले गये तो वह एक पेड़ की छाया के नीचे खड़ा हो गया।

एक नये मकान के दरवाजे पर पहुंचकर सुबोध के पापा ने दरवाजे पर लगी घण्टी बजाई। एक मिनट में ही दरवाजा खुल गया। सामने सादे कपड़ों में एक सुन्दर-आकर्षक लड़की खड़ी थी। सुबोध के मम्मी-पापा को वह पहली ही नज़र में भा गयी। पता नहीं सुबोध उससे शादी करने के लिए क्यों इतने नखरे कर रहा था। वह तो कभी के मान जाते।

हर्षित निगाहों से उसे देखते हुए सुबोध के पापा ने पूछा, “तुम अंजलि हो!”

अंजलि ने चौंककर उन्हें देखा। वह उन्हें नहीं पहचानती थी। चेहरे पर आश्चर्य के भाव लाते हुए वह बोली, “हां, परन्तु आप?”

“तुम हमें नहीं जानती हो बेटा, परन्तु हम तुम्हें जानते हैं। अच्छा, क्या तुम्हारे मम्मी-पापा घर पर हैं? हम उनसे मिलने आए हैं.”

अंजलि ने कहा, “आइए, अन्दर आइए!” उसके स्वर में शालीनता और विनम्रता थी। उन दोनों को ड्राइंगरूम में बिठाकर कहा, “मैं अभी उन्हें भेजती हूं.” कहकर वह अन्दर चली गयी।

अंजलि के पापा आए तो सुबोध के मम्मी-पापा ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया। उन्होंने उनको बैठने का संकेत करते हुए पूछा, “बैठिए, बताइए। मैंने आपको पहचाना नहीं?”

“हां, आप हमें नहीं जानते, परन्तु हम आपके बारे में जानते हैं। मेरा नाम चन्द्रकान्त है और ये मेरी पत्नी हैं, प्रभा। हम लोग लखनऊ से आए हैं। सबसे पहले तो हम आपसे माफ़ी चाहते हैं कि बिना किसी पूर्व सूचना के आपके घर आ गये, परन्तु यह अति आवश्यक था.”

“जी कहिए!” नवीन अभी तक असमंजस में थे।

“जी बात यह है कि,” चन्द्रकान्त ने कहना आरंभ किया, परन्तु फिर जैसे अचानक उन्हें कुछ याद आ गया हो, बात बदलकर बोले, “अच्छा होगा, यदि आप अपनी पत्नी और बेटा को भी बुला लें, क्योंकि मेरी बात आप सभी से सम्बन्धित है.”

नवीन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि यह क्या गोरखधन्धा था, फिर भी उन्होंने कोई प्रतिप्रश्न नहीं किया। अन्दर की तरफ मुंह करके बोले, “अंजलि बेटा, अपनी मम्मी को लेकर यहां आ जाओ.”

“जी पापा,” अंजलि की धीमी आवाज़ आई। थोड़ी देर में वह अपनी मां के साथ ट्रे में मिठाई और पानी के गिलास लेकर आ गईं। पापा के इशारा करने पर वह उनके बगल में बैठ गईं। उसकी मम्मी भी बगल के सोफे पर बैठ गईं। एक दूसरे का परिचय करवा गया।

चन्द्रकान्त ने बात आरंभ की, “इस बात का आप बुरा मत मानना कि बिना किसी परिचय के हम आपके घर आ गए हैं. हमारे समाज में सर्वप्रथम लड़कीवाले लड़केवालों के घर जाते हैं, फिर बात आगे बढ़ती है.” अंजलि के साथ-साथ उसके मम्मी-पापा भी चौंककर एक दूसरे को देखने लगे.

“इसमें हैरत की कोई बात नहीं है.” चन्द्रकान्त ने बात आगे बढ़ाते हुए स्पष्ट किया, “हम अपने लड़के के लिए अंजलि बिटिया का हाथ मांगने आए हैं. आशा है, आप मना नहीं करेंगे!”

“परन्तु भाई साहब! हम आपको जानते तक नहीं, फिर अचानक सीधे-सीधे यह रिश्ता...?” अंजलि की मां ने हिचकिचाते हुए कहा.

“हम एक दूसरे को नहीं जानते, परन्तु अंजलि और मेरा बेटा एक दूसरे को बहुत अच्छी तरह जानते हैं.” चन्द्रकान्त रहस्य की पतों का एक-एक करके खोल रहे थे.

“आपका बेटा?”

“हां, अंजलि और मेरा बेटा एक ही कम्पनी में काम करते हैं और जहां तक मेरा विश्वास है, दोनों एक दूसरे को प्यार भी करते हैं.”

प्यार! अंजलि ने चौंककर सामने बैठे दम्पति को देखा. दोनों उसे रहस्यभरी मुस्कराहट के साथ देख रहे थे. अंजलि के दिमाग में एक धमाका सा हुआ. कहीं ये सुबोध के मम्मी-पापा तो नहीं हैं? परन्तु वह कहां है? क्या इनके साथ नहीं आया? तो क्या उसी ने अपने मम्मी-पापा को यहां भेजा है? हां, यह हो सकता है. कल ही तो उसने फोन पर बात की थी और कहा था, ‘अंजू, मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूं.’ क्या यह उसकी कोई सोची-समझी योजना है? वह चकराकर रह गयी, परन्तु उसका हृदय अनायास रूप से तीव्र गति से धड़कने लगा था. इस धड़कन में एक मिठास थी और वह केवल सुबोध के बारे में सोच रही थी. क्या कुछ अप्रत्याशित घटनेवाला था उसके जीवन में? शायद हां, और जो भी होनेवाला है, वह सुखमय ही होगा, ऐसा उसे लग रहा था.

उसके पापा कह रहे थे, “परन्तु अंजलि ने हमें कभी कुछ बताया नहीं?”

“हो सकता है. आजकल के युवाओं का प्रेम और विवाह के प्रति दृष्टिकोण अलग होता है. वह प्रेम-सम्बन्धों को प्रमुखता देते हैं, परन्तु विवाह को नहीं. इसीलिए समाज में बिखराव पैदा हो रहा है.”

“हां, आपका कहना सच है.” नवीन ने कहा, “मुझे खुशी है कि आप मेरी बेटी का हाथ मांगने आए हैं, परन्तु हम अंजलि की सहमति के बिना और इच्छा

के विपरीत कुछ नहीं कर सकते. क्यों बेटा, तुम्हारा क्या कहना है? क्या इनके बेटे से तुम्हारा कोई सम्बन्ध है और तुम उसके साथ शादी की इच्छुक हो.”

अंजलि ने कहा, “परन्तु सुबोध क्यों नहीं आया?”

“वह आया है बेटा, नीचे सड़क पर खड़ा है. उसके मन में कोई संकोच है. कह रहा था, जब अंजलि और उसके घरवाले शादी के लिए राजी हो जाएंगे, तभी वह आएगा. अन्यथा वहीं से लौट जाएगा.”

अच्छा इतना घमण्ड और अहम्! अंजलि ने सोचा. स्वयं आकर उसका हाथ नहीं मांग सकता था.

“उसे अंदर बुला लीजिए. उससे बात करके हम किसी निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं.” नवीन ने कहा.

“मैं फोन करके उसे बुलाता हूं.” चन्द्रकान्त मोबाइल पर उसका नम्बर ढूंढने लगे.

“नहीं, आप रहने दीजिए. मैं उन्हें बुलाकर लाती हूं.” अचानक अंजलि ने उठते हुए कहा और किसी की प्रतिक्रिया जानने के पहले ही तेजी से बाहर निकल गयी.

सितम्बर माह के अन्तिम दिन थे, परन्तु भोपाल की गर्मी में कोई खास अन्तर नहीं आया था. उस समय दोपहर हो रही थी और धूप में तीखापन आ गया था. सुबोध पेड़ की छांव में खड़ा होकर धड़कते दिल से इधर-उधर ताक रहा था. बीच-बीच में चहलकदमी करते हुए अंजलि के घर की तरफ भी देख लेता था. फिर उदास मन से दूसरी तरफ देखने लगता था.

उसे पता नहीं चला, कब अंजलि उसके पीछे आकर खड़ी हो गई थी. अचानक उसने सुना, “यहां तक आने में तक्लीफ़ नहीं हुई, परन्तु यहां से घर तक आने में आपके पैर टूट रहे थे?”

“आं!” उसने चौंककर पीछे देखा. अंजलि खड़ी थी, एक दिव्य रूप के साथ! उसका जी धक् से रह गया. एक महीने बाद उसे देख रहा था. वह अनोखी और अनुपम लग रही थी. सुबोध का दिल चाहा कि उसे अपनी बांहों में समेट ले, परन्तु मन मसोहकर रह गया. वह दोनों सड़क के किनारे खड़े थे और उनके अगल-बगल से अनगिनत लोगों का आवागमन जारी था.

“मैंने आपके लिए घर के दरवाजे पर ताला नहीं लगा रखा था?” अंजलि ने आगे कहा.

“ओ हां!” सुबोध उसके व्यंग्य पर अचकचा गया, “बस...यूं ही!”

“हां, बस यूँ ही. आपके जीवन में सब यूँ ही हो जाता है, परन्तु आपकी हरकतों से दूसरों को कितना कष्ट पहुंचता है, इसके बारे में कभी सोचा है. इतनी छोटी-सी बात के लिए इतना बड़ा नाटक रचने की क्या आवश्यकता था? सीधे-सीधे कह देते तो क्या मैं न मानती?” उसने सुबोध का हाथ पकड़कर कहा, “चलो घर चलें. मुझे भी परेशान किया और खुद परेशान हुए.”

सुबोध ने मुग्ध होकर अंजलि को देखा, फिर आसमान की तरफ देखने लगा. आसमान बिल्कुल साफ-सुथरा था, बिल्कुल उन दोनों के मन की तरह सुन्दर और निश्चल! सुबोध को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं थी, न अपने पिछले व्यवहार के लिए सफाई देने की. उन दोनों के मन का सारा मैल और अविश्वास धुल चुका था. अतीत के दरवाजों में झांकने से भविष्य को सुखमय नहीं बनाया जा सकता है.

दोनों हाथ में हाथ डाले अंजलि के घर की तरफ बढ़ रहे थे. उनकी आंखों में भविष्य के सपने थे और उनका अतीत बहुत पीछे छूटता जा रहा था.



## कफ़रू

शहर के पुराने इलाके में कफ़रू लगा हुआ था. पांच दिन हो गए थे. वैसे तो कफ़रू के दौरान कोई दंगा-फसाद नहीं हुआ था, परन्तु अभी तक एहतियात बरती जा रही थी. शांति और जनता की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक भी था. कोई खतरा मोल नहीं लिया जा सकता था. प्रशासन चुस्त था और पुलिस की गश्त पूरे कफ़रूग्रस्त इलाके में रात-दिन जारी थी.

दंगाइयों का क्या बिगड़ना था? वह तो दंगे भड़काकर नौ दो ग्यारह हो गए. दंगे में मरे तो बेगुनाह ही. कोई पुलिस की गोली का शिकार हुआ तो कोई भीड़ की बेरहमी का. जिस दिन दंगा भड़का था, उसी दिन कुल चार लोगों की लाशें सड़कों पर बिछ गयीं थीं. बाद में कुछ छिटपुट घटनाएं घटी थीं, जिनमें दसियों लोग छुरेबाजी में घायल हो गए थे.

दंगा भड़कने का कारण किसी को पता नहीं था. जैसा कि आमतौर पर होता है, दंगे-फसाद अक्सर अफवाहों के कारण फैलते हैं. पांच दिन बीतने के बाद अब किसी को अफवाहों की भी याद नहीं थी. अब उनको याद थी तो केवल पेट की भूख. परेशानहाल परिवार के लोग एक-दूसरे को निरीह भाव से ताकते हुए बस अपने-अपने भगवान और खुदा से यही प्रार्थना कर रहे थे कि लोगों को सद्बुद्धि आए. फिर से कोई घटना न हो, कफ़रू जल्दी से हट जाए; ताकि लोग काम-धन्धे के लिए बाहर निकल सकें, घर में ज़रूरत की चीज़ें आ सकें. कुछ घरों में दाल-रोटी तो किसी प्रकार पक रही थी, परन्तु हरी सब्जी किसी के घर में नहीं आ रही थी, न दूध की एक बूंद. बच्चे दूध को तरस गए थे और बड़े-बुजुर्ग चाय के गरम-गरम एक प्याले को.

शहर के बाहरी इलाकों में कफ़रू नहीं था, परन्तु कफ़रूग्रस्त इलाके के लोग निकलकर वहां जाते कैसे? उस इलाके के चौक में, जहां दंगे की शुरुआत हुई थी,

पुलिस का सख्त पहरा था. चौक का इलाका सड़कों द्वारा चार भागों में बंटा हुआ था, परन्तु मज़हबी और रिहायशी दृष्टिकोण से वहां दो ही मोहल्ले थे. पूरब का इलाका मुस्लिम बहुल था और पश्चिम की तरफ हिन्दू रहते थे. दोनों ही मज़हब आमने-सामने रहते थे, परन्तु उनके बीच में सौहार्द्र के होते हुए भी कभी-कभी असामाजिक तत्वों द्वारा विघटन पैदा कर दिया जाता था और कभी झूठी, तो कभी सच्ची बातों का दुष्प्रचार करके उनके बीच घृणा, ईर्ष्या और द्वेष की अमिट दीवार खड़ी करने की कोशिश की जाती थी.

हिन्दु बहुल इलाके की अपेक्षा मुस्लिम बहुल इलाके में सम्पन्नता कम थी. वहां गरीबी की अंधेरी गलियां थीं, परन्तु जनसंख्या के हिसाब से उस इलाके के सभी घर सम्पन्न थे. वे लोग पसीना बहाते हुए जीवन के संघर्ष में व्यस्त रहते थे. दंगा-फसाद और लड़ाई-झगड़े की तरफ उनका ध्यान कम जाता था, परन्तु मज़हबी कट्टरपंथी और अमन-चैन के दुश्मन हर मज़हब में होते हैं. ऐसे लोगों को हंसते हुए लोगों को रुलाने में मज़ा आता है. मज़लूम लोगों के खून से वह अपना पेट भरते हैं और बेसहारा लोगों के आंसुओं को पीकर अपनी प्यास बुझाते हैं.

हिन्दु बहुल इलाके में सबसे सम्पन्न पाण्डेजी का परिवार था. उनका कुनवा भी बहुत बड़ा था. बड़े पांडेजी तो अब इस संसार में नहीं रहे, परन्तु उनके तीन बेटों, बहुओं और नाती-पोतों का भरा-पूरा परिवार था. सभी एक साथ रहते थे और परिवार के सभी सदस्यों का खाना एक ही चूल्हे में पकता था. परिवार के हिसाब से उनका मकान भी बहुत बड़ा था. लम्बे-चौड़े विशाल कमरों के बीच में बहुत बड़ा आंगन था. बाहर लम्बा-चौड़ा सहन था, जिसमें हजारों आदमी एक साथ बैठकर दावत उड़ा सकते थे. कहते हैं कि इस इलाके में सबसे पुराना मकान पाण्डेजी का ही है, इसीलिए उनके पास सबसे बड़ा मकान होने के साथ-साथ बहुत सारी खुली जगह भी थी.

पाण्डेजी का परिवार शहरी होते हुए भी ग्रामीण परम्परा और परिवेश का पोषक था. लम्बे-चौड़े सहन में उन्होंने गाय-भैंसों पाल रखी थीं, परन्तु वह दूध का कारोबार नहीं करते थे. सारा दूध घर के सदस्यों के खाने-पीने और मेहमानों की सेवा में लग जाता था. सब्जियां भी उगा लेते थे. प्राकृतिक और शुद्ध खान-पान पर पाण्डे परिवार का अधिक भरोसा था.

पाण्डे परिवार के सबसे बुजुर्ग सदस्यों में केवल एक बूढ़ी मां थीं, जिनकी आज्ञा परिवार के सभी छोटे-बड़े लोग मानते थे. उनके पति नहीं थे, परन्तु बेटे, बहुएं

और नाती-पोते सभी उनको पूरा आदर-सम्मान देते थे. छोटे-बड़े काम सभी उनकी सलाह से किए जाते थे. उनके सबसे बड़े बेटे रमाकान्त पाण्डे थे. वह दबंग किस्म के व्यक्ति थे, परन्तु उनकी दबंगई किसी को परेशान या कोई बुरा काम करने के लिए नहीं होती थी. वह दूसरों के सुख-दुख में काम आते थे. किसी को परेशान नहीं देख सकते थे, परन्तु परेशान करनेवाले की खबर भी ढंग से लेते थे. इसीलिए कुछ खास लोगों के बीच वह गुण्डा की संज्ञा से नवाजे जाते थे. पिता की मृत्यु के बाद चालीस वर्ष की उम्र में उन्होंने अब पाण्डे परिवार की बागडोर संभाली थी. वह पैतृक सम्पत्ति की देखभाल करते थे, जिनमें कई दुकानें और मकान थे, जो किराए पर चढ़े हुए थे.

दूसरे भाई का नाम उमाकान्त था. वह पढ़ने में कुशाग्र था. उसने बी.ए. करने के बाद विश्वविद्यालय के लॉ कॉलेज से एलएल.बी की डिग्री प्राप्त की थी. अब वह जिला न्यायालय में वकालत कर रहा था.

तीसरा भाई सूर्यकान्त था. उसने भी ठीक-ठाक पढ़ाई की थी. परास्नातक की डिग्री लेने के बाद वह एक स्थानीय कॉलेज में लेक्चरर हो गया था. तीनों भाई शादी-शुदा थे और सौभाग्य से सभी के एक ही लड़का और एक ही लड़की थी. परिवार में ऐसा संतुलन बहुत कम देखने में आता है.

कर्फ्यू के पांचवें दिन दिया-बत्ती का समय हो गया था. पाण्डे परिवार की महिलाएं खान-पान की व्यवस्था में व्यस्त थीं, नौकर अपने-अपने नियत काम कर रहे थे और दूसरे लोग अपनी-अपनी क्रियाओं में लगे हुए थे कि अचानक ही किसी ने अनुभव किया कि सूर्यकान्त का आठ वर्षीय बेटा घर में नहीं था. पहले तो सामान्य तौर पर उसे घर के अंदर ढूंढ़ा गया, सहन में तलाश किया गया, नौकरों से पूछा गया; परन्तु कोई नहीं बता पाया कि वह अचानक कहां चला गया था. शाम ढलने तक तो उसे घर के सारे बच्चों के साथ खेलते हुए देखा गया था, फिर अचानक वह कहां चला गया, किसी को पता नहीं चला. सभी परेशान हो गए.

चिन्टू थोड़ा चंचल स्वभाव का था, शरारती भी था. हमेशा बाहर जाने की जिद्द करता रहता था. पांच दिन से घर के अंदर बंद था. कोई और दिन होता तो घर के लोग इतना परेशान नहीं होते, परन्तु शहर में दंगा हुआ था. उनके इलाके में कर्फ्यू लगा हुआ था. दस कदम की दूरी पर मुस्लिम इलाका था. कहीं बाहर जाकर उनके इलाके में न चला गया हो. इसी बात की चिंता थी.

चिन्टू जब घर में नहीं मिला तो सबके माथे पर चिन्ता की लकीरें खिंच गयीं. सबके दिल दहल रहे थे, परन्तु ऊपर से सभी ने धैर्य का आवरण ओढ़ रखा था.



सबसे अधिक परेशान उसकी मां थी, जो आंखों में आंसुओं का सैलाब लिए चुपचाप खड़ी थी और इस आशा से घर के बड़ों को निहार रही थी कि वह अगला कदम क्या उठाएंगे। क्या कर्पूर में वह लोग बाहर निकल कर उसके बेटे को ढूंढने का प्रयत्न करेंगे।

रमाकान्त ने कहा, “लगता है, वह बाहर निकल गया है? शरारती है, घर में बैठा-बैठा ऊब रहा था। कहीं मुस्लिम इलाके में न घुस गया हो?”

“तो चलकर बाहर ढूंढते हैं। घर में चुपचाप बैठने से काम नहीं चलेगा。” दूसरे भाई ने कहा।

“हां, यहीं ठीक रहेगा। बाहर चौक में पुलिसवाले बैठे हैं, तुम उनसे बात कर लेना。”

सूर्यकान्त चुप था। दो बड़े भाइयों के होते हुए उसे अधिक सोचने की आवश्यकता नहीं थी। वह चिन्तू का बाप अवश्य था, परन्तु वह जानता था कि उससे अधिक चिन्ता उसके भाइयों और भाबियों को थी। जब सब लोग चिन्तू को ढूंढने के लिए बाहर निकलने लगे तो उसकी मां अपने को रोक नहीं सकी और दहाड़ मारकर रो पड़ी, “हाय मेरा लाल!”

बूढ़ी मां ने उसको डांटते हुए कहा, “बहू, धीरज रख। अपशकुन मत कर। ये लोग उसे ढूंढने ही जा रहे हैं। पहले ढूंढ कर आने तो दे。” उसकी भाबियों उसे संभालने में लग गयीं।

तीनों भाई एक साथ बाहर निकले। चौक अधिक दूर नहीं था। वहां सन्नाटे के बीच चार पुलिसवाले कुर्सियां डालकर बैठे थे। उनमें से एक दारोगा था। तीन लोगों को अपनी तरफ आते देखकर वह सभी चौकन्ने हो गए और उनमें से एक दूर से ही चिल्लाया, “कौन हो, कहां जा रहे हो? पता नहीं है, यहां कर्पूर लगा है?”

उमाकान्त ने जोर से कहा, “एक मिनट हमारी बात सुन लीजिए। हम बहुत बड़ी मुसीबत में फंस गए हैं。” वह लोग आगे बढ़ते रहे। पुलिस वाले मुस्तेदी से उनके पास आने का इंतजार करते रहे। वह पास आए तो उनमें से एक पुलिसवाला उनको पहचान गया, वह उसी बीट का सिपाही था। बोला, “अरे, ये तो पाण्डेजी हैं। वह बड़ा वाला मकान इन्हीं का है。”

उमाकान्त ने दारोगा को अपना परिचय दिया और सूर्यकान्त की तरफ इशारा करते हुए कहा, “मेरे छोटे भाई का बेटा अभी थोड़ी देर तक घर में था और अभी पता चला कि वह घर में नहीं है। घर का कोना-कोना देख डाला, परन्तु वह कहीं नहीं मिला। हमें डर है कि वह कहीं बाहर न निकल गया हो。”

“हमने तो इस तरफ किसी लड़के को आते-जाते नहीं देखा。” दारोगा ने विश्वास के साथ कहा, फिर उसने अपने साथियों से पूछा, “क्या तुमने किसी को देखा इधर?”

“नहीं साहब, दिन के उजाले में तो नहीं देखा। अंधेरे में चुपके से निकल गया हो तो नहीं जानते। छोटा बच्चा है, नज़रों से ओझल हो सकता है। या हो सकता है, किसी दूसरी तरफ चला गया हो。” उनमें से एक सिपाही ने कहा।

“हमें डर है कि अगर वह मुस्लिम इलाके में चला गया तो उसके साथ कुछ भी हो सकता है。” रमाकान्त ने पहली बार अपनी जुबान खोली। तीनों भाई आशाभरी नजरों से पुलिसवालों को देख रहे थे।

दारोगा सुलझा हुआ व्यक्ति था। उसने तीनों सिपाहियों को आदेश दिया कि वह मुस्लिम बहुल इलाके की अलग-अलग गलियों में जाकर बच्चे को ढूंढने का प्रयास करें और पाण्डे भाइयों से कहा कि वह अपने इलाके में बच्चे को खोजें। जिसको भी बच्चा मिल जाए, चौक में आकर उसे रिपोर्ट करे। वह वहीं पर रहकर सबके लौटने का इंतजार करेगा।

सभी अपने-अपने काम में लग गये। चिन्तू की खोज-बीन जारी थी, परन्तु वह किसी को दिखाई नहीं पड़ रहा था। छोटा बच्चा था, और वह स्वयं चलकर बहुत दूर नहीं जा सकता था। अगर किसी ने अगवा न किया हो तो यही कहीं आस-पास होगा। आशंका इसी बात की थी कि किसी मुसलमान के हाथों पड़ गया तो उसका जिन्दा बचना संभव नहीं था।

जब काफी देर तक वह नहीं मिला तो सभी लोग निराश और हताश हो गये। पाण्डे भाइयों का कलेजा मुंह को आने लगा। वह सभी लौट आए और चौक के बीच दारोगा के पास बैठकर विमर्श कर रहे थे कि आगे क्या कार्रवाई की जा सकती थी। किसी टोस नतीजे पर नहीं पहुंच रहे थे वे लोग। सभी चिन्ता में डूबे थे।

तभी अचानक एक चमत्कार हुआ।

चौक के बीचोबीच अचानक चिन्तू एक देवदूत की तरह प्रकट हुआ। वह मुस्लिम बहुल इलाके की एक गली से निकलकर आया था। वह अपने आप में मस्त था, जैसे किसी घटना-दुर्घटना की उसे कोई आशंका और चिन्ता नहीं था। निश्चल भाव से वह मदमस्त चाल से अपने घर की तरफ जा रहा था। उसे देखते ही पाण्डे भाई एक साथ चिल्लाए, “वह रहा चिन्तू, चिन्तू बेटा, कहां थे तुम?” वह सभी उसकी तरफ लपके।

सूर्यकान्त ने अपने बेटे को जोर से पकड़कर गोद में उठा लिया और बेतहाशा उसे चूमने लगा. बड़ा ही भाव-विभोर कर देनेवाला दृश्य था. सभी की आंखों में आंसू आ गये. कोई कुछ बोल नहीं पा रहा था. स्थिति सामान्य होते ही सूर्यकान्त ने उसे गोद से उतारकर नीचे खड़ा कर दिया. तब दारोगा ने उससे पूछा, “बेटा, तुम कहां गये थे?”

पुलिस को देखकर वह सहम गया, फिर अपने पापा को देखने लगा. उमाकान्त ने कहा, “मैं पूछता हूं.” वह घुटनों के बल जमीन पर बैठ गया और पूछा, “बेटा, तुम कहां चले गये थे. कब से तुम्हें ढूंढ़ रहे हैं. सभी लोग बहुत परेशान हो रहे थे?”

“डैडी,” वह अपने दोनों ताउओं को डैडी कहता था, “मैं खेलने के लिए बाहर निकला था, परन्तु कहीं कोई बच्चा खेलता ही नहीं. सब अपने-अपने घर में बैठे हैं. बाहर निकलते ही नहीं. पता नहीं क्या हो गया है?” उसने मासूमियत से बताया.

“तुम किसी के घर गये थे?”

“नहीं डैडी, मैं तो यूँ ही घूमता हुआ अपने दोस्तों को ढूंढ़ रहा था, परन्तु कोई मिला ही नहीं.”

“फिर...?”

“फिर सामने अहमद का घर मिला. उसके अब्बा तांगा चलाते हैं न्. मैं उनके घर में घुस गया कि अहमद मेरे साथ जरूर खेलेगा, परन्तु वह भी नहीं खेला.”

“क्यों?”

“वह बीमार है न्, डैडी, उसके घर में सभी बीमार हैं. उसका घोड़ा भी बीमार है.”

सभी लोगों ने एक दूसरे की तरफ प्रश्नवाचक निगाहों से देखा. किसी की समझ में नहीं आया कि क्या बात थी. रज्जब के घर के सारे लोग एक साथ कैसे बीमार पड़ गए थे. दारोगा ने आगे कहा, “और कुछ पूछिए, शायद कुछ बात पता चले.”

सूर्यकान्त ने कहा, “दारोगाजी, आपसे एक छोटा सा निवेदन कर रहा हूं. घर में चिन्टू को लेकर सारे लोग परेशान हो रहे होंगे. जितनी देर होगी, उतनी ही उनकी चिन्ता बढ़ती जाएगी. पहले घर चलते हैं. बस दो कदम पर ही है. आप लोग भी यहां बैठे-बैठे तंग और परेशान हो गये होंगे. अगर कष्ट न हो, तो हमारे घर पर चलें. एक कप चाय के साथ बिस्कुट खाएं और फिर सबके सामने चिन्टू से बात करके हालात की मालूमात भी कर लेंगे.”

बात दारोगा की समझ में आ गयी. उसने दो सिपाहियों को वहीं रहने का आदेश दिया और एक सिपाही के साथ पाण्डेजी के घर आ गया. चिन्टू को देखते ही घर की महिलाएं रो पड़ीं. ये खुशी के आंसू थे. चिन्टू के खोने पर आशंका और चिन्ता के जो आंसू उनकी आंखों में आए थे और बाहर निकलने के लिए कोरों पर लटके हुए थे, वह अनायास ही घुमड़कर बादलों की तरह बरसने लगे थे. इन आंसुओं में चिन्टू के लिए प्यार और स्नेह था तो भगवान के लिए लाख-लाख धन्यवाद! सच है कि आदमी दुख से ज्यादा सुख में रोता है. बशर्ते कि दुख अचानक ही सुख में बदल जाए.

चाय पीते हुए चिन्टू से बात होने लगीं. अब वह भी सामान्य हो गया था और बड़ी खुशदिली से सारी बातें बता रहा था.

“उन लोगों ने तुमसे कुछ कहा तो नहीं, मारा-पीटा तो नहीं.” सूर्यकान्त ने पूछा.

“नहीं डैडी, वह बेचारे तो इतने दुखी थे कि मुझे देखते ही रोने लगे.”

“रोने लगे, क्यों?”

“पता नहीं, परन्तु डैडी, अहमद की मां हैरानी से बोली, ‘अरे, यह तो छोटे पाण्डे का बेटा है. यहां कहां से आ गया?’ फिर अहमद के अब्बा से बोली, ‘यहां कफरू लगा है, कोई इसे हमारे घर में देखेगा तो बवाल हो जाएगा.’ मैंने पूछा, ‘अहमद कहां है? मुझे उसके साथ खेलना है.’ अहमद के अब्बा ने कहा, ‘बच्चा, वह तो बीमार है. उसे बहुत तेज बुखार है. अंदर लेटा है. हम लोग भी बुखार में पड़े हैं. बाहर कफरू लगा है. घर में खाने को कुछ नहीं है. सब लोग भूखे और बीमार हैं. बच्चा, तुम अभी अपने घर चले जाओ. जब अहमद ठीक हो जाएगा, तो तुम उसके साथ खेलना. अभी देखो, बाहर कोई नहीं है. कफरू लगा है. तुम्हारे पापा-मम्मी परेशान हो रहे होंगे. अब घर जाओ.’ अहमद के अब्बा जबरदस्ती मुझे बाहर जाने के लिए धकेल रहे थे, परन्तु डैडी मैं वहां से हिला तक नहीं. वह लोग बीमार थे. मैंने पूछा, ‘तो आप लोग इलाज क्यों नहीं करवाते?’” कहकर वह थोड़ी देर के लिए चुप हो गया.

“फिर...?” सभी लोग उत्सुकता से सांसें रोके चिन्टू की बातें सुन रहे थे. वह अपनी उम्र से ज्यादा समझदारी की बातें कर रहा था. सभी आश्चर्यचकित थे.

“डैडी, मेरी बात सुनकर अहमद के अब्बा रो पड़े. बोले, ‘बच्चा, क्या बताऊं? कफरू ने हमारा जीना हराम कर दिया. पांच दिन से तांगा बाहर नहीं निकला है.

घर में न खाने को कुछ है, न पैसे. पैसे भी होते तो किस काम में आते. बाहर तो नहीं निकल सकते. भूख से सभी बेहाल हैं. घोड़ा भी बिना घास-दाने के मरियल हो गया है. पता नहीं कर्पू कब हटेगा और कब हमारे हालात सुधरेंगे. अब तो बस मरने का इंतजार कर रहे हैं.' डैडी, इतने बड़े आदमी को रोते देखकर मैं हंस पड़ा. मैंने कहा, 'अरे, आप तो इतने बड़े हो, रो क्यों रहे हो? आपके पास खाने को नहीं है, तो मैं अभी अपने घर से लाकर देता हूं.' मैं घर पर खाना लेने ही तो आ रहा था. डैडी, आप उनके घर के लिए कुछ दीजिए न, मैं देकर आता हूं. बेचारे बहुत भूखे हैं." फिर वह अपने पापा की तरफ घूमकर बोला, "पापा, आप मेरे साथ चलना खाना लेकर, मैं अकेला इतने लोगों का खाना कैसे ले जा सकता हूं."

चिन्टू की भोली परन्तु समझदारी भरी बातें सुनकर सभी हैरान रह गये. औरतों की आंखों में आंसू आ गये. बड़ी मां ने तुरन्त कहा, "बेटा, आप सभी लोग अभी तुरन्त जाओ, और रज्जब के घर खाना देकर आओ." फिर उन्होंने पास खड़े नौकरों और बहुओं से कहा, "तुरन्त खाना बनाने की तैयारी करो."

दारोगा भी आखिर एक मनुष्य था. चिन्टू के मुंह से एक दर्दभरी कहानी सुनकर वह भी अभिभूत हो गया. उसकी आंखों की कोरें गीली हो गयीं.

बड़े पाण्डेजी ने कहा, "दारोगाजी, रज्जब के परिवार के लोगों के लिए कुछ करना होगा?"

उसने प्रश्नवाचक भाव से तीनों भाइयों को बारी-बारी से देखा, फिर पूछा, 'आप लोग क्या करना चाहते हैं?'

रमाकान्त ने कहा, "दारोगाजी, हम जानते हैं कि शहर में कर्पू लगा है और आप कर्तव्य के हाथों मजबूर हैं, परन्तु मानवता के नाते हम आपसे निवेदन करते हैं कि हमें कुछ करने दीजिए. मुझे विश्वास है कि आपके सहयोग से यह काम सरलता से पूरा हो जाएगा."

"लेकिन क्या करना चाहते हैं आप लोग?"

"बस, आपको अपने काम में थोड़ी-सी कोताही बरतनी पड़ेगी. रज्जब के परिवार को यहां बुला लाने की अनुमति दे दीजिए, लेकिन यह संभव नहीं होगा. चिन्टू के कथन के अनुसार उसके घर के सभी लोग बीमार हैं. शायद भूख की अधिकता के कारण बीमार हुए होंगे. ऐसी स्थिति में उनको यहां बुलाकर लाना ठीक नहीं होगा. उनके घर पर ही खाना पहुंचाना होगा."

"कैसे?" दारोगा ने समझते हुए भी नासमझ बनकर पूछा.

"हम अपने घर में खाना बनाकर, कुछ दवाइयों के साथ आपकी मदद से रज्जब के घर में दे आते हैं. वह मुसीबत में है और कोई उसकी मदद करनेवाला नहीं है. भगवान की दया से हमें उसके हालात का पता चल गया है. अब इस मुसीबत की घड़ी में उसकी मदद करने में आप हमारी मदद कीजिए. आपको केवल इतना ख्याल रखना है कि जब हम उसके घर जाएं और वहां से लौटें तो कोई अनहोनी न होने पाए. इसके बाद जब तक वह लोग ठीक नहीं हो जाते, प्रतिदिन हमें यही कार्य करने की अनुमति दे दीजिए. भगवान चाहेगा तो एकाध दिन में कर्पू उठ जाएगा. फिर रज्जब स्वयं अपने परिवार को संभाल लेगा."

दारोगा ने एक पल सोचा और फिर आत्मविश्वास से कहा, "आप निश्चित रहें. आप खाना बनाकर रज्जब के घर पहुंचा सकते हैं. सुरक्षा की मैं गारण्टी लेता हूं. कोई बात आएगी तो अधिकारियों को मैं जवाब दे दूंगा."

रमाकान्त ने हाथ जोड़कर कहा, "भगवान चाहेगा, तो ऐसी कोई नौबत नहीं आएगी. अच्छे काम का परिणाम भी अच्छा होता है."

यूं तो कर्पू के कारण बहुत सारे घरों के लोग मुसीबत में होंगे. उनके घरों में चूल्हा नहीं जल रहा होगा, परन्तु मनुष्य के सामने जो मुसीबत सबसे पहले सामने आती है, उसी का निवारण वह करता है. यही पाण्डे परिवार कर रहा था.

इधर ये बातें हो रही थीं और उधर बड़ी मां की देख-रेख में सब्जियां काटी जा रही थीं, आटा गूंथा जा रहा था. चूल्हे में आग जल चुकी थी. परिवार के सभी सदस्य हर्षोल्लास के साथ खाना बनाने के काम में जुटे हुए थे, जैसे स्वयं भगवान उनके घर में पधारने वाले थे. सबसे ज्यादा खुश तो चिन्टू था. बहुत दिनों बाद आज उनके घर में हंसी-खुशी का माहौल बना था, जैसे कोई बहुत बड़ा उत्सव मनाया जा रहा हो. बाकी बच्चे भी इस अनायास आई खुशी में बराबर के शरीक थे.

और सबसे ज्यादा खुश तो चिन्टू की मां थी. आटा गूंथते हुए उसे लग रहा था, जैसे चिन्टू ने आज दुबारा उसकी कोख से जन्म लिया था. उसका सारा बदन पुलक रहा था और वह खुशी से फूली नहीं समा रही थी.



## दायों के बीच

पिछले कुछ दिनों से यह उसकी नियमित दिनचर्या थी. शाम को कार्यालय से निकलने के बाद वह सामने वाले पार्क में जाकर कोने की एक बेंच पर बैठ जाता था और वहां टहलने वाले भांति-भांति के तथा हर उम्र के नर-नारियों की गतिविधियों को बड़े ध्यान से देखा करता था. इस क्रिया से उसके मन को बड़ा सुकून प्राप्त होता था और सुबह से शाम तक कार्यालय की किच-किच, उठा-पटक और बॉस की डांट-फटकार से जो कचरा तनाव के रूप में उसके मस्तिष्क में भर जाता था, वह पार्क में बैठने से धुएं की तरह क्रमशः बाहर निकलने लगता था और रात के अंधेरे में जब वह पूरी तरह शांत-मन हो जाता था तो चुपचाप अपना छोटा-सा बैग कंधे पर लटकाकर घर की तरफ चल देता था. घर की तरफ बढ़ते हुए फिर से उसके कदम ही नहीं, मन भी भारी होने लगता था, क्योंकि वह जानता था कि घर पहुंचने के बाद उसे घर की बहुत सारी ऐसी मुश्किलों और ज़रूरतों का सामना करना पड़ेगा, जिनका समाधान तत्काल उसके पास नहीं होता था.

घर में पत्नी की फरमाइशें थीं. हालांकि वह कोई बेज़ा फरमाइश नहीं करती थी, परन्तु घर के खर्चों में हाथ सिकोड़ने के बाद भी कोई ख़ास कमी नहीं आती थी और महंगाई प्रतिदिन शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भांति और गरीब की बेटी तरह बेलगाम बढ़ती ही जाती थी. सरकार महंगाई भत्ता साल में दो बार बढ़ाती थी, परन्तु आवश्यक वस्तुओं के दाम दिन-ब-दिन बढ़ते चले जाते थे. निम्न श्रेणी के सरकारी कर्मचारियों और दिहाड़ी मजदूरों को महंगाई की मार सबसे अधिक झेलनी पड़ती थी, क्योंकि भारतीय समाज के ढांचे में यही दो वर्ग ऐसे हैं, जो संघर्षशील होते हुए भी सुविधाविहीन होते हैं (यहां पर उन सरकारी कर्मचारियों की बात करना बेमानी है, जिनके मुंह में सदैव घी-शक्कर और सिर कड़ाही में होता है). इनकी तनख्वाह

हमेशा नहीं बढ़ती है और जब बढ़ती है तो वह भी ऊंट के मुंह में जीरे के बराबर होती है.

कार्यालय में काम का बोझ, उससे उपजा तनाव और घर की ज़रूरतों के बीच पिसता हुआ आम आदमी, एक ऐसा निरीह प्राणी बनकर रह जाता है, जिसके मन की व्यथा सुननेवाला न कार्यालय में उसका बॉस होता है, न घर में पत्नी. पत्नी भी तो अपने तनाव से घिरी हुई होती है. स्कूल से घर पहुंचते ही बच्चों की फरमाइशें आरंभ हो जाती हैं- कभी उनकी किताब फट जाती है, तो कभी कॉपियां जल्दी भर जाती हैं. पेंसिलें तो जैसे तोड़-तोड़कर खा जाते हैं और क्लम की स्याही इतनी जल्दी सूख जाती है कि जैसे गर्मी में बर्फ की तरह पिघल कर निब के रास्ते बाहर बह जाती है. इसके अतिरिक्त प्रत्येक माह स्कूल की तरफ से कोई न कोई मांग आ जाती है- कभी किसी मेले के आयोजन के लिए पैसा जमा करना होता है तो कभी किसी प्रदर्शनी के लिए. स्कूलवाले न जाने कितने प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित करते रहते हैं, जिनमें भाग लेने के लिए प्रवेश शुल्क के नाम पर बच्चों से 100 से लेकर 500 रुपये तक वसूल किए जाते हैं. यूं तो सभी प्रतियोगिताएं अनिवार्य नहीं होती हैं, परन्तु अगर कोई बच्चा उनमें भाग नहीं लेता है तो उसकी कक्षा अध्यापिका/ अध्यापक उसके नाराज़ हो जाती है या हो जाता है और फिर घरेलू परीक्षाओं में उसे अच्छे अंक नहीं प्राप्त होते हैं. उसके बच्चों के साथ अक्सर ऐसा होता है कि वह बहुत कम प्रतियोगिताओं में भाग ले पाते हैं, लिहाजा पढ़ाई में अच्छे होने के बावजूद वह बस औसत अंक ही प्राप्त कर पाते हैं. उसे इस बात से बहुत कुढ़न होती है, परन्तु उसके वश में भी तो कुछ नहीं होता. वश में होता तो वह भी बच्चों को अनाप-शनाप पैसा देकर फ़िजूल के क्रियाकलापों में भाग लेने देता और तब उसके बच्चे भी अच्छे अंक प्राप्त कर अगली कक्षा में प्रवेश करते.

बच्चों की इन ज़ायज़ फरमाइशों, जो उसे गरीबी के कारण नाज़ायज़ लगती थीं, का सामना पत्नी को ही करना पड़ता है और वह उनकी मांगों की पूर्ति किस प्रकार करती है, यह वही जानती है. वह तो सारा दिन दफ़्तर में रहता है. फिर भी अगर शाम को या छुट्टीवाले दिन बच्चे उससे कोई मांग करते हैं तो वह निरपेक्ष भाव से कह देता है, “मम्मी से कहो.”

“मम्मी से कहा था. वह कहती हैं कि उनके पास पैसे नहीं हैं, पापा को बोलो. और आप कहते हो कि मम्मी को बोलो. हम क्या करें?” बच्चे चिड़चिड़ा कर हाथ पटकते हुए कहते और रुआंसे हो जाते. वह निरुत्तरित रह जाता. जानता था, पत्नी

तभी बच्चों को ऐसा कहती है, जब वह हर तरफ से हताश और निराश हो जाती है और उसके पास कोई चारा नहीं रह जाता कि बच्चों की मांगों को पूरा कर सके तो वह टालने के लिए उनसे ऐसा कह देती हैं कि पापा से कहो.

बच्चे जब उससे इस तरह के सवाल करते तो वह हकीकत को जानते हुए भी पत्नी की तरफ सवालिया निगाहों से देखता. वह दूसरी तरफ देखने लगती. वह अच्छी तरह जानता था कि पत्नी के ऊपर निगाहों ही निगाहों में कोई सवाल उछाल देने से बच्चों की मांगें पूरी नहीं होनेवाली, तो भी वह एक पुरुषजन्म अधिकार का इस्तेमाल करता हुआ दिखाई देता है कि बच्चों और घर की ज़रूरतों को पूरा करना पत्नी का कर्तव्य है, पति का नहीं. परन्तु उसके अंदर इतना साहस नहीं होता कि शब्दों में अपने अनुचित अधिकार का प्रयोग करे. वह अक्सर चुप ही रह जाता है. पत्नी की निरीहता का उसे एहसास होता है, तभी तो...वरना अभावों में अक्सर वाक्-युद्ध से किसी का मन नहीं भरता.

यहां दोनों चुप रहकर अपनी घुटन को अंदर ही अंदर सहन करने का प्रयास करते रहते हैं.

जब तक उसके केवल दो बेटियां थीं और वह स्कूल नहीं जाती थीं, तब तक उसकी तनख्वाह से घर के सभी खर्च पूरे हो जाते थे. पति-पत्नी अपने जीवन से खुश थे; परन्तु बेटियों के बड़ा होते ही जब उन्हें आधुनिक चलन के अनुसार अपनी हैसियत से बड़े किसी पब्लिक स्कूल में मोटी रकम देकर दाखिला दिलाना पड़ा तो उसकी आंखों के आगे का उजाला धीरे-धीरे अंधेरे का काला रूप धारण करने लगा. खुशियां गमों में बदलने लगीं. पहले जो तनख्वाह भरी-पूरी लगती थी, वह स्कूल के खर्चों के कारण इतनी कम लगने लगी कि उसे लगता, उसे इतनी कम तनख्वाह क्यों मिलती है? हालांकि ऐसी बात नहीं थी. उसके सहयोगियों को भी उतनी ही तनख्वाह मिलती थी, जितनी उसको; परन्तु जब मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है तो उसे हमेशा यही लगता है कि उसकी आमदनी दूसरे व्यक्तियों की अपेक्षा काफी कम है.

उसकी परेशानियों में इज़ाफ़ा तब और हुआ जब भारतीय मानसिकता की विकृति के चलते दो बेटियों के होते हुए भी उसने एक बेटे की चाहत में अपनी दुबली-पतली, हड्डियों का ढांचा मात्र पत्नी को तीसरी बार गर्भवती बना डाला. एक तो पेट में बच्चा और दूसरे खान-पान में कमी के चलते वह काफी कमजोर और शक्तिविहीन हो गयी. दो बच्चियों को संभालना, उन्हें तैयार करके स्कूल भेजना जब

उसकी पत्नी के लिए भारी पड़ने लगा तो उसने अपनी छोटी बहन को कुछ दिनों के लिए अपने घर बुला लिया. बहन के आने से बच्चों और पत्नी की देख-रेख ढंग से होने लगी, परन्तु परिवार में एक अतिरिक्त व्यक्ति का खर्च उसके लिए भारी ही नहीं, कठिन होने लगा. बहन ने पत्नी के लिए कुछ पौष्टिक खाने की वस्तुओं के लिए कहा तो उसके दिमाग में चकराधिन्नी की तरह कुछ नाचने लगा.

बहुत सोच-विचार कर और दोस्तों से सलाह लेकर कि ऐसे मौकों पर क्या किया जा सकता है, उसने अपने भविष्यनिधि खाते से एक लाख रुपया निकलवा लिया. यह सारा पैसा पत्नी की डिलीवरी होने तक गर्मी में भाप की तरह उड़ गया. कुछ पैसा उधार भी लेना पड़ा.

परन्तु इतने पैसों का खर्च और कर्ज़ का बोझ उसे हवा की तरह हल्का लगा, जब उसकी पत्नी ने नियत समय पर एक गोल-मटोल गोरे से बच्चे को जन्म दिया. कुछ पल के लिए वह अपने सारे गम भूल गया. दो-चार दिन तब वह बहुत उल्लास में रहा, परन्तु अस्पताल से पत्नी के घर आते ही कुछ अन्य खर्चों ने घर में पैर पसार लिए. जच्चा-बच्चा के खर्च कम नहीं थे, पहले वाले खर्चों अपनी-अपनी जगह पर तैनात थे. उसकी आमदनी का स्रोत एक था, परन्तु खर्च के रास्ते अनेक थे. ज़रूरतें और उनके खर्चें आंख मूंदकर उसके सिर के ऊपर आकर बैठते जा रहे थे. बेटा होने की खुशी से उत्पन्न उसके चेहरे की मुस्कराहट धीरे-धीरे गायब हो गयी. अब तो हालत यह थी कि वह अपना चेहरा आइने में देखता तो लगता कि उसकी सारी लुनाई ही खत्म हो गयी है. उम्र के पहले ही पड़ाव में वह बुढ़ापे के कगार पर आकर खड़ा हो गया है.

बच्चा कुछ बड़ा हो गया और पत्नी के शरीर में कुछ ताकत आ गयी कि वह घर के रोजमर्रा के कामों को धीरे-धीरे अंजाम दे सके, तो बहन ने भी अपने घर जाने की घोषणा कर दी. बहन ने ज़रूरत के समय उसके घर को अच्छी तरह संभाला था, बच्चों की पढ़ाई का कोई हर्ज़ा नहीं हुआ था, तो अब बहन की विदाई के समय उसे खाली हाथ नहीं विदा कर सकते थे. परन्तु उसके हाथ खाली थे, फिर भी पारिवारिक और सामाजिक धर्म का पालन करना ही था, अतएव उसने एक सहकर्म से दस हजार रुपये उधार लेकर बहन के लिए कुछ कपड़े-लत्ते खरीद लिए. रस्म के मुताबिक तो कोई गहना-जेवर देना चाहिए था, परन्तु अभी उसकी जेब इसकी इज़ाज़त नहीं देती थी. उसने थोड़ा-बहुत सामान देकर खिसियानी हंसी के साथ बहन को इस वायदे के साथ विदा किया कि बच्चे के मुण्डन-संस्कार में अवश्य कोई कीमती चीज़ देगा.

बहन क्या उसकी वास्तविक आर्थिक स्थिति से अवगत नहीं थी, उसी परिवार में वह पैदा हुई थी, कठिन पारिवारिक परिस्थितियों में पलकर बड़ी हुई थी और उन्हीं परिस्थितियों में विदा होकर ससुराल गई थी. तो क्या अब वह अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों के दुःखदायी दिन भूल गयी थी, नहीं...अभी भी लगभग छः महीनों से वह भाई के घर रह रही थी. पहले और अब कि स्थितियों में कोई बहुत अधिक परिवर्तन नहीं हुआ था. भाई की बात सुनकर बोली, “भैया, कैसी बात कर रहे हो? क्या मैं यहां कुछ लेने के लिए आई थी? भाभी की सेवा करना और ज़रूरत के वक्त भाई के काम आना हर बहन का फर्ज है. यह मेरे लिए गर्व की बात है कि मैं भैया-भाभी की सेवा कर सकी. मैंने पुण्य ही कमाया है, फिर यहां लेने-देने की बात कहां से आ जाती है?”

“दीदी, मैं जानती हूं कि तुम्हारा दिल बहुत बड़ा है. ननद से बढ़कर तुम मेरे लिए छोटी बहन जैसी हो, परन्तु भाभी और भैया का भी तो तुम्हारे प्रति कोई कर्तव्य बनता है. उसी नाते...” उसकी पत्नी ने ननद को गले लगाते हुए कहा.

“आप दोनों का आशीर्वाद ही मेरे लिए बहुत है. आपके आशीर्वाद से ही मैं अपनी ससुराल में सुखी हूं.” बहन ने अभिभूत होकर कहा. उसकी पत्नी की रुलाई फूट पड़ी तो उसकी बहन भी रोने लगी. बच्चे कौतूहल और अचरज भरी आंखों से सभी को देख रहे थे. विदाई के ऐसे करुण दृश्य को देखकर उसकी आंखें भी भीग गयीं और उसने मुंह घुमाकर अपने आंसुओं को छिपा लिया.

घर में अभाव की चादर लम्बी से और ज्यादा लम्बी होती गयी. आवश्यकताएं बिना सीढ़ियों के ऊपर की तरफ चढ़ती चली जा रही थीं और एक दिन ऐसा लगा कि आसमान छूने लगी हैं. घरेलू परेशानियों से छुटकारा नहीं था. आवश्यकताओं में कटौतियां होती ही रहती थीं. पर उसने और उसकी पत्नी ने हमेशा कोशिश की कि बच्चों की ज़रूरतों में कम से कम कटौती हो. स्वयं के लिए भले ही दो साल में उसने एक जोड़ी शर्ट-पैंट बनवाई और पत्नी ने भले ही साल में केवल एक साड़ी करवा चौथ में खरीदी हो, परन्तु बच्चों की ज़रूरतों में कटौतियां करके कैसे गुजारा हो सकता था. उन्हें अभाव का दंश न झेलना पड़े, इसके लिए वह दोनों दिन रात प्रयत्नशील रहते थे.

इन्हीं परिस्थितियों के बीच से गुजरते हुए उसने कुछ समय के अपने लिए मानसिक सुख का रास्ता तलाश लिया था. प्रत्येक शाम को ऑफिस से निकलकर वह सीधे घर न जाकर पार्क में बैठ जाता था. यह सिलसिला तब शुरू हुआ था,

जब उसका बेटा भी स्कूल जाने लगा था. दो बेटियों की शिक्षा के भार से झुका हुआ उसका शरीर जैसे एक भारी पत्थर के नीचे दब गया था. यह पत्थर भी उसकी कमर के ऊपर गिरा पड़ा था. वह हिलना तो दूर कराह भी नहीं सकता था.

पार्क की दुनिया घर-परिवार की दुनिया से पूरी तरह भिन्न थी. यहां रंग-बिरंगे, हंसते-खिलखिलाते लोग थे- मर्द-औरतें, लड़कियां और बच्चे. यहां कोई किसी से मांग नहीं करता था. बस इस तरह चलता-फिरता, दौड़ता और खेलता-कूदता था जैसे उन्हें कभी भूख नहीं लगती थी, किसी चीज़ की उन्हें ज़रूरत नहीं महसूस होती थी. बस मस्ती से पार्क के स्वच्छन्द जीवन का आनन्द उठाना ही उनके जीवन का एकमात्र ध्येय था. यहां न कोई अभाव था, न कोई कष्ट. सभी खुश दिखते थे, जैसे यही स्वर्ग हो.

पार्क के एक कोने की बेंच पर बैठकर वह निरंतर देखता रहता था, उन मटकों जैसे मोटे कूल्हेवाली औरतों को, जो टहलने और अपने बदन की चर्बी की मोटी परतों को घटाने के बजाय पार्क की नर्म गुदगुदी घास पर दस-पांच औरतों के बीच बैठकर मजमेबाजी करती थीं और बिना रुके, बिना किसी की तरफ देखे अपने घर-परिवार, पास-पड़ोस और न जाने कहां-कहां की कभी न खत्म होनेवाली बातों में मशगूल रहती थीं. इन औरतों के मोटे थुल-थुल बदन को देखकर लगता था, जैसे उन्होंने अपने जीवन में खाने और सोने के अलावा कोई काम नहीं किया था. घर में महरी और बहुओं से काम लिया होगा और बैठे-बैठे बस उन्हें डांटने के लिए ही अपनी जुबान हिलायी होगी. इसी निकम्मेपन की निशानियां आज उनके मोटे शरीर में लटकती हुई दिखायी देती थीं और डांटते रहने से उन्हें बक-बक करने की ऐसी आदत पड़ गयी होगी, जो आज भी पार्क के बीच दिखायी दे रही है.

एक उसकी बीवी है, जिसे देखकर अक्सर उसे ग़लतफ़हमी हो जाती है कि क्या सचमुच वह किसी ऐसे घर की पत्नी है, जहां सुबह-शाम दो वक्त की रोटी नसीब होती होगी. वह एक सूखे खेत की कमजोर पैदावार जैसी लगती थी. उसके चेहरे पर औरतों जैसी चिकनाई शादी के कुछेक साल तक ही रही थी. अब तो उसके हाथ-पैर सूखकर लकड़ी हो गये थे और पेट पीठ से चिपककर किसी कागजी रोटी की तरह दिखता था. तीन बच्चों की देखभाल और घर की रोजमर्रा की चिख-चिख में उसने अपने शरीर का कभी ख्याल नहीं रखा और वह दिन-ब-दिन सूखती चली गयी. गनीमत यही रही कि उसके सास-ससुर नहीं थे, वरना इतने सारे लोगों के बीच वह एक चौथाई भी न रह जाती. आज वह कम से कम आधी तो बची ही थी.

पार्क में वह उन सजी-संवरी औरतों को भी टहलते हुए नहीं, बल्कि लगभग दौड़ते हुए देखता था, जो शादी के बाद एक-दो बच्चों की मां बन गयी थी और अब उनका शरीर कुछ मोटा-थुलथुला हो गया था. अब उन पर जीन्स और टॉप नहीं फबते थे. इसलिए वह बच्चों को एक तरफ खेलता छोड़कर टहलते हुए फिर से छरहरी बनने के प्रयास में लगी रहती थीं. ये औरतें चेहरे-मोहरे से अभी भी सुन्दरता के मापदण्ड पर खरी उतरती थीं, परन्तु जैसे ही किसी की नज़र उनके चेहरे से फिसल कर बदन के बाकी अंगों पर पड़ती थी, तो सुन्दरता के सभी भ्रम टूटकर बिखर जाते थे.

इसके अतिरिक्त पार्क में वह औरतें भी घूमने-फिरने के लिए आती थीं, जो नई-नवेली शादी करके अपने पिया के घर आई थीं. वह इसलिए टहलने के लिए निकलती थीं, क्योंकि उनको पता था कि अगर सारा दिन घर में बैठी रहें, तो एक दिन अपनी छरहरी काया खो देंगी. एक बच्चा होने के बाद तो यही होनेवाला था, इसलिए अभी कुछ दिनों तक वह अपनी शारीरिक सुन्दरता को बरकरार रखना चाहती थीं. ऐसी औरतों के पति अक्सर उनके साथ होते थे और वह टहलने से ज्यादा एक दूसरे के बदन से चिपकने में ज्यादा व्यस्त दिखाई पड़ते थे. अपने पति के बदन से चिपकती हुई औरतें शादी के पहले बिताए गए पलों को याद करके अक्सर भूल जाती थीं कि वह अपने पति से चिपक कर चल रही हैं. ऐसे वक्त पर उन्हें अपने प्रेमी याद आ जाते थे.

बड़ी बारीकी से इन औरतों को देखता हुआ वह अक्सर सोचता रहता था कि नवव्याहताएं इसलिए अपने पति के बदन से चिपकने का प्रयास करती हैं, ताकि उसके पति को कहीं से ये न लगे कि शादी के पूर्व वह ऐसा ही अपने प्रेमी के साथ करती रही हैं, और आज उसके साथ विरक्ति का भाव दिखा रही हैं. शादी के पूर्व जो प्यार ये औरतें अपने प्रेमियों के ऊपर लुटा चुकी होती हैं, उसी की यादगार में उतना ही प्यार सरेआम वह पति के ऊपर उड़लने से पीछे नहीं रहती; बल्कि कई बार तो ऐसा लगता है, कि अपने पति के ऊपर वह प्यार की घटाओं की फुहारें नहीं छोड़ रही, बल्कि प्यार का नाटक कर रही हैं और नाटकीय प्यार हमेशा दर्शनीय होता है. प्यार किसी पार्क या रास्ते में दिखाने की चीज़ नहीं होती है. यह मन की ऐसी अनुभूति है, जो एकांत में ही तन-मन को आनंद देती है.

पार्क के खुले मैदान में कुछ बड़ी उमर के लड़के क्रिकेट खेलने में मस्त रहते. उनकी आंखों में सचिन तेंदुलकर, महेन्द्र सिंह धोनी, विराट कोहली और गौतम गंभीर बनने के सपने होते थे, इसलिए पार्क में बिखरे अन्य रंगीन सपनों की तरफ उनका

ध्यान नहीं जाता था. परन्तु कितने अफसोस की बात है कि इन लड़कों की आंखों में ध्यानचंद, परगट सिंह और धनराज पिल्लै बनने के कोई सपने नहीं होते थे. आधुनिक सभ्य समाज में सबसे चटक रंग पैसों का होता है और इसी रंग में सब इस कदर डूब जाते हैं कि दुनिया के बाकी रंग उनके लिए फीके हो जाते थे. जबकि अन्य रंगों के बीच भी अथाह खुशियां छिपी होती हैं. इन लड़कों की आंखों में विश्वनाथन आनंद, प्रकाश पादुकोण आदि बनने के भी सपने नहीं होते थे और लड़कियों की आंखों में इस तरह के सपने तो भूलकर भी नहीं आते थे, क्योंकि पार्क के अंधेरे कोनों में वह जो खेल खेलती थीं, उस खेल का इन खेलों से बहुत बड़ा वैर होता है.

पार्क के एक कोने में बच्चों के मनोरंजन और खेलकूद के लिए यंत्र लगे हुए थे. वहां सबसे अधिक चहल-पहल रहती थी. बच्चे खेलते थे तो उनकी माताएं या बाप उनके आसपास ही रहते थे कि खेलते-कूदते कहीं उनको चोट न लग जाए. इन बच्चों को देखते हुए उसे अक्सर कोपित होती थी कि वह अपने बीबी और बच्चों को कभी कहीं घुमाने नहीं ले गया, कभी बाज़ार में भी लेकर नहीं गया. हाट-बाज़ार का सारा काम बीबी ही करती रहती थी. बच्चों ने कभी जिद् की तो वह अक्सर कोई न कोई बहाना बनाकर टाल जाता था कि बाद में कभी चलेंगे. उसकी टालने की आदत को बच्चे बखूबी पहचान गये थे और अब तो उन्होंने उससे कुछ कहना और मांगना बिलकुल बंद कर दिया था.

हां, महीने में एक बार जिस दिन उसकी तनख्वाह होती थी, वह तीन चाकलेट और चिप्स या कुरकुरे के तीन पैकेट ले जाना कभी न भूलता. बस इतना ही प्यार एक महीने में वह बच्चों को दे पाता था. बाकी प्यार वह अपनी मां से वसूल करते थे, या नहीं करते थे, उसने कभी जानने की कोशिश नहीं की. पार्क में खेलते-कूदते और अपने मां-बाप के साथ हंसते-बोलते बच्चों को देखकर उसके मन में एक हीनभावना जाग उठी और वह अपराधबोध से ग्रस्त हो गया. वह कैसे अपने बच्चों के प्रति इतना निष्ठुर और कठोर हो सकता था. अभाव सबके जीवन में होते हैं, कष्ट सभी को व्याप्त होते हैं, कौन व्यक्ति बिना तकलीफ़ के जीवन गुजारता है. आधी से अधिक दुनिया के लोग गरीब हैं, तो क्या वह हंसते-बोलते नहीं हैं, जीवन का आनंद नहीं उठाते?

उसके मन में एक कचोट सी उठती, परन्तु वह सोचने के अतिरिक्त और कुछ न कर पाता कि वह अपने बच्चों की खुशी के लिए क्या करे?

पार्क में हंसते-खिलखिलाते बच्चों को देखकर वह भावुक हो जाता और उसके अपने बच्चे उसके दिमाग में आकर बैठ जाते तो वह अपना ध्यान दूसरी तरफ करने के लिए जवान और सुन्दर लड़कियों की तरफ देखने लगता. पार्क में टहलने आनेवाली बहुत सारी जवान और सुन्दर लड़कियां होती थीं, जो या तो अपने प्रेमियों के साथ आती थीं और सबसे अलग हटकर कोनों में बैठी होती थीं या कुछ अकेली लड़कियां होती थीं जो केवल टहलने आती थीं, परन्तु कान में इयर फोन लगाकर या तो गाने सुनती थीं या फिर किसी से लगातार बातें करती रहती थीं. यह लड़कियां उम्र के ऐसे पड़ाव पर होती हैं कि अगर अपने प्रेमी से बात न करें, तो उनका आसमान खो जाता है, पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक जाती है और उन्हें भरा-पूरा संसार भी सूना वीरान लगने लगता है. उनके आसपास या मन में अगर उनका प्रेमी है, तो उनका संसार बहारों से गुलजार है; वरना सब कुछ श्मशान है. जिन युवतियों के हृदय में प्यार का अथाह सागर उमड़ा पड़ा रहा हो और उनको अपनी बांहों में समेटने के लिए लड़कों की कोई कमी न हो, उनके लिए मां-बाप और भाई-बहन का कोई अस्तित्व नहीं होता है.

शाम जब अपनी चादर फैलाकर रात को निमंत्रण देने लगती तो वह देखता कि अचानक कहीं से तीन-चार दुबली-पतली चौदह-पन्द्रह साल के वय की लड़कियां पार्क में प्रकट हो जाती हैं. वह बेचैनी से मोबाइल पर किसी से बातें करती हैं. उनके हाव-भाव और शरीर की हरकतों को देखकर उसे लगता कि वह जवान होने के लिए कुछ अधिक ही बेताब दिखती हैं और आश्चर्यजनक रूप से थोड़ी देर में ही उतनी ही संख्या में कुछ उन्हीं की उमर के लड़के वहां प्रकट होते और वह सब लड़कियां एक-एक लड़के के साथ पार्क के अंधेरे कोने में खो जातीं. वह अपने सिर को घुमाकर इधर-उधर देखने का प्रयास करता, परन्तु तब तक रात घनी हो जाती थी. पार्क में बहुत ऊंचे-ऊंचे घने पेड़ थे और उनके नीचे घना अंधेरा होता था, जहां तक लैम्पपोस्ट की रोशनी नहीं पहुंच पाती थी. अतः वह नहीं देख पाता था कि वह लड़के-लड़कियां कहां बैठे हैं और आपस में क्या कर रहे हैं?

आधुनिक संस्कृति की विकृति पर उसे अफसोस होता.

खैर, पार्क के तमाम रंग थे और दो-तीन घंटों में वह सारे रंग अपनी आंखों के रास्ते अपने दिलो-दिमाग में भर लेता. वह अपने को तरोताज़ा महसूस करता, परन्तु जब उसके कदम घर की तरफ उठते तो वह फिर एक घनीभूत पीड़ा से भर जाता. उसका ध्यान अपने बच्चों की तरफ चला जाता. वह उनके बारे में सोचने

लगता, क्या वह अपने बच्चों को प्यार करता है? उसे स्वयं समझ में नहीं आता कि क्या वह सचमुच अपने बच्चों को प्यार करता है. उसकी हरकतों से कभी ऐसा नहीं लगा. छुटपन में कभी-कभी उन्हें गोद में उठाकर चुमकार लेना ही क्या प्यार होता है? उसने उनकी ज़रूरतों की तरफ कभी ध्यान नहीं दिया, उनकी पढ़ाई के बारे में कभी नहीं पूछा, उनको पास बिठाकर कभी कोई हंसी-मज़ाक नहीं किया, कोई किस्सा कहानी नहीं सुनाई, उन्हें प्यार से दुलारकर अपने पास नहीं सुलाया. रात होते ही बस इसका इंतजार किया कि पत्नी बच्चों को सुलाकर उसके पास आकर लेट जाए और वह अपनी ज़रूरत पूरी करके पत्नी को परे धकेलकर खुद आराम से खुरंटे भरता हुआ सो जाए.

पार्क में बैठकर दूसरे लोगों की गतिविधियों को देखता हुआ अगर वह कुछ सुकून प्राप्त करता था तो अब उसके मन में अपने बच्चों को लेकर अपराधबोध भी जागने लगा था. यह सच है कि उसने अपने बच्चों के प्रति बहुत ज्यादा की है, उनकी सारी ज़रूरतों को पत्नी के ऊपर डाल दिया. उसने उन्हें अनाथ बच्चों की तरह अपने ही घर में अकेला छोड़ दिया कि वह अपने पिता का प्यार भी अपनी मम्मी से हासिल करें. कैसा बाप है वह? एक सरकारी नौकर है, इतनी कम तनखाह भी नहीं पाता है. लाखों-करोड़ों लोग ऐसे हैं, जो उससे कम तनखाह पाते हैं, परन्तु उससे ज्यादा खुश रहते हैं. क्या यह दुःख, तकलीफ़ उसकी अपनी ओढ़ी हुई नहीं है?

वह जान-बूझकर अपने कर्तव्यों से बचता रहा है. वह एक निकम्मा और काहिल व्यक्ति है जो जिम्मेदारियों से बचता फिर रहा है. अपने ही बच्चों को उसने अनाथ जीवन जीने के लिए मजबूर कर दिया. उसके मन में जैसे हथौड़ियां बजने लगतीं और वह तिलमिला जाता.

पहले जहां पार्क में बैठने से उसे सुकून मिलता था, अब दूसरे ही भाव उसके मन को कचोटने लगते. हर पल उसके दिमाग में अपने बच्चे ही दिखाई देते, रोते-बिलखते, और वह तड़प जाता. उसकी निगाहें पार्क में खेल-कूद रहे बच्चों पर आकर अटक जाती. क्या वह अपने बच्चों को पार्क में घुमाने भी नहीं ला सकता? इसमें तो कोई पैसा नहीं खर्च होता? बस एक छुट्टी की ही तो दरकार होती है. वह तो हफ्ते में दो दिन उसे मिलती हैं...शनिवार और इतवार. हां, बच्चों को केवल इतवार की छुट्टी होती है. तो क्या इतवार को वह अपने बच्चों को घुमाने के लिए किसी पार्क में नहीं ले जा सकता? किसी मंदिर नहीं ले जा सकता? साल-छह महीने



में हाट-बाज़ार नहीं घुमा सकता? इसमें कौन से अधिक पैसे लगते हैं? हा! धिक्कार है उसे? वह कौन सी काल्पनिक दुनिया में अपने अभावों का रोना लेकर जी रहा है?

पार्क में जितने हंसते-मुस्कराते हुए लोगों को वह देखता है, क्या उनके जीवन में कोई दुख और तक्लीफ़ नहीं होगी? क्या उनके बच्चों को ज़रूरतें नहीं होंगी? क्या किसी चीज़ को लेकर वह अपने बच्चों को मना नहीं करते होंगे? ज़रूर करते होंगे, अभाव और कष्ट जीवन के अभिन्न अंग हैं. वह सभी के जीवन में एक प्रकार से चलते हैं. तो फिर वह इन्हीं लोगों की तरह अपने बच्चों और बीवी के साथ खुश क्यों नहीं रह सकता?

अचानक उसने सोचा, क्या वह पलायनवादी प्रवृत्ति का है? क्या वह वास्तविकता का सामना करते हुए डरता है...? उसके अन्दर से एक आवाज़ आई, हां, वह निकम्मा और कायर है. वह अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ से कांप उठा. सचमुच, वह एक कायर व्यक्ति है. उसे याद आता है कि बचपन में जब से उसे होश आया था, मां-बाप ने उसे बहुत लाड़-प्यार से पाला था. उसकी मां उसे कोई काम नहीं करने देती थी, बाप भी उसे कुछ नहीं कहता था. दोनों बस उसे पढ़ने के लिए कहते थे. वह बड़ा हो गया और कॉलेज जाने लगा, तब भी मां ने उससे घर-बाहर का कोई काम नहीं करवाया. परिणामतः वह निकम्मेपन का शिकार होता गया, कामचोरी उसके मन में बस गयी. जिम्मेदारियों का बोझ उसके ऊपर कभी नहीं डाला गया. उसे जानने वाले लोग तो आश्चर्य करते हैं कि वह बी.ए. तक पढ़ कैसे गया? यह भी शायद भाग्य का खेल था, वरना वह तो किताब लेकर केवल पढ़ने का बहाना करता था.

बी.ए. करने के बाद वह नाकारा बैठा था तो किसी रिश्तेदार ने उसे टाइप सीखने के लिए प्रोत्साहित किया. टाइप सीखने के बाद उसी ने उसका फार्म कर्मचारी चयन आयोग की टाइपिस्ट-कम-क्लर्क की परीक्षा के लिए भरवा दिया. टाइपिंग और थोड़ी बहुत सामान्य जानकारी की बदौलत वह एक सरकारी दफ्तर में क्लर्क हो गया था. रिश्तेदार ने अगर रास्ता नहीं दिखाया होता, तो आज वह सड़क पर बैठकर भीख मांग रहा होता या फिर किसी दूकान में खुदरा सामान बेच रहा होता.

आज अपने बचपन के निकम्मेपन और कायरता की वजह से अपने परिवार की जिम्मेदारियों से भागता फिर रहा है. केवल इसलिए कि घर की सामान्य ज़रूरतों को पूरा करने की उसकी क्षमता नहीं है, या जिम्मेदारी का नाम लेते ही उसके होश उड़ जाते हैं और उसके पांवों तले ज़मीन खिसक जाती है. वह अभाव से उतना

दुखी नहीं है, जितना अपनी गैरजिम्मेदाराना हरकतों की वज़ह से...सोचता हुआ उसका मन बहुत बेचैन हो गया.

गौतम बुद्ध को एकांत वृक्ष के नीचे बैठकर ही ज्ञान प्राप्त हुआ था. और आज उसे पार्क के एक कोने में बैठकर भांति-भांति के लोगों को देखकर अपनी जिम्मेदारी का एहसास हुआ था.

हर आदमी अपने दायरे में सिमटा हुआ है, परन्तु उसी दायरे में अगर उसके लिए दुख हैं, तो सुख भी हैं. यह व्यक्ति के ऊपर निर्भर करता है कि वह अपने दायरे में दुख को लपेटकर रोता है, या सुख की चादर ओढ़कर सोता है.

जीवन है तो समस्याएँ हैं, समस्याएँ हैं तो संघर्ष है और संघर्ष करते हुए जीवन की समस्याओं से निबटना ही तो जीवन है. इस जीवन में हर मौके पर, कष्ट और अभाव में भी, मनुष्य खुश रहने के रास्ते ढूँढ़ लेता है तो क्या वह संघर्षमयी जीवन व्यतीत करते हुए अपने प्यारे-प्यारे तीन बच्चों और दिन भर बच्चों की मांगों और घर के कामों के बीच पिसती हुई पत्नी के साथ खुश नहीं रह सकता. क्यों नहीं रह सकता? सोचकर उसके मन में अतिरिक्त उत्साह का संचार हुआ और वह मन ही मन कुछ निर्णय लेता हुआ वह घर की तरफ चल पड़ा.

उस दिन घर पहुँचकर सबसे पहले उसने पत्नी से पूछा, “बच्चे सो गए क्या?”

पत्नी ने घोर आश्चर्य से उसे देखा. उसकी आंखों में अविश्वास के भाव तैर रहे थे. पत्नी की निगाहों का तेज वह बर्दाश्त नहीं कर सका और दूसरी तरफ देखने लगा. पत्नी चुपचाप किचन की तरफ चली गई, तो वह चुपचाप बच्चों के कमरे में जाकर उन्हें इस तरह देखने लगा, जैसे कई जनम के बाद वह स्वर्ग से उतर कर आया हो और आज अपने बच्चों को मासूमियत के साथ सोता हुआ देखकर भावुकता और रोमांच से उसकी आंखें भीग गयी थीं. वह काफी देर तक गीली आंखों से उन्हें निहारता रहा और जब उसकी आंखें धुंधलाने लगीं तो उसने कमीज से अपनी आंखें पोछ लीं. तभी पीछे से उसकी पत्नी ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया और बोली, “आपकी तबीयत तो ठीक है?”

वह मुड़ा और फफक कर एक मासूम बच्चे की तरह रो पड़ा. उसने अपना सिर पत्नी के कंधे पर रख दिया. पत्नी हकबका गयी. उसे लगा सचमुच उसकी तबीयत खराब है, कहीं दुःख से पागल तो नहीं हो गया. उसने जोर से पति का सिर अपने हाथों में थाम कर अपने कंधे से अलग किया और बेचैनी से बोली, “प्लीज, आप रो क्यों रहे हो? क्या हुआ है आपको? कुछ बताओगे या...”

उसने पत्नी के हाथों को पकड़ लिया और अपने को संभालने का प्रयास करता हुआ बोला, “प्रीति, मैंने तुम पर ही नहीं, अपने बच्चों पर घोर अन्याय और अत्याचार किया है. मैंने तुम लोगों की कभी परवाह नहीं की. सोचता रहा कि मेरा दुख ही सबसे ज्यादा भारी है, तुम्हारे दुख और कष्ट की तरफ कभी ध्यान नहीं दिया. बच्चों की परवरिश केवल तुम्हारे सहारे छोड़ दी. मैंने अपनी जिम्मेदारी कभी नहीं समझी. मैं तुम्हारा अपराधी हूँ, मुझे माफ़ कर दो.”

“क्या कह रहे हैं आप? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा.” वह लाचारी से बोली.

“कोई बात नहीं, धीरे-धीरे तुम समझ जाओगी. बस अगले इतवार को हम सभी लोग बाहर चलेंगे. घूमेंगे-फिरेंगे, शाम को किसी रेस्तरां में खाना खाएंगे और रात को लौटकर आराम की नींद सो जाएंगे.”

पत्नी फिर अचरज और अविश्वास से उसका चेहरा निहारने लगी.

“तुम ये बातें बच्चों को नहीं बताओगी. कल शाम को मैं जल्दी घर आकर स्वयं ही उन्हें बताऊंगा. आखिर उन्हें पता तो चले कि इस संसार में उनका एक बाप भी है, जो भले ही गरीब हो, परन्तु लाचार और बेबस नहीं है. मेरे बच्चे अनाथ नहीं हैं.” उसने पत्नी की कमर में हाथ डालकर कहा, “चलो, इन्हें सोने दो. हम दोनों मिलकर साथ-साथ खाना खाते हैं.” पत्नी को झटके पर झटके लग रहे थे, क्योंकि इसके पूर्व दोनों ने कभी साथ खाना नहीं खाया था. वह पहले खाकर अपने कमरे में जाकर लेट जाता था. उसके बाद वह उसी थाली में खाना खाती थी और बर्तन समेटकर किचन में रखने के बाद तब कमरे में जाती थी.

आज सब कुछ उल्टा-पुल्टा हो रहा था, परन्तु वह सोच रही थी कि शायद इस उलट-फेर में ही उसकी खुशियां कहीं छिपी थीं, जो आज बाहर निकलने के लिए बेताब हो रही थीं और उसे हैरानी में डाल रही थीं.



## गाय और स्त्री

शाम का झुटपुटा घिरने लगा था. सूरजपाल अभी-अभी खेतों से थका-मांदा लौटा था और दरवाजे पर बैठकर सुस्ता रहा था. वातावरण में थके हुए दिन की बोझिलता बिखरी हुई थी. इसके बावजूद अपने घोंसलों की तरफ लौटते हुए परिन्दों की चहचहाहट मन में मीठी उमंग भर रही थी. हवा में ताज़गी तो नहीं थी, परन्तु धूल-मिट्टी और घरों से उठते हुए धुएं की मिली-जुली मनमोहक गंध वातावरण में समाई हुई थी.

सूरजपाल ने एक निःश्वास भरी और खाली आंखों से अपने सूने घर को देखने लगा. ऐसा लग रहा था, जैसे उसके घर को अभी-अभी कोई लूटकर ले गया था और अब पूरे घर में एक भयावह सन्नाटा पसरा हुआ था. सच तो ये था कि उसका घर बरसों पूर्व लुट चुका था. तब से वह न केवल टूटे-फूटे घर को जोड़ने का प्रयत्न कर रहा था; बल्कि अपने खाली दिल को भी किसी तरह संभाल रहा था.

छप्पर के नीचे बंधी हुई गाय उसी की तरफ देख रही थी. भूखी और प्यासी होगी, उसने सोचा और तत्परता से उठकर घर के सामने गड़े सरकारी नलके से एक बाल्टी पानी भरकर लाया और गाय के सामने रख दिया. गाय ने तुरंत बाल्टी में मुंह दिया और गटागट पानी पी गई. सूरज तुरंत दुबारा बाल्टी में पानी भरकर लाया. गाय दूसरी बाल्टी का भी आधे से ज्यादा पानी पी गई और फिर ऐसी कृतज्ञता भरी नज़रों से सूरज की तरफ देखा कि उसका दिल हिलकर रह गया.

भावतिरेक में उसने लपककर गाय के माथे और सिर को चूमा और अपनी बगल में लेकर प्यार करने लगा. उसका बायां हाथ गाय का माथा सहला रहा था और गाय उसकी कोहनी को चाटने का प्रयास कर रही थी. सूरज और गाय का भाव-विभोर कर देने वाला यह प्यार काफी देर तक चलता रहा.

दीया-बत्ती जलाने के समय हुआ तो सूरज गाय के पास से हटा. गाय के लिए चारा-सानी करके उसके सामने डाल दिया. गाय चारा खाने लगी. वह कुछ पल तक ममतामयी निगाहों से उसको चारा खाते देखता रहा. उसकी गाय बियाने वाली थी. किसी भी दिन, शायद एकाध दिन में, वह बच्चा दे सकती थी. इसलिए वह उसकी अतिरिक्त देखभाल करता था.

गाय को चारा-सानी करने के बाद जब वह निवृत्त हुआ तो उसे अपने पेट की चिंता हुई. रोज का यही खटारा था. सारा दिन खेतों में खटो और फिर घर आकर चूल्हे की आग में दो रोटी के लिए स्वयं को जलाओ. कम्बख्त, कैसी जिंदगी पाई है उसने. मां-बाप बचपन में उसे अकेला छोड़ गए, किसी तरह रिश्तेदारों की मेहरबानी से बड़ा हुआ, घर-संभालने लायक हुआ तो सबने मिलकर उसकी शादी कर दी कि चलो अब तो घर में खुशियों का बसेरा होगा. बिन घरनी घर भूत का डेरा! बीवी आई तो सही, परन्तु खुशियों से शायद उसका जनम-जनम का बैर था. मुंह की तरेड़ थी, छोटे-बड़े का आदर नहीं करती थी. सारा दिन साज-श्रृंगार में लगी रहती. सूरज कुछ कहता तो उसी के ऊपर चढ़-दौड़ती. उसकी ज़बान इतनी तेज चलती थी कि सूरज की सिट्ठी-पिट्ठी गुम हो जाती. बेवज़ह कलह से बचने के लिए वह अक्सर चुप ही रहता; परन्तु उसकी बीबी कान्ता ने उसकी सिधाई और भलमानसाहत का गलत अर्थ लगाया और वह दिन-ब-दिन उच्छृंखल और उद्वण्ड होती गयी. सूरज बेचारा दिन भर खेतों में खटता रहता और वह सज-धज कर पड़ोस के निठल्ले जवान मर्दों से नैन-मटक्का करती. शाम को घर आता तो बीवी मुंह फुलाए बैठी रहती या किसी न किसी बीमारी का बहाना बनाकर लेटी रहती.

बीवी दिन भर क्या करती थी, इसका पता सूरजपाल को नहीं चलता था. अड़ोस-पड़ोस की कोई औरत दबी जुबान में उसके बारे में कुछ कहती, तो भी वह ध्यान न देता. सोचता, बीवी को अगर इधर-उधर उठने-बैठने से खुशी प्राप्त होती है, तो उसे कोई परेशानी नहीं थी, परन्तु उसके सामने तो हर वक्त वह मुंह फुलाकर रहती थी, जैसे सूरजपाल ने उसके सिर पर परेशानियों का पहाड़ खड़ा कर रखा था. उसकी समझ में न आता कि वह बीवी को किस तरह खुश रखे. उसके लिए कपड़े-लत्ते और खाने-पीने की कोई कोर-कसर न छोड़ता. परन्तु...

बीवी के चंचल स्वभाव का दुष्परिणाम एक दिन सामने आना ही था. साल भी न बीता होगा कि उसकी बीवी पड़ोस के एक आवारा लड़के के साथ फुर्र हो गयी. सूरज का घर बसने के पहले ही उजड़ गया. उसने खुशियों का मुंह भी न देखा था कि अंधा हो गया. चोर उसकी खुशियों का सामान लूटकर चलते बने.

कान्ता के भाग जाने से सूरज के मन को ऐसा धक्का लगा कि वह पगला-सा गया. काम-धाम छोड़ दिया, भूखा-प्यासा सूने घर में बैठा रहता. गांव-परिवार के लोग समझाते; परन्तु उसकी समझ में कुछ न आता. किसी ने उसे सलाह दी कि पुलिस में रिपोर्ट लिखा दे; परन्तु उसने जैसे कुछ सुना ही नहीं. न वह किसी से बोलता, न किसी की बात का जवाब देता. खाने-पीने का भी होश नहीं रहता था उसे...गुम-सुम पता नहीं किस संसार में खोया रहता था. अड़ोस-पड़ोस के लोग दया करके उसे कुछ खाने-पीने के लिए दे देते, तो खा-पी लेता; वरना भूखा ही सो जाता.

एक साल तक यही स्थिति रही और फिर धीरे-धीरे जब वह मानसिक रूप से ठीक हुआ, तो लोगों ने उसे सलाह दी कि वह दूसरा ब्याह कर ले. सलाह देनेवालों को उसने ऐसे धूरकर देखा, जैसे कोई शेर अपने शिकार को देख रहा हो. सलाह देने वाले सहम गये और फिर किसी ने उसे दूसरा ब्याह करने की सलाह नहीं दी.

बिना किसी रस के उसके जीवन का प्रवाह चलता रहा. उसके जीवन की एकमात्र साथी थी उसकी गाय, जिसे वह जी-जान से प्यार करता था, उसकी सेवा करता था. वह गाय के बदन को सहलाकर अपने मन का दुःख उस पर प्रकट करता तो गाय उसके हाथों को चाटकर उसके प्रति अपना प्यार और आभार प्रकट करती.

हाथ-पैर धोकर सूरज थके मन से चूल्हा जलाने ही जा रहा था कि दरवाजे पर से आवाज आई, “सूरज भैया!”

सूरज आवाज पहचान गया. यह आवाज उसके पड़ोसी बदरी की थी. बोला, “हां बदरी, क्या बात है? अंदर आ जाओ.”

बदरी अंदर आकर आंगन में खड़ा हो गया. कार्तिक का महीना था. दीवाली आने वाली थी. हवा में ठण्डक व्याप्त थी. ओस भी पड़ने लगी थी. सूरज की रसोई छप्पर के नीचे थी. बदरी ने कहा, “खाना बनाने जा रहे हो?”

“हां,” चूल्हे में लकड़ी झोंकते हुए सूरज ने कहा, “अपनी किस्मत ही ऐसी है. दिन भर खेतों में शरीर तोड़ता हूं, शाम को घर आकर पेट की आग बुझाने के लिए चूल्हे की आग जलाता हूं. घर में सब कुछ है. खाने की कमी नहीं; परन्तु दो रोटी बनाकर देने वाला कोई नहीं. भिखारियों की भी किस्मत इतनी खराब नहीं होती होगी.” उसने थकी हुई आवाज़ में कहा. फिर उसने बात बदली, “अच्छा, तुम बताओ, कैसे आए?”

“भैया कुछ सुना तुमने?” बदरी ने भेदभरी आवाज़ में पूछा.

“नहीं, क्या? कोई खास बात है?” सूरज ने चूल्हे की लकड़ियों में माचिस की तीली लगाकर आग जला दी.

“हां, मतलब तुम्हें नहीं पता. वह लौट आई है?”

“अरे यार! क्यों पहेलियां बुझा रहा है. सीधे-सीधे बता न, क्या बात है? कौन लौट आया है?” सूरज ने झुंझलाते हुए कहा. पहली तीली बुझ गई थी, उसने दूसरी तीली जलाकर चूल्हे को जलाया. इस बार आग भकू से जल गयी थी.

“तुम्हारी बीबी, कान्ता!” बदरी ने बताया, “वह आई है!”

“कान्ता, कहां?” सूरज का मुंह खुला का खुला रह गया. काम करते उसके हाथ रुक गये. अभी तक उकड़ूं बैठकर काम कर रहा था, अब वह ज़मीन पर बैठ गया, जैसे किसी ने जबरदस्ती उसे ज़मीन पर टेल दिया था. हक्का-बक्का फटी आंखों से वह बदरी को ऐसे देख रहा था, जैसे उसके सामने भूत खड़ा हो. बदरी भी कुछ पल तक कुछ नहीं बोला. वह सूरज की मनःस्थिति भांप सकता था. सूरज की चेतना लौटी तो वह ज़मीन पर हाथ टेककर खड़ा हो गया. चूल्हे की आग जलकर तेज हो गयी थी. सूरज के हृदय में भी एक आग जलने लगी थी. यह आग बहुत पहले उसके दिल में जली थी, परंतु समय के साथ उसकी आंच धीमी पड़ती गई थी. संभवतः एक दिन यह आग बुझ जाती, परंतु बदरी ने जो ख़बर उसे सुनाई थी, उससे उसके मन-मस्तिष्क में एक विस्फोट हुआ था और हृदय की आग फिर से भड़क उठी थी.

बदरी धीरे-धीरे बता रहा था, “वह गांव के बाहर वाले शिवाले के चबूतरे पर बैठी है. पता नहीं कब और किधर से आई थी. सबसे पहले उसे शिवाले के बाहर ही बैठे हुए देखा गया था. पहले तो किसी ने ध्यान नहीं दिया. मैले-कुचैले कपड़ों में वह कोई भिखारिन लग रही थी. बड़ी दीन अवस्था में थी. धुंधलके में गांव के बाहर दिशा-मैदान जाने वाले औरत-मर्दों ने उसे देखा तो पूछा कि वह कौन थी, कहां से आई थी और वहां अकेली बैठी क्या कर रही थी.

वह किसी की बात का उत्तर नहीं दे रही थी; बल्कि मर्दों को देखकर मुंह घुमा लेती थी और औरतों के सामने आने पर सिर नीचा कर लेती थी. लोगों को शक़ हुआ कि कोई चोरनी तो नहीं थी, बच्चा चोर तो नहीं थी. फिर किसी ने साहस करके उसके पास जाकर कड़ाई से पूछा और जबरदस्ती धूँघट हटाकर देखा तो वह सन्न रह गया. वह कान्ता थी, तेरी बीबी.” बदरी ने एक ही सांस में ढेर सारी बातें बता दीं.

सूरजपाल के कानों में बदरी के कितने शब्द पड़े थे, उसे पता नहीं, परन्तु ‘कान्ता, तेरी बीबी.’ शब्द उसके दिल में तीर की तरह चुभे, ज़हर बुझे तीर की तरह! वह छटपटा गया. कान्ता उसकी बीबी कहां थी? वह तो कई साल पहले चन्दर के साथ भाग गयी थी. वह उसकी ब्याहता थी, परंतु बीबी नहीं थी. बीबी की तरह कभी घर में नहीं रही, सूरजपाल को कभी अपना पति नहीं माना...अपने घर को घर नहीं समझा. वह स्वच्छन्द थी, चंचल थी. उसको घर की बन्दिशें पसंद नहीं थी. वह आज़ाद पंक्षी की तरह खुले आकाश में उड़ना चाहती थी, खुले मैदान में दौड़ना चाहती थी. यौवन की रंगरेलियों में खो जाना चाहती थी. वह बनावटी रंगों की चमक से अपने संसार को उज्ज्वल करना चाहती थी. चन्दर के साथ भागकर पता नहीं कितने रंग और रोशनी की कितनी चमक उसने अपनी आंखों में भरी थी, हृदय में खुशियों के कितने उजाले वह समेटकर लाई थी, सूरज नहीं जानता था. वह तो केवल इतना जानता था कि सूरज के प्रकाश में भी उसका अपना घर अंधकार में डूबा रहता था. रात को दीया जलाने पर भी उसकी आंखों के सामने से अंधेरों के पर्दे नहीं हटते थे.

उसका मन हुआ, पूछे, ‘क्या चन्दर भी आया है लौटकर उसके साथ?’ परन्तु नहीं पूछा. मन मसोहकर रह गया.

बदरी ने जैसे उसके मन में चल रहे भावों को समझते हुए कहा, “वह अकेली है. चन्दर पता नहीं कहां है? उसके साथ आया भी है या नहीं, किसी ने पूछा भी नहीं. औरतें तो उसे गालियां दे रहीं थी. तरह-तरह की बातें कर रहीं थीं- ‘सारे गांव को गंधा दिया,’ ‘छिनार, क्यों लौटकर आई है.’ ‘सूरज की जिंदगी तो बर्बाद कर दी, अब क्या उसका घर लूटने आई है.’ ‘पापी कहीं की, छिनार, यहां आने के पहले मर क्यों न गई?’ ‘कौन-सा मुंह लेकर आई है?’ ‘किस-किस को पापी चेहरा दिखाएगी.’ ‘कुल्ला, शर्म नहीं आती है.’ ‘सच्ची! छिनार औरतों को कोई शरम नहीं लगती. देखो तो कैसे ऊंटनी की तरह मुंह उठाकर वापस आ गई है.’ ‘जब गांव तक आ गई है? तो अपने घर क्यों नहीं जाती? परंतु क्या ऐसी छिनार को सूरज अपने घर में रख लेगा. बिरादरीवाले ऐसा करने देंगे? पंचायत बैठेगी, दण्ड भरना पड़ेगा.’ इसी तरह की बातें औरतों और मर्दों के बीच सारे गांव में हो रही हैं.”

सूरज जैसे कुछ सुन रहा था, कुछ नहीं सुन रहा था. उसका दिमाग़ जैसे उसके पास नहीं था. शरीर कांप रहा था. वह लड़खड़ाते कदमों से बाहर की तरफ़ चल दिया और घर के बाहर दरवाजे के पास खड़ा होकर अंधेरे में इधर-उधर देखने

लगा. सूरज के पीछे-पीछे बदरी भी बाहर आ गया था और उसकी हरकतों को गौर से देख रहा था.

“क्यों भैया, देखने नहीं चलोगे?” बदरी ने धीमें स्वर में पूछा.

“क्या? मेरा उससे क्या नाता है, जो मैं उससे मिलने जाऊँ? मेरे लिए वह मर चुकी है.” सूरज ने लगभग चीखकर कहा. उसकी आवाज़ में घृणा का लावा भरा हुआ था.

बदरी सहम गया. आगे कुछ कहने का उसका साहस न हुआ.

कार्तिक के अंधेरे पाख की रात थी. चारों तरफ काला घना अंधकार पसरा हुआ था. किसी-किसी घर के बाहर दीये का मद्धिम पीला प्रकाश एक छोटे तारे की तरह टिमटिमाता दिखाई पड़ता था, परन्तु इक्के-दुक्के दीये सघन अंधकार को दूर करने के लिए पर्याप्त नहीं थे.

सूरजपाल के मन में झंझावात चल रहा था. बदरी उसकी मनःस्थिति नहीं समझ सकता था, बस अनुमान लगा सकता था. अंधेरा दूर भगाने के लिए वह घर का दीया उठा लाया और दरवाजे के पासवाले आले पर रख दिया, परन्तु सूरज के मन के अंधेरे को कौन दूर कर सकता था.

वह दोनों चुपचाप बैठे थे कि तभी ग्राम प्रधान श्रीपाल सिंह अपने कुछ चमचों के साथ आ गये. आते ही बोले, “अरे सूरज, ये कैसा गजब हो रहा है. सुना है, तेरी बीवी वापस आ गई है?”

“पता नहीं परधान जी. मैंने तो देखा नहीं; बदरी ने अभी बताया है.” सूरज ने मनोद्वन्द्व के बाहर आकर शांत आवाज़ में कहा, “परन्तु परधानजी, आप सब लोग मुझे यह क्यों बता रहे हैं? अब वह मेरी बीवी कहां रही? वह तो चन्दर के साथ भाग गई थी, उसकी बीवी है! मेरा उससे क्या लेना-देना” उसने स्पष्ट किया.

“वो तो ठीक है, पर वह गांव में क्या करने आई है?” प्रधान ने चबूतरे पर बिछी चारपाई पर बैठते हुए कहा. बाकी लोग खड़े थे. सूरज ने अंदर से एक दरी लाकर चबूतरे पर बिछा दी. बाकी लोग उस पर बैठ गये. सूरज और बदरी भी बैठ गए.

“यह तो वही जाने कि वह लौटकर क्यों आई है? गांव में उसका क्या रखा है. मेरी तो नाक कटा गयी, मैं तो उसका मरा मुंह न देखूँ!” सूरज ने दिल की नफरत उड़ेलते हुए कहा. अब वह मुखर हो रहा था. उसकी बात सुनने के लिए कई लोग इकट्ठा हो गए थे और अब वह अपने मन की भड़ास निकाल सकता था.

“हम लोग गए थे उसके पास. पूछा तो बड़ी मुश्किल से बताया कि अपने पापों का प्रायश्चित्त करने आई है,” सुरेश काछी ने कहा. वह प्रधान का चमचा था और उनके सही-गलत कार्यों में बराबर का भागीदार था.

“यह गांव कोई काशी-प्रयाग है, जो यहां प्रायश्चित्त करने आई है?” सूरज ने मुंह बनाते हुए कहा.

“एक और मुसीबत है,” प्रधान ने रहस्य खोलते हुए कहा—“वह पूरे पेट से है. एकाध दिन में ही बच्चा हो सकता है. टंड पड़ने लगी है, वह शिवाले के अंदर बैठी है. उसके पास बदन की धोती के अलावा और कोई कपड़ा-लत्ता नहीं है. कहीं टण्ड से मर-मरा गई तो पूरे गांव के लिए परेशानी का सबब बनेगी.”

“आप तो गांव के प्रधान हैं. मुसीबत की मारी कोई अबला गांव में आई है, तो खाना-विस्तर तो उसे दे ही सकते हैं.” विनोद यादव ने कहा. वह गांव का पढ़ा-लिखा नवजवान था.

“मैं दे तो दूँ, परन्तु गांव के बुजुर्ग ही नहीं, कुछ महिलाएं भी इस बात के सख्त खिलाफ हैं. सभी का मानना है कि वह पापिन है, छिनार है, पूरे गांव की इज्जत पर बट्टा लगाया है. गांव की बहू-बेटियों पर उसके आचरण का बुरा असर पड़ेगा. उसे सहारा दिया गया, तो गांव की जवान बहू-बेटियां भी ऐसा करने लगेंगी. तब क्या होगा? एक गलत परम्परा की नींव इस गांव में पड़ जाएगी.”

“नीति-धर्म अपनी जगह पर है, परन्तु मानवता अपनी जगह पर है.” विनोद ने अपनी बात पर बल दिया, “कोई भी धर्म मानवता के खिलाफ नहीं. यह कहां का धर्म है कि कोई व्यक्ति हमारी निगाहों के सामने मर रहा है, और हम उसकी मदद न करके बस टुकुर-टुकुर ताकते रहें. ऐसा किस धर्म में लिखा है. हमारे इस कर्त्य के लिए क्या भगवान हमें माफ कर देगा?” विनोद की बात में दम था, सभी सहमत थे. कुछ पल के लिए चुप्पी छा गई.

सुरेश काछी ने सुझाव दिया, “कायदे से तो चन्दर के घरवालों को उसको अपने घर में रखना चाहिए. चन्दर उसे भगा कर ले गया था. अब वह उसकी बीवी है. चन्दर के मां-बाप पर दबाव डालकर उनके घर में कान्ता को रखवाया जा सकता है.”

“चन्दर के मां-बाप ने तो पहले ही मना कर दिया. उसकी मां शाम को ही चिल्ला-चिल्लाकर सारे गांववालों के सामने कह रही थी, कि उस हरजाईन को अपने घर में नहीं रखेगी. वह उसके बेटे को खा गयी. इसको घर में रखकर जात-बिरादरी से बाहर नहीं होना है.” एक अन्य व्यक्ति ने जानकारी दी.

“तब तो प्रधानजी, आप ही कुछ करो.” विनोद ने फिर जोर देकर कहा, “ग्राम-प्रधान होने के नाते आपका कर्तव्य बनता है कि गांव के लोगों के सुख-दुःख का ख्याल रखें.”

“नहीं भाई, गांव के यह व्यक्तिगत मामले हैं, मैं इनके बीच में नहीं पड़ता. मेरे घर में भी बहू-बेटियां हैं. मेरी घरवाली को अगर पता चल गया कि मैंने उस कुल्हा को खाना-पीना और ओढ़ना-बिछौना दिया है, तो मेरा खाना-पानी बंद! घर में घुसने नहीं देगी. भाई, ऐसे मामलों में मर्द दरियादिली दिखाना भी चाहे तो नहीं दिखा सकता. औरतें बीच में आ जाती हैं. पति को छोड़कर घर से भागी औरत को न समाज स्वीकार करता है, न औरत का परिवार. जब उसके घर-परिवार वाले ही उसकी मदद नहीं कर रहे हैं, तो मैं क्यों करूं.”

“वाह प्रधान जी! वाह! कितनी अच्छी बातें कही हैं आपने? धर्म और नीति की बातें तो करना आप लोगों को खूब आता है, परंतु मरते हुए व्यक्ति को एक बूंद पानी पिलाने से आपको पाप लग जाता है. मैं मानता हूं, उस औरत ने बहुत बड़ी भूल की, परन्तु आज वह असहाय और बेसहारा है. जिसके सहारे भागी थी, वही उसे बेसहारा कर गया. इतने बड़े गांव में कोई भी उसकी मदद करने वाला नहीं है. वह लाचार और बेबस है, पेट में पूरे दिनों का बच्चा है, पता नहीं कितने दिनों की भूखी-प्यासी है. ऐसी हालत में क्या हम चुप बैठे रह सकते हैं. क्या वह जानवर से भी बदतर है?” विनोद ने तीखे स्वर में सबसे पूछा.

“तुम्हें बड़ी दया आ रही है तो तुम क्यों नहीं जाकर उसे खाना खिला आते और बिस्तर व रजाई दे आते?” सुरेश काछी ने खीझकर कहा. वह प्रधान की हेटी होते नहीं देख सकता था.

“वह भी कर दूंगा. अगर इस गांव के सारे मर्द पत्थरदिल हो गए हैं, तो मुझे उस बेसहारा औरत की मदद करने में कोई शर्म और संकोच नहीं होगा.” विनोद ने तैश में आकर कहा—“आप लोगों को तो बस पंचायत करने का मौका मिलना चाहिए. किसी की ज़रूरत पड़ने पर सहायता नहीं करेंगे, परंतु उसकी छोटी-सी गलती पर महा पंचायत कर डालेंगे और जुर्माना लगाकर गरीब आदमी से हजारों रुपये वसूल लेंगे. तभी आपके दिल को तसल्ली मिलती है.”

“चलो भाई, वाद-विवाद खत्म करो.” प्रधान ने चारपाई से उठते हुए कहा, “यह सूरज और चन्दर के घरवालों का मामला है. इनको बताना हमारा फर्ज था. बता दिया, अब जो इनकी मर्जी हो, करें, हमें क्या लेना-देना.”

“प्रधानजी, आपको अगर कुछ लेना-देना नहीं तो सुन लीजिए. कल को अगर सूरज, मैंने या चन्दर के घरवालों ने उस औरत को सहारा दिया, तो फिर पंचायत लेकर मत आना, कहे देता हूं; वरना पुलिस केस कर दूंगा.” विनोद ने कहा तो सभी लोग खिसियाने से चले गये. विनोद वही रह गया.

इस सारे प्रकरण के दौरान सूरज निर्विकार बैठा रहा. बाकी लोगों के लिए भी उसका जैसे कोई अस्तित्व न था. बदरी भी वैसे ही बैठा था.

विनोद बोला, “गांव के लोग प्रपंच करना जानते हैं. उनको किसी के दुःख से कोई मतलब नहीं है. सूरज भैया, वह तुम्हारी बीवी है, क्या तुम ख्याल न करोगे?”

“किस नाते मैं उसके लिए कुछ करूं? मैं तो उसका पति था, रीति-रिवाज से उसके साथ ब्याह किया था; फिर वह मुझे छोड़कर क्यों चली गयी थी? और फिर मेरे घर में क्या है; जो ले जाकर मैं उसे खिलाऊं? अभी तक चूल्हा नहीं जला? मुझे कौन दो रोटियां पकाकर देने वाला बैठा है. वही तो एक थी, जो मुझे अकेला छोड़कर चली गई थी. वह तो किसी के सहारे गई थी, परंतु जब वह मुझे छोड़कर गयी थी, तो मेरा सहारा कौन था? कोई भी तो नहीं...!” कहते-कहते सूरज का गला भर आया.

विनोद कुछ नहीं बोला. वह बदरी का हाथ पकड़कर एक किनारे ले गया. अंधेरे में खड़े होकर उन दोनों ने न जाने क्या बातें की और फिर सूरज को पता नहीं चला कि वह दोनों कहां गए. सूरज वैसे भी दिन भर का थका-मांदा था. दोपहर के बाद से उसने कुछ खाया-पिया नहीं था, परंतु जो कुछ उसके साथ हो रहा था, वैसी स्थिति में कुछ बनाने-खाने का प्रश्न ही नहीं उठता था. वह इतना थक चुका था कि कुछ सोचने-समझने की शक्ति क्षीण हो चुकी थी. वह निढाल खटिया पर लेट रहा. थका होने के बावजूद नींद उसकी आंखों से कोसों दूर थी. मानसिक उथल-पुथल उसे सोने नहीं दे रही थी. तरह-तरह के विचार उसके मन-मस्तिष्क को मथे डाल रहे थे.

तीन वर्ष पूर्व जब सूरज कान्ता को ब्याहकर लाया था तो उसे अपने भाग्य पर विश्वास नहीं हुआ था. कान्ता किसी राजकुमारी की तरह सुंदर थी, फूल की तरह कोमल थी; परंतु उसका स्वभाव उसकी सुंदरता के अनुरूप नहीं था. वह जिद्दी और गुस्सैल थी, बात-बात पर लड़ती थी. उसे अपनी सुंदरता पर बड़ा घमण्ड था. भगवान ने उसे सुंदर रूप दिया था परंतु उसे सुंदर स्वभाव नहीं दिया था. वह बहुत आलसी थी और घर के छोटे-मोटे कामों से भी जी चुराती थी. सूरज अकेले खेतों में काम करता था, फिर घर आकर छोटे-मोटे काम निपटाता था. कान्ता को कोई

कष्ट ना हो, इसलिए सूरज उसे बाहर के किसी काम के लिए नहीं कहता था; परंतु कान्ता खाना बनाने में भी आलस करती थी. इसके विपरीत वह प्रति क्षण सजने-संवरने में लगी रहती थी. इसमें उसे कोई आलस ना लगता.

सूरज इतना सीधा था कि कान्ता को कटी जुबान एक शब्द ना कहता, और कान्ता इसका नाज़ायज़ फ़ायदा उठाती. जब सूरज घर पर होता तब वह सरदर्द या पेटदर्द का बहाना बनाकर लेटी रहती; परंतु वह जैसे ही घर से बाहर निकलता तब कान्ता भली-चंगी हो जाती. चेहरे पर लाली पाउडर पोत कर, टिकली बिन्दी लगाकर और नयी साड़ी पहनकर पड़ोस के किसी घर में जाकर गप्पें लड़ाती रहती. वह स्वभाव की चंचल थी और जब भी घर से बाहर निकलती उसका घूँघट केवल माथे तक ही रहता था. उसके चंचल नैन इधर-उधर मटकते रहते, उसके खिले-खिले चेहरे पर जैसे हंसी बिखरी रहती और होंठ मुस्कराते रहते. कहना न होगा कि मोहल्ले में ही नहीं पूरे गांव में कान्ता के बहुत सारे आशिक पैदा हो गये.

एक साल भी नहीं बीता था कि कान्ता चंदर के साथ भाग गयी और आज दो वर्ष बाद वह फिर गांव आयी थी.

सूरज चारपाई पर अधमरा सा लेटा था कि तभी गाय के रंभाने की आवाज आई. गाय अपने पैरों को ज़मीन पर लगातार पटक रही थी. शायद गाय बेचैन थी. सूरज चारपाई पर उठ बैठा और दीये की पीली रोशनी में गाय की तरफ उत्सुकता से देखने लगा. उसकी समझ में कुछ नहीं आया. वह उठकर गाय के पास गया तो गाय की आंखों में उसे पीड़ा के भाव नज़र आये. वह अपने पैरों पर इधर-उधर डोल रही थी. उसने आले से दीया उठाकर गाय के पास चरही पर रख दिया. हवा में हलकी रवानी थी. दीये की लौ हल्के-हल्के कांपने लगी. उसने फिर गाय के माथे पर हाथ रख कर उसे गौर से देखा. वो समझ गया कि गाय बियाने वाली थी. उसके मन में पुलक सी भर गयी.

गाय बेचैन होकर ज़मीन पर बैठ गयी थी. वह दायीं तरफ लेट कर अपने पैर पटक रही थी. सूरज सोचने लगा- काश, उसकी ममद करने के लिए कोई उसके पास होता. बदरी भी चला गया था. क्या पता सो ना गया हो. क्या उसे बुला कर लाये? नहीं, इस अवस्था में गाय को अकेली छोड़ कर वह नहीं जा सकता था. गाय को कुछ हो गया तो?

गाय का रंभाना और छटपटाना बढ़ता जा रहा था. उसके साथ ही सूरज के मन की बेचैनी भी बढ़ती जा रही थी. वह मन ही मन भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि सब कुछ ठीक-ठाक से हो जाये. गाय को बिना किसी परेशानी के बच्चा हो

जाये तो कल मंदिर में लड्डू चढ़ायेगा. और भगवान ने उसकी सुन ली. कुछ पल बाद गाय ने एक बछिया को जन्म दिया था. वह लगातार गाय को ताक रहा था. पहले बछिया का मुंह बाहर निकला. काला-काला सा, बड़ा प्यारा. बछिया के माथे पर सफेद रंग का टीका था. फिर धीरे-धीरे बछिया का पूरा धड़ बाहर आ गया. गाय को बहुत ज्यादा तकलीफ नहीं हुई थी. बच्चा बहुत आसानी से हो गया था. गाय बछिया को ममता से चाट रही थी. उसी तत्परता से सूरज भी बछिया के बदन को साफ कर रहा था. उसे लगा जैसे बछिया के रूप में उसके घर में किसी देवी ने जन्म लिया था.

उस रात सूरज के जीवन में दुख के साथ-साथ खुशियां भी आयी थीं.

दूसरी सुबह सूरज गाय और बछिया की सेवा टहल में लगा था कि बदरी आया और चहकते हुए पूछा-“अरे वाह भइया! गाय ने बछिया को जन्म दिया है, बड़ी प्यारी बछिया है.”

“हां, रात में बियायी है. तुम चले गये उसके बाद ही.”

“अकेले ही सब कुछ किया, मुझे बुला लेते.”

“मन तो था, पर गाय को अकेला छोड़ के कैसे जाता. भगवान की दया से सब ठीक हो गया है, लेकिन तुम अचानक कहां चले गये थे?” सूरज ने तेज़ निगाहों से उसे देखते हुए पूछा. बदरी सकपका गया. वो निगाहें चुराते हुए बोला-“कहीं नहीं, भैया. विनोद अपने साथ पकड़ ले गया था.”

“क्या तुम कान्ता को खाना-कपड़ा देने गये थे?” सूरज ने साफ-साफ पूछा. उसे पक्का शक था, इसीलिए पूछा था.

“वो भैया ऐसा है कि...मैं आपसे क्या बताऊं. मेरा मन तो नहीं था, लेकिन विनोद नहीं माना. उसी ने अपने घर से खाना दिया था और एक पुराना कंबल और मुझसे कहा था कि मैं कान्ता को दे आऊं. तुम तो जानते हो विनोद सच्चे दिल का खालिस आदमी है. बुरा करते हुए डरता है, परन्तु सच्चाई का साथ देने में कतई नहीं डरता. उसके जैसा साहसी आदमी इस गांव में और कोई नहीं है. मैं उसकी बात कैसे टालता.”

“तो इस बात को बताने में घबड़ा क्यों रहे हो. जो तुम्हें अच्छा लगा तुमने किया. आदमी को जो अच्छा लगता है और जिसमें उसको अपनी भलाई नज़र आती है, उसको वही काम करना चाहिए.” बदरी को लगा कि सूरज के मन में आज किसी प्रकार की कटुता नहीं थी. वह खुश नज़र आ रहा था. शायद उसकी गाय ने बच्चा दिया था इसलिए वह खुश था.

कान्ता के गांव लौटने की बात अब बदरी के लिए गौण हो गयी थी. उसके मन से दुश्चिन्ताओं के बादल छंट गये थे. उसने बात को बदलते हुए पूछा, “भैया, तुमने रात में कुछ खाया नहीं होगा. मैं अभी घर से चाय-बिस्कुट लेकर आता हूं.”

“नहीं, रहने दो, अब जी कुछ हल्का है. नहा-धोकर कुछ बना लूंगा.”

“उसमें तो समय लगेगा, मैं अभी चाय लेकर आता हूं.” सूरज के उत्तर का इंतज़ार किये बिना बदरी अपने घर भाग गया और पांच मिनट बाद ही दो कप चाय तथा एक प्लेट में बिस्कुट और नमकीन लेकर आ गया. चाय के दौरान उनके बीच इधर-उधर की बातें हुई, परंतु उनके बीच कान्ता के बारे में कोई बात नहीं हुई. शायद दोनों ही उसके बारे में बात करने से बचना चाहते थे.

परंतु गांववालों को चैन कहां था. सुबह से ही गांव-पड़ोस के लोग इक्का-दुक्का करके आने लगे थे. कुछ देर सूरजपाल के पास रुककर टीका-टिप्पणी करते और चले जाते, मसलन, “कैसे हो भाई सूरज, तुम्हारी गाय ने बच्चा दिया है. खुशी की बात है. बीबी भी बच्चा जननेवाली है. तुम्हारी तो चांदी है.”

“तुम यहां गाय की सेवा में लगे हो और बीबी शिवालय में पड़ी तड़प रही है. कैसे मर्द हो भाई. उसे लाकर घर में रखो. ज़माना क्या कहेगा?”

“अपनी बीबी से मिले की नहीं. हाल-चाल तो ले आते.”

वह अच्छी तरह जानता था कि ऐसी बातें कहनेवालों में कोई उसका शुभचिंतक नहीं था. सब उसके जले पर नमक छिड़क रहे थे. उसके मन की बुझी हुई आग को फूंक मारकर सुलगाने का प्रयास कर रहे थे. मर्द जहां व्यंग्यात्मक भाषा में उसको बातें सुनाते, वही महिलाएं अलग तरह की बातें करतीं.

“का रे सूरजवा, वह करमजली आयी है. क्या करने आयी है?”

“सुना है चंदर ने दो साल में उसका सारा रस निचोड़ लिया, फिर लात मारकर भगा दिया. देखा नहीं कैसी सूखे कांटे जैसी हो गयी है.”

“हाय दैया, उसका कलेजा तो देखो. ब्याही धरी थी, परंतु पराये मरद के साथ भाग गयी. अब लौटकर फिर पति की देहरी पर मरने आ गयी.”

“क्या पता, पति के घर आयेगी कि चंदर ने किसी प्लानिंग से उसे यहां भेजा है. नाशपीटी कुछ बताती भी तो नहीं. मुंह में जैसे ज़हरबाद हो गया है. चुप्पी तो चुप्पी. एक बार भी किसी की बात का जबाब नहीं दिया.”

“नहीं अम्मा,” कोई जवान औरत बीच में टपक पड़ी, “इतनी ही समझदार होती तो पाप के गड़्डे में गिरती ही क्यों?”

खुशी हो या गम, औरतों की बातों का कोई अंत नहीं होता. उनको किसी के दुख से दुख नहीं होता ना किसी की खुशी से खुशी. वो अपनी अनर्गल बातों का प्रलाप करने से बाज़ नहीं आती. सूरज के मन में क्या है, इन सबसे बेख़बर वह अपनी बातें किये जा रही थी.

सूरज अच्छी तरह जानता था कि औरत हो चाहे मर्द, किसी के मन में न तो उसके लिए हमदर्दी थी. न कोई उसकी किसी प्रकार की मदद कर सकता था. वो सब मजा लेने के लिए उसको बातें बना-बना कर सुना रहे थे. वो जानना चाहते थे कि सूरज आगे क्या करने वाला था.

इतने लोगों के भीड़ में उनका पड़ोसी बदरी ही उसे अपना हिलैषी नज़र आता था.

लोग तमाम तरह की बातें करते, परंतु सूरज ने एक बात भी नहीं कही. उसके मन में क्या चल रहा था, किसी को पता नहीं चला.

दोपहर में नहा-धोकर और गाय को चारा-सानी करके, बछिया को घर के अंदर बंद कर वह खेतों की तरफ निकल गया. खुली हवा में सांस लेकर उसे ताज़गी का अनुभव हुआ. कल शाम से अब तक इतना कुछ घट चुका था कि उसका दम घुटने लगा था.

शाम को बदरी ने आकर उसे बताया, “भैया, उसकी हालत बहुत ख़राब है. एक तो कमजोर बहुत है और ऊपर से बच्चा होने वाला है, दर्द बहुत बढ़ गया है, लगता है, आज ही रात बच्चा हो जाएगा.”

सूरज कुछ नहीं बोला, उसने बदरी के चेहरे को देखा, जैसे बदरी स्वयं प्रसवपीड़ा से दो-चार हो रहा था. सूरज की आंखों में कुछ इस तरह के भाव थे, जैसे कह रहा हो, ‘मैं क्या कर सकता हूं.’

“गांव का कोई मर्द-औरत उसकी मदद करने को राजी नहीं है. सब उसे कुलटा समझते हैं. उनको डर है कि अगर उसकी किसी ने मदद की तो पंचायत उनको जाति-बिरादरी से बाहर कर देगी. भैया, एक बार तुम उसे देखोगे तो स्वयं पिघल जाओगे. उसकी दशा देखकर तुम्हारे मन से सारी नफ़रत और क्रोध की दीवार ढह जाएगी. वह बहुत दयनीय हालत में है.”

सूरज की आंखों के सामने उसकी गाय का पीड़ा से भरा चेहरा झलक गया. जिस प्रकार उसकी गाय प्रसव पीड़ा से कराहती हुई ओं...ओं...कर रही थी और ज़मीन पर अपने पैर पटक रही थी, एक-एक दृश्य चलचित्र की तरह उसकी निगाहों के सामने से गुजर गया. कांता भी इसी तरह कराह रही होगी, तड़प रही होगी. गाय के पास उसे देखने-संभालने के लिए तो वह स्वयं मौजूद था, परंतु कान्ता के



पास कोई नहीं था. इतनी ठंडी रात में अगर उसको बच्चा हो गया तो...? जानवर का बच्चा तो अपने आप संभल जाता है. उसकी मां उसे चाट-पोंछकर साफ कर देती है और कुछ पल में ही वह उठकर खड़ा हो जाता है, परंतु आदमी के बच्चे के साथ ऐसा नहीं होता. बच्चे को जन्म देने के बाद तो मां स्वयं उठने के काबिल नहीं रहती. उसके बच्चे को कौन साफ करेगा, कौन संभालेगा. जाड़े की रात है. शिवाले में रात के वक्त कौन गरम पानी करके उसके बच्चे को साफ करेगा. वह तो दो मिनट में ठंड से तड़प कर मर जायेगा.

सूरज के मन में बेचैनी भर गयी. उसका दिमाग उलझ गया. वह समझ नहीं पा रहा था, क्या करे. तभी उसकी बछिया के रंभाने की आवाज आई. उसके जवाब में गाय ने भी रंभाना शुरू कर दिया. बछिया भूखी थी और उसकी मां उसे बुला रही थी. वह तड़प उठा. उसने अंदर जाकर बछिया को खोला और अपने हाथ पकड़कर उसे गाय के थन से लगा दिया. बछिया चभर-चभर दूध पीने लगी.

उसके मन में तरह-तरह के विचार आ-जा रहे थे. बछिया दूध पी चुकी थी. उसका मन स्थिर हो गया. उसने अर्थपूर्ण निगाहों से बदरी को देखा और बछिया को गाय के पास ही बांधते हुए कहा, “बदरी, तुम थोड़ी देर गाय के पास रुको. मैं अभी आता हूं.” और वह तेजी से बाहर निकल गया. बदरी की समझ में नहीं आया कि वह कहाँ गया था.

दूसरे दिन गांववालों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने सुबह-सुबह सूरज के घर के अंदर से किसी नवजात शिशु के रोने की आवाज़ सुनी. पलक झपकते सारे गांव में खबर फैल गयी. स्वयंभू नेता और गांव की कुटनी टाइप की कुछ औरतें आनन-फानन में सूरज के दरवाजे पर इकट्ठी हो गयीं. तुरंत पंचायत बैठ गयी. स्वयंभू नेताओं ने पंचायत की बागडोर अपने हाथ में संभाल ली. ग्राम प्रधान ने कहा—“सूरज, यह तुमने अच्छा नहीं किया जो पंचायत की इज़ाज़त के बगैर अपनी बीवी को घर में फिर से लाकर बिठा दिया.”

सूरज ने शांत भाव से कहा, “मैंने कोई गुनाह नहीं किया. वह मेरी बीवी है, बीच में कहीं चली गयी थी. अब लौटकर आई है, विपदा में थी तो मैंने उसे सहारा दिया है. एक पत्नी को उसका पति ही जीवन भर सहारा देता है.”

“परंतु कानूनन अब वह तुम्हारी बीवी नहीं है. वह चन्दर के साथ भाग गयी थी. उसके पेट में चन्दर का बच्चा था. आज वह तुम्हारे घर में पैदा हुआ है, परन्तु वह नाज़ायज़ बच्चा है, यह बात सारा गांव जानता है. तुम्हारी बीवी ने गुनाह किया है.”

“परधानजी, उसने गुनाह किया है या नहीं, यह तय करनेवाले आप लोग नहीं हो सकते हैं. उसने क्या गलत किया है, क्या सही किया है, यह तय करना मेरा काम है.” सूरजपाल ने दृढ़ता से कहा.

“वह पराये मर्द के साथ दो साल तक रही है, उसका बच्चा लेकर इस गांव में आई है. वह तुम्हारा बच्चा नहीं है. तुम्हें इस अपराध के लिए दण्ड भरना पड़ेगा.” प्रधान ने कड़ककर कहा.

सूरज चुप रहा, परन्तु तभी बीच में से विनोद उठकर खड़ा हुआ और कड़ी आवाज में कहा, “परधानजी, यह कहां का न्याय है. कल इसी जगह पर आप उस औरत की सहायता करने से मना कर रहे थे, तो आज किस अधिकार से आप उसके खिलाफ पंचायत बिठाकर दण्ड देने की बात कह रहे हैं?”

“विनोद, तुम अच्छी तरह जानते हो कि उसने ब्याहता होकर भी पराये मर्द के साथ भागने का अपराध किया है. उसका बच्चा लेकर वापस आई है. क्या यह अपराध नहीं है? गांव में गंदगी फैलाकर कोई ऐसे नहीं रह सकता. सूरज ने एक कुलटा औरत को अपने घर में शरण देकर जघन्य अपराध किया है, इसका दण्ड तो उसे भरना ही होगा.”

विनोद की आवाज़ में तल्लू भर गई, “जुर्माना तो सूरज भर देगा, परंतु अगर आप को पंचायत करनी है और सही-सही न्याय करना है, तो पहले गांव के कुछ लोगों के नाम मैं गिना रहा हूं, उनके खिलाफ पंचायत करके उनसे जुर्माना वसूल करिए, फिर सूरज की बारी आएगी. तब वह जुर्माना भी भर देगा.”

“क्या मतलब है तुम्हारा?” पंचायत के लोगों ने एक साथ पूछा.

“इस गांव में कौन-कौन से पाप नहीं होते, यह मैं नहीं जानता कि तुम नहीं जानते. अगर कहो तो मैं नाम गिनाऊं कि किसकी बेटी के किस लड़के के साथ संबंध है और किसकी बहू किस मर्द के साथ फंसी हुई है. किसने कब कहां, नाजायज़ बच्चों को गिरवाया है और कितने घरों में नाजायज़ बच्चे पल-बढ़ रहे हैं. इस गांव की दाईं सबके गुनाहों की गवाह है.”

“विनोद, तुम बहुत बड़ी बात कह रहे हो? बिना सबूत के किसी के खिलाफ इस तरह का इल्ज़ाम लगाने से पंचायत तुम्हें गांव-बाहर भी कर सकती है.”

“मेरे पास सबूत हैं, अगर आप कहें तो सबूत दिखाता हूं, गवाही के साथ. क्या आप गांव के लोगों को नंगा देखने के लिए तैयार हैं.”

पंचों के मुंह पर कालिमा छा गयी. वह सब एक दूसरे के मुंह ताकने लगे. किसको पता नहीं था कि रात के अंधेरे में ही नहीं, दिन के उजाले में भी इस गांव

में क्या-क्या पाप होते हैं. कपड़ों के अंदर सभी नंगे थे, परन्तु सरेआम कोई नंगा होना पसंद नहीं कर सकता था.

“मैं जानता हूं, कोई भी अपने घर का पाप बाहर लाना पसंद नहीं करेगा. इसलिए मैं कहता हूं, एक भटकी हुई औरत अगर वापस आ गई है, तो उसे सुधरने का अवसर दीजिए. एक गरीब आदमी के ऊपर दस-बीस हजार रुपये का जुर्माना लगाकर आप उसका कोई भला नहीं करेंगे, बल्कि आप सबके लिए उसके मुंह से हाथ निकलेगी. गलत बात पर पंचायत मत जोड़िये. अपनी भागी हुई बीवी को जब सूरज कबूल करने के लिए तैयार है तो हम उनको जुदा करनेवाले कौन होते हैं?”

फिर कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया. बड़ी मुश्किल से ग्राम प्रधान के मुंह से आवाज निकली, “तुम क्या कहते हो सूरज?”

सूरज ने आत्मविश्वास से कहा, “मुझे किसी बात का डर नहीं है. आपलोगों को जो फैसला लेना हो, ले लीजिए. लेकिन एक बात जान लीजिए, कान्ता मेरी बीवी थी, मेरी बीवी है और मेरी बीवी रहेगी. मैं उसे ब्याहकर इस घर में लाया था. मैंने उसे न कभी छोड़ा था और न उसने मुझे छोड़ा था. बीच में वह भटक गयी थी, तो क्या उसे जिंदगी भर भटकने के लिए छोड़ दूं. अब अगर वह सही रास्ते पर आ गयी है, तो सहारा देना मेरा काम है. अगर आप लोग मेरे साथ जबरदस्ती कुछ करेंगे, तो कानून मर नहीं गया है.” सूरज की बात सुनकर विनोद के चेहरे पर लंबी मुस्कान फैल गयी. उसने शाबासी के भाव से उसे निहारा. दोनों की आंखें मिलीं, जैसे सूरज विनोद के संबल से अपने इरादे को दृढ़ कर रहा था.

पंचायत के लोगों के बीच खुसुर-पुसर मच गयी. कुछ लोग तीखी और तेज आवाज़ में बातें करने लगे. प्रधान ने सबको शांत करते हुए कहा, “तुम भी बहुत बड़ी-बड़ी बातें करना सीख गये हो सूरज. विनोद की भाषा बोल रहे हो, इसका दंड भरना पड़ेगा तुम्हें.”

“अपनी बीवी को घर में रखना कोई जुर्म नहीं है. और प्रधानजी आप जरा याद कीजिए, परसों शाम को इसी जगह आप किस तरह की बातें कर रहे थे. मुझे कान्ता की मदद करने की सलाह दे रहे थे और जब ग्राम प्रधान होने के नाते विनोद ने आपसे कहा था कि मानवता के नाते यह फर्ज आपका बनता है कि गरीब, बेबस और बेसहारा औरत की मदद करें, तो आप उसे कुलटा और छिनार कहकर किनारा कर गये थे. अब उसी के खिलाफ पंचायत करते आपको शर्म नहीं आ रही है.”

ग्राम प्रधान पलभर के लिए चुप हो गये. तभी विनोद ने आगे बढ़कर कहा, “प्रधानजी, आप भी किन बेमतलब की बातों में पड़े हैं. जिनके घरों में वास्तव में पापकर्म हो रहे हैं, उनकी तरफ से आप ही नहीं, उनके घरवाले भी आंखें मूंदे बैठे रहते हैं. और इस गरीब बेचारे सूरज की बीवी अगर दो साल बाद वापस आ गई है और उसका घर फिर से बस रहा है, तो आपके पेट में दर्द क्यों हो रहा है, आंख में किरकिरी क्यों हो रही है. आखिर आप लोगों को गरीब का हंसना-बोलना क्यों अखरता है, उन्हें ढंग से जीने क्यों नहीं देते? यह बात आप अच्छी तरह से समझ लीजिए, सूरज के खिलाफ अगर आपकी पंचायत ने कोई नाज़ायज़ फैसला लिया, तो मैं भी चुप नहीं बैठूंगा. यहां से लेकर थाना-कचहरी हर जगह सूरजपाल का साथ दूंगा.” विनोद की निश्चयात्मक आवाज ने सभी की बोलती बंद हो गयी.

तभी सभा के बीच से कई जवान लड़कों की आवाजें उभरी, “हम इस गांव में कुछ गलत नहीं होने देंगे. सूरज ने अपनी बीवी को ही घर में बिठाया है, किसी गैर औरत को लेकर घर में नहीं आया है. आप लोग उसके खिलाफ कोई कारवाई नहीं कर सकते. हम उसके साथ हैं.” और पंचायत की बीच शोरशराबा मच गया. कौन किसकी तरफ से बोल रहा था, पंचों की समझ में नहीं आ रहा था.

स्थिति बिगड़ती देखकर ग्राम प्रधान अपने चमचों को लेकर तुरंत वहां से चले गये. लड़कों ने हुर्रा करके खुशी जाहिर की. बदरी ने सूरज को गले लगा लिया. गांव की कुटनी औरतें आंचल में मुंह छिपाकर अपने-अपने घर चली गईं.

घर के अंदर बदरी की बीवी कान्ता के पास थी. रात में उसी ने जच्चा-बच्चा की सेवा की थी. तब से वह सूरज के घर में ही थी. जब दरवाजे पर शोर-शराबा और पंचायत की कार्रवाई हो रही थी तो वह किवाड़ के पीछे से सब सुन रही थी.

जब सारा मामला ठीक हो गया, तो वह लपककर कान्ता के पास गई और नन्हे-मुन्ने को उसकी गोदी में डालते हुए कहा, “दीदी, अब चिंता की कोई बात नहीं है. सब ठीक हो गया.”

कान्ता की आंखों में आंसू उमड़ आए. यह सुख के आंसू थे, जो दो बरस बाद उसकी आंखों में आए थे.



## मन की खुशी

उस दिन मणिकांत का मन अशांत था। आजकल अक्सर रहने लगा है, इसीलिए दफ्तर में देर तक बैठते हैं। हालांकि बहुत ज्यादा काम नहीं होता है, परन्तु काम के बहाने ही सही, वह कुछ अधिक देर तक ऑफिस में बैठकर अपने मन को सुकून देने का प्रयास करते रहते हैं। दफ्तर के शान्त वातावरण में उन्हें अत्यधिक मानसिक शान्ति का अनुभव होता है। घर उन्हें काटने को दौड़ता है; जबकि घर में सुन्दर पत्नी है, जवान हो रहे दो बेटे हैं। वह स्वयं उच्च पद पर कार्यरत हैं। दुःखी और अशान्त होने का कोई कारण उनके पास नहीं है, परन्तु घरवालों के आचरण और व्यवहार से वह बहुत दुखी रहते हैं। जिस प्रकार का घर-परिवार वह चाहते थे, वैसा उन्हें नसीब नहीं हुआ। पत्नी उनकी सलाह पर काम नहीं करती; बल्कि मनमानी करती रहती है और कई बार तो वह उसकी नाज़ायज़ फ़रमाइशों पर बस सिर धुनकर रह जाते हैं, परन्तु अन्त में जीत पत्नी की ही होती है और वह अपनी सही-गलत मांगें मनवाकर रहती है। उसके अत्यधिक लाड़-प्यार और बच्चों को अतिरिक्त सुविधाएं मुहैया कराने से बच्चे भी बिगड़ते जा रहे थे। उनका ध्यान पढ़ाई पर कम, तफ़रीह में ज्यादा रहता था।

देर रात जब वह घर पहुंचे तो स्वाति उनका इंतज़ार कर रही थी। वह थोड़ा नाराज़-सी लग रही थी। यह कोई नई बात नहीं थी। किसी न किसी बात को लेकर वह अक्सर उनसे नाराज़ ही रहती थी। वह चुपचाप अपने कमरे में आकर कपड़े बदलने लगे, फिर बाथरूम में जाकर इत्मीनान से प्रेश होकर बाहर निकले। पत्नी अभी तक कमरे में खड़ी उनके बाथरूम से बाहर निकलने का इंतज़ार कर रही थी। उन्हें आश्चर्य हुआ कि वह अभी तक वहां क्यों खड़ी थी। इसके पहले वह जब भी ऑफिस से घर पहुंचते थे, तो पत्नी बेटों के साथ बैठी टी.वी. देख रही होती थी।

वह कुछ नहीं बोले तो पत्नी ने ही पूछा, “आज इतनी देर कहां कर दी?”

“बस यूं ही ऑफिस में थोड़ा काम था, रुक गया。” उन्होंने बिना किसी लाग-लपेट के कहा। पत्नी ने कहा, “मैं कब से आपका इंतज़ार कर रही हूं。”

“अच्छा, कोई काम है क्या?” उन्होंने कुछ चिढ़ने के भाव से कहा। अब उनकी समझ में आया कि पत्नी उनके देर से आने के लिए चिन्तित नहीं थी। उसे अपने काम की चिन्ता थी, इसीलिए उनका इंतज़ार कर रही थी।

“हां, नवल को नई बाइक लेनी है। उसने देखी है, कोई स्पोर्ट्स बाइक है, लगभग एक लाख की。” नवल उनका बड़ा लड़का था, एक नम्बर का लफ़्न्दर। पढ़ाई में कम, घूमने-फिरने और लड़कियों के चक्कर में उसका ध्यान ज्यादा रहता था।

“उसके पास पहले से ही एक बाइक है, दूसरी लेकर क्या करेगा?” उन्हें मन ही मन क्रोध आने लगा था।

स्वाति ने बहुत ही लापरवाही से कहा, “क्या करेगा? आप तो ऐसे कह रहे हैं, जैसे बच्चों की कोई ज़रूरत ही नहीं होती। जवान लड़का है, दोस्तों के साथ घूमना-फिरना पड़ता है। स्टेटस नहीं मेनटेन करेगा, तो उसकी इज़्ज़त कैसे बनेगी? उसके कितने सारे दोस्त हैं, जिनके पास कारें हैं। वह तो केवल एक बाइक ही मांग रहा है। पुरानी वाली बेच देगा。”

“स्टेडस मोटर बाइक या कारों से नहीं बनता, बल्कि पढ़ाई में अव्वल आने और अच्छी नौकरी करने से स्टेडस बनता है। तभी इज़्ज़त मिलती है। मैं हमेशा कहता रहा हूं, बहुत ज्यादा लाड़-प्यार से बच्चे बिगड़ जाते हैं; परन्तु तुम ध्यान ही नहीं देती। अपने बेटों की हम हर ज़रूरत पूरी करते हैं, परन्तु क्या वह हमारी इच्छा और आकांक्षा के अनुसार पढ़ाई कर रहे हैं? नहीं, बड़ावाला न जाने कब बी.सी. ए. पूरा कर पायेगा। हर साल फेल हो जाता है और छोटावाला अभी तो कोचिंग ही कर रहा है। प्रेम के क्षेत्र में सभी उत्तीर्ण होते चले जा रहे हैं, परन्तु पढ़ाई की परीक्षा में लगातार फेल हो रहे हैं。” उनका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था।

“बेकार की भाषणबाजी से क्या फ़ायदा? बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करना हमारा कर्तव्य है। हमारे कमाने का क्या फ़ायदा अगर वह बच्चों के काम न आए。” फिर उसने चेतावनी देने वाले अंदाज़ में कहा, “कल उसको बाइक के लिए चेक दे देना, बाकी मैं कुछ नहीं जानती?” पत्नी इतना कहकर चली गयी।

वह धूम से बिस्तर पर बैठ गये। यह उनकी पत्नी है, जिसके साथ वह लगभग पच्चीस वर्ष से गुज़ारा कर रहे हैं। वह दफ्तर से आए हैं और उसने न उनका

हाल-चाल पूछा, न चाय-पानी के लिए और न ही खाने के लिए. यह कोई नई बात नहीं थी. रोज ही वह अपने बेटों की कोई नई फरमाईश लिये तैयार बैठी रहती है और जैसे ही वह दफ़्तर से आते हैं, फ़रमान जारी कर देती है. उसका फ़रमान ऐसा होता है कि वह नाफ़रमानी नहीं कर सकते थे. वह 'न' करने की स्थिति में कभी नहीं होते. पत्नी के असाधारण और अनुचित तर्क उनके उचित तर्कों को भी काटने में सक्षम होते थे.

इसका कारण था, वह बहुत भावुक और संवेदनशील थे. उनका मानना था कि जड़ और मूर्ख व्यक्ति के साथ मुंहजोरी करने से स्वयं को ही दुख पहुंचता है.

दूसरी तरफ बेटे उनकी नाक में दम किए रहते हैं. जब भी घर में पहुंचो, या तो वह टी.वी. देखते रहते हैं या फिर मोबाइल में किसी से बात कर रहे होते हैं या फिर होम थियेटर में आंखें और कान फोड़ते रहते हैं. इससे छुटकारा मिला तो इंटरनेट में अनजान लड़के-लड़कियों से दोस्ती कायम कर रहे होते हैं. इंटरनेट ने भी यह एक अजीब बीमारी फैला दी है कि जिस व्यक्ति को हम जानते-पहचानते नहीं, उससे इंटरनेट की अंधी दुनिया में दोस्ती कायम करते हैं और जो सामने होते हैं, उनको फूटी आंख देखना पसंद नहीं करते.

उनके लड़के दुनिया भर के कार्य करते हैं, परन्तु पढ़ाई करते हुए कभी नहीं दिखते. उनके समझने पर वह भड़क जाते हैं, क्योंकि मां की शह उनके साथ होती है.

वह विस्तर पर लेटकर विचारों में खो गए.

मणिकांत पचास वर्ष की उम्र पार कर रहे थे. अब तक दाम्पत्य-जीवन और पत्नी-प्रेम के अटूट बंधन पर उन्हें अति विश्वास था, परन्तु अब उनका विश्वास डगमगाने लगा था. उन्हें लगने लगा था कि प्रेम एक ऐसी चीज है, जो जीवन भर एक जैसी नहीं रहती है. प्रेम परिस्थितियों के अनुसार घटता-बढ़ता रहता है. स्वाति उन्हें कितना प्रेम करती है, वह अब तक नहीं समझ पाए थे, परन्तु अब उसके कर्कश और क्रूर व्यवहार के कारण स्वयं को उससे दूर करते जा रहे थे, तन और मन दोनों से. पत्थरों से सिर टकराना बहुत घातक होता है. अब उन्हें यह अहसास हो गया था कि वह व्यर्थ में ही एक ऐसी स्त्री के साथ दाम्पत्य-सूत्र में बंधकर अपने जीवन को निःसार बनाते रहे हैं, जो उनके मन को बिल्कुल भी समझने के लिए तैयार नहीं थी.

अपनी पत्नी से अब उन्हें एक विरक्ति-सी होने लगी थी और वह जवान हो चुके बच्चों को एक बोझ समझने लगे थे. वह जीवन भर न केवल अपना प्यार पत्नी और बच्चों पर लुटाते रहे, बल्कि उनकी सुख-सुविधा की चिन्ता में रात-दिन खटते

रहे. परिवार के किसी व्यक्ति को कभी एक पैसे का कष्ट न हो, इसके लिए वह नौकरी के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आय के साधन ढूंढते रहे. परन्तु उनके स्वयं के हितों की तरफ परिवार के किसी सदस्य ने कभी ध्यान नहीं दिया. पत्नी ने भी नहीं. वह तो बच्चों के पैदा होते ही उनके प्रेम-स्नेह और देखभाल में ऐसी मगन हो गयी कि घर में पति नाम का एक अन्य जीव भी है, वह भूल-सी गयी. बच्चों की परवरिश, उनकी पढ़ाई-लिखाई और उनको जीवन में आगे बढ़ाने की उठा-पटक में ही उसने जीवन के बेहतरीन साल गुज़ार दिये. मणिकांत पत्नी के लिए एक उपेक्षित व्यक्ति की तरह घर में रह रहे थे. वह बस पैसा कमाने और परिवार के लिए सुख-चैन जुटाने की मशीन बनकर रह गये.

दाम्पत्य-जीवन के प्रारंभ से ही पत्नी का व्यवहार उनके प्रति रुखा था और कई बार तो उसका व्यवहार अपमानजनक स्थिति तक पहुंच जाता था. पति की आवश्यकताओं के प्रति वह हमेशा लापरवाह रही, परन्तु बच्चों के प्रति उसका मोह आवश्यकता से अधिक था. बच्चों को वह भी प्यार करते थे, परन्तु उस हद तक कि वह सही तरीके से अपने मार्ग पर चलते रहें. गलती करें तो उन्हें समझाकर सही मार्ग पर लाया जाय, परन्तु पत्नी बच्चों की गलत बातों पर भी उन्हीं का पक्ष लेती. इससे वह हठी होते गये.

उन्होंने कभी अगर बच्चों को सुधारने के उद्देश्य से कुछ नसीहत देनी चाही तो पत्नी बीच में आ जाती. कहती, “आप क्यों बेकार में बच्चों के पीछे अपना दिमाग खराब कर रहे हैं. मैं हूं न उन्हें संभालने के लिए. अभी छोटे हैं, धीरे-धीरे समझ जाएंगे. आप अपने काम पर ध्यान दीजिए, बस!”

अपना काम, यानी पैसे कमाना और परिवार के ऊपर खर्च करना. वह भी अपनी मर्जी से नहीं, पत्नी की मर्जी से. इसका मतलब हुआ पति का परिवार को चलाने में केवल पैसे का योगदान होता है. उसे किस प्रकार चलाना है, बच्चों को किस प्रकार पालना-पोसना है और उन्हें कैसी शिक्षा देनी है, यह केवल पत्नी का काम है. और अगर पत्नी मूर्ख हो तो...तब तो बच्चों का भविष्य भाग्य भरोसे? वह मन मसोहकर रह जाते.

पत्नी का कहना था कि बच्चे धीरे-धीरे समझ जाएंगे, परन्तु बच्चे कभी नहीं समझे. वह बड़े हो गये थे, परन्तु मां के अत्यधिक लाड़-प्यार और फजूलखर्जी से उनमें बचपन से ही बुरी लतें पड़ती गईं. उनके सामने ही उनके मना करने के बावजूद पत्नी बच्चों को बिना ज़रूरत के ढेर सारे पैसे देती रहती थी. जब किसी

नासमझ लड़के के पास फालतू के पैसे आएंगे तो वह कहां खर्च करेगा. शिक्षा प्राप्त कर रहे लड़कों की ऐसी कोई आवश्यकताएं नहीं होती, जहां वह पैसे का इस्तेमाल सही तरीके से कर सकें. लिहाजा, उनके बच्चों के मन में बेवज़ह बड़प्पन का भाव घर करता गया और वह दिखावे की आदत के शिकार हो गये. घर से मिलने वाला पैसा वह लड़कियों के ऊपर होटलों और रेस्तराओं में खर्च करते और दूसरे दिन फिर हाथ फैलाये मां के पास खड़े हो जाते.

बचपन से ही बच्चों के कपड़े-लत्तों, स्कूल की किताबों और फीस, उनके खान-पान और दैनिक खर्च की चिन्ता में पत्नी दिन-रात घुलती रहती, परन्तु कभी यह न सोचती कि पति को भी दिन भर ऑफिस में काम करने के बाद घर पर एक पल के लिए आराम और सुकून की आवश्यकता होती है. उनके जीवन में आर्थिक संकट जैसी कोई स्थिति नहीं थी. परन्तु अगर कभी कुछ पल या एकाध दिन के लिए ऐसी स्थिति उत्पन्न होती थी, तो उन्होंने बहुत शिद्दत से इस बात को महसूस किया था कि पत्नी का मुंह तब टेढ़ा हो जाता था और वह बेवज़ह उनकी परेशानी से निश्पृह रहकर केवल इस बात का ताना मारती रहती थी कि उनके साथ शादी करके उसका जीवन नरक हो गया था, कभी सुख नहीं देखा, बस परिवार को संभालने में ही उसका जीवन गारत हो गया.

तब पति-पत्नी के बीच बेवज़ह खट-पट हो जाती थी. हालांकि वह तब भी चुप रहते थे, क्योंकि पत्नी को उनके वाज़िब तर्क भी बुरे लगते थे. अतः बेवज़ह बहस करके वह स्वयं को दुःखी नहीं करते थे, परन्तु उनके चुप रहने पर भी पत्नी का चीखना-चिल्लाना जारी रहता. वह उनके ऊपर लांछन लगाती, “हां, हां, क्यों बोलोगे, मेरी बातें आपको बुरी लगती हैं नू! जवाब देने में आपकी जुवान कट जाती है. दिन भर ऑफिस की लड़कियों के साथ मटरगस्ती करते रहते हो न! इसीलिए मेरा बोलना आपको अच्छा नहीं लगता.”

पत्नी की इसी तरह की जली-कटी बातों से वह कई दिनों तक व्यथित रहते.

खैर, परिवार के लिए धन-सम्पत्ति जुटाना उनके लिए कोई बड़ी मुसीबत कभी नहीं रही. वह उच्च सरकारी सेवा में थे और धन को बहुत ही व्यवस्थित ढंग से उन्होंने निवेश कर रखा था और अवधि पूरी होने पर अब उनके निवेशों से उन्हें वेतन के अलावा अतिरिक्त आय भी होने लगी थी. जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते गए और उनकी ज़रूरतें बढ़ती गयीं, उसी हिसाब से उनका वेतन और अन्य आय के स्रोत भी बढ़ते गये. सम्पन्नता उनके चारों ओर बिखरी हुई थी, परन्तु प्यार कहीं नहीं

था. वह प्रेम की एक बूंद के लिए तरस रहे उस प्राणी की तरह थे, जो नदी के पाट पर खड़ा था, परन्तु उसको ऐसा श्राप मिला हुआ था कि वह पानी को छू तक नहीं सकता था. पत्नी के कर्कश स्वभाव और बच्चों के प्रति उसकी अति व्यस्तताओं ने मणिकांत को पत्नी के प्रति उदासीन कर दिया था.

उधर छोटा बेटा भी अपने भाई से पीछे नहीं था. बड़े भाई की देखा-देखी उसने भी बाइक की मांग पेश कर दी थी. दूसरे दिन उसे भी बाइक खरीदकर देनी पड़ी. यह कोई दुःखी करनेवाली बातें नहीं थी, परन्तु उन्होंने पत्नी से कहा, “लड़कों को बोलो, थोड़ा पढ़ाई की तरफ भी ध्यान दिया करें. कितना पिछड़ते जा रहे हैं. साल-दर-साल फेल होते हैं. यह उनके भविष्य के लिए कोई अच्छी निशानी नहीं है.”

पत्नी ने रूखा-सा जवाब दिया, “आप उनकी पढ़ाई को लेकर क्यों परेशान होते रहते हैं? उन्हें पढ़ना है, पढ़ लेंगे. नहीं पढ़ेंगे, तो कोई काम धन्धा कर लेंगे. कमी किस बात की है?”

एक अफसर के बेटे दुकानदारी करेंगे? यह उनकी पत्नी की सोच थी. और पत्नी की सोच ने एक दिन यह रंग भी दिखा दिया, जब बड़े लड़के ने घोषणा कर दी कि वह अब पढ़ाई नहीं करेगा और कोई काम-धन्धा करेगा. मां की ममता का फायदा उठाकर उसने एक मोबाइल की दुकान खुलवा ली. इसके लिए उनको पांच लाख रुपये देने पड़े.

परन्तु बड़े बेटे की निरंकुशता यही नहीं रुकी. उन्हें मालूम नहीं था, परन्तु स्वाति को पता रहा होगा, वह किसी लड़की से प्यार करता था. पढ़ाई छोड़ दी तो उसके साथ शादी की जल्दी पड़ गई. संभवतः उसे पता था कि मणिकांत आसानी से नहीं मानेंगे, तो उसने चुपचाप लड़की से कोर्ट में शादी कर ली. अप्रत्यक्ष रूप से इसमें स्वाति का हाथ रहा होगा.

जिस दिन लड़का बिना किसी बैण्ड-बाजे के लड़की को घर लेकर आया, तो उनकी पत्नी ने अकेले उनकी अगवानी की और रीति-रिवाज से घर में प्रवेश करवाया. पत्नी बहुत खुश थी. छोटा लड़का भी मां का खुशी-खुशी सहयोग कर रहा था. वह एक अजनबी की तरह अपने ही घर में यह सब होता देख रहे थे. किसी ने उनसे न कुछ कहा, न पूछा.

पत्नी ने ये भी नहीं कहा कि वह बहू को आशीर्वाद दे दें. उनको दुःख हुआ, परन्तु किसी से व्यक्त नहीं कर सकते थे. बात यहां तक रहती तब भी वह संतोष कर लेते, परन्तु दूसरे दिन पत्नी और बेटे की जिद्द के चलते परिचितों और रिश्तेदारों को शादी की रिसेशन देनी पड़ी. इसमें उनके लाखों रुपये खर्च हो गये. परिवार

के किसी व्यक्ति की खुशी में वह भागीदार नहीं थे, परन्तु उनकी खुशी के लिए पैसा खर्च करना उनका कर्तव्य था।

जीवन के लगभग पच्चीस वर्ष तक उन्होंने पूरी निष्ठा और ईमानदारी से पत्नी को प्रेम किया था। पत्नी, परिवार और बच्चों की हर ज़रूरत पूरी की थी। परन्तु अब उन्हें लगने लगा था कि उन्होंने मात्र एक जिम्मेदारी निभाई थी। बदले में जो प्यार उन्हें मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला।

ऑफिस में अधिक देर तक बैठने से उनके मन को सुकून मिलता था। एक दिन उनके एक सहकर्मी मित्र उनके कमरे में आए और सामने बैठते हुए बोले, “क्यों यार, क्या बात है, आजकल देख रहा हूँ, आफिस में देर तक बैठने लगे हो। काम अधिक है या और कोई बात है?”

मणिकान्त ने हल्के से मुस्कराकर कहा, “नहीं, काम तो कोई खास नहीं, बस यूँ ही।”

“अच्छा, तो अब भाभीजी अच्छी नहीं लगतीं और बच्चे बड़े हो गये हैं। जिम्मेदारियाँ कम हो गयी हैं?” मित्र ने स्वाभाविक तौर पर कहा।

“क्या मतलब?” मणिकान्त ने चौंककर पूछा।

“मतलब साफ है यार! आदमी घर से तब दूर भागता है, जब पत्नी बूढ़ी होने लगती है और उसका आकर्षण कम हो जाता है। बच्चे भी इतने बड़े हो जाते हैं कि उनकी अपनी प्राथमिकताएं हो जाती हैं। तब घर में कोई हमारी तरफ ध्यान नहीं देता। ऐसी स्थिति में हम या तो आफिस में काम के बहाने बैठे रहते हैं या किसी और काम में व्यस्त हो जाते हैं।”

मणिकान्त सोचते से बैठे रह गये। उन्हें लगा कि सहकर्मी की बात में दम है। वह जीवन की वास्तविकताओं से भलीभांति वाकिफ़ है और वह अपनी समस्या को उस मित्र के साथ साझा कर मन का बोझ कुछ हद तक हल्का कर सकते हैं। मन ही मन निश्चय कर उन्होंने धीरे-धीरे अपनी पत्नी से लेकर बच्चों तक की समस्या खोलकर मित्र के सामने रख दी, कुछ भी नहीं छिपाया। अंत में उन्होंने कहा-

“अमित, यही सब कारण हैं जिससे आजकल मेरा मन भटकने लगा है। पत्नी से विरक्ति सी हो गयी है। उसका ध्यान बच्चों की तरफ अधिक रहता है, धन-सम्पत्ति इकट्ठा करने में उसकी रुचि है, बच्चों के भविष्य की उसे अधिक चिन्ता है, परन्तु इस चिन्ता में वह उनका भविष्य बिगाड़ती जा रही है। बच्चों के बारे में कुछ तय करने में मेरा कोई सहयोग नहीं लेती। इसके अतिरिक्त एक पति की दैनिक ज़रूरतें क्या हैं, उसकी तरफ वह बिल्कुल ध्यान नहीं देती।”

“बच्चों के प्रति मां की चिन्ता वाज़िब होती है, परन्तु मां की बच्चों के प्रति अति चिन्ता बच्चों को बनाती कम, बिगाड़ती ज्यादा है।” अमित ने स्वाभाविक भाव से कहा।

“सच कहते हो। पत्नी और बच्चों के साथ रहते हुए जिस प्रकार का जीवन मैं व्यतीत कर रहा हूँ, उससे मुझे लगता है कि पारिवारिक रिश्ते केवल पैसे के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं। उनमें प्रेम नाम का तत्व नहीं होता है या अगर ऐसा कोई तत्व दिखाई देता है तो केवल स्वार्थवश। जब तक स्वार्थ की पूर्ति होती रहती है, तब तक प्रेम दिखाई देता है। जैसे ही परिवार में अभाव की टोली अपने लम्बे पैर पसार कर बैठ जाती है, वैसे ही परिवार के बीच लड़ाई-झगड़ा आरंभ हो जाता है। तब प्रेम नाम का जीव पता नहीं कहाँ विलीन हो जाता है।”

“परिवार में इस तरह की छोटी-छोटी बातें होती रहती हैं, परन्तु मन में गांठ बांधकर इनको बड़ा बनाने का कोई औचित्य नहीं होता।” अमित ने समझाने के भाव से कहा।

“मैंने अपने मन में कोई गांठ नहीं बनाई। अब तक हर संभव कोशिश की कि पत्नी के साथ सामंजस्य बिठा सकूँ, बच्चों को उचित मार्गदर्शन दे सकूँ, परन्तु पत्नी की हठधर्मि के आगे मेरी कोई नहीं चलती। मैं जैसे अपने ही घर में कोई पराया व्यक्ति हूँ। मेरी अहमियत केवल यही तक है कि मैं उनके लिए पैसा कमाने की मशीन हूँ। इससे मेरे मन को ठेस पहुंचती है। बच्चे तो कई-कई दिन तक मुझसे बात नहीं करते। मैं उनसे आत्मीयता से बात करने की कोशिश करता हूँ, तब भी मुझसे दूर रहते हैं। हर ज़रूरत के लिए वह मां के पास जाते हैं। बड़ा तो जैसे-तैसे अब अपने सही-गलत मार्ग पर चल रहा है। अपनी मर्जी से शादी की, खुश रहे; परन्तु छोटा तो अभी तक किसी कोर्स के लिए क्वालिफाई तक नहीं कर पाया है। हर बार एन्ट्रेंस एक्जाम में फेल हो जाता है। दिन भर घूमता रहता है, पता नहीं क्या करने का इरादा है? उसकी हरकतों से मुझे असीम कष्ट पहुंचता है।”

“कभी तुमने भाभीजी के स्वभाव का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया या यह जानने की कोशिश की कि वह क्यों ऐसी हैं?” अमित ने पूछा।

“बहुत बार किया। कई बार तो उससे ही पूछा, ‘तुम क्यों इतनी चिड़चिड़ी हो? जब देखो, तब गुस्से में रहती हो। तुम्हें क्यों हर वक़्त सबसे परेशानी रहती है?’ तब वह भड़क कर बोली, ‘कौन कहता है कि मैं चिड़चिड़ी हूँ और सदा गुस्से में रहती हूँ। मेरे स्वभाव में क्या कमी है। आपको ही मेरा स्वभाव अच्छा नहीं लगता, तो मैं क्या करूँ।’ बाद में मैंने उसके मायके में पता किया, तो पता चला कि वह

जन्म से ऐसी ही चिड़चिड़ी, गुस्सैल और जिद्दी थी. तोड़ना-फोड़ना उसका स्वभाव था. मनमानी करके अपनी सही-गलत बातें मां-बाप से मनवा लेती थी. उसी चरित्र को आज भी वह जी रही है. अब उसमें क्या परिवर्तन आएगा?”

“मैं कुछ हद तक तुम्हारी समस्या समझ सकता हूं. तुम्हारे परिवार की यह स्थिति पत्नी के स्वार्थी और कर्कश स्वभाव के कारण है. ऐसी पत्नी दूसरों को उपेक्षित करके स्वयं को सबसे ऊंचा रखकर देखती है. उसके लिए उसका ‘स्व’ और उसके बच्चे ही अहम् होते हैं. ऐसी स्त्रियों का अनुपात हमारे समाज में कम है, फिर भी उनकी संख्या कम नहीं है. इस तरह की पत्नियां अपने पतियों का जीवन ही नहीं, पूरे ससुरालवालों का जीना हराम किए रहती हैं. मुझे लगता है भाभीजी ऐसे ही चरित्रवाली महिला हैं. इस तरह की स्त्रियां चोट खाकर भी नहीं संभलतीं.”

“तब फिर परिवार में सामंजस्य बनाए रखने और खुशियों को जिन्दा रखने का क्या उपाय है?” मणिकान्त ने पूछा.

“बहुत आसान है मेरे भाई! जब घर-परिवार में पत्नी और बच्चों से खुशियां न मिलें तो आदमी अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी खुशी तलाश कर सकता है.”

“वह कैसे?” उन्होंने जिज्ञासा व्यक्त की.

“तुम अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए परिवार को भी खुश रख सकते हो, और स्वयं के लिए मन की खुशी भी तलाश कर सकते हो.” अमित ने रहस्यमयी भाषा में कहा.

“मन की खुशी कैसी होती है?” मणिकान्त की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी. अमित के सामने वह एक बच्चा बन गये थे.

अमित ने एक शिक्षक की तरह उन्हें समझाया, “खुशियां केवल भौतिक चीजों से ही नहीं मिलतीं, यह मनुष्य के मन में भी होती हैं. बस हम उन्हें पहचान नहीं पाते.”

“मन की खुशियां कैसे तलाश की जा सकती हैं?” वह जानने के लिए उतावले हो रहे थे.

“ऐसी खुशियां हम अपनी रुचि और शौक के मुताबिक कार्य करके प्राप्त कर सकते हैं. प्रत्येक मनुष्य स्वभाव से कलाकार होता है, उसके चरित्र में रचनात्मकता होती है; परन्तु जीवन की आपाधापी और परिवार के चक्कर में घनचक्कर बनकर, वह अपने आन्तरिक गुणों को भुला बैठता है. अगर हम अपने आन्तरिक गुणों की पहचान कर लें, तो हर व्यक्ति, लेखक, चित्रकार, कलाकार, अभिनेता आदि बन सकता है. तुम बताओ, तुम्हारी रुचियां कौन-सी हैं?”

मणिकान्त सोचने लगे. फिर कहा, “अब तो जैसे मैं भूल ही गया हूं कि मेरी रुचियां और शौक क्या हैं, परन्तु विद्यार्थी जीवन में कविताएं लिखी थीं और कुछ चित्रकारी का भी शौक था.”

अमित ने उत्साहित होकर कहा, “बस, यही तो हैं तुम्हारे आन्तरिक गुण. तुमको बहुत अधिक उलझने की आवश्यकता नहीं है. बस तुम फिर से लिखना शुरू कर दो और पेंसिल लेकर कागज पर आकार बनाना आरंभ करो. फिर देखना, कैसे तुम्हारी कला और लेखन में निखार आता है. तुम अपने परिवार के सभी कष्ट और दुःख भूलकर स्वयं में इतना मगन हो जाओगे कि चारों तरफ तुमको खुशियां ही खुशियां बिखरी नजर आएंगी.”

मणिकान्त अमित की बात से सहमत थे. मुस्कराते हुए कहा, “धन्यवाद! अमितजी, तुमने मुझे सही रास्ता दिखाया. अब मैं परिवार के बीच भी खुशियां ढूंढ़ लूंगा.”

“मैंने तुम्हें कोई रास्ता नहीं दिखाया. प्रत्येक व्यक्ति को खुशियों की मंज़िल का पता होता है. बस परिस्थितियों के भंवर में फंसकर वह अपना सही मार्ग भूल जाता है. मैंने तो केवल तुम्हारी सोती हुई बुद्धि को जगाने का कार्य किया है.”

उस रात पलंग पर लेटे-लेटे उन्होंने पत्नी से सवाल किया, “क्या तुम इस बात पर विश्वास करती हो कि एक व्यक्ति किसी को उम्र भर एक ही जैसा प्यार कर सकता है?”

“यह कैसा सवाल है? हम सभी एक दूसरे को प्यार करते हैं और हमेशा करते रहते हैं. इसमें कौन सी नई बात है?” वह दूसरी तरफ करवट बदलकर बोली.

मणिकान्त तड़पकर रह गये. उससे बात करना व्यर्थ था. हर बात को वह उल्टे तरीके से लेती है. कभी प्यार से उनकी बात को समझने की कोशिश नहीं करती. उन्होंने सिर टेढ़ा करके पत्नी की अधुखली पीठ देखी, सुन्दर और चिकनी पीठ. काश, इतनी ही सुन्दर और मीठी उसकी बोली होती.

इसके बाद मणिकान्त दो भागों में बंट गये. एक भाग में वह स्वयं के साथ होते. उन्होंने कागज, कलम और पेंसिल हाथों में पकड़ ली. अपनी भावनाओं को अक्षरों और चित्रों के माध्यम से व्यक्त करने लगे. वह लेखन और चित्रकारी में इस कदर डूब जाते कि उन्हें घर-परिवार की उलझनें कहीं दिखाई ही नहीं देतीं. अब वह सबसे हंसकर बोलते, पत्नी को आश्चर्य होता. जो आदमी हमेशा दुखी-परेशान रहता था, वह खुश कैसे रहने लगा है. इस बात से पत्नी की चिन्ता में बढ़ोत्तरी हो गयी.

दूसरे भाग में उनका परिवार था, जहां बाढ़ के पानी की तरह हलचल थी, तीव्र वेग था, जो सबकुछ अपने साथ बहा ले जाने के लिए बेताब था. बाढ़ के बाद की तबाही का मंज़र उनकी आंखों के सामने अक्सर गुजर जाता, परन्तु अब वह इन सब बातों से परेशान नहीं होते. उनकी समझ में आ गया था कि बाढ़ के पानी को रोकने में वह असमर्थ हैं? बच्चे इतना निरंकुश हो चुके थे कि बड़े बेटे ने सड़क दुर्घटना में अपनी नई बाइक का कबाड़ा कर दिया था. खुद ज़ख्मी हो गया था और हजारों रुपये इलाज में खर्च हो गए थे. इन्श्योरेंस का पैसा अभी तक मिला नहीं था. लेकिन जैसे ही ठीक होकर घर आया, तुरन्त दूसरी बाइक की मांग करने लगा.

मणिकान्त को अपनी खुशियों का पता चल गया था, अतएव उन्होंने बिना नानुकर के पत्नी के हाथ में पैसा रख दिया. स्वाति बड़ी हैरान थी. पहले तो वह पैसा इतनी आसानी से नहीं देते थे. आजकल उनको क्या हो गया है? वह कुछ समझ न पाती.

पत्नी से एक दिन पूछा उन्होंने, “अगर तुम्हारे पास ढेर सारा पैसा हो, परन्तु मैं न रहूं, तो क्या तुम खुश रहोगी?”

पत्नी ने पहले तो उन्हें घूरकर देखा और फिर मुंह टेढ़ा करके पूछा, “इसका क्या मतलब हुआ? क्या आप कहीं जा रहे हैं?”

“कहीं जा तो नहीं रहा, परन्तु मान लो ऐसा हो जाए या मैं इस दुनिया में न रहूं, तो क्या तुम मेरे बिना खुश रहोगी?”

“जब देखो तब आप टेढ़ी-मेढ़ी बातें करते रहते हो. कभी कोई सीधी बात नहीं की. दुनिया का प्रत्येक प्राणी मृत्यु को प्राप्त होता है, इसमें नया क्या है? घर के लोग कुछ दिन शोक मनाते हैं, फिर जीवन अपने ढर्रे पर चलने लगता है.” पत्नी व्यावहारिक बात कर रही थी, परन्तु उसकी बातों में रिश्तों की कोई मिठास नहीं थी. उसमें भावुकता और संवेदनशीलता नाम की भी कोई चीज नहीं थी. वह एक जड़ वस्तु की तरह व्यवहार कर रही थी.

धीरे-धीरे पति-पत्नी के बीच एक संवादहीनता की स्थिति उत्पन्न होती जा रही थी. घर के लोगों से माथापच्ची करने के बजाय वह अब अधिकतर समय लेखन में व्यतीत करते. चित्रकारी में उनका हाथ सध गया था और पेंसिल कागज छोड़कर अब वह कैनवस पर रंग बिखेरने लगे थे. उनके रंगों में अधिकतर खुशियों के रंग होते थे. यह सत्य है कि जो व्यक्ति अन्दर से दुखी होता है, वह दूसरों को खुशी बांटने में कंजूसी नहीं करता.

कुछ दिन बाद अमित ने फिर पूछा, “अब तुम कैसा महसूस कर रहे हो?”

“बहुत अच्छा! तुम्हारी सलाह ने मुझ पर जादू-सा असर किया है. मैं मन लगाकर अपनी रुचि के मुताबिक लेखन और चित्रकारी में व्यस्त रहता हूं. परिवार के लोग अपने-अपने जोड़-तोड़ में लगे रहते हैं. मैंने उन सबको उनके हाल पर छोड़ दिया है. जवान व्यक्ति अगर गलत राह पर चलता है, तो वह ठोकर खाने के बाद ही सुधरता है. पत्नी के बारे में मैं अब नाउम्मीद हो चुका हूं. हां, लड़के अगर सुधर जाएं, तो गनीमत है. वैसे मुझे लगता नहीं है, क्योंकि पत्नी उनके हर गलत काम में खुशी से सहयोग देती है. बिना रुकावट के तो सीधा आदमी भी टेढ़ा चलने लगता है.”

“तुम एक धैर्यवान व्यक्ति हो और मुझे आशा है कि तुम अपने परिवार को सही रास्ते पर ला सकोगे. कोई भी व्यक्ति जड़ नहीं होता. अगर वह जीवन में गलती करता है तो एक न एक दिन सही रास्ते पर आ ही जाता है. अगर वह किसी के समझाने से सही राह पकड़ लेता है तो बहुत अच्छा है; वरना परिस्थितियां उसे सही मार्ग अवश्य दिखा देती हैं.”

“मेरी पत्नी समझाने से तो सही राह पर नहीं आनेवाली, परन्तु मेरा विश्वास है कि परिस्थितियां उसे एक दिन अवश्य बता देंगी कि अपनी मूर्खता से किस प्रकार उसने अपने बेटों का जीवन बर्बाद कर दिया है.”

“तुम्हारी पत्नी अपनी गलतियों से कुछ सीखती है या नहीं, अब यह बहुत गौण बात है! इसका समय अब निकल गया है. आज की तारीख में तुम्हारे लिए यह जानना ज़रूरी है कि मनुष्य विपरीत परिस्थितियों में भी कैसे खुश रह सकता है. यह मंत्र अगर तुम्हें आ गया, तो समझिए, जीवन अमृत है, वरना मूर्ख लोग जीवन को ज़हर समझकर पीते ही रहते हैं और हर छोटी बात का रोना रोते रहते हैं. तुम्हारे घरवाले अपनी-अपनी जगह खुश हैं, बस तुम्हें अपनी खुशियां तलाश करनी हैं और ये खुशियां तुम्हें अपने मन को स्वस्थ और प्रसन्न रखने से ही प्राप्त होंगी.”

“मैं समझता हूं, मैंने अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में कोई कोताही नहीं बरती. इस बात की मुझे खुशी है. बस लड़के सही मार्ग पर नहीं चल पाये, इस बात का मझे दुःख है.”

“इस दुःख को अपने मन में रखकर तुम सुखी नहीं रह सकते. यूं तो बच्चों के बिगड़ने की जिम्मेदारी लोग अक्सर बाप पर ही थोपते हैं, जबकि बच्चों को बनाने-बिगाड़ने में मां का हाथ अधिक होता है, परन्तु मां की तरफ लोगों का ध्यान



कम जाता है. तुमने अपना कर्तव्य ईमानदारी से पूरा कर दिया, यह बात प्रमुख है. उसका फल नहीं मिला, तो इसमें अफसोस नहीं करना चाहिए. भौतिक खुशियां हर किसी को एक समान नहीं मिलतीं. सच्चा मनुष्य वहीं है जो मन की खुशियों के सहारे दूसरों को खुशियां प्रदान करता रहे. मैं तुम्हारी समझदारी की दाद देता हूं कि घर के विपरीत माहौल में भी तुमने कोई ऐसी परिस्थिति उत्पन्न नहीं होने दी, जिससे बात मारपीट तक पहुंचती या तलाक की नौबत आती. तुमने पत्नी और बच्चों को उनके हिसाब से जीने दिया, और अपनी खुशियों को बलिदान करते रहे. अब तुम अपने अनुसार अन्तिम जीवन को व्यतीत करो. मेरा विश्वास है, हर कदम पर तुम्हें मानसिक सुख प्राप्त होता रहेगा.”

“हां अमित, उसका रास्ता तुमने मुझे दिखा ही दिया है. अब मैं बहुत खुश हूं.”

“तो फिर तुम्हारा लेखन कैसा चल रहा है और चित्रों में कितने रंग भरने सीख लिए हैं तुमने? यह रंग खुशियों के हैं, या...” अमित ने जान-बूझकर बाकी वाक्य अधूरा रहने दिया.

“दोनों कार्य कर रहा हूं. लेखन कार्य द्वारा मैं तल्लिखियों को कम करके अपनी भावनाओं को संतुष्ट कर लेता हूं तो चित्र बनाकर मुझे नैसर्गिक सुख का आभास होता है. उनके रंग कैसे हैं, यह तुम देखकर बताना.”

“अच्छा तो जब तुम्हारी कोई रचना छपे तो मुझे अवश्य दिखाना. और चित्रों के रंग देखने के लिए किसी दिन तुम्हारे घर आऊंगा.”

“हां, हां, क्यों नहीं. शिष्य की पहली उपलब्धि पर गुरु का ही अधिकार होता है.” और दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े.

बहुत दिनों बाद मणिकांत इतना खुलकर हंसे थे. उन्हें लगा, जीवन इतना कष्टमय और दुःखदायी नहीं है, जितना वह पिछले दिनों समझने लगे थे.



## नौकरानी

शाम को घर पहुंचा तो एक अपरिचित चेहरे ने दरवाजा खोला. मैं उसे देखकर हैरान रह गया. वह एक युवती थी— अठारह-बीस साल के लगभग. देखने में सुन्दर थी और उसका शारीरिक सौष्ठव आकर्षक था. पहनावे से भले ही निम्न वर्गीय लग रही थी, परन्तु उसके चेहरे का देसी सौन्दर्य पहली निगाह में ही किसी को भा सकता था.

उसने मुस्कराकर मुझे नमस्ते किया. उसके मुस्कराने में परिचय का भाव था, जबकि मैं उसे पहली बार देख रहा था. उसने भी मुझे पहली बार देखा था, परन्तु संभवतः श्रीमतीजी ने पहले ही उसे मेरे बारे में बता रखा था और उन्होंने ही उसे दरवाजा खोलने के लिए भेजा था.

दरवाजे से एक तरफ पीछे हटते हुये उसने मुझे अंदर आने के लिए रास्ता दिया. मैं असमंजस में फंसा अंदर घुसा तो उस युवती ने पीछे से दरवाजा बंद कर लिया और बोली, “साहब पानी लाऊं?” उसकी आवाज़ में बच्चों जैसी मधुरता थी. मुझे उसके बदन की सुन्दरता ही नहीं, आवाज़ भी अच्छी लगी थी. मैं ड्राइंगरूम में सोफे पर बैठते हुए बोला, “क्या तुम्हें घर का काम करने के लिए रखा गया है?”

“जी साहबजी, मेम साहब ने आज ही बुलाया है.”

“मेम साहब कहां हैं?”

“पीछे वाले कमरे में...आराम कर रही हैं.” उसने सीधे स्वभाव कह दिया.

मुझे झटका लगा. शादी के बाद यह पहली बार हुआ था कि श्रीमती जी ने मेरे लिए दरवाजा नहीं खोला था और वह मेरे स्वागत के लिए दरवाजे पर उपस्थित नहीं थीं. वह बाहर निकल कर भी नहीं आई थीं और मुझसे बेखबर बेडरूम में आराम फरमा रही थीं. क्या घर में नौकरानी आ जाने से पति के लिए पत्नी का

महत्व कम हो जाता है? क्या नौकरानी पत्नी की जगह ले सकती है? एक नौकरानी घर के सारे काम भले ही कर ले, परन्तु वास्तविक रूप में वह एक पत्नी का स्थान कभी नहीं ले सकती. क्या श्रीमती जी को इस बात का थोड़ा सा भी एहसास नहीं है?

मैं भी पीछे के कमरे में नहीं गया और सोफे पर बैठे-बैठे ही उस युवती से पूछा, “तुम्हारा नाम क्या है?”

“जी मधु,” उसने शरमाकर कहा. मुझे उसका शरमाना अच्छा लगा. उसके शरमाने में एक भोलापन था. मैंने कहा, “बहुत प्यारा नाम है, तुम्हारे स्वर की तरह मीठा...” वह और ज्यादा शरमा गयी और मुंह दूसरी तरफ घुमाकर बोली, “साहब पानी लाऊँ?”

“हां,” मैंने जूते के फीते खोलते हुए कहा. वह अन्दर चली गयी.

मैंने जूते उतारे ही थे कि श्रीमतीजी अन्दर से उठकर आ गयीं और मुस्कराते हुए मेरी बगल में बैठ गयीं. मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए इटलाकर बोली, “अच्छी लगी नू!”

“क्यों?” मैंने समझकर भी नासमझ बनने का नाटक किया.

“नौकरानी...देखी नहीं क्या? मैंने बहुत सोच-समझकर और देखभाल कर उसे रखा है. सुन्दर है और साफ-सुथरी रहती है. घर के काम के लिए ऐसी ही नौकरानी चाहिए.”

मैं अपनी पत्नी का चेहरा देखता रह गया. हमारी शादी को अभी दो साल ही हुए थे और हमारी कोई संतान नहीं थी. घर में हम दो ही प्राणी थे. कोई खास काम नहीं था, बस खाना-बनाना और खाना. घर की साफ-सफाई में कितना समय लगता था. मेरी पत्नी कोई नौकरी भी नहीं करती थी. जब से हम इस सरकारी कॉलोनी में रहने आए थे, उसने नौकरानी रखने की जिद्द पकड़ ली थी.

हम जिस सरकारी कालोनी में रहते थे, उसमें केन्द्रीय सरकार के लगभग सभी विभागों के कर्मचारी और अधिकारी रहते थे. मेरा फ्लैट दूसरी मंजिल पर था. अगल-बगल और नीचे-ऊपर दूसरे कर्मचारी रहते थे. उनमें से ज्यादातर सेन्ट्रल एक्साइज और कस्टम विभाग के इंस्पेक्टर रहते थे. पता नहीं उनकी कितनी अधिक कमाई होती थी कि लगभग सभी के घरों में सुबह-शाम नौकरानियां काम करने आती थीं. कई घरों में तो स्थायी नौकरानियां थीं और कई घरों में नौकरानी के साथ-साथ पुरुष नौकर भी थे. इनके घरों में न केवल होली-दीवाली में लोग उपहारों के बड़े-बड़े बंडल लेकर आते रहते थे, बल्कि अन्य दिनों में भी इनके यहां सौगातों की बौछारें होती रहती थीं.

अगल-बगल के घरों की विलासिता और राजसी ठाट देखकर मेरी पत्नी के सीने में सांप लोटता रहता था. वह अक्सर मुझे ताना मारती रहती थी, “पता नहीं आप कैसे विभाग में काम करते हैं कि हमारे घर में आपके दफ्तर का चपरासी भी झांकने नहीं आता. इनके घरों में देखो, पता नहीं लोग क्या-क्या देकर जाते हैं और कैसे ठाट से रहते हैं. इनकी पत्नियां रात-दिन मेक-अप में लिपी-पुती और साड़ी-गहनों से सजी-धजी रहती हैं और एक मैं...” फिर वह अफसोस में डूब जाती.

मैं उसे समझाने के अंदाज में कहता, “रश्मि, मैं चाहे जिस भी विभाग में काम करता हूं, परन्तु सरकार मुझे इतना वेतन देती है कि हम दोनों सुख से अपना जीवन-यापन कर सकते हैं और गाढ़े समय के लिए कुछ बचा भी सकते हैं. भविष्य में जब बच्चे होंगे, तब तक वेतन में बढ़ोत्तरी होगी और हमें कोई कष्ट नहीं होगा. तब तक हम कुछ बचत भी कर लेंगे.”

“परन्तु हमारे पड़ोसियों की तरह विलासिता से तो जीवन नहीं बिता सकते.” वह कुछ रोष से बोली.

“हमें दूसरों के सुख से अपने सुख की तुलना नहीं करनी चाहिए. तुम पढ़ी-लिखी हो, समझदार हो. तुम्हारे इन्हीं गुणों के कारण मैंने तुम्हें पसंद किया था और शादी के लिए हां की थी. क्या तुम मेरे साथ खुश नहीं हो?”

वह कुछ लज्जित हो गयी. मेरे दोनों हाथों को अपने हाथों से पकड़कर बोली, “नहीं ऐसी बात नहीं है, पर मैं चाहती हूं कि पड़ोसियों के रहन-सहन जैसा अपना भी रहन-सहन हो.”

“उसमें क्या कमी है? क्या हम साफ-सुथरे कपड़े नहीं पहनते या अच्छा खाना नहीं खाते. हमारे घर में आवश्यकता की सभी वस्तुएं हैं. छुट्टी में बाहर घूमने भी जाते हैं. फिर कमी कहां है?” मैंने उसे टोंकते हुए कहा.

“वह सब ठीक है, परन्तु उनके घरों में नौकरानियां काम करने आती हैं, तो मुझमें हीन-भावना सी आ जाती है. क्या वे लोग देखते नहीं कि हमारे घर में काम करनेवाली कोई बाई नहीं है और मैं ही अपने घर का सारा काम करती हूं.”

मैंने हंसकर उसके गाल पर एक हल्की चपत लगाई, “तुम भी किन बेकार की बातों में अपना दिमाग खराब करती रहती हो. घर में केवल हम दोनों हैं. तुम बड़े आराम से सब काम कर लेती हो. सुबह-शाम हम दोनों मिलकर काम में हाथ बंटा लेते हैं. छुट्टी के दिन हम दोनों साथ-साथ सारा काम करते हैं. जब कोई बच्चा होगा, तब देखा जाएगा. नौकरानी भी रख लेंगे.”

वह शरमा गयी और बोली, “कब बच्चा होगा, कब नौकरानी आएगी. मुझे तो अभी घर में एक नौकरानी चाहिए. कम से कम मैं बालकनी में खड़ी होकर गर्व से सबकी तरफ देखते हुए मुसकरा सकती हूं. सबको दिखाते हुए नौकरानी को काम करने के लिए कह सकती हूं.”

रश्मि के दिमाग से यह फितूर निकालने का मेरे पास कोई रास्ता नहीं था. टालने के लिए मैंने कह दिया, “अच्छा तो झाड़ू-पोंछा करने के लिए एक बाई रख लो.”

“नहीं, मुझे पूरे समय के लिए बाई चाहिए, जिसको लेकर मैं हाट-बाजार जाऊं और सबको दिखा सकूँ कि मेरे घर में भी नौकरानी है और हम किसी से कम नहीं हैं.”

हम दोनों ऐसे परिवार से आए थे, जहां घरेलू कामों के लिए नौकर-नौकरानियां रखने का चलन नहीं था. घर के लोग ही सारा काम करते थे. ऐसा भी नहीं था कि हम नौकर या नौकरानियां नहीं रख सकते थे, परन्तु हमारे परिवार की बहू-बेटियों को ऐसे संस्कार दिए जाते थे कि वह घर का सारा काम मिल-बांटकर कर लिया करती थीं.

परन्तु आज स्थिति उलट हो गयी थी. सरकारी मकान मिलने के पहले हम दोनों दो कमरे के एक किराए के मकान में रहते थे. वह बहुत अमीर इलाका नहीं था. वहां रहते हुए रश्मि को अपने घर का काम करने में कभी कोई परेशानी नहीं हुई, न उसके मन में कोई हीन भावना आई. परन्तु सरकारी क्वार्टर में आते ही उसने जब यहां का रहन-सहन देखा और पैसे की रेलम-पेल देखी तो उसके दिमाग में फितूर आ घुसा. मैं दो नंबर का पैसा कमाकर नहीं ला सकता था और न विलासिता पूर्ण जीवन की कल्पना ही कर सकता था, परन्तु रश्मि पड़ोस की औरतों के समक्ष अपने झूठे दंभ और बड़े होने का दिखावा तो कर ही सकती थी.

फिर मैंने रश्मि को उसकी कल्पना और इच्छा के साथ छोड़ दिया. जब मैंने ढील दी तो वह समझ गयी कि मैंने उसकी बात मान ली है. उसने आते-जाते रास्ते में कई बाइयों से बात की और एक अच्छी, जवान और साफ सुथरी रहनेवाली बाई के लिए उनसे कहा. उसी का परिणाम है कि आज हमारे घर में एक सुन्दर, जवान और साफ-सुथरी नौकरानी मधु के रूप में आ गयी थी.

रश्मि अपनी बात कहकर मेरी प्रतिक्रिया जानने के लिए उत्सुक थी और एकटक मेरा चेहरा ताके जा रही थी. मैंने एक लंबी सांस लेकर कहा, “अच्छी है, तुमने पसंद की है तो अच्छी नहीं होने का प्रश्न ही नहीं उठता. देखना है कि काम कैसा करती है.”

“काम भी अच्छा करती है. सबसे बड़ी बात है कि हंसमुख है. बिना किसी नानुकर के हंसते हुए सारे काम फटाफट निबटा देती है. ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं है, परन्तु संस्कार अच्छे हैं. हमारे साथ रहने लगेगी तो कोई कह नहीं सकता कि वह हमारे घर की नौकरानी है.”

“सचमुच ऐसा ही होगा.” मैंने उसका मन रखने के लिए कह दिया.

हमारे फ्लैट में दो बेडरूम और एक बड़ा हाल था. बालकनी वाला बेडरूम हम दोनों प्रयोग में लाते थे. पीछे वाले बेडरूम में कम प्रयोग आनेवाला सामान पड़ा था. उसी में मधु के रहने की व्यवस्था कर दी गई.

मधु के घर में आने के बाद रश्मि में एक अभूतपूर्व परिवर्तन आया. वह बेहद आलसी हो गयी. किसी बेगम की तरह सारा दिन आराम फरमाती रहती. सुबह की चाय मुझे अकेले पीनी पड़ती. यहां तक कि मैं ऑफिस जाने के लिए तैयार हो जाता, तब भी वह अलसायी सी बिस्तर पर पड़ी रहती. टॉकने पर कह देती, “डियर, सोने दो न कुछ देर मुझे. आप तो तैयार हो ही गये. सब करने के लिए मधु है न्!”

नाश्ता मैं अकेले करता और उसे विश करके ऑफिस के लिए निकल जाता. रश्मि बिस्तर पर पड़े-पड़े ही मुझे मुस्कराकर विश कर देती, “बाय डियर, टेक केयर, कम सून.”

“बाय!” मन में एक कसक लिए मैं घर से निकल जाता. क्या सबकी पत्नियां इसी तरह अपने पति को ऑफिस के लिए विदा करती हैं. क्या पति का सारा काम नौकरानियों के भरोसे छोड़ देती हैं. नहीं, अगर कोई पत्नी ऐसा करती है, तो इस बात की संभावना बहुत अधिक है कि उसका पति धीरे-धीरे उससे दूर होता जा रहा है या वह स्वयं अपने पति से दूर होती जा रही है.

सुबह नहाने-धोने के लिए पानी गर्म करना, बाथरूम में मेरी निकर और तौलिया रखने से लेकर आलमारी से मेरे कपड़े निकालने तक का काम मधु ही करती. यह सब करते हुए प्रतिक्षण वह मेरी निगाहों के सामने रहती. कई बार हमारी निगाहें आपस में टकरा जातीं. मैं उसे गौर से देखता रह जाता. मधु के चेहरे या शरीर में मैंने कभी थकान के लक्षण नहीं देखे. उसकी फूर्ती सुबह से लेकर शाम तक एक जैसी रहती और चेहरे की मुस्कराहट तो जैसे भगवान ने उसके चेहरे पर स्थायी रूप से चिपका दी थी. उसकी आंखें नाचती रहतीं, गाल जैसे अंगारे की तरह दहकते रहते और होंठों पर ताजा खिले गुलाब की लालिमा बिखरी रहती. इतना सारा काम करने के बाद भी वह इतनी ऊर्जा कहां से लाती थी, वही जानती थी.

मेरा मन उसके प्रति सहानुभूति से भर जाता.

रश्मि के आलस का परिणाम ये हुआ कि कुछ महीनों में वह मोटी होने लगी. जिस परिमाण में वह खाना खाती थी और आराम करती थी, उस अनुपात में वह कोई शारीरिक श्रम नहीं करती थी. यूँ तो प्रति शाम को हम दोनों टहलने जाते थे. साथ में मधु भी होती थी. मैंने मधु को टहलते वक्त अपने साथ लाने के लिए रश्मि को मना किया था, परन्तु उसे कॉलोनी के पार्क में टहलते हुए यह दिखाना आवश्यक लगता था कि उसके घर में एक सुन्दर नौकरानी थी और वह प्रतिक्षण उसके साथ रहती थी. मधु हमारे पीछे एक परछाई की तरह चलती रहती. उसका हमारे साथ होना न होना बराबर था, क्योंकि न वह हमारी बातों में शरीक होती थी, न हमारे साथ कोई बच्चा होता था, जिसको लेकर वह पीछे चल रही हो. हां, कई बार पार्क से होते हुए हम लोग गेट की तरफ चले जाते थे, जहाँ एक सब्जी की दूकान थी. वहाँ से जो कुछ हम लेते, वह मधु के हाथों में पकड़ा कर फिर से खाली हो जाते.

शाम का यह टहलना रश्मि के स्वास्थ्य में कोई परिवर्तन न ला सका. वह दिन-ब-दिन मोटी होती जा रही थी, परन्तु अभी भी उसे इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी. चिन्ता तब हुई जब एक दिन उसने अपनी शादी के कपड़े पहने तो कोई भी ब्लाउज उसे नहीं हुआ.

इसके पहले मैंने एकाध बार उसे टोंका था, “रश्मि, घर में नौकरानी रखने का अर्थ यह नहीं होता कि तुम चौबीसों घंटे आराम करती रहो. थोड़ा बहुत घर का काम किया करो. मालकिनें नौकरानियों के साथ उनको काम बताते स्वयं भी कुछ न कुछ करती रहती हैं. इससे उनका स्वास्थ्य ठीक रहता है.”

रश्मि ने हंसकर मेरी बात टाल दी थी, “घर का काम करने के लिए तो उम्र पड़ी है. अभी जब बच्चे होंगे, तो उनका कितना सारा काम मुझे करना पड़ेगा, तब अपना स्वास्थ्य ठीक कर लूंगी.”

“कहीं ऐसा न हो कि बच्चे भी आया के भरोसे पलकर बड़े हों.”

उसने मुझे धूरकर देखा, जैसे मैंने कोई अनहोनी बात कह दी थी. उसने दृढ़ स्वर में कहा, “आप क्या मुझे इतना निकम्मा समझते हैं कि मैं अपने बच्चों को नौकरानियों के हाथों में पलता-बढ़ता देखूंगी.”

“हालात तो कुछ ऐसा ही बता रहे हैं.” मैंने घूमकर धीमी आवाज में कहा, जिससे रश्मि के कानों तक मेरी बात न पहुँचे. मैं कोई हंगामा नहीं खड़ा करना चाहता था, न उसके दिल को ठेस पहुँचाने का मेरा कोई इरादा था.

और सचमुच उसने मेरी बात नहीं सुनी. सब कुछ पहले की तरह ही चलता रहा. और वह दिन-ब-दिन अपने शरीर में चर्बी की मोटी पर्तें चढ़ाती रही. मैंने भी फिर उसे कभी नहीं टोंका. एक दिन उसे अपनी मनमानी की कीमत का पता चलेगा, तभी वह अपने में सुधार ला सकेगी.

वह दिन ज्यादा दूर नहीं था. एक दिन वह घबराई सी मेरे पास आई और लगभग चीखते हुए बोली, “देखो तो हर्ष, ये क्या हो गया?”

उसकी चीख से लिपटी घबराहट भरी आवाज सुनकर मैं भी घबरा गया और पलटकर कहा, “क्या हो गया डियर!”

“ये ब्ला...ब्लाउज, कितना छोटा हो गया है. मुझे नहीं हो रहा है.”

ओह! मैंने राहत की लंबी सांस ली. इसे कहते हैं, तिल का ताड़ बनाना और राई का पर्वत. मैंने अपनी सांसों को संयत किया और उसकी तरफ कुछ तीखी निगाहों से देखता हुआ बोला, “इसमें घबराने की क्या बात है?”

घबराने की बात तो थी, परन्तु रश्मि को यह बात इतने दिन बाद समझ में आई थी. उसे बहुत पहले समझ जाना चाहिए था कि वह अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रही थी.

“क्या मैं मोटी हो गई हूँ?” उसने अविश्वास से मेरी तरफ देखते हुए पूछा.

पहले सोचा, कह दूँ कि नहीं, तुम तो छुई-मुई की तरह दुबली हो गयी हो. फिर यह सोचकर कि उसे बुरा न लग जाए, मैंने केवल इतना कहा, “नहीं, बस थोड़ा स्वस्थ हो गयी हो.”

“स्वस्थ से आप का क्या मतलब है?”

“थोड़ा सा मांसल हो गयी हो. यह बहुत स्वाभाविक है. शादी के बाद हर लड़की थोड़ा-बहुत मुटिया जाती है, परन्तु तुम इतनी मोटी नहीं हो गयी हो कि असुंदर लगे.” मैंने इस तरह कहा, जैसे उसका मोटा होना कोई बड़ी बात नहीं थी. यह तो मैं ही जानता था कि वह काफी थुलथुल हो गयी थी. पेट में मांस के लोथड़े अगल-बगल से लटकने लगे थे. गाल इतने मोटे हो गये थे कि दो टुड्डियाँ बन जाती थीं. आंखें छोटी हो गयी थीं, परन्तु अपने आलसपन के चलते वह इन सब बातों की तरफ ध्यान ही नहीं दे रही थी. आज जब पुराने कपड़े निकाले तो उसे लगा कि वह मोटी हो गयी थी, परन्तु अभी भी उसे यह अहसास नहीं था कि वह अस्वाभाविक रूप से मोटी हो गयी थी. मैंने भी अपनी भावनाओं को काबू में रखा और यह नहीं जताया कि वह अस्वाभाविक रूप से मोटी हो गयी थी, वरना उसे बहुत बुरा लगता.

फिर भी उसने रुआंसी आवाज में कहा, “आपने कभी बताया नहीं कि मैं मोटी होती जा रही हूँ.”

“तुम चिंता क्यों करती हो. अभी तुम इतना मोटी नहीं हुई हो. खाते-पीते और सुखी परिवारों की बहूएं इसी तरह की हो जाती हैं.”

“परन्तु मेरा वह पहले जैसा छरहरा बदन...अब कैसे वह वापस आएगा.”

“कुछ नहीं, बस मधु के साथ घर के काम में हाथ बंटाना आरंभ कर दो. सब ठीक हो जाएगा.” मैंने सहज भाव से कहा.

“अच्छा,” उसने कह तो दिया, परन्तु आलस की जो चादर उसने ओढ़ रखी थी, अब उसे वह आरामदेह लगने लगी थी. उसे उतार फेंकने का उसका मन न होता था. एक-दो दिन तो जल्दी उठी, सुबह की चाय भी मुझे बनाकर पिलाई, साथ में नाश्ता भी किया और ऑफिस के लिए मुझे तैयार भी किया, परन्तु दो दिन बाद ही वह थक गयी. थोड़ा सा काम करते ही उसकी सांस फूलने लगती, वह हांफ जाती, जैसे मीलों दौड़कर आई हो.

उसने फिर सब कुछ मधु के सहारे छोड़ दिया. अब तक छह महीने बीत चुके थे.

रश्मि के आलस और मोटापे से मैं भी परेशान हो गया था. अभी हमारी शादी को ढाई साल हुए थे, और उसने अपनी कमनीय काया का सर्वनाश कर दिया था. वह मेरे साथ बाहर निकलती तो मुझसे अधिक उम्र की लगती. मुझे स्वयं पर शर्म आती, परन्तु मैं उसे कोई चोट नहीं पहुंचाना चाहता था. काश, ऐसा कोई रास्ता निकल आए, जिससे सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे. मैं ऐसे ही किसी मौके की तलाश में था.

मधु के सौन्दर्य से मैं अभिभूत था. उसका दिन-रात हमारे घर में रहना और सुबह-शाम मेरे सारे काम करना मेरे मन में एक हलचल पैदा कर देता था. उसके प्रति मेरे विचारों में स्वाभाविक रूप से परिवर्तन आने लगा था, परन्तु मैं ऐसा कुछ नहीं चाहता था कि उसको अपने प्यार के चंगुल में फंसाकर उसके सौन्दर्य का पान करूं, या उसके जीवन को बर्बाद कर दूं. स्त्री-पुरुष का एक दूसरे के प्रति आकर्षण स्वाभाविक है. मधु युवा थी, हमारे घर में रहती थी. हम एक दूसरे से बातें करते थे, ऐसे में हम दोनों के बीच निकटता आनी स्वाभाविक थी, परन्तु मैं इस निकटता का फायदा किसी और रूप में उठाना चाहता था.

अब मैं यदा-कदा मधु की प्रशंसा कर देता, “मधु, तुम बहुत सुंदर हो.”

वह शरमा जाती और झेंपकर कहती, “आप तो साहब, ऐसा क्यों कहते हैं. मेम साहब कितनी सुंदर हैं, विलकुल बर्फ की तरह गोरी और मक्खन की तरह कोमल...”

“अच्छा, तुम तो उपमाएं भी जानती हो. कहां से सीखीं?”

“बस, मेम साहब की बातें सुनते-सुनते सीख लिया.”

“और क्या-क्या सीखा?” मैंने उसकी आंखों में झांकते हुए पूछा.

“और क्या-क्यों क्या बताऊं साहब, मुझे याद नहीं आता. समय आएगा तो बता दूंगी.” उसने इटलाकर कहा.

“तुम बहुत भोली हो.” मैंने उसके गाल पर हल्की थपकी दी. वह सिमट गयी.

रश्मि के आलसपन से आजिज़ आकर अब मैं उसे चिढ़ाने के उद्देश्य से मधु में रुचि दिखाने लगा. उसको दिखाते हुए मैं जान-बूझकर मधु को बार-बार अपने पास बुला लेता और उससे कहता, “मधु, यह करो, मधु वह करो.” कोई काम नहीं होता, तब भी मैं जान-बूझकर मधु को अपने पास बिठाए रखता. उसके साथ उल्टी-सीधी बातें करता, परन्तु ऐसी बातें नहीं कि वह बुरा मान जाए. इस बीच अगर रश्मि अपने कमरे से पुकार कर कहती- “हर्ष क्या कर रहे हो. यहां आओ, देखो तो टी.वी. में कितना अच्छा सीरियल आ रहा है.” तो मैं उल्लास भरे स्वर में कहता-

“तुम देख लो, डियर! मैं मधु के साथ बातें कर रहा हूँ. बहुत मजा आ रहा है.”

“क्या बातें कर रहे हो?” वह मुरझायी आवाज में कहती.

“बस ऐसे ही, वह अपने बारे में बता रही है, मैं अपने जीवन के बारे में उसे बता रहा हूँ. बड़ी दिलचस्प बातें हो रही हैं. तुम अपने सीरियल को इज्जाय करो. हम दोनों मस्त हैं”

इस प्रकार घर में रहते हुए मैं अधिक से अधिक समय मधु के साथ बिताता. रश्मि की मैं जान-बूझकर उपेक्षा करता, उससे कम से कम बातें करता. मधु जहां काम करती, उसी के आस-पास बना रहता...रसोई में, नाश्ते की मेज पर और हर कहीं. अगर मैं लैपटाप लेकर बैठा कुछ कर रहा होता, तब भी बार-बार आवाज़ देकर मधु को बुला लेता, “मधु पानी ले आओ, मधु एक कप चाय बना लाओ, मधु यह कप-प्लेट उठा लो. मधु देखो तो यह कागज बिखर गए हैं, इन्हें उठाकर मेज पर रख दो. वह किताब ले आओ...आदि-आदि.”

मधु के साथ मेरी अस्वाभाविक निकटता रश्मि को कुछ दिन बाद समझ में आ गयी. उसे संदेह हुआ तो अपने आलस की चादर उतार कर हरकत में आ गई. मैंने उसकी आंखों में संदेह के बादल मंडराते हुए देख लिए थे. मैं मन ही मन मुस्कराया. कोई भी पत्नी अपने पति की निकटता दूसरी स्त्री के साथ सहन नहीं कर सकती. रश्मि के मन में ईर्ष्या के भाव जाग्रत होने लगे थे.

आश्चर्यजनक रूप से अब रश्मि सुबह जल्दी उठने लगी और सुबह की चाय मेरे साथ पीने लगी. मैंने उससे कहा, “यह क्या डियर, तुम क्यों कष्ट करती हो. मधु तो है न्!”

उसने मेरी तरफ काट खानेवाली निगाहों से देखा और फिर स्वर में मधुरता भरते हुए बोली, “इसमें कष्ट की क्या बात है? आप ही तो कहते हैं कि मधु के साथ घर के काम में हाथ बटाऊंगी तो मेरा मोटापा कम होगा. है न्!”

“हां,” और मैं चुप हो गया.

रश्मि अब मधु पर ही नहीं, मुझ पर भी निगाह रखने लगी थी. जब मैं किसी बहाने से किचन में जाता तो वह भी पीछे-पीछे आ जाती, बाथरूम में स्वयं तौलिया और निकर रखने लगी और जब मैं नहाकर बाथरूम से निकलता तो कमीज और पैंट लेकर सामने खड़ी रहती. फिर भी मैं मधु के पास जाने का बहाना ढूंढ़ लेता और कुछ इस तरह से जैसे मैंने पीछे रश्मि को खड़े हुए नहीं देखा है, उसके गाल की चुटकी लेकर कहता, “मधु, घर के काम में व्यस्त रहकर तुम अपनी तरफ ध्यान नहीं देती हो. देखो तो, तुम्हारी त्वचा कितनी रूखी हो गई है. मेम साहब से पूछकर उनकी एकाध क्रीम इस्तेमाल कर लिया करो. अगर नहीं दें तो मैं लाकर तुम्हें दे दूंगा. अपना ख्याल रखो.”

“नहीं साहब, मेम साहब मेरा बड़ा ख्याल रखती हैं.”

“मैं नहीं रखता क्या?” मैंने उसे लुभानेवाले अंदाज में कहा.

“आप भी बहुत अच्छे हो.” वह शरमाकर छुई-मुई हो जाती.

“मैं तुम्हें अच्छा लगता हूं?” उसके गाल पर हाथ फेरते हुए मैं कहता.

“जी साहब!” फिर अचानक जैसे उसने मेम साहब को देख लिया हो, घबराकर कहती, “साहब, आप जाओ न्! मुझे काम करना है.”

रश्मि उस वक्त कुछ न कहती, परन्तु उसकी आंखों में अंगारे सुलगते हुए मैं देख सकता था. रात में जब हम दोनों एक ही पलंग पर लेटते तो वह मेरी तरफ करवट बदलकर कहती, “आजकल, मधु के साथ बहुत नौक-झोंक चल रही है?” उसके स्वर में तीखापन ही नहीं, करारा व्यंग्य भी होता.

मैं भी उसकी तरफ करवट ले लेता और उसकी बांह पर हाथ फेरते हुए कहता, “अरे, नहीं डियर, यह सब तुम्हारा भ्रम है. मैं तो बस उससे दो-चार प्यार भरी बातें इसलिए कर लेता हूं कि वह अपने मां-बाप, भाई-बहनों से दूर रहती है. उसे यह न महसूस हो कि वह इस घर में अकेली और परायी है.”

“इन प्यार भरी बातों का कोई और मक़सद तो नहीं है.” उसने शंकित भाव से पूछा.

“क्या बात करती हो? क्या तुमको मेरे प्यार पर भरोसा नहीं है?”

“तुम्हारे प्यार पर तो भरोसा है, परन्तु एक पुरुष के मन पर नहीं. उसका मन परिस्थिति के अनुसार बदलता रहता है, खासकर जवान और खूबसूरत युवती को देखकर उसका मन बहुत जल्दी बदलता है.”

“यह तुम्हारा भ्रम है. मधु के साथ मेरा कोई चक्कर नहीं है.” मैंने उसे दिलासा देने के लिए अपनी बांहों के घेरे में कस लिया. वह शांत हो गयी.

परन्तु स्त्री के मन में शंका का कीड़ा एक बार घुस जाए, तो वह किसी भी रूप में नहीं निकलता. मैं भी यही चाहता था कि उसके मन में यह कीड़ा पनपता रहे और निश्चित समय पर उसकी मौत हो.

रश्मि टी.वी. सीरियल देखने में व्यस्त थी और मधु किचन में बर्तन धोकर उन्हें समेटकर रख रही थी. ऐसे मौके पर मैं बाथरूम जाने के बहाने उठा और चुपके से किचन में घुस गया. मुझे पता था, रश्मि दो मिनट बाद ही मेरे पीछे आ धमकेगी. और ऐसा ही हुआ. जैसे ही मैंने महसूस किया कि रश्मि मेरे पीछे-पीछे किचन के दरवाजे तक आ गयी है और छिपकर मुझे देख रही है तो मैंने मधु को पीछे से अपनी बांहों में समेटते हुए कहा, “मधु, मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूं.”

वह सीधी होकर मेरे सीने से लग गयी और लहराते स्वर में बोली, “मैं भी साहब, कब से आपके प्यार को तरस रही थी. आज मुझे वह सब मिल गया जो मैं आपसे चाहती थी.”

संभवतः हमारी बातों से रश्मि को धक्का लगा था और वह हड़बड़ा गयी थी. पीछे आहट होते ही मैं मधु से अलग हो गया. रश्मि ने देख लिया था कि हम दोनों एक दूसरे की बांहों में लिपटे हुए थे. मेरा मक़सद हल हो गया था. मैंने घबरायी हुई आवाज़ में धूमकर कहा, “तुम रश्मि!” मधु भी घबराकर दूसरी तरफ देखने लगी थी.

रश्मि बहुत कुछ समझ गयी थी. मैंने कांपते हाथों से गिलास में पानी भरते हुए कहा, “बड़ी प्यास लग रही थी.”

“हां, वह तो मैं देख रही हूं कि आप की प्यास कुछ अधिक ही बढ़ गयी है. इसे बुझाना ही पड़ेगा.” उसने तीखे स्वर में कहा और मधु की पीठ को धूरकर देखते हुए कहा, “प्यास कहां लगी है, और पानी का कुआं कहां है, मैं सब समझ गयी हूं.”

“प्लीज रश्मि, तुम कोई गलत अर्थ मत लगाना.” मैंने मनुहार करते हुए कहा.

“नहीं, अभी तो मैं सही अर्थ समझने की स्थिति में आई हूँ.” उसने कटु स्वर में कहा और घूमकर बोली, “अब प्यास बुझ गयी हो तो आ जाओ. मैं भी प्यासी हूँ.”

उस रात रश्मि ने मुझे सोने नहीं दिया.

अगले दिन जैसा कि मैंने सोचा था, वही हुआ. घर पहुंचा तो दरवाजा रश्मि ने खोला. मैंने इधर-उधर देखने का नाटक किया और पूछा, “आज तुम...मधु कहां है? उसने दरवाजा नहीं खोला.”

मेरे पीछे दरवाजा बंद करते हुए रश्मि ने कहा, “अब कोई और औरत आपके लिए कभी दरवाजा नहीं खोलेगी.” उसकी आवाज़ में दृढ़ता थी.

“क्या मतलब है तुम्हारा?” मैंने चौंकने का अभिनय किया.

“मतलब कि मैंने मधु को नौकरी से निकाल दिया है. अब आपको अपनी प्यास बुझाने के लिए घर के कुएं से पानी भरकर पीना पड़ेगा.”

“ओह! बेचारी लड़की. तुमने उसके साथ अन्याय किया है. उसका कोई दोष नहीं था.” मैंने धूम से सोफे पर बैठते हुए कहा.

“दोष किसका था, किसका नहीं, अब इस पचड़े में पड़ने से कोई लाभ नहीं है. मैंने किसी के साथ अन्याय नहीं किया है. मेरे साथ जो अन्याय हो रहा था, उससे मैंने छुटकारा पा लिया है, बस.”

किचन की तरफ जाते हुए रश्मि ने कहा, “मैं चाय बनाकर लाती हूँ.” उसके पीछे मैं मुसकराता हुआ बैठा रहा. मन ही मन सोचा, अन्याय तो तुम स्वयं अपने प्रति कर रही थी, प्यारी रश्मि.

मैं जानता था, चाय बनाकर लाने में रश्मि को दस-पांच मिनट लगने थे. मैंने जेब से मोबाइल निकालकर तुरंत एक नंबर मिलाया और उधर से आवाज़ आते ही कहा, “बहुत-बहुत धन्यवाद मधु, तुमने मेरे ऊपर जो एहसान किया है, मैं उसे कभी नहीं भूल पाऊंगा. जो पैसे मैंने तुम्हें दिए हैं, वह काफी हैं. तुम्हें काम छोड़ने का कोई गम नहीं होना चाहिए. इन्हें संभालकर खर्च करना, तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी या इन पैसों को किसी बैंक में जमा कर देना, तुम्हारी शादी में काम आएंगे और इसके बाद जीवन में कभी-भी तुम्हें किसी चीज की आवश्यकता हो, निसंकोच मेरे पास चली आना. मैं तुम्हारी सहायता करूंगा.”

“साहब, एहसान तो आपने मेरे ऊपर किया है. पलक झपकते मेरी गरीबी दूर कर दी. आप मेम साहब के साथ खुश रहें, यही मैं चाहती हूँ.” उसने सच्चे मन से कहा.

“नहीं, एहसान तो तुम्हारा मेरे ऊपर है. अगर तुम मेरे साथ प्यार का नाटक करने के लिए राजी नहीं होती, तो आज मैं रश्मि को सही रास्ते पर न ला पाता. इसके बदले थोड़े से पैसे देकर मैंने तुम पर कोई एहसान नहीं किया है. यह तुम्हारा पारिश्रमिक है.”

“साहब, आप महान हैं. आप जैसा पति हर पत्नी को मिले.” वह गंभीर होकर बोली.

मैंने हंसकर कहा, “मैं प्रार्थना करूंगा कि तुमको मेरे जैसा पति मिले. और हां, शादी में मुझे बुलाना मत भूलना.”

“ज़रूर बुलाऊंगी, परन्तु मेम साहब आने देंगी?” उसने हंसकर खनकते हुए स्वर में कहा.

“तब तक मैं उन्हें मना लूंगा और हकीकत भी बयान कर दूंगा. अच्छा, अब रखता हूँ, अपना ख्याल रखना.”

उस दिन रश्मि ने खूब श्रृंगार किया, जैसे किसी दुल्हन का किया जाता है. सज-धजकर जब वह मेरे सामने आई तो मैं भौंचक्का रह गया. वह शादी वाले दिन की रश्मि लग रही थी, बस थोड़ी मोटी-सी, परन्तु वहीं रूप, वहीं श्रृंगार, वही पहनावा. मैं उठकर खड़ा हो गया. वह मेरे निकट आकर खड़ी हो गयी, इतने निकट कि उसकी सांसों मेरी सांसों से टकराने लगीं.

वह शरमाई-सकुचाई सी कुछ पल तक अपना सिर नीचा किए मेरे सामने खड़ी रही, फिर धीरे-धीरे अपने चेहरे को ऊपर करते हुए मेरी आंखों में बड़े ही मार्मिक भाव से देखते हुए पूछा, “क्या मैं सुंदर नहीं हूँ?”

मैं उसके सौन्दर्य से इस कदर अभिभूत था, जैसे उसे पहली बार देख रहा था. तुरन्त मेरे मुंह से कोई आवाज नहीं निकली. उसने धीरे से मेरे हाथों को छुआ और बोली, “कहां, खो गए?”

“ओह! अद्भुत, अलौकिक!” मेरे मुंह से निकला, “अति सुंदर!”

“क्या मधु मुझसे अधिक सुंदर थी?”

“तुमसे अधिक सुंदर दुनिया की कोई दूसरी औरत नहीं है.”

“सच! तो फिर मुझे छोड़कर उसके पीछे क्यों पड़े हुए थे?” उसने अपनी मुट्ठियों से मेरे सीने पर धीरे से वार किया.

“अगर मैं वैसा नहीं करता, तो तुम्हारा यह दमकता सौन्दर्य देखने को कहां से मिलता?” मैंने हंसते हुए उसकी मुट्ठियों को कसकर पकड़ लिया.

“हट्ट, झूठे कहीं के!” उसने अपना सिर मेरे सीने पर रख दिया.

“स्त्रियां झूठे पुरुषों से ही सच्चा प्यार करती हैं.” मैंने उसे अपनी बांहों में कसते हुए कहा. इसके बाद रश्मि के मुंह से केवल इतना निकला, “तुम मेरे हो, और दुनिया की कोई भी औरत मुझे तुमसे नहीं छीन सकती. चाहे वह मुझसे ज्यादा जवान और खूबसूरत हो.”

मैं मुस्कराता हुआ उसकी पीठ पर हाथ फेरता रहा, बस!

मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं था. जो मैं चाहता था, वह मुझे मिल गया था. रश्मि को संभवतः कभी पता नहीं चलेगा कि उसको पाने के लिए मैंने क्या किया था.



## नीली आंखों का आसमान

रविकान्त एक कहानी लिखने में व्यस्त थे, तभी उनके मोबाइल की घण्टी बजी. उन्होंने देखा, नंबर अनजान था. उनके दिमाग में विचारों का कारवां घुमड़ रहा था, फिर भी उन्होंने फोन उठा लिया और धीरे से कहा, “हैलो!”

उधर से तत्काल कोई आवाज़ नहीं आई तो कुछ पल बाद रविजी ने थोड़ा कड़े स्वर में कहा, “हैलो...!”

“हैलो क्या मैं आप...से बात कर सकती हूँ?” उधर से एक धीमी-सी मधुर आवाज़ आई. वह एक लड़की या किसी जवान औरत की आवाज़ थी. वह जैसे तंद्रा से जागती हुई हड़बड़ाकर बोली थी.

“हां, आप मुझसे ही बात कर रही हैं.” रविकान्त ने हल्के मजाहिया स्वर में कहा. “वैसे आप किससे बात करना चाहती हैं, अगर आप स्पष्ट करें तो मैं बता सकता हूँ, मैं वहीं हूँ या कोई और...!”

“जी मैं...क्या आप...रविजी बोल रहे हैं, रवीन्द्र ‘रवि?’” उसने अपने स्वर को लगभग संतुलित करते हुए कहा था.

“जी हां, मैं रवि बोल रहा हूँ, बोलिए!” रविकान्त रवीन्द्र ‘रवि’ के नाम से उपन्यास और कहानियां लिखते थे. लेखन जगत में उनका अच्छा-खासा नाम था और प्रशंसकों के तमाम फोन आए-दिन उनके पास आया करते थे. यह ‘लड़की’ या ‘औरत’; उन्हीं में से कोई एक होगी.

“जी मैं, क्या आप से थोड़ी देर बात कर सकती हूँ?”

“क्यों नहीं, आराम से बात करिए. किस सिलसिले में बात करना चाहती हैं आप?” उन्होंने उसे तसल्ली देनेवाले अन्दाज में कहा; ताकि उसकी घबराहट कुछ कम हो सके.



उधर उस लड़की ने एक गहरी सांस ली, फिर बोली, “मैंने आपका उपन्यास पढ़ा, बहुत अच्छा लगा. बधाई हो.” उसने उपन्यास का नाम नहीं बताया. उन्होंने पूछा, “धन्यवाद! परन्तु आपने मेरा कौन-सा उपन्यास पढ़ा है?”

“ओह! मैं भूल ही गयी बताना, माफ कीजिए. आपका जो नया उपन्यास आया है न, इसी साल, ‘नीली आंखों वाली लड़की’, बहुत अच्छा लगा. क्या बताऊं, मैं तो डूब ही गयी पढ़ते-पढ़ते. जब तक खत्म नहीं कर लिया, चैन नहीं मिला. आह!” काश, वह डूब ही गयी होती. उपन्यास खत्म करके उसे बहुत अफ़सोस हुआ होगा कि वह डूबी क्यों नहीं. अब भी उसकी आवाज़ डूबती-सी लग रही थी. लगता था, वह फिर से उपन्यास के पन्नों में खो गयी थी. रविजी ने उसे फिर से धन्यवाद दिया और पूछा, “उपन्यास में सबसे अच्छा क्या लगा आपको?”

“ओह! मैं क्या बताऊं, क्या अच्छा नहीं लगा? सब कुछ तो अच्छा है उसमें. भाषा शुद्ध और परिमार्जित है, शैली में सरल-सहज प्रवाह है, पात्रों का चरित्र-चित्रण स्वाभाविक है, घटनाओं का विवरण मन को रोमांचित करता है, संवाद चुटीले और मनभावन हैं और सबसे बड़ी बात ये कि जब उपन्यास का अंत होता है, तो पाठक का दिल बैठ जाता है काश, ऐसा न होता.” वह बहुत ही स्वाभाविक ढंग से निःसंकोच अपनी बात कह रही थी. उसकी बातों से लग रहा था कि उसने सचमुच उपन्यास की गहराइयों तक उतरकर उसे पढ़ा और समझा है. वह एक कुशल समीक्षक की तरह बातें कर रही थी. रविजी को पता नहीं था कि वह लड़की थी या कोई औरत; परन्तु जिस प्रकार वह उनके उपन्यास की प्रशंसा कर रही थी, वह बहुत परिपक्व विचारों वाली महिला लग रही थी. उसकी प्रशंसा से वह किंचित लज्जा और संकोच से भर उठे. खिसियानी आवाज़ में कहा, “इतनी ज्यादा प्रशंसा करके आप मुझे शर्मिन्दा कर रही हैं. कहीं आप मेरा मजाक तो नहीं उड़ा रही हैं?”

“नहीं, आप जैसे प्रतिष्ठित लेखक का मज़ाक उड़ाना क्या मेरे लिए संभव है? आप स्वयं नहीं जानते कि आप कितना अच्छा लिखते हैं या आप अत्यधिक विनम्रता का प्रदर्शन कर रहे हैं?” उसकी आवाज़ में तुरी थी. रविजी ने खेद प्रकट करते हुए कहा, “आप बुरा न मानें. आपका दिल दुखाने का मेरा कोई मक़सद नहीं था. वैसे आप करती क्या हैं?” उन्होंने बात बदलने का प्रयास किया.

“मैंने हिन्दी साहित्य में एम.ए. किया है और अब ‘आधुनिक हिन्दी उपन्यास की धारा’ पर शोध कर रही हूँ.” उसने बताया.

“अरे वाह! ये तो बहुत अच्छी बात है. मैं भी हिन्दी साहित्य का प्रोफ़ेसर हूँ.”

“जी हां, और आप एक अच्छे लेखक भी हैं. आपके उपन्यासों से प्रभावित होकर ही अपने शोध के लिए मैंने यह विषय चुना है. इस सिलसिले में मैं क्या कभी-कभार आपसे फोन पर बात कर सकती हूँ या अगर ज़रूरत पड़ी तो मिल सकती हूँ.”

“क्यों नहीं, जब भी आप चाहें. वैसे अभी तक आपने अपना नाम नहीं बताया?”

“ओह सारी! मैं भी कैसी पागल हूँ. मेरा नाम नीलाक्षी है, परन्तु आप मुझे नीलू कहकर बुला सकते हैं. मुझे अच्छा लगेगा.” उसका नाम सुनकर वह चौंके. उन्होंने तत्क्षण पूछा, “नीलाक्षी! क्या आपको अपने नाम का अर्थ पता है?”

फोन के दूसरी तरफ वह अवश्य मुस्कराई होगी, क्योंकि उनके कानों में उसकी खनकती हुई आवाज़ सुनाई पड़ी, “क्या आप मुझे बुद्धू समझते हैं? मैं हिन्दी साहित्य की विद्यार्थी हूँ. मेरे नाम का अर्थ है ‘नीली आंखों वाली...’

“क्या अपने नाम के कारण ही आप मेरे उपन्यास से प्रभावित हुई थीं.” उन्होंने पूछा.

“नहीं, यह कोई कारण नहीं था. मैंने इसके पहले भी आपके उपन्यास पढ़े थे. यह तो संयोग है कि आपके उपन्यास का शीर्षक मेरे नाम से मिलता-जुलता है.”

“क्या आपकी आंखें नीली हैं?” पता नहीं कैसे उन्होंने पूछ लिया.

वह हंसी, दिल को मधुर लगनेवाली हंसी, “मुझे नहीं पता, आप देखकर बता दीजिएगा.” उसके स्वर में शोखी और शरारत थी. बात को उधर ले जाने का उनका कोई मन नहीं था.

“अच्छा, खैर,” रविजी ने बात को विराम देते हुए कहा, “आपको एतराज न हो तो अभी फिलहाल इतना ही रहने दें. फिर कभी बात करेंगे. मैं थोड़ा व्यस्त हूँ.”

“जैसी आपकी इच्छा!” अचानक ही उसकी आवाज़ में मायूसी झलकने लगी और फोन कट गया. रविजी को लगा, मीनाक्षी को उनकी बात संभवतः नागवार गुजरी थी और गुस्से का इजहार करने के लिए उसने फोन अचानक ही काट दिया था. वह कोई मामूली लड़की नहीं थी.

दो-तीन दिन तक उसका फोन नहीं आया. रविजी अपनी दिनचर्या में व्यस्त हो गये. कॉलेज आते-जाते अक्सर नीलाक्षी की याद आती, परन्तु उन्हें पता नहीं था कि वह किस कॉलेज से पी.एचडी. कर रही थी. संभवतः सीधे विश्वविद्यालय से कर रही हो. उन्होंने पूछा नहीं था.

‘साहित्य सुधा’ का अगला अंक कहानी विशेषांक था. इस विशेषांक के लिए सम्पादक ने खास तौर पर रविजी से एक नई कहानी की मांग की थी. इसके लिए उसने अपने सह सम्पादक नीरज को उनके पीछे लगा दिया था कि जल्दी-से-जल्दी उनसे कहानी लिखवा ले. अति व्यस्तता के बाद भी रविजी ने हामी भर ली थी. उसी कहानी पर रविजी काम कर रहे थे, जब पहली बार नीलाक्षी का फोन उनके पास आया था.

रविवार का दिन था और वह पूरी लगन से कहानी को पूरा करने में व्यस्त थे. उन्होंने तय कर रखा था कि आज उसे पूरा करके नीरज को थमा देंगे. शाम को वह कहानी लेने के लिए उनके घर पर आने वाला था. पत्नी और बेटी को पता था कि जब वह अपने कमरे में लिखने में व्यस्त होते हैं तो कोई व्यवधान पसंद नहीं करते. वह भी उनको तंग नहीं करती थीं और इस बीच अगर घर में कोई मेहमान आ गया तो वह अपने स्तर पर चाय-पानी देकर उसे विदा कर देती थीं. रविजी के लेखन में उनके परिवार का बहुत ही सुखद योगदान था.

जब वह कहानी के अन्त को पूरा कर रहे थे, तभी उनके मोबाइल की घंटी बजी. देखा तो नीलाक्षी का नाम स्क्रीन पर चमक रहा था. उन्होंने उसका नंबर उसके नाम के साथ अपने मोबाइल में संरक्षित कर लिया था. एकबारगी उनका मन हुआ कि फोन न उठाएं, पहले कहानी पूरी कर लें; परन्तु फिर कुछ सोचकर फोन उठा लिया और धीरे से कहा- ‘हैलो!’

“नमस्कार सर! मैं नीलू बोल रही हूँ,” उधर से चहकती हुई आवाज़ सुनाई पड़ी, “मैंने आपको बेवक्त फोन तो नहीं किया?” फोन तो बेवक्त ही आया था, परन्तु उन्होंने धैर्य से जवाब दिया, “नहीं, परन्तु मैं ज्यादा लम्बी बात नहीं कर सकता.”

“सर, मैं ज्यादा लम्बी बात भी नहीं करूंगी. बस एक निवेदन है आपसे.. अगर आज शाम को थोड़ा वक्त निकाल सकें तो मैं आपसे मिलना चाहती हूँ.”

“आज शाम को...?” उन्होंने हिचकिचाते हुए कहा, “शायद संभव न हो, क्योंकि आज शाम को कोई मुझसे मिलने मेरे घर पर आनेवाला है. हां, अगर आप मेरे घर पर आ सकें तो संभव हो सकता है. आपको मेरे घर का पता मालूम है?”

“हां, वह तो आपकी हर पुस्तक पर लिखा रहता है, परन्तु मैं आपसे आपके घर पर नहीं, कहीं और मिलना चाहती हूँ.” उसके स्वर में बेताबी थी. वह सोच में पड़ गए...ऐसी क्या बात थी कि वह उनसे अकेले में मिलना चाहती थी. अभी तक दोनों ने एक दूसरे को देखा तक नहीं था, आमने-सामने परिचय नहीं हुआ

था. उनके दिमाग में उथल-पुथल मचने लगी- क्या वह किसी काल्पनिक संसार के सुन्दर रंगीन सपनों में खोई हुई एक लड़की थी और उसने उनके उपन्यासों को पढ़कर उनके बारे में कोई गलत धारणा बना ली थी कि वह एक सुन्दर, जवान और रोमांटिक किस्म के इंसान थे, जिनके ऊपर हजारों लड़कियां मरती थीं और उनका प्यार पाने के लिए खून भरे पत्र लिखती थीं.

रविजी के मन में जिज्ञासा उठी कि इस ‘रहस्यमयी’ लड़की से एक बार मिलकर देखा जाए कि वह किस प्रकार की लड़की थी. बातों से तो बुद्धिमती लगती है और मन से साहित्यिक है. इसके अलावा उसमें और कौन-कौन से गुण हैं, उससे मिलकर ही पता किया जा सकता था.

पल भर में ही उन्होंने एक निर्णय ले लिया. इस ‘अनजान’ प्रशंसिका से मिलना ही होगा. पूछा- “तो फिर कहां मिलना चाहती हैं आप?”

“आप आ रहे हैं?” उसने शंकित स्वर में पूछा.

“हां, बताओ.”

“कनाट प्लेस के इण्डियन काफी हाउस में, शाम को छः बजे.” उसने तत्काल कहा. रविजी ने भी तत्काल जवाब देने में वक्त नहीं लगाया, “ठीक है, मैं आ जाऊंगा.” पुरुष किसी भी उम्र का हो, शादीशुदा हो या कुंवारा, वह लड़की का सामीप्य पाने के लिए सदा आकांक्षित रहता है. उस समय उनकी वही दशा थी. वह सचमुच नीलाक्षी से मिलने के लिए उत्सुक ही नहीं आतुर थे.

रविजी ने जल्दी-जल्दी कहानी पूरी की और नीरज को फोन करके कहा, “नीरज, कहानी तैयार हो गयी है, परन्तु तुमको मेरे घर आने की ज़रूरत नहीं है. शाम छः बजे तुम कनाट प्लेस के इण्डियन काफी हाउस में आ जाना. मैं तुमको वही मिलूंगा.”

नीरज से बात करने के बाद वह नीलाक्षी से मिलन की उत्सुकता मन में दबाए शाम का इंतजार करने लगे. पांच बजे ही वह तैयार हो गये थे. पत्नी ने पूछा, “अचानक तैयार होकर कहां जा रहे हो? दिन भर लिखते रहे हो, थोड़ा आराम कर लो.”

“बहुत ज़रूरी काम आ गया है. किसी से मिलना है, जल्दी ही आ जाऊंगा.” पत्नी की बात पर ज्यादा ध्यान न देते हुए उन्होंने कहा. उनको स्वयं पता नहीं था कि कितनी देर बाद लौटकर घर आ पाएंगे. दिल के मामले में पुरुष सदा झूठ बोलता है. नीलाक्षी के मन में क्या है, वह क्या चाहती है उनसे? यह सब जानने की जिज्ञासा थी उनके मन में. उस अनजान युवती से मिलने के लिए उनका मन

एक नवयुवक की तरह मचल रहा था. उस नवयुवक की तरह, जो प्रथम बार अपनी प्रेमिका से मिलने जा रहा हो.

और शाम छः बजे वह दोनों काफी हाउस की मेज पर आमने-सामने बैठे थे. नीरज अभी तक नहीं आया था. वह एकटक एक दूसरे को देख रहे थे, विश्वास और अविश्वास के विचित्र भावों को अपने मन में दबाए. नीलाक्षी के होंठों पर स्निग्ध मुस्कराहट थी, तो आंखों में एक अद्भुत चमक थी. उसके गाल गुलाब के फूल की तरह खिले हुए थे. सलवार सूट में वह सौंदर्य की एक सौम्य देवी की तरह लग रही थी.

उसके सौंदर्य से अभिभूत रविजी अपने मन को भिगोते रहे, काफी देर तक और जब कई पल गुजर गए तो उन्होंने स्वयं मौन व्रत भंग करने का निर्णय लिया, “हां तो बताइए, किसलिए मिलना चाहती थी आप मुझसे?”

उसकी एकाग्रता भंग हुई और वह चौंककर बोली, “बस यूं ही.” उसने कंधे उचकाए. होंठ खुले तो उसके सफेद मोती जैसे दांत नीम अंधेरे में हीरे की तरह चमक उठे.

“यूं ही तो कोई किसी से नहीं मिलता.” उन्होंने गंभीरता से कहा, “हर व्यक्ति व्यस्त है जीवन की आपाधापी में, भाग-दौड़ में, अर्थ की लालसा में और कम समय में बहुत कुछ प्राप्त कर लेने के लिए. ऐसे में किसी के पास कहां इतनी फुरसत है कि वह किसी और से ‘यूं ही’ मिलने के लिए विशेष-तौर पर किसी ‘विशेष’ जगह पर आए.” ‘विशेष’ शब्द पर उन्होंने कुछ अधिक ही जोर दिया.

वह शान्त भाव से रविजी के चेहरे पर बनते-बिगड़ते भावों को देख रही थी. जैसे ही उनकी बात समाप्त हुई, वह मुस्कराई और आंखें नचाकर बोली, “मिलना तो बस ‘यूं ही’ था, मैं देखना चाहती थी कि आप जितना अच्छा लिखते हैं, उतनी ही अच्छी बातें भी करते हैं या नहीं.”

“अच्छा, तो क्या लगा आपको?” उन्होंने जिज्ञासा प्रकट की.

“अभी तो शुरुआत है.” उसने अपनी गोरी लम्बी उंगलियों से मेज पर हल्की थपकी दी.

“शुरुआत कैसी रही?” वह थोड़ा आगे की तरफ झुक आये.

“अच्छी, बहुत अच्छी!” वह भी थोड़ा आगे झुकी. बसंत की फूलों की रंगत उसके चेहरे पर सिमट आई थी.

“तो अंजाम भी अच्छा होगा.” उन्होंने कहा, “परन्तु आप एक शोधार्थी हैं और मैं एक लेखक एवं प्रोफेसर! किस नाते आप मुझसे मिलना चाहती थीं?”

“सर! सबसे पहले तो आपसे मेरा एक निवेदन है.”

‘क्या’ के भाव से रविकान्त ने उसकी आंखों में झांका. वह आंखें नचाते हुए बोली, “आप मुझे ‘तुम’ और नाम की जगह ‘नीलू’ कहकर पुकारेंगे तो मुझे अच्छा लगेगा.”

कुछ रुककर वह सोचते हुए-से बोले, “ठीक है, वैसे भी तुम उम्र में मुझसे बहुत छोटी हो. नाम लेकर पुकारने में अपनत्व झलकता है. अब आगे बताओ.”

वह खुश होते हुए बोली, “आप बहुत अच्छे लेखक हैं. मैंने आपके सारे उपन्यास एवं कहानियां पढ़ी हैं. एक शोधार्थी के नाते यह मेरे लिए आवश्यक भी था, परन्तु व्यक्तिगत तौर पर आपने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया अपने नूतन उपन्यास ‘नीली आंखों वाली लड़की’ द्वारा. यह उपन्यास पढ़कर तो जैसे मैं पागल हो गयी. पहले मैं आपकी केवल प्रशंसिका थी, अब तो आपकी दीवानी हो गयी हूं. मेरे हृदय में आपके लिए प्रशंसा ही नहीं कुछ ‘और’ भी है और मैं समझ नहीं पा रही हूं कि ‘वह’ क्या है, जो मुझे रात-दिन आपके बारे में सोचने पर मजबूर कर रहा है. मेरा मन सदा आपसे मिलने के लिए बेताब रहता है. चाहती हूं कि आप हमेशा मेरे पास रहें और मैं आपसे बातें करती रहूं, ढेर सारी बातें और बातें ही बातें, आपके बारे में, अपने बारे में और बहुत सारी चीजों के बारे में जो बहुत सुन्दर हैं. अभी आप मेरे सामने हैं और मेरा मन करता है कि बस आपको निहारती ही रहूं, जबकि आप पहली बार मिले हैं. मुझे लगता है मैं एक पपीहा हूं और आप एक चांद. कहीं मैं पपीहे की तरह प्यासी न रह जाऊं?” अचानक उसकी आवाज़ में एक पीड़ा उभर आई. ऐसी पीड़ा प्यार से ग्रस्त लड़की की आवाज़ में ही झलकती है.

वह चुप रह गये. यह शुभ संकेत नहीं था. वह एक लेखक से किसी शोधार्थी की तरह बात नहीं कर रही थी. उसकी बातें किसी और ‘चीज’ की तरफ इशारा कर रही थीं और उसकी आंखों में एक काल्पनिक संसार बसा हुआ था. वह खोयी-खोयी-सी थी. यह बिल्कुल स्पष्ट था कि उसके मन में रविकान्त के प्रति किसी ‘अन्य’ प्रकार के विचार थे.

आज उन दोनों की पहली मुलाकात थी. यह मुलाकात किसी प्रेमी और प्रेमिका के बीच की मुलाकात नहीं थी. रविकान्त उससे अपने लेखन की प्रशंसिका समझकर एक लेखक के नाते मिलने के लिए आये थे. वह एक प्रौढ़ और शादीशुदा व्यक्ति थे. उनके प्रति अगर उसके मन में कोमल भाव थे, तो वह एक ‘दिवा स्वप्न’ देख रही थी और ऐसी स्थिति में उनको उससे बचकर रहना होगा. एक विवाहित और

प्रौढ़ लेखक के प्रति किसी जवान और सुन्दर अविवाहित लड़की की इस तरह की दीवानगी और प्यार उनके लिए ही नहीं, उसके लिए भी अच्छा संकेत नहीं था।

चुप्पी भंग करते हुए रविकान्त ने कहा, “क्या हम साहित्य पर कुछ चर्चा करें?” वह उसके मन को दूसरी तरफ ले जाना चाहते थे।

“साहित्य पर! नहीं सर!, अभी नहीं.” उसने स्पष्ट रूप से मना कर दिया। वह जानती थी कि वह क्या कर रही थी। साहित्य के नाम पर उसने अपने सिर को हल्का झटका दिया जैसे यह शब्द उसे फिलहाल सुनना पसंद नहीं था।

“तो फिर...!” रविजी के लिए यह स्थिति बहुत कष्टप्रद थी। वह एक व्यस्त पारिवारिक व्यक्ति थे। नीलाक्षी एक सुन्दर अविवाहित लड़की थी। उसकी अपनी कामनाएं और इच्छाएं थीं, परन्तु उसकी चाहत से रविजी का कोई लेना-देना नहीं था। उन दोनों का आपस में कोई मेल नहीं था, न उम्र का, न किसी और प्रकार का। रविजी और उसके बीच बस इतना ही सामंजस्य था कि वह एक साहित्यिक अभिरुचि की लड़की थी, शायद लेखन में भी रुचि रखती हो और वह एक स्थापित साहित्यकार थे।

उसके बारे में अभी रविजी को बहुत कुछ जानना बाकी था।

इसी चुप्पी और ऊहापोह की स्थिति में नीरज का फोन आया, “सर! मैं काफी हाउस के बाहर खड़ा हूं. आप कहां हैं?”

रविजी को सामान्य होने का मौका मिल गया, “मैं काफी हाउस के अन्दर हूं, आ जाओ.”

वह अंदर आया तो लगभग हांफ रहा था। उनकी बाईं तरफ बैठा तो भी वह लम्बी-लम्बी सांसें ले रहा था। “माफ करना सर! मुझे देर हो गयी.” फिर उसने नीलाक्षी पर एक उचटती नजर डाली और बिना किसी प्रतिक्रिया के बोला, “मैं ट्रैफिक जाम में फंस गया था। मेट्रो स्टेशन तक आने में काफी देर लग गयी। आज रविवार है, तब भी यह हालत है कि मेट्रो में तिल धरने की जगह नहीं मिलती। पता नहीं क्या हो गया है इस देश के लोगों को कि एक दिन भी आराम से घर पर नहीं बैठ सकते. और फिर राजीव चौक पर जो भीड़ होती है, लगता है इलाहाबाद संगम का मेला लगा हो.”

वेटर तब तक पानी लाकर रख गया था। नीरज एक गिलास उठाकर गटागट पानी पी गया, फिर उसने एक लम्बी गहरी सांस ली। अब उसके चेहरे का तनाव कुछ कम हो गया था। होंठों पर मधुर मुस्कान लाते हुए वह बोला, “हां, सर! कहानी पूरी हो गयी?”

“पूरी करनी ही थी, तुम जो पीछे पड़े हुए थे.” रविकान्त ने पाण्डुलिपि का लिफाफा उसे पकड़ते हुए कहा, “कुछ लोगे?”

“हां सर! एक कोल्ड काफी,” वह कुर्सी पर इत्मीनान से सीधा बैठ गया। अब उसने नीलाक्षी को ध्यान से देखा, फिर रविजी की तरफ प्रश्नवाचक भाव से देखने लगा। उन्होंने परिचय कराया, “आप हैं नीलाक्षी, एक शोध छात्रा। आधुनिक हिन्दी उपन्यास की धारा पर शोध कर रही हैं और नीलू ये हैं मि. नीरज, साहित्यिक पत्रिका ‘साहित्य-सुधा’ के सह सम्पादक.”

दोनों ने एक दूसरे को हाथ जोड़कर नमस्ते किया। नीरज बोला, “तब तो सर से अच्छा गाइड आपको दूसरा कोई मिल ही नहीं सकता.” उसने नीलाक्षी से कहा।

“यह मेरे अन्तर्गत शोध नहीं कर रही हैं। बस मेरे उपन्यास पढ़कर मुझसे मिलना चाहती थीं। आज इन्हें समय दिया तो यहां पर मिल रहे हैं.” नीलाक्षी के कुछ कहने के पहले ही रविकान्त ने स्पष्ट किया।

“अच्छा, अच्छा, फिर भी आप इन्हें बहुत कुछ बता सकते हैं.”

नीलाक्षी चुप थी और ध्यान से उनकी बातें सुन रही थी। रविजी ने उससे पूछा, “क्या तुम भी कुछ लिखती हो?”

“हां, छिट-पुट कविताएं लिखी हैं। कहानियां भी लिखने का प्रयास कर रही हूं.”

“कोई कहानी पूरी हो जाए तो मुझे दिखाना। मैं आवश्यक सुधार कर दूंगा। फिर नीरज को देंगे। अगर इन्हें पसंद आई तो साहित्य सुधा में प्रकाशित हो जाएगी.”

“जी!” उसने बस इतना ही कहा।

काफी हाउस से वह तीनों एक साथ ही बाहर निकले। नीरज विदा लेकर मेट्रो स्टेशन के अन्दर चला गया। रविकान्त और नीलाक्षी बाहर कुछ पल तक द्विविधा में खड़े रहे, एक दूसरे की आंखों में देखते हुए, जैसे पूछ रहे हों, “अब?”

अब तक रात पूरी तरह से घिर आई थी, परन्तु चारों तरफ बिजली का प्रकाश फैला था। सभी इमारतें जगमगा रही थीं। दुकानें और सड़कें गुलजार थीं, चारों तरफ लोगों की सरगर्मियां थीं, गाड़ियों का शोर था, लोगों की चख-चख थी; परन्तु इतनी भीड़-भाड़, जगमगाहट और शोर के बीच भी वह दो शख्स निहायत खामोश थे। दिमाग में विचार चल रहे थे, दिल में बहुत कुछ खलबला रहा था, परन्तु मुख बंद थे।

नीलाक्षी के मन में संकोच के भाव थे, अतः रविजी ने ही कहा, “नीलू, तुम कहां रहती हो?”

“मयूर विहार में.” कहते हुए उसे चेहरे पर हजार फूलों की रंगत बिखर गयी।

“तो फिर अब घर जाओगी?” पूछने से अधिक उनकी बात में उसे घर जाने का आदेश था. वह भी उनका इशारा समझ गयी. “ठीक है सर! मैं आपसे फोन पर बात करूंगी.” कहते-कहते उसके स्वर में निराशा का भाव जाग्रत हो उठा. पता नहीं कैसी होती हैं ये लड़कियां...पल में हंसती हैं, तो पल में रोती हैं. आंसू तो हमेशा इनकी पलकों पर ही ठहरे होते हैं. हिले नहीं कि छलक पड़े.

उसी रात रविकान्त के मोबाइल पर नीलाक्षी का सन्देश आया- “सर, आपने मेरी आंखें देखीं? क्या वो नीली हैं?” उनको मन ही मन हंसी आई, परन्तु रविकान्त ने उसके संदेश का उत्तर नहीं दिया.

अगले दिन उसका फोन आया, “सर, मैं आपको डिस्टर्ब तो नहीं कर रही हूं.”

“नहीं, ऐसी कोई बात नहीं. बताओ!” उन्होंने बहुत ही सधे स्वर में कहा. उसके साथ उपेक्षित व्यवहार करके न तो वह उसे समझ सकते थे, न सही राह दिखा सकते थे.

“आपने मेरी बात का जवाब नहीं दिया?” उसने खुश होकर कहा.

“कौन-सी बात का...?” समझते हुए भी उन्होंने अनजान बनकर पूछा.

“कल रात मैंने आपको एक सन्देश भेजा था, आपने पढ़ा नहीं?” वह मायूसी से बोली.

“अच्छा वो, हां मैंने पढ़ा था. सच तो ये है कि मैंने अभी बहुत अच्छी तरह से तुम्हारी आंखों में झांककर नहीं देखा है; परन्तु जितना देखा है, उससे तो यही लगता है कि तुम्हारी आंखें सचमुच सागर के नीले पानी की तरह गहरी हैं.”

“नीले पानी की तरह या नीले आसमान की तरह?” उसने पूछा.

“यह बताने के लिए मुझे दुबारा तुमसे मुलाकात करनी पड़ेगी.”

“सच! तो सर! कब मिल रहे हैं आप?” वह एक छोटे बच्चे की तरह खुश होकर बोली.

“सोचकर बताऊंगा.” कहकर रविकान्त ने फोन काट दिया. उसकी बातों से अब पूरी तरह स्पष्ट हो गया था कि वह मानसिक और आंतरिक रूप से उनके ऊपर आसक्त थी. इसमें उनके व्यक्तित्व से अधिक उनके उपन्यासों का हाथ था. यह आसक्ति भक्तिपूर्ण थी या वासनामयी, यह कहना अभी उनके लिए संभव नहीं था. आसमान से बादल अभी पूरी तरह छंटे नहीं थे, सुबह का उजास बस फूटने वाला था और सूरज की किरणें अभी-अभी फूलों पर पड़ी थीं. फूलों में कितनी चमक है, यह धूप खिलने पर पता चल जाएगा. उनको धीरज के साथ प्रतीक्षा करनी होगी.

वह लगभग रोज उनको फोन करती और ढेर सारी बातें करती. बातों का उसके पास अथाह भण्डार था और रविजी के पास धैर्य का अथाह सागर. वह ध्यान से उसकी बातें सुनते और बाद में उन पर मनन करते. उसके आग्रह पर वह उससे तीन-चार बार मिल भी चुके थे, कभी काफी हाउस में, कभी किसी पार्क में और तब उन्होंने ढेर सारी बातें की थीं. अब तक रविजी उसके चरित्र को पूरी तरह समझ चुके थे.

नीलाक्षी न तो पागल थी, न दीवानी. वह परिपक्व और सुलझे हुए विचारों की उच्च शिक्षित लड़की थी. सुन्दरता के मापदण्ड पर वह हजारों में एक थी. पारिवारिक पृष्ठभूमि बहुत अच्छी थी. पिता केन्द्र सरकार में उच्च अधिकारी थे. मां गृहिणी थीं, परन्तु वह भी उच्च शिक्षित थीं. छोटा भाई एम.बी.बी.एस. के प्रथम वर्ष में था.

नीलाक्षी जब कथा नौ में थी, तभी उसे कहानियां और उपन्यास पढ़ने का चस्का लग गया था. यह अनायास नहीं था. बचपन में वह घर में आनेवाली बाल-पत्रिकाओं में छपी कहानियां पढ़ती थी. जैसे-जैसे वह बड़ी होती गयी तो कहानियां और उपन्यास पढ़ने का शौक बढ़ता गया. घर में सामाजिक और साहित्यिक पत्रिकाएं आती ही रहती थीं. इसके अलावा वह उपन्यास खरीदकर पढ़ने लगी. कॉलेज की लाइब्रेरी का कोई उपन्यास उसने नहीं छोड़ा. खरीदे गए उपन्यासों से उसके घर में एक बड़ी लाइब्रेरी बन गयी. इसके लिए पिता से तो नहीं परन्तु मम्मी से उसे अक्सर डांट पड़ती रहती थी. परन्तु चूंकि वह पढ़ने में मेधावी थी और सदा अच्छे अंकों से परीक्षा उत्तीर्ण करती रही, तो उसकी इस आदत को किसी ने गंभीरता से नहीं लिया.

इंटर तक आते-आते उसने हिन्दी के लगभग सभी लेखकों के उपन्यास पढ़ डाले थे. हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं के अनूदित उपन्यासों का भी उसने खूब अध्ययन किया था. हिन्दी गद्य साहित्य का उसे अच्छा-खासा ज्ञान था. कथा-जगत के लेखकों, रचनाओं और उनकी नई-पुरानी धाराओं पर वह बहुत अच्छा विश्लेषण कर लेती थी, अतएव अपने शोध के लिए उसने जो विषय चुना था, वह उसकी रुचि के अनुरूप था.

उसके साथ बस एक ही मनोवैज्ञानिक समस्या थी. वह हर उपन्यास की नायिका के चरित्र को स्वयं के साथ जोड़कर देखती थी और नायक की तुलना कहानीकार या उपन्यासकार के साथ करती थी. इसी तुलनात्मक अध्ययन के तहत वह लेखक के जीवन के हर पहलू की खोज-बीन करती थी, परन्तु जब उसे पता

चलता था कि सारे प्रसिद्ध और लोकप्रिय लेखक या तो स्वर्गवासी हो चुके थे या इतने बुजुर्ग और प्रौढ़ थे कि उनके साथ भावनात्मक सम्बन्ध बनाना असंभव था. यही कारण था कि उसने कभी किसी जीवित लेखक को व्यक्तिगत तौर पर सम्पर्क नहीं किया था.

इस सम्बन्ध में रविजी एक अपवाद थे, क्योंकि वह अपेक्षाकृत नई पीढ़ी के चर्चित लेखक थे और उसकी दृष्टि में वह नीलाक्षी के सबसे बड़े आदर्श थे. इसीलिए वह उनकी तरफ आकर्षित हुई थी, यह जानते हुए भी वह एक शादीशुदा व्यक्ति थे और उनकी एक किशोर वय की बेटी भी थी.

पिछली मुलाकात में नीलाक्षी ने पूछा था, “सारे लेखक बूढ़े और उम्रदराज क्यों होते हैं?”

रविकान्त ने पहले तो आश्चर्य से उसे देखा और फिर हंसकर कहा था, “ऐसी बात नहीं है कि सारे लेखक बूढ़े होते हैं. कोई भी लेखक किशोरावस्था या जवानी में ही लेखन-कार्य प्रारंभ करता है; परन्तु तुरन्त ही किसी लेखक को प्रसिद्धि और लोकप्रियता प्राप्त नहीं हो जाती. साहित्य-लेखन, खासकर हिन्दी साहित्य लेखन में जवानी या युवावस्था में प्रसिद्धि और अर्थलाभ करना बहुत ही मुश्किल होता है. लेखन कार्य किसी फिल्म में हीरो बनकर आना और रातों-रात प्रसिद्ध हो जाने से बिल्कुल भिन्न है. यहां बुलन्दियों पर पहुंचने के रास्ते इतने आसान नहीं हैं और जब कोई प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंचता है तो वह उम्र के अन्तिम पड़ाव पर होता है.”

“ऐसा क्यों होता है?” उसने अपनी हथेली को अपनी टुट्टी पर टिकाकर बड़ी आकर्षक मुद्रा बनाई थी. उससे नज़र हटाकर थोड़ा आसमान की तरफ देखते हुए रविकान्त ने कहा था- “क्योंकि किसी भी युवा लेखक को कोई प्रकाशक जल्दी धास नहीं डालता. पत्र-पत्रिकाओं में छिट-पुट रचनाएं प्रकाशित होने से किसी भी लेखक को ख्याति नहीं मिलती; जब तक कि उसकी कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हो जाती. पुस्तक प्रकाशित होने के बाद भी उसे पाठक पसंद करेंगे या उसकी पुस्तक किसी लाइब्रेरी में पड़ी धूल चाटती रहेगी, कहना कठिन है. पुस्तक को सही समय पर सही समीक्षा प्राप्त हुई और उसको साहित्य जगत में पर्याप्त जगह मिली तभी लेखक को नाम और दाम मिलता है, परन्तु हिन्दी साहित्य में किसी लेखक को थोड़ा-सा नाम और दाम मिलने में उसकी उम्र के तमाम वर्ष यूं ही गुजर जाते हैं और वह बूढ़ा हो जाता है.”

“इसीलिए लड़कियां हिन्दी लेखकों की दीवानी नहीं होती, उनके आटोग्राफ हासिल करने के लिए नहीं दौड़तीं और न उन्हें खून से पत्र लिखती हैं.”

“संभवतः!” उन्होंने कहा.

“परन्तु आपको तो जवानी में ही बहुत नाम प्राप्त हो गया, इसका क्या कारण है?” उसने पूछा.

“कह नहीं सकता, जबकि मैंने प्रकाशन के लिए कोई जोड़-तोड़ नहीं की. बस मैं बड़े लेखकों के संसर्ग में रहता आया हूं. उनकी प्रशंसा और अनुशंसा दोनों मेरे काम आईं, इसीलिए पुस्तक प्रकाशित करवाने के लिए मुझे बहुत ज्यादा पापड़ नहीं बेलने पड़े. हां, प्रकाशक रायल्टी ज़रूर डकार जाते हैं या समय पर नहीं देते. यह भी हिन्दी साहित्य और उसके लेखकों के लिए बहुत दुर्भाग्य की बात है.”

“मेरे लेखन के साथ भी यही होगा, जबकि मैंने अभी कुछ खास नहीं लिखा है.”

“नहीं, तुम्हारे साथ ऐसा नहीं होगा, तुम खूबसूरत जो हो. वैसे भी प्रकाशक और सम्पादक जवान और सुन्दर लेखिकाओं को खूब तरज़ीह देते हैं. इसीलिए हिन्दी के कई लेखक अपनी पत्नियों के नाम से लेखन करते हैं और खूब धड़ल्ले से छपते हैं. तुम लिखना तो शुरू करो, फिर देखो कैसे तुमको लोग सिर आंखों पर लेते हैं. महिलाओं की खूबसूरती के अपने फायदे होते हैं.”

वह शरमा गई. सिर झुकाकर बोली, “धत्! आप तो मेरा मज़ाक उड़ाने लगे. अगर मैं इतनी खूबसूरत हूं, तो...” फिर अचानक वह चुप हो गयी और गुमसुम सी रविकान्त की आंखों में झांकने लगी. उन्होंने उत्सुकता से पूछा- “तो फिर क्या?”

उसने फिर से अपना सिर नीचे झुका लिया, “मेरी खूबसूरती से अभी तक किसी के हृदय में प्यार की वीणा के तार झंकृत नहीं हुए और उनसे मधुर संगीत की तरंगित धुन नहीं निकली. ऐसी धुन जो मेरे हृदय को भी झंकृत कर देती. ऐसी खूबसूरती का क्या फायदा, जो किसी के हृदय को आकर्षित न कर सके?”

रविजी ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया. दे भी नहीं सकते थे. जिन पत्थरों को रगड़कर वह आग सुलगाना चाहती थी, उनमें चकमक पत्थर का अंशमात्र नहीं था. न उन पत्थरों के आसपास प्यार के रस से भीगी हुई धास थी, जिनमें आग लग सकती.

उन्होंने बात को टालते हुए कहा, “तुम कहानी लिखकर मुझे दिखाओ, फिर देखता हूं. बिना कुछ किए कोई कार्य सम्पन्न नहीं होता. बिना राह चले मंज़िल नहीं मिलती. तुम आगे तो बढ़ो, रास्ता भी मिलेगा, हमराह भी और मंज़िल भी!”

“इसी उम्मीद में तो मैं आगे बढ़ रही हूं.” उसने चमकती आंखों से मुझे देखा.

नीलाक्षी का मन साफ था, उसमें कोई छल नहीं था, परन्तु जिस राह पर चलकर वह मंज़िल की तरफ बढ़ना चाहती थी, उस राह में बड़ी बाधाएं थीं। यह राह उसके लिए नहीं बनी थी। वह रविजी की रचनाओं से अभिभूत थी और उनके निकट आने का प्रयास कर रही थी। यह उनका फर्ज़ था कि उसे भटकने से बचाएं और उसे सही राह दिखाएं। सूखे तालाब में क्या मछलियां पकड़ी जाती हैं?

इस सम्बन्ध में रविजी ने नीरज से बात की, बहुत विस्तार से और उसे अपनी योजना से अवगत कराया, “नीरज! वह बहुत अच्छी लड़की है, परन्तु इतनी सीधी-सादी और भोली कि वह अपना लक्ष्य नहीं ढूंढ़ पा रही है। उसका हृदय कोमल है, वह भावुक है, संवेदनशील है। उसे कोई भी बहुत आसानी से अपने प्रभाव में ला सकता है। वह लेखकों को अपना आदर्श मानती है, उन्हीं में अपने जीवन की खुशियां ढूंढ़ रही है। हमारे जैसे लेखक उसे बरगला कर उसके भोलेपन का फायदा तो उठा सकते हैं, परन्तु उसे जीवन की सच्ची खुशियां नहीं दे सकते। एक सीधी, सरल और भावुक लड़की को सच्ची खुशियां तभी प्राप्त हो सकती हैं, जब उसे एक सच्चा जीवनसाथी प्राप्त हो। चूंकि नीलाक्षी एक लेखक में यह सब कुछ प्राप्त करना चाहती है, मैं चाहता हूं कि भटकने के बजाय उसके जीवन में पूर्णरूप से स्थायित्व आ जाए। यह स्थायित्व उसके जीवन में तभी आ सकता है, जब वह अपना आदर्श और जीवनसाथी तुम्हारे जैसे किसी जवान लेखक में देखना आरंभ करे। तुम वाक्-पटु हो, एक उभरते हुए लेखक और कवि हो। मुझे आशा है, अपनी प्रतिभा और लेखन से तुम उसे अपने प्रभाव में लेकर अपनी तरफ आकर्षित कर सकते हो और उसे भटकने से बचा सकते हो।”

“मैं प्रयास करूंगा。” उसने कुछ सोचते हुए कहा था।

“तो ठीक है, मैं शीघ्र ही उसे तुम्हारे पास किसी बहाने से भेजूंगा。”

योजना बनाकर रविजी ने नीलू से एक कहानी लिखवाई। जब उसने उन्हें कहानी दिखाई और उन्होंने पढ़ी तो वह उसकी भाषा, शिल्प, कथानक, पात्रों के चरित्र-चित्रण, चुटीले संवादों और कहानी के तार्किक अंत को देखकर हैरान रह गये। उन्होंने उसकी तरफ देखते हुए पूछा, “क्या यह तुम्हारी पहली कहानी है?”

“नहीं, परन्तु पहली बार यह कहानी मैंने आपको दिखाई है। इसके पहले मैंने कई कहानियां लिखीं थीं, परन्तु वह सब कहीं फाइलों के बीच दबी आलमारी में पड़ी होंगी। अब तक की अपनी लिखी कहानियों में यह कहानी मुझे सबसे अच्छी लगती है, इसीलिए फेयर करके आपके पास लाई हूं。” उसने मुस्कराती निगाहों से कहा।

“नीलू, तुम अपनी प्रतिभा को क्यों छिपाए घूम रही हो? लिखो, और खूब लिखो, तुम साहित्य जगत में धमाका मचा दोगी। मैं इस कहानी को ‘साहित्य सुधा’ के लिए अनुमोदित कर रहा हूं। तुम स्वयं इसे लेकर नीरज के पास चली जाओ। मैं फोन पर उससे कह दूंगा कि तुम आ रही हो। तुम बहुत जल्दी ही कहानी जगत में तहलका मचाने वाली हो, यह मेरी भविष्यवाणी ही नहीं, तुम्हारे लिए मेरा आशीर्वाद है。” वह वास्तव में उसकी प्रतिभा से प्रभावित हो गये थे। नीलाक्षी को साहित्य की अच्छी जानकारी थी, इससे रविजी अवगत थे ही, परन्तु वह इतनी अच्छी कहानी-लेखिका भी है, यह रूप आज उन पर प्रकट हुआ था।

“आशीर्वाद से अधिक अगर आपका प्यार मुझे मिल जाता तो और अच्छा होता。” उसने भेदभरे स्वर में कहा।

“मेरा प्यार सदा तुम्हारे साथ है。” उन्होंने बिना सोचे समझे कह दिया।

“बाद में मुकर मत जाना。” उसने लपककर उनका हाथ पकड़ लिया। वह हतप्रभ रह गए और उन्हें एक झटका-सा लगा। उन्होंने ध्यान से नीलाक्षी की आंखों में देखा। उसकी आंखों में एक मासूम चाहत तैर रही थी। वह सिहर गये। उससे अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा- “तुम्हारा प्यार तुम्हें मिल जाएगा, इसका मैं आश्वासन देता हूं। अब तुम जाओ。”

उसके जाते ही उन्होंने नीरज को फोन किया, “वह आ रही है, बहुत सावधानी से उसके साथ पेश आना। बहुत भावुक और संवेदनशील लड़की है। अगर तुमने उसे प्रभावित कर लिया तो तुम्हें उससे अच्छा जीवनसाथी नहीं मिल सकता। वह अपनी एक कहानी भी साथ ला रही है। मैंने उसे देख लिया है। उसकी कहानी बहुत अच्छी है। बिना किसी काट-छांट के तुम उसे प्रकाशित कर सकते हो。”

‘ओ.के. सर, आपकी आज्ञा सिर माथे पर...!’ उधर से नीरज ने कहा।

रविजी ने सुकून की सांस ली। नीलाक्षी को संभवतः अब नदी का किनारा मिल जाएगा। एक ऐसा किनारा, जहां पर साथ-सुधरे धुली सफेद रुई जैसे बादलों के साथ नीला आसमान धरती के साथ मिलता है। नीलाक्षी को ऐसे ही आसमान की आवश्यकता था। रविकान्त को नीरज पर भरोसा था। वह जानते थे, वह एक भटकती हुई लड़की को अपने प्रेमपाश में बांधने में सफल हो सकेगा। वह जहीन था, एक उभरता हुआ लेखक था। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वह जवान और अविवाहित था। उसके सम्पर्क में आने के बाद नीलाक्षी की भटकन समाप्त हो जायेगी।

नीलाक्षी जब नीरज के पास पहुंची तो वह उसी का इंतजार कर रहा था. औपचारिक परिचय के बाद उसने कहानी पर एक सरसरी नजर डाली और तारीफों के पुल बांधने शुरू कर दिये. नीलाक्षी की आंखों में विस्मय के बादल मड़राने लगे. वह टुकुर-टुकुर नीरज को देखे जा रही थी. नीरज अपनी धीर-गंभीर वाणी में उसकी कहानी के प्रत्येक पहलू पर एक मझे हुए आलोचक की तरह अपने विचार व्यक्त कर रहा था. उसके चुप होते ही, नीलाक्षी की सांस थम सी गयी. वह दोनों कुछ पल तक बस एक दूसरे को देखते ही रहे, अंत में नीलाक्षी ने कहा- “आप समझते हैं, मैं इतना अच्छा लिखती हूँ?”

“इसमें समझने की आवश्यकता ही नहीं है. प्रत्यक्षम् किम् प्रमाणम्...आपकी कहानी मेरे सामने है. मैं गारण्टी के साथ कहता हूँ कि इसके छपते ही कहानी जगत में तहलका मच जायेगा और चूँकि आप एक महिला हैं, आपकी कहानी को लेकर तमाम तरह के विमर्श छिड़ जाएंगे.”

नीलाक्षी इतनी प्रशंसा सुनने के बाद लज्जा में डूब गयी. उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी और आंखों में ऐसे भाव छा गए, जैसे कह रही हो, ‘मैं इस लायक तो नहीं हूँ.’ वह नीचे देखने लगी.

“आइए, बाहर चलकर एक-एक कप चाय पीते हैं.” नीरज ने उससे कहा, “बाहर की ताजगी भरी हवा में हम विस्तार से आपकी कहानी पर चर्चा कर सकते हैं.” नीलू ने कोई आपत्ति नहीं की और वह दोनों उठकर बाहर आ गये.

रेस्तरां तक पहुंचते-पहुंचते वह दोनों चुप रहे. जब अंदर जाकर आमने-सामने बैठे तो गौर से एक बार फिर एक-दूसरे को देखा. इतनी देर में नीलू ने अपनी भावनाओं पर काबू पा लिया था और उसने बैठते हुए पूछा- “आप भी तो लिखते होंगे?”

“हां, मैं कहानियां लिखता हूँ. संभवतः आपको पता नहीं, मैं कालेज में रवीन्द्र ‘रवि’ जी का शिष्य रहा हूँ. उन्होंने मुझे बी.ए. में पढ़ाया है. बाद में मैंने इतिहास से एम.ए. किया था, परन्तु साहित्यिक अभिरुचि होने के कारण सर से मेरा सम्पर्क सदा बना रहा और आज उन्हीं के आशीर्वाद से मैं इस साहित्यिक पत्रिका का सह सम्पादक हूँ.”

“आपने किसी और नौकरी के लिए प्रयत्न नहीं किया.” उसने पूछा.

वैटर को चाय और इडली का आदेश देते हुए उसने कहा, “करना तो चाहता था, परन्तु कहानी लेखन ने मुझे उस तरफ ज्यादा ध्यान नहीं देने दिया. या अन्तर्मन

से मैं स्वयं नहीं चाहता था कि कोई और नौकरी करूं. पत्रिका में काम करते हुए मुझे भले ही कम पैसे मिल रहे हैं, परन्तु इससे एक मानसिक सुकून मिलता है और सच्चाई तो यह है कि मुझे अपनी कला को निखारने का मौका मिल रहा है, इससे अधिक मनुष्य को और क्या चाहिए?”

“क्या आपने कोई उपन्यास भी लिखा है?”

“हां, परन्तु उसे प्रकाशित नहीं करवाया है. पाण्डुलिपि तैयार है, बस कुछ ही दिनों में प्रकाशित होकर बाहर आ जायेगा.”

नीलू ने संकोच करते हुए कहा- “क्या प्रकाशित होने के पूर्व मैं उसे देख और पढ़ सकती हूँ.”

“हां, हां, क्यों नहीं? पाण्डुलिपि कार्यालय में रखी है. यहां से निकलते हुए लेती जाना. परन्तु मेरी एक शर्त है, उसे केवल आपको पढ़ना ही नहीं है. उसके बारे में राय भी देनी है, लिखित रूप में; ताकि सम्मति के रूप में उसे मैं उपन्यास में प्रकाशित कर सकूँ.”

“आपके उपन्यास पर मैं कैसे सम्मति दे सकती हूँ. मैं कोई स्थापित और चर्चित लेखिका तो नहीं हूँ.” उसने अपनी बड़ी-बड़ी आंखों को और ज्यादा फैलाते हुए कहा.

“भले ही आप साहित्य जगत के लिए अभी अपरिचित हैं, परन्तु मैं जानता हूँ, कल आप एक प्रतिभावान उभरती हुई लेखिका के तौर पर चर्चित होने वाली हैं. आपकी कहानी ‘साहित्य सुधा’ के अगले कहानी विशेषांक में ही प्रकाशित होनेवाली है. तब देखना क्या होता है? मैं आपकी कहानी पर संपादकजी की एक बढ़िया सम्मति भी लिखवा लूंगा. आप अपना फोटो और परिचय मुझे दे दीजिएगा.”

“मैं ईमेल पर भिजवा दूंगी.”

उस दिन नीलाक्षी नीरज के उपन्यास की पाण्डुलिपि लेकर घर आई. नीरज ने अपनी पूर्व प्रकाशित कहानियों की एक फाइल भी उसे दी थी. घर आकर सबसे पहले नीलू ने उसका उपन्यास पढ़ा. उपन्यास पढ़ते-पढ़ते उसे कई बार लगा कि वह रवीन्द्र ‘रवि’ का कोई उपन्यास पढ़ रही थी. दोनों की भाषा-शैली में बहुत कम अंतर था. इसका कारण था कि नीरज की एक लंबी कहानी को उपन्यास का रूप दिया गया था और इसमें रवीन्द्र ‘रवि’ ने नीरज की बहुत मदद की थी. यह काम एक सप्ताह के अन्दर ही किया गया था, क्योंकि रविजी जानते थे कि नीरज से मिलने के बाद नीलू उसके लेखन के बारे में अवश्य पूछेगी, तब नीरज के पास अपनी कुछ



गिनी-चुनी कहानियों के अतिरिक्त बताने के लिए कुछ नहीं होगा. एक योजना के तहत उसकी एक कहानी पर रात-दिन लगाकर उपन्यास लिखवाया गया था. बहुत कुछ तो रवि जी ने बोलकर लिखवाया था. यही कारण था कि नीरज के उपन्यास में रविजी के लेखन की झलक दिखाई दे रही थी. यह बात नीलाक्षी को पता नहीं थी

उपन्यास पढ़कर नीलाक्षी ने नीरज को फोन किया, “बहुत-बहुत बधाई हो, आपका उपन्यास मैंने पढ़ लिया है और बहुत अच्छा लगा. मुझे लगता है आप रविजी के नक्शे-कदम पर चल रहे हैं और एक दिन उनके अनुवर्ती लेखकों में आपका नाम होगा.”

“बहुत-बहुत धन्यवाद! आपको मेरा उपन्यास अच्छा लगा. क्या कहानियां भी पढ़ीं?”

“इसके बाद उन्हीं को पढ़ूंगी, पर क्या उसके पहले एक बार आपसे मिल सकती हूं.”

“हां, हां, जब कहो.” नीरज के उत्साह का ठिकाना न था. वह समझ गया, नीलाक्षी उसके लेखन से प्रभावित हो चुकी है. बस दो-चार मुलाकातों में वह उसे शीशे में उतारने में सफल हो जायेगा.

“आज शाम को...!”

“कहां...?”

“जहां आप कहो.” नीलाक्षी ने सब कुछ नीरज के ऊपर छोड़ दिया.

“तो फिर इण्डिया गेट पर मिलते हैं. पहली बार बाहर मिलने के लिए उससे अच्छी जगह और कोई नहीं है.” नीरज ने सुझाव दिया और वह मान गयी.

वह दोनों मिले, वह लगभग हमउम्र थे. किसी के मन में कोई संकोच, कोई पूर्वाग्रह या दुराग्रह नहीं था. पहले दोनों में सामान्य बातें होतीं रहीं, यथा- एक दूसरे की शिक्षा-दीक्षा, घर-परिवार, शौक और रुचियां आदि. दोनों कुछ देर तक घास की गुदगुदी चादर पर बैठे, फिर टहलने लगे. टहलते-टहलते दोनों के बदन टकरा भी जाते, परन्तु इस पर नीलाक्षी ने कोई एतराज नहीं किया. नीरज अवश्य उसकी तरफ देखने लगता तो वह हल्के से मुस्करा देती. रात घिर आई तो दोनों ने साथ-साथ आइसक्रीम खाई और फिर दुबारा मिलने का वायदा करके एक दूसरे से विदा हुए.

नीरज ने रविजी को फोन करके कहा, “लगता है, बर्फ पिघल रही है.”

“मुबारक हो, लेकिन देखना बर्फ का पानी पिघलने के बाद इधर-उधर न बहने पाए.”

“मैं ख्याल रखूंगा.”

उसी रात घर जाकर नीलाक्षी ने नीरज की सारी कहानियां पढ़ डालीं. उसकी कहानियों में दर्द था, पीड़ा थी, बिछोह था, तो कहीं मिलन भी था. आम आदमी की छोटी से लेकर बड़ी पीड़ा तक को नीरज ने बहुत ही प्रभावशाली ढंग से अपनी कहानियों में व्यक्त किया था. उसके लेखन में प्रौढ़ता थी, जबकि वह स्वयं अभी छब्बीस वर्ष का था. नीलाक्षी उससे दो बरस छोटी रही होगी.

अगले महीने ‘साहित्य सुधा’ का अंक आ गया. रविजी की कहानी के साथ-साथ नीलाक्षी की कहानी भी उस अंक में छपी थी. यह चूंकि उसकी पहली कहानी थी, तो संपादक की विशेष टिप्पणी के साथ छपी थी. उस टिप्पणी के कारण उस कहानी की चर्चा होनी ही थी, जिसकी प्रतिक्रियाएं पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित की गयीं और एक तरह का विमर्श नीलाक्षी को लेकर साहित्य जगत में छिड़ गया. उसके पास इतने अधिक फोन आने लगे, कि सारा दिन उनके उत्तर देते-देते वह थक जाती, परन्तु वह परेशान न होती. अपनी कहानी पर इतनी अच्छी प्रतिक्रिया पाकर वह एक सुखद अनुभूति के दौर से गुजर रही थी. लेखन अपने आपमें बहुत सुखद होता है और लेखन जब मुद्रित रूप में पाठकों तक पहुंचता है, तो अलग सुख देता है और अगर उस प्रकाशन पर पाठकों की प्रतिक्रियाएं प्राप्त होती हैं, तो उससे अनन्त सुख प्राप्त होता है.

नीलाक्षी और नीरज में लगभग रोज बातें होतीं, कभी-कभी वह मिल भी लेते और इन्हीं मिलन के क्षणों में उन दोनों के बीच बहुत सारी बातें हुईं...अंतरंग भी, हल्की-फुल्की और दोनों ने एक दूसरे को जाना-समझा, परन्तु नीरज अपनी तरफ से कुछ कह नहीं सकता था, क्योंकि वह नीलाक्षी के स्वभाव को समझता था और चाहता था कि वह खुलकर उससे कुछ कहे, प्यार का इजहार करे, तो वह तुरन्त स्वीकार कर ले.

“आपने मुझे कहां से कहां पहुंचा दिया?” नीलाक्षी ने एक दिन नीरज का हाथ पकड़ते हुए कहा. उसमें कोई संकोच या लज्जा नहीं थी. वह दोनों एक दूसरे से काफी हद तक खुल गये थे.

नीरज उसके कोमल स्पर्श के सुखद एहसास से भीगकर बोला, “यह तुम्हारी लेखनी का कमाल है और इसका श्रेय किसी को जाता है तो वह रविजी को. अगर उन्होंने तुम्हारी प्रतिभा को नहीं पहचाना होता तो आज भी तुम गुमनाम रहती, क्योंकि संकोचवश तुम अपने लेखन को प्रकट नहीं करती और एक दिन बस अपने शोधपत्र के साथ किसी कॉलेज में पढ़ा रही होती.”

“मैं मानती हूँ, परन्तु अगर तुमने कहानी प्रकाशित न की होती तो मेरा इतना नाम कैसे होता?”

“वह तो होना ही था. बस तुमको अपने आवरण से बाहर निकलना था. रविजी ने तुम्हारे आवरण को उठाने में सहायता की, क्योंकि तुम्हारी प्रतिभा को कौन दबा सकता था. खैर छोड़ो ये बातें, तुम्हारी रिसर्च कब समाप्त हो रही है?”

“बस अब अन्तिम चरणों में है, बस टाइप करवाना है.”

“वह काम तुम मुझ पर छोड़ दो. मैं करवा दूंगा.”

“आप क्यों मेरे लिए इतना सब कर रहे हो?” नीलू ने अपनी गहरी आंखें उसकी आंखों में डालते हुए पूछा. नीरज ने अपनी निगाहें झुका लीं, “बस मेरा मन करता है तुम्हारे लिए कुछ करने का, इसीलिए”

“मन कुछ और नहीं कहता?” वह उसके निकट सरक आई.

“और क्या कहेगा?” नीरज उसके मन की बात समझते हुए बोला, “मन तो बहुत कुछ कहता है, परन्तु मन की हर बात पूरी हो जाय, यह संभव नहीं है.”

“हां, यह बात तो है.” नीलाक्षी ने भी एक आह भरी, “मन न जाने क्या-क्या पाने के लिए भटकता ही रहता है.”

“नीलू, जहां तक मैं तुम्हें समझ सका हूँ. तुम एक भावुक और बहुत ही संवेदनशील लड़की हो और जीवन के जिस मोड़ से तुम गुजर रही हो, उस मोड़ पर तुम्हें एक स्थायित्व की जरूरत है. अगर ऐसा नहीं होगा तो तुम निराशा के सागर में डूब जाओगी.”

“कैसा स्थायित्व?” वह नीरज के मन को टटोलने का प्रयास कर रही थी.

“जैसे कि किसी को प्यार करना, उसके साथ जीवन गुजारने का निर्णय लेना और फिर एक पवित्र बंधन में बंध जाना. इससे न तो तुम्हारा मन भटकेगा, न जीवन में कोई उथल-पुथल होगी. तुम एक बहुत अच्छी और साफ दिल की लड़की हो, कोई भी तुम्हें अपनाने के लिए तैयार हो जायेगा और अगर यह कठिन लग रहा हो, तो अपनी मां-बाप की पसंद के लड़के से शादी कर लो.”

“नहीं, नीरज यह संभव नहीं है, मम्मी-पापा अच्छी तरह से मेरे मन को जानते हैं. उन्होंने कहा है कि मैं जिस लड़के को पसंद करूंगी, उसके साथ मेरी शादी कर देंगे. परन्तु मैं बहुत भटक चुकी हूँ. मम्मी-पापा भी अब और देरी नहीं करना चाहते. बस वह मेरी हां का इंतजार कर रहे हैं.”

“उन्हें क्यों इतनी जल्दी है. एक दो-साल और देर होने में कुछ नहीं होगा. अभी तुम्हारी उम्र ही कितनी है, चौबीस साल ही न.”

“हां, परन्तु आप जानते ही हैं कि जवान लड़की के मां-बाप की सोच कैसी होती है. उनका कहना है कि अब मेरी थीसिस भी पूरी हो चुकी है और कॉलेज में अस्थायी तौर पर पढ़ा भी रही हूँ. पी.एचडी. अवार्ड होते ही नौकरी भी स्थायी हो जायेगी. अतएव जीवन में स्थायित्व लाने के लिए यही सही मौका है.”

“तो फिर परेशानी क्या है, तुम्हें तो कोई भी लड़का पसंद कर लेगा. कॉलेज से अब तक क्या किसी ने आपको पसंद नहीं किया?”

“मुझे पसंद करनेवाले तो बहुत सारे मिले, परन्तु मुझे भी तो कोई पसंद आना चाहिए.” नीलू ने सर्द आह भरकर कहा. फिर उसने नीरज के हाथ को इस तरह पकड़ा जैसे बेख्याली में पकड़ लिया हो और उसे जोर से दबाती हुई बोली, “क्या मुझे मेरा आदर्श मिल पाएगा?”

“क्या और कैसा है तुम्हारा आदर्श?” नीरज उसके शरीर की गर्मी महसूस कर रहा था. वह उसके मन को टटोल रहा था.

“मैं तुमसे कुछ नहीं छिपाऊंगी. अब मैं भी किसी मंज़िल पर पहुंचना चाहती हूँ. उपन्यासों की दुनिया में भटकती हुई मैं लेखकों को अपना आदर्श मानती रही और उन्हीं में अपना नायक भी तलाश करती रही. अंत में मेरी तलाश रविजी पर जाकर अटक गयी थी. उनसे मिलने का प्रयत्न किया और मिली भी. उनके लेखन से मैं प्रभावित थी ही, व्यक्तित्व से भी हो गयी. मैं मन ही मन उन्हें प्यार करने लगी थी, परन्तु उनके व्यवहार से मुझे लगा कि मैं चाहे जितना उन्हें प्यार करूँ, वह मुझे वह प्यार नहीं दे सकते या देना नहीं चाहते, जो मैं उनसे पाना चाहती थी. उनकी अपनी मजबूरियां रही होंगी, जो कि वाज़िब भी हैं. वह शादीशुदा और एक बेटी के पिता हैं. उम्र में भी मुझसे बड़े हैं. उनको चाहते हुए मैं एक भ्रम में जी रही थी कि मेरी सुन्दरता और चाहत में कोई भी पुरुष मेरा आशिक बन जायेगा, परन्तु हर पुरुष की सोच मेरी सोच के अनुरूप नहीं हो सकती. रविजी ने मेरे साथ कभी दुर्व्यवहार नहीं किया, परन्तु उनके कुछ हद तक उपेक्षित व्यवहार से मैं समझ गयी कि उनके जीवन में मेरे लिए कोई स्थान नहीं है. वह मेरे आदर्श हैं और हमेशा रहेंगे, परन्तु अब उनसे मैं किसी प्रकार के अंतरंग प्यार की उम्मीद नहीं कर सकती.”

“जीवन के जिस मोड़ पर तुम खड़ी हो, वहां आकर कोई भी भटक सकता है. तुम भी भटक रही थी, क्योंकि तुम्हारी नज़रों में आसमान का असीमित विस्तार था. असीमित विस्तार में किसी को एक राह नहीं मिलती, परन्तु केवल एक तरफ सीधी निगाह डालने से तुम्हें सही मार्ग दिखायी पड़ सकता था. अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है, तुम चाहोगी तो तुम्हें अपने प्यार की मंज़िल मिल ही जायेगी.”

“काश, आपकी बात सच हो. आज मैं हिम्मत करके पूछ रही हूँ” उसने नीरज के चेहरे पर अपना दमकता हुआ चेहरा झुका दिया. “अब मेरी आंखों का आसमान एक जगह सिमट आया है और वह जगह है आप! क्या आप मुझे स्थायित्व देंगे? मैं आपको अपने जीवन का संबल बनाना चाहती हूँ.” कहते-कहते उसकी आंखें बंद हो गयीं.

नीरज लरज गया. उसकी आंखें भी बंद हो गयीं. नीलाक्षी के दमकते रूप की चकाचौंध से वह अपने को बचा नहीं सका. उसने धीरे से अपने हाथों को आगे बढ़ाया और नीलू को अपने ऊपर खींच लिया. वह एक मासूम खरगोश की तरह उसकी बांहों में सिमट गयी.

नीलाक्षी की आंखों का नीला आसमान नीरज की आंखों में डूब गया था.



## रेगिस्तान में बारिश

आ काश मेघाच्छादित है. रुक-रुककर बारिश हो रही है, टप...टप...झम...झम...और रुन-झुन की आवाजें दिल में तरंगें पैदा कर रही हैं. गरजते हुए बादल और कड़कती हुई बिजली मन में भय का संचार कर रही है. बाहर काला घना अंधकार पसरा हुआ है. अभी दिन शेष है, परन्तु काले-काले मेघों ने आसमान को इस प्रकार आच्छादित कर दिया है कि दिन में ही रात का आभास हो रहा है.

राधिका खिड़की के पास खड़ी है. उसकी आंखों में बाहर के सारे सुहावने दृश्य सिमट आये हैं. वह पेड़ों पर गिरती हुई बूंदों को देख रही है. पत्तियों पर गिरती हुई बड़ी-बड़ी बूंदें पानी की एक धार बनकर पृथ्वी पर गिर रही हैं. धरती पर पानी का सैलाब उमड़ा हुआ है, जो एक उफनती हुई नदी का आभास दे रहा है. उसका मन नाव हो जाता है. वह धरती पर बहती हुई बरसाती नदी में बहने लगती है. काश, वह नाव होती और बह जाती इस क्रूर दुनिया से दूर और पहुंच जाती किसी ऐसे किसी देश में जहां कोई दुख और कष्ट न होता.

और वह पेड़ों की झूमती हुई पत्तियों को देख रही है. हवा में पत्तियां ही नहीं, बारिश की बूंदें भी इधर-उधर डोल रही हैं. बिल्कुल उसके मन की तरह, जो झूले की मानिन्द केवल एक दिशा से दूसरी दिशा में नहीं, बल्कि चारों तरफ उड़ जाना चाहता है. वह धरती से दूर किसी सुखद आसमान की तलाश में उड़कर चली जाना चाहती है. ऐसा आसमान जो वह फिल्मों में देखा करती है, जहां नायक नायिका की प्रतीक्षा में पलकें बिछाए बैठा रहता है. और नायिका सुखद सपनों के उड़नखटोले में बैठकर नायक के पास पहुंच जाती है. नायक नायिका को अपने आलिंगन में बांध लेता है और फिर चारों तरफ खुशियों की लहर तैर जाती है. उसका मन उड़कर ऐसे ही किसी देश में जाना चाहता है. हमेशा के लिए.

राधिका मेढकों और झींगुरों की आवाजें भी सुन रही है। इन अदृश्य जीवों की आवाज़ में एक लय है, एक ताल है। वह मोहित हो रही है। उसका मन पुलक रहा है। बारिश की फुहारों और मेढकों और झींगुरों की आवाज़ उसके अन्दर एक मधुर संगीत-सा भरती जा रही हैं। उसे लगता है, उसके अंदर भी एक बारिश हो रही है। इस बारिश में वह भीग जाना चाहती है, परन्तु इस बारिश में उसके साथ भीगने वाला उसका मोहन उसके पास नहीं है। वह एक आह भरती है और अपनी उदास आंखों को बाहर से हटाकर अंदर कमरे पर टंगी घड़ी पर टिका देती है।

पांच बजने वाले हैं। शाम के पांच...और चारों तरफ इस कदर अंधेरा व्याप्त है, जैसे रात ने अपने पंख फैलाकर सबको अपने आगोश में समेट लिया हो। ऐसी ही एक रात उसके मन में बसी है, पता नहीं कितने दिनों से, कितने सालों से। ..यह रात बहुत लम्बी है। क्या इस रात की कभी सुबह होगी?

बगल के कमरे से खांसने की आवाज आती है। खांसने की आवाज धीरे-धीरे तेज होती जाती है। पिताजी को खांसी का दौरा पड़ा है। अक्सर पड़ता रहता है। बुढ़ापे का जर्जर शरीर है। सांस फूलती रहती है। बीमार हैं। कई प्रकार के रोगों ने उनके शरीर को जकड़ रखा है। नियमित रूप से इलाज़ चलता रहता है, परन्तु कोई लाभ होता दिखाई नहीं पड़ता। एक न एक रोग बना ही रहता है। अब उनका अन्तिम समय आ गया है, परन्तु जब तक जीवन है, तब तक आशा का दामन नहीं छूटता।

राधिका चुपचाप बगल के कमरे से आ रही आवाजों को सुन रही है। वह अपने हृदय के अंदर की आवाज़ें भी सुन रही है। एक ही साथ। सावन का मनभावन मौसम है, चारों तरफ खुशियां बिखरी पड़ी हैं, परन्तु उसके मन में कोई खुशी नहीं है। वहां सूखे रेगिस्तान-सी वीरानगी है। उसका मन सूखा है और आंखें गीली हैं। उसका मन एक ऐसे रेगिस्तान की तरह है, जहां बरसों से वर्षा की एक बूंद भी नहीं गिरी है। वह तप रही है। क्या ऐसे ही तपती रहेगी। बारिश में भी...कैसा भाग्य लेकर पैदा हुई है?

राधिका ध्यान से बगल के कमरे से आती हुई आवाजें सुन रही है। मां ने पिताजी को पानी दिया है। गिलास के खनकने की आवाज आ रही है। पिताजी उठकर बैठ गए हैं। पलंग के चरमराने की आवाज आती है। मां ने सहारा देकर उन्हें बिठाया होगा। बैठने से खांसी का जोर कम हो जाता है। परन्तु अधिक देर तक बैठने से उनकी पीठ में दर्द होने लगता है। रीढ़ की कमजोर और बूढ़ी हड्डी शरीर का बोझ सहन नहीं कर पाती है। थोड़ी देर बाद उन्हें लिटाना ही पड़ता है।

“अरी, कहां मर गयी? यहां इनको खांसी का दौरा पड़ा है और यह अपने किसी यार की यादों में खोई कमरे में छिपकर बैठी है।” मां की आवाज़ आती है। कर्कश आवाज। राधिका मन ही मन भुनभुनाती है। मां के मन में राधिका के बारे में सदैव कुविचार ही आते हैं। राधिका एक स्कूल में टीचर है। सुबह जल्दी उठकर घर के सारे काम निपटाती है। खाना बनाती है, और सबको खिलाती है। फिर स्कूल जाती है। शाम को स्कूल से लौटकर फिर घर के कामों में जुट जाती है। दिन-रात खटती है, परन्तु मां को उससे शिकायत बनी ही रहती है। वह लड़की है न। पूरा परिवार उसी की कमाई पर निर्भर है, परन्तु मां की खरी-खोटी उसे ही सुननी पड़ती है। बेटे से उनको कोई शिकायत नहीं है। वह बेरोजगार है।

मां को दिन भर पिताजी से ही फुरसत नहीं मिलती। उन्हीं की सेवा-टहल में लगी रहती हैं। पिताजी भी मां को अपने पास से टलने नहीं देते। कभी सो गए, तो भले मां घर का कोई छोटा-मोटा काम कर लेती हैं, वरना राधिका को ही घर के सारे काम निपटाने पड़ते हैं। कितनी भी थकी हो, वह ‘न’ नहीं कह सकती। तब भी मां कभी प्यार के दो शब्द नहीं बोलतीं, उसके काम में हाथ नहीं बंटातीं। बचपन से वह इसी तरह घर के काम करती आ रही है। मां उसे एक नौकरानी से अधिक महत्व नहीं देती हैं।

सचमुच वह इस घर की नौकरानी ही तो है, परन्तु ऐसी नौकरानी जिसको इस घर में काम करने की कोई तनख्वाह नहीं मिलती, बल्कि वह बाहर से कमाकर लाती है, और इस घर का खर्चा चलाती है। बापू की दवाई का खर्च, राशन का खर्च, छोटे भाई की दारू का खर्च और घर के तमाम सारे छोटे-मोटे खर्च। वह न हो तो इस घर के लोग भूखों मर जाएं। वह सबकी पालनहार है, परन्तु उसकी भावनाओं की किसी को चिंता-परवाह नहीं है।

मां की कड़ी बात सुनकर राधिका के मुंह में कसैलापन आ जाता है। मन मारकर वह पिताजी के कमरे में जाती है। बारिश की फुहारों से उत्पन्न खुशी उसके मन के अन्दर मर जाती है। मां पिताजी की पीठ सहला रही हैं। वह चुपचाप एक कोने में खड़ी हो जाती है। मां उसको देखकर भुनभुनाती हैं-

“कितनी देर से खांस रहे हैं, तुझे सुनाई नहीं देता। हाय राम, घर में जवान बेटी है, परन्तु इसको मां-बाप की तनिक भी चिंता नहीं है। मैं न रहूं तो तेरे बापू तो एक दिन भी जिन्दा न रहें। इसी दिन के लिए तुझे पढ़ा-लिखाकर बड़ा किया, नौकरी करवाई, कि तू हम सबको जिन्दा मार डाले।” मां की ऐसी ही आदत है।

बुढ़ापे का प्रभाव उन पर हावी हो गया है. अच्छे-बुरे में भेद नहीं कर पातीं. उनकी निगाह में इस घर में उनका, उनके पति और बेटे के अलावा किसी का अस्तित्व नहीं है. इनके सिवा वह किसी और के बारे में न तो सोचती हैं न उनको और कुछ सूझता है. बेटा ही इस घर के लिए सब कुछ कर रही है और बेटा के ऊपर ही वह अपना सारा गुस्सा, खिझ और लाचारी प्रकट करती हैं.

राधिका का छोटा भाई जवान है. उससे केवल दो साल छोटा है, परंतु आवारा, निकम्मा और शराबी है. लड़-झगड़कर मां से पैसे ले जाता है और शराब पीकर देर रात गए घर लौटता है. गाली-गलौज करता है और खाना खाकर सो जाता है. वह कोई काम नहीं करता. परन्तु मां उसे कुछ नहीं कहतीं. वह उनकी आंखों का तारा है और उनके लिए हीरे-मोती और लाल-जवाहर से कम नहीं है.

हुं, मैं ही क्या-क्या करूं? किस-किसकी परवाह करूं, राधिका मन ही मन सोचती है—मैं क्या कोई मशीन हूं? मेरी कोई भावनाएं नहीं है, कोई इच्छा और चाहत नहीं है? मैं बेटा होकर बेटे का फर्ज निभा रही हूं, परन्तु क्या कभी मां और बाप ने अपने फर्ज के बारे में सोचा है? मैं तीस साल की हो चुकी हूँ, अभी तक मेरी शादी के बारे में कुछ नहीं सोचा. मैं ही अपने मुंह से कुछ कहूंगी तो करेंगे? नहीं, ये क्यों करने लगे मेरी शादी. मैं इनका बैंक जो हूं. विवाह करके चली गयी तो बैंक में इनका खाता नहीं बंद हो जाएगा. तब इन सब को एक सूखी रोटी के भी लाले पड़ जाएंगे. कहां से पिताजी का इलाज करवाएंगे? राशन-पानी का पैसा कहां से आएगा?

ये लोग तो एक दिन मरकर चले जाएंगे, तब अकेली क्या मैं भाई की सेवा के लिए रह जाऊंगी इस घर में? मेरा कौन होगा? मेरा बुढ़ापा कैसे कटेगा? इन लोगों ने तो मेरे आसरे अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत कर लिया? परन्तु मेरे बारे में कभी सोचा है? बाद में मेरा क्या होगा? इनके मरने के बाद क्या भाई को कमाकर खिलाती रहूंगी? मेरा अपना घर-परिवार, बाल-बच्चे नहीं होंगे? इन सबके प्रति जिम्मेदारी निभाते हुए मैंने कभी अपने बारे में नहीं सोचा, वरना कितने अच्छे-अच्छे लड़के हाथ धोकर मेरे पीछे पड़े थे. अभी भी पड़े हैं, परन्तु मैं मां-बाप की नाक नहीं कटाना चाहती हूं. इज्जत और मर्यादा का दामन पकड़कर बैठी हूं. कभी तो इनके मन में मेरे प्रति प्रेम और स्नेह का भाव जाग्रत होगा.

खीझती हुई वह मां को परे हटाकर पिताजी की पीठ को सहलाती है. उन्हें अब कुछ आराम मिल गया है. पिताजी की आंखों में बेटा के प्रति मोह जागता है.

क्षणिक मोह. वह कहते हैं, “बेटी तू नहीं होती, तो आज हम जिन्दा नहीं रहते” उनकी सांस अब संयत है.

मां कुछ नहीं कहती हैं.

पिताजी कहते हैं, “बेटी तेरी उम्र हो गयी है. सोचता हूं, मेरे जीते-जी तू विदा होकर अपनी ससुराल चली जाय, वरना बाद में भाई तेरी दुर्गति कर देगा.”

“कहां से कर देंगे शादी? इस घर में कोई खजाना गड़ा है?” मां की तलख़ आवज़ कमरे में नगाड़े की आवज़ बनकर उभरती है. राधिका का हृदय एँठकर रह जाता है. मां आगे कहती हैं, “हमारे हाथ में क्या है? तुमने अपने जीवन में जो कुछ कमाया, वह खाने भर को पूरा पड़ा, बस. जो बचा, वह बेटा-बेटे की पढ़ाई-लिखाई में लगा दिया. अब इस बेटा के सिवा हमारे पास और क्या है? वही हमारा सहारा है. जब तक जीवित है, वह हमारा है. हमारे मरने के बाद वह जो चाहे करे.” वह नाक सिकोड़ती हुई दूसरी तरफ देखने लगीं.

मां किसी की दुश्मन नहीं होती. अपनी संतान की तो कभी नहीं, परन्तु स्वार्थ माता-पिता को अंधा और बहरा दोनों बना देता है. राधिका की मां अपने नालायक बेटे को सही रास्ते पर लाने के बजाय अपनी बेटी का जीवन ही नर्क बनाए दे रही हैं. कोई उनको कैसे समझाता कि बेटी सही उम्र में ब्याहकर अपने घर चली जाए, तो इससे बड़ा पुण्य मां-बाप के लिए और कोई नहीं होता.

“उसकी उम्र बढ़ रही है. वह कोई अब जवान नहीं है, प्रौढ़ हो रही है.” पिताजी धीमे स्वर में प्रतिवाद करते हैं.

“हम भी कोई अमृत फल खाकर नहीं आए हैं. एक न एक दिन मर जाएंगे. तब उसका जो मन होगा, कर लेगी.” मां के स्वर की तलख़ी बरकार है. उनसे और कोई उम्मीद नहीं की जा सकती.

“उसके पहले उसे अपने घर विदा कर दो. हम भी बेटी के ऋण से मुक्त हो जाएं.” पिता बहुत सधी आवाज में बात कह रहे हैं.

“पहले आपकी सेहत ठीक हो जाए, फिर सोचेंगे.”

राधिका बीच में कुछ नहीं बोलती. बोलने से कोई फायदा भी नहीं. वह अच्छी तरह जानती है, अपने जीते-जी मां उसकी शादी नहीं होने देने वालीं. वह भूखों नहीं मरना चाहतीं. अपने से ज्यादा उन्हें अपने बेटे की चिंता है. उसे कोई तकलीफ हो, मां बर्दाश्त नहीं कर सकती हैं. राधिका उन्हें आश्वासन दे तो भी नहीं कि शादी के बाद उनके भरण-पोषण के लिए वह पैसे देती रहेगी. मां को उसके ऊपर विश्वास

नहीं, अपनी सगी बेटी के ऊपर नहीं. फिर पता नहीं वह किसके ऊपर विश्वास करती होगी. शायद भगवान पर भी नहीं.

“मैंने कितनी बार कहा. मोहन से बात चलाओ. भला लड़का है, वह राधिका को पसंद कर लेगा, परन्तु तुम कुछ सुनती ही नहीं हो.” पिताजी बात को आगे बढ़ाते हैं. पहले भी कई बार वह यह बात कह चुके हैं, परन्तु मां हर बार टाल देती हैं.

“सुन लूंगी. जिस दिन भगवान हमारी सुन लेगा, उस दिन आपकी भी सुन लूंगी.” मां के स्वर में टालनेवाला भाव है.

“बेटे को समझा-बुझाकर किसी सही रास्ते पर लाओ. ऐसे कब तक चलेगा. मुझसे बेटी का दुख देखा नहीं जाता. वह कितना उदास रहती है.”

राधिका चुपचाप पिताजी को बिस्तर पर लिटाकर अपने कमरे में आ जाती है. मां ने उसके पीछे क्या कहा, उसने नहीं सुना. वह सुनना भी नहीं चाहती है. उसके मन में बादल उमड़ आए हैं. बस बरसने ही वाले हैं. वह जबरदस्ती अपने आंसुओं को थामने का प्रयास करती है.

बाहर अभी तक बारिश हो रही है. लगता है, यह बारिश कभी रुकनेवाली नहीं है. उसकी आंखों से भी एक बारिश हो रही है. यह बारिश अभी कुछ देर बाद थम जाएगी.

पिताजी को जब भी खांसी का दौरा पड़ता है, या उनकी तबीयत बिगड़ने लगती है, उन्हें लगता है, अब उनका जीवन अंतिम चरण पर है; तब वह राधिका के बारे में चिंता व्यक्त करने लगते हैं. उसकी शादी के बारे में बात करते हैं, परन्तु मां उनकी एक नहीं सुनतीं. वह किसी की नहीं सुनतीं.

बेटा लाख गलती करे, परन्तु वह बेटे को कुछ नहीं कहतीं और बेटी को कोसती रहती हैं, जैसे उसके बिगाड़ने में उसका ही हाथ है. परन्तु राधिका जानती है, वह मां के लाड़-प्यार में बिगड़ा है. बचपन से उसकी हर सुख-सुविधा का मां ने ख्याल रखा. बिना काम के भी उसे पैसे देती रहीं. उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता था, सदा परीक्षा में अंक कम लाता था, कभी फेल हो जाता था. तब उसे डांटने के बजाय, मां उस पर लाड़-प्यार उड़ेलती हुई कहतीं, “कोई बात नहीं बेटा, अगली बार मेरा सोना बेटा अच्छे अंक लेकर पास होगा.” परन्तु उनका सोना बेटा कभी चांदी भी नहीं बना. अब तो मिट्टी बनकर रह गया है. सारी बुरी लतें उसके पास हैं, परंतु कमाई एक पैसे की नहीं.

बाहर बारिश तेज हो रही है. राधिका के मन में एक कसक उठती है और उसका ध्यान बंट जाता है. घर में सन्नाटा व्याप्त है. पिताजी शायद सो गए हैं. उन पर दवाई

का असर रहता है और वह अक्सर ऊंघते रहते हैं. मां पता नहीं किस काम में व्यस्त होंगी. छोटा भाई किसी जगह बैठकर दारू पी रहा होगा. आजकल पता नहीं कहां रहता है. रात में भी घर नहीं आता. एक दिन उसे किसी ने बताया था कि किसी विधवा लड़की के साथ उसका चक्कर चल रहा है, और जिस दिन घर नहीं आता, रात में उसी विधवा औरत के घर में रुक जाता है. उसने उस विधवा औरत को नहीं देखा है. घर में किसी को पता नहीं है. भाई ने किसी को बताया नहीं है. उसने भी मां को नहीं बताया है. बताती तो मां उसी के ऊपर लांछन लगा देतीं कि वह अपने भाई को बदनाम कर रही है; ताकि वह अपने लिए खसम ढूंढ सके या भाई को बदनाम करके वह किसी के साथ भाग जाने का प्रपंच रच रही है.

बाहर का गेट खुलने की आवाज़ आती है. इस आवाज़ के साथ ही उसके हृदय में भी एक आहट होती है. उसका मन मयूर नाच उठता है. वह जानती है, कौन आया होगा? वह रोज आता है. उसने घड़ी की तरफ देखा. छह बज रहे हैं. वह इसी वक़्त आता है. वह पिताजी के कमरे में जाकर उनका हाल-चाल पूछता है. मां उसे पसंद नहीं करतीं. वह डरती हैं, कि वह राधिका को अपने प्रेम-जाल में फंसाकर उसे दूर देश उड़ा ले जाएगा. परन्तु वह इतना संकोची है कि उसने आज तक केवल राधिका को देखा है, बात नहीं की है. परन्तु उसकी आंखों की भाषा वह समझती है. उसमें राधिका के लिए असीम प्यार है, वही प्यार जो एक प्रेमी की निगाहों में अपनी प्रेमिका के लिए होता है. वह उसे चाहता है, परन्तु व्यक्त नहीं करता. बहुत संकोची है. राधिका भी तो संकोची है. कभी उसकी तरफ देखकर मुस्करायी तक नहीं. कैसे मुस्कराती. पिताजी और मां के सामने कैसे उसे देखकर मुस्कराती. मां उसे खा न जातीं. मां का बस चले तो मोहन को अपने घर में न आने दें, परन्तु पता नहीं क्या सोचकर पड़ोसी होने का धर्म निभा लेती हैं. संभवतः इसलिए कि वह स्वभाव का बहुत सीधा है और पिताजी उसे पसंद करते हैं. वह आता है, तो उनसे ढेर सारी बातें करता है और पिताजी का बीमार मन चंगा हो जाता है. इसीलिए मां उसे कुछ नहीं कहतीं, परन्तु वह ये कोशिश अवश्य करती हैं कि राधिका उसके सामने बिल्कुल न निकले. अगर पड़े भी तो दोनों आपस में बात न करने पाएं. जब मोहन उसके घर आता है, तब उसके लिए चाय मां ही बनाती हैं. वह राधिका को बुलाती भी नहीं हैं. वह चाहे तो कोई बहाना बनाकर पिताजी के कमरे में चली जाए और एक नज़र मोहन को देख ले. बस, देखना ही उसके भाग्य में है. एक चातक की तरह वह बस चांद को ताकती रह जाती है.

बारिश में सब कुछ भीगा-भीगा है. राधिका का मन भी भीगा है. मन में मां का भय है, परन्तु आज उसने अपने मन के अंदर साहस का संचार किया. वह अपनी आकांक्षाओं को दबाना नहीं चाहती है. कहां तक भय के साए में जीवन व्यतीत करती रहे. वह अपने कमरे से निकलकर पिताजी के कमरे में जाती है.

मोहन आया है. उसकी बांसुरी की आवाज़ हवा में बिखर रही है. बांसुरी की मधुर धुन गोपियों को आमंत्रित कर रही है. ऐसे में राधा छिपकर बैठी रहे, कभी हो सकता है क्या? राधिका विभोर होकर अपने कमरे से निकलकर पिताजी के कमरे में जाती है. मां के मन में जो होगा, कह लेंगी. कहां तक बर्दाश्त करे राधा? कितने प्रतिबंधों के बीच रहे? वह सोचती है. आजकल बहुत कुछ सोचने लगी है.

मोहन पिताजी से बातें करने में मशगूल हैं. दोनों की निगाहें पल भर के लिए मिलती हैं और झुक जाती हैं. मां गौर से उन दोनों की तरफ देखती हैं. उन्हें राधिका पर गुस्सा आता है. बिना बुलाए क्यों आ गयी है? फिर भी इस बात के लिए उसे कुछ नहीं कहती हैं, परन्तु मुंह बनाकर उसे टालने के लिए कहती हैं, “जाओ, चाय बनाकर लाओ.” और वह मोढ़ा खींचकर पति के सिरहाने बैठ जाती हैं, ताकि एक साथ मोहन और राधिका दोनों की हरकतों पर नज़र रख सकें.

मोहन बेवकूफ नहीं है. वह मां के भाव समझता है और ऐसी कोई हरकत नहीं करता, जिससे उन्हें शक हो कि राधिका के प्रति उसके मन में कोमल भाव हैं. मोहन के भोलेपन पर राधिका मन ही मन मुस्कुराती है. वह चाय बनाने में व्यस्त हो जाती है. चाय बनाते हुए वह मन ही मन सावन का एक गीत गुनगुनाने लगती है. वह अपने मोहन के लिए गीत गा रही है. उसकी टेर मोहन तक अवश्य पहुंच रही होगी. वह सुन रहा है. राधिका के गीत के बोल मोहन तक पहुंच रहे हैं. सच्चे मन से अगर कोई किसी को पुकारता है, तो उसकी पुकार बिना किसी ध्वनि के भी उस तक पहुंच जाती है.

मोहन सौम्य है, सरल है. सीधा स्वभाव है उसका. राधिका के मन को भाता है. पता नहीं राधिका उसे कैसी लगती है? दोनों में कभी कोई बात नहीं होती है. राधिका मां के डर से बात नहीं करती है. वह किससे डरता है, पता नहीं. लगभग एक साल से उनके पड़ोस में रहता आ रहा है. कुंवारा है. यह बात उसने पिताजी को बताई है. उसने सुना है. वह दूर गांव का रहनेवाला है. यहां किसी सरकारी आफिस में तृतीय श्रेणी कर्मचारी है. कोई जिम्मेदारी नहीं है. चाहे तो अपनी मर्जी से विवाह कर सकता है. परन्तु अब तक ब्याह नहीं किया है. क्या पता राधिका के लिए रुका है? दोनों का संयोग एक साथ मिलता होगा.

बारिश अपने पानी से धरती की हर चीज को बहा ले जाती है. अच्छी और बुरी सभी चीजें बह जाती हैं. राधिका की आंखों से भी आंसू बहते रहते हैं. पता नहीं उसके मन का दुःख कब बहकर बाहर निकलेगा और वह कब सुखी होगी? राधा का कब मोहन के साथ मिलन होगा? सावन में नहीं होगा तो कब होगा? अभी तो केतकी खिली है, और अभी चातक चांद को चाहत भरी निगाहों से देख रहा है. यहीं तो मिलन का मौसम है.

चाय बनने के पहले ही मां किचन में आ जाती हैं. वह खुद चाय छानती हैं और कप-प्लेट लेकर कहती हैं, “तुम अपने कमरे में जाओ.” यह आदेश है. राधिका मां के हुक्म की अवहेलना नहीं कर सकती है? कर सकती है, वह सक्षम है. सब कुछ उसी के सहारे चल रहा है. वह न हो तो सब भूखों मर जायें, फिर वह सबकी ज्यादाती क्यों बरदाश्त करती है? वास्तविक रूप में वही इस घर की मालकिन है, फिर वह मां की ज्यादाती क्यों सहन कर रही है? मां उसे दुख देती हैं. क्या वह स्वयं सुख पाने की अधिकारिणी नहीं है? वह अपने अधिकार का प्रयोग क्यों नहीं करती?

बारिश और तेज हो गयी है. राधिका का मन बारिश में भीग रहा है.

घर में सभी लोग दुःखी हैं. बस मां दुःखी नहीं हैं. राधिका के भाई ने अभी-अभी घर आकर अपने ब्याह की बात उठाई है. पिताजी की सांस फूलने लगी है. वह बेटे की बात बरदाश्त नहीं कर पा रहे हैं. सांसों को संयत करने का प्रयास करते हुए कहते हैं, “तुम शादी करोगे? काम के न काज के, दुश्मन अनाज के. कहां से खिलाओगे उसे? खुद तो दूसरों के टुकड़ों पर पल रहे हो. शरम नहीं आती?” कहते-कहते पिताजी की सांस और ज्यादा फूल गई है.

राधिका सन् सी मूक खड़ी है. वह मां-बाप की बड़ी लड़की है. वह कमा रही है, परन्तु आज तक उसने मां-बाप से अपनी शादी की बात नहीं की है. भाई छोटा है, बेरोजगार है, निकम्मा और शराबी है. और उसे घर बसाने की सूझ रही है. और मां खुश हैं. कैसी विडंबना है!

मां के चेहरे पर खुशी की चमक है. कहती हैं, “आपकी जान क्यों सांसत में है? बेटा जवान हो चुका है. अब नहीं तो कब शादी करेगा?”

“शादी के लिए जवान है तो कमाने के लिए क्यों नहीं? कहां से खिलाएगा बहू को और खुद कहां से खाएगा?” पिताजी को खांसी का दौरा पड़ने के आसार दिख रहे हैं. राधिका उनकी तरफ बढ़कर उन्हें बैठने में सहायता करती है. वह इशारे

से पिताजी को मना करती है कि वह कुछ न कहें. उनकी खांसी उभर आएगी. अभी मां को पिताजी की फ़िक्र नहीं है. वह बेटे के बारे में चिन्तित हैं.

“हम लोग भूखों तो नहीं मर रहे? जहां चार जन खा रहे हैं, पांचवां भी खा लेगा. जहां दो रोटी बनती हैं, वहां एक अतिरिक्त व्यक्ति के खाने के लिए कुछ न कुछ बच जाता है. बेटे की बहू अपना भाग्य साथ लेकर आएगी. वह किसी दूसरे के भाग्य से नहीं खाएगी.” मां की आवाज़ में दर्प और घमंड भरा है. वह किसी की बात नहीं सुनेंगी. राधिका जानती है. पिताजी भी जानते हैं.

“हां, बेटा के जीवन को नरक बनाकर तुम लोग अपनी खुशियों की झोली भरती रहो.” पिताजी ने निराश भाव से कहते हैं. वह केवल कह सकते हैं.

बेटे ने घोषणा कर दी है. इस तरह जैसे कोई राजा करता है. वह अकड़ के साथ बता रहा है कि उसने एक विधवा लड़की (औरत) से मंदिर में विवाह कर लिया है. उसे घर लाना चाहता है. आज मां-बाप की मंजूरी लेने के लिए आया है. मिलती है तो भी, नहीं मिलती है तो भी वह अपनी पत्नी को घर लेकर अवश्य आएगा. उसने मां-बाप की लाज रखने के लिए एक फ़र्ज़ निभाया है. कोई खुश रहता है या नाराज़, इससे उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता. मां की मंजूरी मिल गयी है तो उसे घर ले आएगा. आज ही.

और वह अपनी पत्नी को लिवाने के लिए चला गया है. मां ने थाली में सिन्दूर, अक्षत और दीप रखकर सजा लिया है. वह बहुत खुश हैं. उन्होंने पड़ोस की तीन-चार औरतों को मंगल-गीत गाने के लिए बुला लिया है. वह उनके साथ बरामदे में खड़ी बेटे-बहू की प्रतीक्षा कर रही हैं.

बारिश अभी भी हो रही है. बाहर बारिश का शोर है, परन्तु राधिका कान लगाकर ध्यान से सारी आवाज़ें सुन रही है. गेट पर रिक़शा रुकने की आवाज़ आती है. मां पड़ोसनों के साथ गेट पर पहुंच गयी हैं. बेटा अपनी पत्नी के साथ अभी-अभी रिक़शे से उतरा है और सबने मंगल-गान प्रारंभ कर दिया है. गानों की आवाज़ उसके गानों में पड़ रही है, परन्तु वह उस गाने से खुश होने के बजाय अपने भाग्य को रो रही है. राधिका के भाग्य में क्या रोना ही लिखा है? ऐसा तो नहीं हो सकता. कोई भी लड़की इतनी अभागिन नहीं हो सकती. वह घर की बड़ी लड़की है, परन्तु वह अभी तक अविवाहिता है, क्योंकि वह नोट छापने की एक मशीन है. यह मशीन कोई खोना नहीं चाहता. बेटा छोटा है, परन्तु उसकी मां को उसका इतना ख़्याल है कि बिना शादी-ब्याह, बाजे-बाराती और बिना किसी रस्मों-रिवाज़ के उसके

लिए पत्नी आ गई है. मां खुश हैं. मां के बस में नहीं है, वरना वह बधाइयां बजवाती. यह मां है या कोई डायन. राधिका मन ही मन सोचती है.

अब सभी लोग अंदर आ गए हैं. बाहर अधिक देर तक नहीं रुक सकते. बारिश का वेग बहुत तेज है. मां मिठाई भी नहीं मंगवा सकती हैं. कोई बाहर कैसे जाए? घर में जो भी था, उसी से मुंह मीठा किया जा रहा है. राधिका अपने कमरे से निकलकर उस कमरे में नहीं जाती है. वह अपने मन की आंखों में घर में होनेवाली घटनाओं को देख रही है. प्रत्यक्षतः उसे अपनी भाभी को भी नहीं देखना है. बस सोच रही है कि वहां, उस कमरे में क्या-क्या हो रहा है? आजकल वह बहुत सोचने लगी है.

राधिका के मन में विद्रोह के बीज उगने लगे हैं. आज तक उसने विद्रोह के बारे में कभी नहीं सोचा, पर आज सोच रही है. क्या उसका जीवन केवल दूसरों की खुशियों के लिए होम करने के लिए बना है? अपने हाड़-मांस को गलाकर और अपनी इच्छाओं और कामनाओं को मारकर वह दूसरों की झोली में खुशियां डालती आ रही है. क्या जीवन के अंत तक वह यही सब करती रहेगी? क्यों करे वह ऐसा? वह कोई देवी नहीं है, एक मानवी है. उसके अंदर बहुत कुछ पिघल रहा है. क्रोध, ईर्ष्या और प्रतिशोध की भावना में वह जल रही है. परन्तु वह किसके प्रति अपना क्रोध व्यक्त कर रही है, किससे उसे ईर्ष्या है और किससे उसे प्रतिशोध लेना है.

वह विश्लेषण करती है. मां के प्रति उसे क्रोध है, भाई से ईर्ष्या है और वह स्वयं से प्रतिशोध लेना चाहती है. यह उसके रोने का समय नहीं है. बदला लेने का समय है. वह बदला लेगी, सबसे बदला लेगी. वह टान रही है. वह तैयार हो रही है. कमर कस ली है. अब समर पर निकलना शेष है.

बाहर झमाझम बारिश हो रही है. कई दिनों से हो रही है और पता नहीं कितने दिनों तक होती रहेगी. अभी तो सावन आरंभ हुआ है. भादों मास बाकी है. उसके बाद कुआर का महीना है. दूर कहीं से कजरी की आवाज़ उसके कानों में पड़ रही है. बड़ी प्यारी आवाज़ में कोई विरही गा रही है-

रिमझिम बरसै बदरिया, घरवा ना श्याम संवरिया

जबसे चढ़ल सखी सावन महिनवा, घरवा ना श्याम संवरिया

रहि-रहि पड़ेला फुहरवा, घरवा ना श्याम संवरिया

घेरि-घेरि आवे सखी कारी रे बदरिया, घरवा ना श्याम संवरिया



रहि-रहि पड़ेला फुहरवा, घरवा ना श्याम संवरिया  
राधिका का मन रो पड़ा है. कजरी में बहुत भारी पीड़ा व्याप्त है. ऐसी ही पीड़ा से वह दो-चार हो रही है. आज से नहीं, बहुत दिनों से. बहुत वर्षों से. उसकी पीड़ा को हरनेवाला कोई नहीं है. परंतु...

वह बार-बार घड़ी देख रही है. उसे बेसब्री से किसी का इंतजार है. उसके मन में सावन की फुहारों की तरह एक सुखमय भावना हिलोरें मार रही है. भाई के कमरे से आ रही आवाज़ों से उसे कोई लेना-देना नहीं है. यह आवाज़ें उसके लिए मर चुकी हैं. उसे बस बारिश की फुहारों की आवाज़ें तरंगित कर रही हैं और उसे बस एक और आवाज़ का इंतजार है. वह आवाज़ अभी थोड़ी देर में उभरेगी और उसके मन के अंदर प्रवेश कर जाएगी. कभी तो उसका इंतजार खत्म होगा. कोई भी इंतजार अंतहीन नहीं होता.

बारिश का वेग अत्यधिक तीव्र हो गया है, इसीलिए संभवतः उसने गेट खुलने और बंद होने की आवाज़ नहीं सुनी है. बारिश की तेज झमाझम के अलावा और कोई आवाज़ कमरे के अंदर सुनाई नहीं पड़ रही है. झमाझम की आवाज़ में बाहर की बाकी सारी आवाज़ें गुम होकर रह गयी हैं.

परन्तु पिताजी के कमरे में हलचल हुई है. कोई पिताजी के कमरे में आया है. वहां से बातचीत की आवाज़ सुनाई पड़ रही है. वह कान लगाकर सुनती है. लगता है, मोहन आ गया है. पिताजी उससे कह रहे हैं-

“देखा, मोहन, वह नालायक किसी बेहया रंडी को घर में उठाकर ले आया है. उसकी मां कितनी खुश है. उसे अपनी जवान बेटी के जीवन की कोई चिंता नहीं है, परंतु अपने नालायक बेटे के लिए मर रही है.” पिताजी की आवाज़ में गुस्सा भरा है.

मोहन की धीमी आवाज़ सुनाई पड़ती है, “क्या वह कोई लड़की घर में लाया है.”

“हां, कोई विधवा है. कहता है, मंदिर में उससे शादी कर ली है. इस तरह कोई शादी-ब्याह होता है. न मां-बाप की मर्जी, न इच्छा. न कोई बाजा-बाराती, न कोई रस्म निभाई गयी. इस तरह कैसे कोई लड़की किसी लड़के की ब्याहता हो सकती है. बताओ, ऐसा भी कहीं दुनिया में होता है.”

मोहन चुप. उसकी कोई आवाज़ सुनाई नहीं पड़ती. वह कुछ सोच रहा है. शायद वह चिन्तित है.

“बेटा, मोहन, आज मेरा धैर्य चुक गया है. मैं तुमसे कहता हूं, मेरे जीवन का कोई भरोसा नहीं, परन्तु यह डायन अभी बहुत दिन जिन्दा रहेगी. वह अपने

बेटे के साथ मिलकर मेरी बेटी का जीवन नर्क बना देगी. तुम राधा को लेकर कहीं भाग जाओ, या दो गवाहों के समक्ष किसी मंदिर में उसके साथ विवाह कर लो. मैं तुम्हें इसकी इजाज़त देता हूं. मैं राधिका का पिता हूं. मैं जानता हूं, तुम्हारे मन में उसके लिए कुछ है, और तुमको देखकर उसके चेहरे पर भी लाज की लाली दौड़ जाती है. यही तो प्यार है. तुम दोनों मेरे मरने का इंतजार नहीं करना, उसके पहले ही ब्याह कर लेना, वरना मेरी बेटी घुट-घुटकर मर जाएगी. मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है. जिन्दा रहा तो फिर आशीर्वाद दूंगा.” पिताजी की आवाज़ भीग-सी गई है. आज मां उनके पास नहीं है. उनको अपने मन की बात मोहन से कहने का अवसर मिल गया है. राधिका के भाग्य का निर्णय उन्होंने कर दिया है.

राधिका का दिल बेतहाशा धड़क उठा. पिताजी के लिए उसके मन में आदर-सम्मान था. आज श्रद्धा से उनके लिए उसका सिर झुक गया. काश, वह बीमार न होते. कुछ करने के लिए समर्थ होते, तो आज वह कुंवारी न बैठी रहती. भले घर की लड़कियां तीस बरस की उमर में कुंवारी नहीं बैठी रहती हैं.

फिर उसने पिताजी के कमरे से कोई आवाज़ नहीं सुनी. संभवतः दोनों गुपचुप कोई मंत्रणा कर रहे हैं, ताकि मां को न सुनाई पड़ जाए. मां का डर पूरे घर में चौबीस घण्टे व्याप्त रहता है.

दिया-बत्ती जलने के पहले ही पड़ोस की औरतें अपने-अपने घर चली गई हैं. अब मोहन भी बाहर निकलने वाला है. मां अपने बेटे-बहू के साथ उसके कमरे में खुशियां मना रही हैं. बहू पाकर मां बौरा गयी हैं. अब उन्हें अपने पति की भी कोई परवाह नहीं है. बेटी की भी नहीं कि वह कहीं भाग जाएगी.

बाहर बारिश का जोर उसी तरह तेज है. मोहन बाहर निकल रहा है. आज राधिका उसे घर के अंदर दिखाई नहीं पड़ी है. वह उदास है. बरामदे के कोने में रखा अपना छाता उठाकर बाहर कदम बढ़ाता है. गेट के पास कोई खड़ा है. वह चौंकर देखता है. वह पास आता है. बाहर की बिजली की रोशनी में एक युवा नारी गेट से लगी खड़ी भीग रही है. उसके सिर से पानी की धार बहकर उसके बदन के चारों तरफ गिर रही है. उसके वस्त्र उसके बदन से चिपक गए हैं, और वह एक सुघड़ मूर्ति की तरह लग रही है. वह भीग रही है, परन्तु पानी की तेज बौछारों से बचने का वह कोई उपक्रम नहीं कर रही है. उसके पास कोई छाता नहीं है. मोहन ध्यान से देखता है, अरे, यह तो राधा है. उसका हृदय अनायास वेग से धड़कने लगता है.

वह जल्दी से भागकर उसके पास जाता है। फिर ठिठककर खड़ा हो जाता है। उसके मन में कोई संकोच उभरता है। मन में पीड़ा की एक कसक तैर जाती है। आज तक उसने राधिका से कभी कोई बात नहीं की है। आज करेगा? वह हिचक रहा है। राधिका भी हिचक रही है, परन्तु वह भीग रही है। उसे भीगना ही चाहिए। वह बहुत प्यासी है।

“आप! यहां? ऐसे क्यों भीग रही हैं?” आखिर उसकी जुबान पर पड़ा ताला खुल जाता है। राधिका का मन भी खिल जाता है। सुबह के गुलाब की तरह, सुगंधित, सुंदर। वह अपनी बेचैन निगाहों को उसके चेहरे पर टिका देती है। उन आंखों में बहुत प्यास है।

“भगवान का लाख-लाख धन्यवाद! आपकी जुबान तो खुली। मैं अगर ऐसे न भीगती, तो शायद आप कभी जुबान नहीं खोलते और हम दोनों सावन में भी प्यासे रह जाते। निःशब्द!” राधिका भी मुखर हो उठी। चुप्पी सदा किसी को खुशियां प्रदान नहीं करती। जब किसी की खुशियों का दमन किया जाता है, तो वह अनचाहे प्रतिबंधों को तोड़ता है। वह अपने सुख के लिए जीवन के किसी न किसी मोड़ पर अपने सारे संकोच और लज्जा का त्याग करके साहसिक कदम उठाता है। वह खुशियों के लिए लड़ता है, और जीतता है। राधा और मोहन भी आज अपने जीवन की लड़ाई लड़ रहे हैं। वह जीतेंगे। उनके मन में सच्चाई है।

“आप घर के अंदर चलिए। आपकी तबीयत खराब हो जाएगी।” मोहन के स्वर में मनुहार है।

“तबीयत तो अब ठीक हुई है। अब यह कभी खराब नहीं होगी।” राधिका के स्वर में लज्जा है, परन्तु उसकी वाणी में दृढ़ता है। ऐसी दृढ़ता जो अंधेरे में रोशनी दिखाती है।

“ऐसी बारिश में भीगना ठीक नहीं है। आप छाने के नीचे आ जाइए।” अपने छाने को उसकी तरफ बढ़ाते हुए मोहन कहता है।

वह हंसती है। उसकी हंसी में मुग्धता है, “फिर तो आप भी भीग जाएंगे। आपका छाता छोटा है। हम दोनों के लिए कम पड़ जाएगा।” उसकी हंसी की खनक में मोहन डूब जाता है।

मोहन को लगा, राधिका के स्वर में मधुर व्यंग्य का भाव है। वह हिचकते हुए कहता है, “अगर आपके मन में कोई द्विविधा और संकोच न हो, तो इस छाने में दो लोगों के लिए पर्याप्त जगह है। हम कभी नहीं भीगेंगे। आप आइए तो सही।” उसकी वाणी में अनुराग भरा अनुरोध है।

“परन्तु आज मुझे भीगना है, आपके साथ!” वह कोयल की तरह कूकती है।

“तो फिर ठीक है, जैसी आपकी इच्छा!” वह आगे बढ़ता है।

“सच! आप अपने वचन से मुकरेंगे तो नहीं।” वह अपने होंठों को दांतों से काटकर मुस्कराती है।

“नहीं, कभी नहीं, मैं आपके पिताजी को वचन देकर आया हूं।”

“उन्हें आप वचन नहीं देते, तो भी आज मैं आपको बिना भीगे नहीं जाने देती।” वह अपना दायां हाथ बढ़ाकर मोहन के हाथ से उसका छाता ले लेती है और सावधानी से उसे मोड़कर गेट के सहारे रख देती है। वह फिर कहती है, “अब इस छाने की हमें कोई आवश्यकता नहीं है। आज बस हमें भीगना है।” वह हौले से आगे बढ़ती है। मोहन का हाथ उसके हाथ की तरफ बढ़ता है और दोनों के हाथ आपस में गुंथ जाते हैं।

दोनों भीग रहे हैं। यह बादलों की बारिश नहीं है। यह उनके प्यार की बारिश है। यह रेगिस्तान में होनेवाली बारिश है, जो बरसों बाद उनके जीवन में आई है। इस बारिश से उनके मन के रेगिस्तान में नखलिस्तान खिलेगा। उसमें रंगे-विरंगे, सुंदर और सुगंधित फूल होंगे, जो उनके जीवन को महका देंगे।

दूर कहीं से कजरी की आवाज अभी भी आ रही है:

‘दिल में धीर धरो ये प्यारी इक दिन अइहैं सजनवा तुहार।’



## सामने वाला कमरा

**अ**पने कमरे का ताला खोलते हुए उसने आंगन की बायीं तरफ एक उत्सुक नजर डाली. उधर एक कमरा था और उसका दरवाजा बंद था, परन्तु बाहर से ताला नहीं लगा था. उसने एक गहरी सांस ली और अपने कमरे का दरवाजा खोलकर सीधे अन्दर जाकर खिड़की के पास खड़ा हो गया और बाहर की तरफ उसी कमरे की ओर देखने लगा. पता नहीं उधर क्या था, परन्तु वह एकटक किसी की झलक पाने के लिए लालायित-सा खड़ा था. कई पल तक खड़ा रहा, परन्तु जब कुछ दिखाई नहीं पड़ा तो उसके चेहरे पर गहरी उदासी पसर गई और वह सिर नीचा करके बीच कमरे पर पड़ी कुर्सी पर बैठ गया. फिर धीरे-धीरे मरे जैसे हाथों से अपने जूते के फीते ढीले करने लगा. जूते और मोजे उतारने में उसे दस मिनट लग गये, जबकि पहले इसी काम में उसी मुश्किल से एक मिनट लगता था.

आजकल प्रफुल्लता और स्फूर्ति उसके बदन से पता नहीं कहां गायब हो गयी थी. वह गहरी उदासी से घिरा रहने लगा था. मन उसका इधर-उधर भागता था और दिल काबू में नहीं रहता था. पहले ऑफिस से निकल कर इधर-उधर घूमता-घामता, यार-दोस्तों के साथ मिलता-मिलाता, दो-तीन घंटे बाद अपने कमरे पर पहुंचता था. अकेला था, और घर में उसका इंतजार करनेवाला कोई नहीं था. घर पर ही खाना बनाता था, परन्तु कभी-कभी बाहर से भी खाकर आ जाता था, परन्तु आजकल...

आजकल उसकी दिनचर्या में काफ़ी परिवर्तन आ गया था. वह ऑफिस से सीधे घर पहुंचने लगा था. इधर-उधर घूमना और यार-दोस्तों से मिलना-मिलाना छोड़ दिया था और अब उसका ध्यान केवल एक चीज पर केन्द्रित होकर रह गया था. और वह केन्द्र बिन्दु था उसके कमरे के सामने वाला कमरा जिसमें पिछले महीने से एक लड़की आकर रहने लगी थी. लड़की अकेली थी और सुन्दर ही नहीं, युवा

भी थी. अविवाहित होगी, ऐसा वह सोचता था. कहां काम करती थी, उसे पता नहीं था, परन्तु वह रोज सुबह सज-धजकर, ध्यानाकर्शक कपड़े पहनकर बाहर निकलती थी और शाम पांच बजे तक अपने कमरे पर लौट आती थी. उसके बाद वह कहीं बाहर निकल कर नहीं जाती थी, परन्तु अपने कमरे से बाहर भी कम ही निकलती थी और उसे पता नहीं चल पाता था कि वह अकेली कमरे में क्या करती रहती थी. खाना स्वयं पकाती-खाती थी या बाहर से ही खाकर आती थी या बंधवाकर लाती थी और बाद में अपने कमरे में खाती थी.

लड़की के रूप ने उसे मोह लिया था और वह प्रतिपल उसी के बारे में सोचता रहता था, परन्तु दुर्भाग्य से अभी तक लड़की से बात करने की उसकी हिम्मत नहीं हुई थी. उसका पहला कारण तो यह था कि वह लड़की अपने कमरे से बहुत कम बाहर निकलती थी और केवल काम पर जाते हुए ही उसे दिखती थी. शाम को उसके आने के पहले ही वह अपने कमरे में आ जाती थी. बाद में शायद ही वह कभी उसे दिखती हो, हालांकि उसका बाथरूम उसके कमरे के बगल में था, परन्तु पता नहीं वह बाथरूम कब जाती थी और कब नहा-धोकर बाहर निकलती थी. संभवतः सुबह के पहले पहर में ही वह यह सब कर लेती थी. वह भी प्रतिक्षण उसे ताकता हुआ बैठा नहीं रह सकता था.

दूसरा महीना आ गया था और धीरे-धीरे उसमें कुछ साहस का संचार होने लगा था. इस प्रकार घुटते रहने से काम नहीं चल सकता था. उसे कुछ न कुछ करना होगा, वरना एक लड़की की चाहत में वह मिट जायेगा जैसे चांद को पता नहीं चलता कि उसकी चाहत में कितने दीवाने परवान चढ़ते रहते हैं. उसके चाहने वाले भी तो हजारों होते हैं.

जिस मकान में वह किराये पर रहता था, उसकी पहली मंज़िल पर उन दोनों का कमरा था. उसी मंज़िल पर दो किरायेदार और भी थे, परन्तु वह परिवार वाले थे और उनके अपने मसले थे. वह इन दो अकेले व्यक्तियों के बीच में शायद ही कभी पड़ते हों. कभी आमने-सामने पड़ गये तो दुआ-सलाम या बातचीत हो गयी. वह चूंकि कई महीनों से इस कमरे में रहता था, अतः अन्य किरायेदारों से परिचित था, परन्तु वह लड़की अभी नई थी और उसका परिचय शायद ही किसी से हुआ हो. उसके अनुमान के अनुसार वह अन्तर्मुखी थी.

मन को दृढ़ करके और हृदय में साहस का संचार करके उसने एक रविवार को उस लड़की के कमरे का दरवाजा खड़का दिया. कुछ पल बीत गये. वह सांस रोककर इंतजार करता रहा. एक मिनट बाद दरवाजा आधे से भी कम खुला और

अन्दर से उस परी जैसे चेहरेवाली ने बाहर झांककर देखा. उसको लगा, चांद बदली से अचानक निकल आया है. उसके हृदय में एक झंकार सी हुई और वह जोरों से धड़क उठा. पहली बार वह उस लड़की को इतने नजदीक से देख रहा था. वह हकबका गया.

लड़की ने गंभीर स्वर में कहा, “हां, कहिए?”

“जी...जी...मैं सामने वाले कमरे में रहता हूं.” इसके बाद वह चुप हो गया.

“हां, तो कहिए?” लड़की ने दरवाजा थोड़ा-सा और खोल दिया. अब वह उसके पूरे बदन को देख सकता था. वह नाइट ड्रेस में थी, बाल कुछ बिखरे थे, चेहरे पर मेकअप नहीं था, परन्तु वह तब भी बहुत सुन्दर लग रही थी.

“जी, मैं अकेला रहता हूं. आज रविवार है, मेरा अखबार नहीं आया. सोचा, आपसे मांगकर पढ़ लूं. आपका अखबार तो आया होगा?”

लड़की मुस्कराई, बहुत प्यारी मुस्कान थी उसकी. कोई भी घायल हो सकता था उसकी इस प्यारी मुस्कान से. वह भी घायल हो गया. मुस्कराते हुए ही वह बोली, “अच्छा, तो आपको अखबार चाहिए? क्या सचमुच, वैसे यह बहुत पुराना बहाना है लड़कियों से परिचय करने का. कोई बात नहीं, मैं बुरा नहीं मानूंगी. आप पड़ोसी हैं, जान-पहचान तो होनी ही चाहिए.”

उसे लगा, लड़की बहुत निर्भीक, चंचल और स्वछंद स्वभाव की है. जैसा उसने सोचा था, बिल्कुल उसके विपरीत. लेकिन लड़की की खुली बातों से उसके मन का संकोच कुछ कम हो गया था, अतएव बोला, “आप बहुत अन्तर्मुखी लगती हैं, किसी से बात नहीं करतीं, इसलिए कभी हिम्मत नहीं हुई कि आपसे जान-पहचान बढ़ाई जाये.”

“मैं अन्तर्मुखी नहीं हूं, बहुत खुले दिमाग की हूं, परन्तु मैं अपनी तरफ से किसी से परिचय नहीं करती. अपनी तरफ से यदि मैं पुरुषों से परिचय करती तो लोग यही कहते कि मेरा चरित्र अच्छा नहीं है. पुरुष का स्वभाव ही ऐसा होता है कि यदि वह किसी लड़की को किसी अन्य पुरुष के साथ हंसते-बोलते देख लेता है तो उसे तुरन्त ही चरित्रहीन घोषित कर देता है. लेकिन जब वह स्वयं किसी लड़की से बात करता है, और वह उसके साथ हंसती-बोलती ही नहीं, घूमती-फिरती भी है, तो वह उसे चरित्रहीन नहीं लगती. पुरुषों के इन्हीं विरोधाभासी स्वभावों के कारण मैं अपने काम से काम रखती हूं और व्यस्त रहती हूं.”

अभी तक दोनों खड़े थे. लड़की अब सीधी खड़ी हो गई थी, परन्तु दरवाजे से टिककर उससे बातें कर रही थी. वह उसके सामने खड़ा था और उसकी निगाहें

सीधे लड़की के चेहरे और उस पर आते-जाते हावभाव को परख रहे थे. न लड़की ने उसे अंदर आने के लिए कहा था, न उसने ऐसी कोई कोशिश की थी.

लड़के ने पूछा, “परन्तु आप हमेशा कमरे में बंद रहती हैं. आपका मन नहीं ऊबता? क्या करती रहती हैं आप सारा दिन कमरे में?”

“लगता है, आप मेरे बारे में जासूसी करते रहते हैं.” वह थोड़ा खुलकर हंसी, तो उसकी सुंदर सफेद दंतपंक्ति नजर आ गई. बहुत सुन्दर और सुडौल मोती जैसे दांत थे उसके. उसके होंठ भी बहुत मदमस्त और रसभरे थे. बिना लिपिस्टिक के भी उनका स्वाभाविक गुलाबी रंग दिल को मोहने के लिए पर्याप्त था.

उसने आगे कहा, “मुझे पढ़ने का शौक है. दिन भर पढ़ती रहती हूं.”

“अच्छा, क्या पढ़ती हैं आप?” उसने बात बढ़ाने के उद्देश्य से कहा.

“कविता, कहानी, उपन्यास और बहुत कुछ...जो भी मन को अच्छा लगे, सब पढ़ती हूं. आप नहीं पढ़ते क्या?” उसने आंखें सिकोड़कर पूछा. इस बीच उसके कंधे उचकते रहे, जैसे वह अपने किसी घनिष्ठ मित्र से बातें कर रही थीं, परन्तु लड़के के मन में अभी भी ढेर सारा संकोच भरा हुआ था. वह लड़की के स्वाभाविक स्वछंद स्वभाव से प्रभावित भी था और डर भी लग रहा था कि उसकी किसी बात से लड़की के मन को चोट न पहुंचे. अतः वह बहुत सावधानी से नाप-तौलकर बोल रहा था।

“पढ़ता हूं, परन्तु मेरा पढ़ना अब अखबार और एकाध पत्रिका तक ही सीमित रह गया है. बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़ने के लिए समय नहीं मिलता.”

“यह मैं नहीं मानती कि किताबें पढ़ने के लिए किसी के पास समय नहीं होता. यह आदत की बात है. जिसकी पढ़ने की आदत होती है, वह समय की कमी की कभी शिकायत नहीं करता. आदमी चलते-फिरते, उठते-बैठते कभी भी पढ़ सकता है. इसके लिए कोई बंधा समय नहीं होता.” लड़की थोड़ी उत्तेजित हो गयी थी. लड़के ने आश्चर्य से उसे देखा और फिर सिर नीचा करके कहा, “कोशिश करूंगा कि आपकी तरह पढ़ने की आदत डाल सकूं.”

लड़के ने सोचा, बात गंभीर मुद्दे की तरफ बढ़ रही थी. यह वह नहीं चाहता था. वह तो लड़की से परिचय प्राप्त करने आया था और इस बहाने वह चाहता था कि उससे बात आगे बढ़े. उसे लगता था कि वह लड़की को प्यार करने लगा था. अपने प्यार को लड़की के हृदय के मर्मस्थल तक पहुंचाने के लिए उसका लड़की से बात करना परम आवश्यक था. बात तो हो गई थी, परन्तु उसे जिस दिशा में वह

ले जाना चाहता था, उस तरफ नहीं मुड़ रही थी. वह बेमन हो गया. बोला, “अगर आप बुरा न मानें तो क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ.”

“अरे हां, देखो न, हम लोग इतनी देर से बातें कर रहे हैं, हमने एक दूसरे का नाम तक नहीं पूछा. मेरा नाम शिल्पी है और आपका?”

“मनोज!” उसने बताया.

उसके बाद उन दोनों में ढेर सारी बातें हुईं. लड़की चूँकि खुले विचारों की थी, उसे मनोज के साथ खुलकर बात करने में कोई कठिनाई नहीं हुई. शाम तक उनके बीच कई बार बातें हुईं. एक दूसरे के कमरे में भी आये-गये, साथ-साथ चाय पी, बिस्कुट खाये और दोपहर का खाना मनोज और शिल्पी दोनों ने साथ मिलकर बनाया और खाया. तभी मनोज को पता चला कि शिल्पी एक बहुत अच्छी कुक भी है. उसका सामाजिक और साहित्यिक ज्ञान भी अथाह था. वह एक कम्पनी में अस्सिस्टेंट मैनेजर के तौर पर काम कर रही थी. कानपुर की रहने वाली थी. अकेले रहने में उसे कोई परेशानी नहीं थी. पहले भी जब उसने एम.बी.ए. किया था तो अकेले ही रहती थी. कम्पनी की तरफ से उसे अभी तक क्वार्टर नहीं मिला था, इसलिए किराये के कमरे में रहती थी.

कमोवेश मनोज की भी यही स्थिति थी. वह भी केन्द्रीय सरकार के एक ऑफिस में कार्यरत था. रहनेवाला बरेली का था. मां-बाप वही रहते थे.

वह पूरा दिन शिल्पी के साथ बिताने के बाद मनोज को लगने लगा था कि शिल्पी बहुत ही सरल और सहज स्वभाव की है. उसके साथ सामंजस्य बिठाने में उसे कोई दिक्कत नहीं आयेगी और अगर सब कुछ ठीक-ठीक रहा तो एक-न-एक दिन वह अपनी भावनाएं शिल्पी तक पहुंचाने में कामयाब हो जायेगा.

समय पंख लगाकर उड़ रहा था तो मनोज उन पंखों पर बैठकर आसमान की ऊंचाइयों को छूते हुए सपनों के स्वर्गलोक में विचरण कर रहा था. वह शिल्पी के रूप सौंदर्य में खो गया था और वह उसे दुनिया की सबसे सुन्दर लड़की लगने लगी थी, परन्तु शिल्पी के मन में क्या था, उसे पता नहीं था. स्वभाव से वह चंचल थी, हंसमुख थी, अतः कोई भी लड़का उसके सम्पर्क में आते ही खुशफहमी में पड़ सकता था कि वह उसे प्यार करती थी. परन्तु कई बार परिस्थितियां इसके विपरीत होती हैं. मनोज दुविधा के चक्रव्यूह में फंसा हुआ था.

प्रत्येक रविवार को वह दोनों खाना साथ मिलकर बनाते और खाते. कभी मनोज अपने कमरे में कुछ बनाता तो शिल्पी को दे आता, कभी वह कुछ बनाती तो मनोज को बुलाकर खिलाती. कई बार तो वह एक दूसरे के कमरे में खाना

मिल-जुलकर बनाते. इस तरह उनके बीच एक अनाम रिश्ता पनपने लगा था. मनोज के मन में इस रिश्ते को एक मुकम्मल नाम देने की इच्छा थी, परन्तु कुछ संकोच और कुछ शिल्पी के चंचल स्वभाव के कारण वह उससे खुलकर कुछ कह नहीं पाता था. कश्मकश के कारण सोचते-सोचते कभी-कभी उसके दिमाग की नसें तन जातीं और उसका मुख लाल हो जाता था.

घर के माहौल में वह शिल्पी से कुछ कह नहीं पाता था, इसीलिए एक दिन उसने शिल्पी के सामने बाहर घूमने का प्रस्ताव रखा। उसने चौककर मनोज को देखा और कहा, “कहां घूमने चलेंगे?”

“कहीं भी, किसी पार्क, सिनेमा या माल में, जहां तुम उचित समझो?” उसके मन में संकोच की नदी बह रही थी, फिर भी उसने धारा को मोड़ने का प्रयास किया.

“क्या यह उचित होगा?” शिल्पी ने कुछ सोचते हुए कहा.

“क्यों?” मनोज के मन में भय व्याप्त हो गया.

“देखो, बुरा मत मानना. हम दोनों के बीच में ऐसा कोई रिश्ता नहीं है कि हम साथ-साथ घूमें फिरें. हम इस मकान में किरायेदार हैं. इसी नाते मेरी तुमसे जान-पहचान बनी है. इसी जान-पहचान के कारण हम साथ-साथ उठने-बैठने लगे हैं, और खाना-पीना साथ हो जाता है, परन्तु इसे इतना प्रगाढ़ नहीं कह सकते कि...” उसे लगा कि वह मनोज को कष्ट पहुंचा रही है. मनोज के चेहरे के भाव बदल रहे थे और उसे ऐसा लग रहा था कि कोई अन्दर से उसके हृदय को मरोड़ रहा था.

मनोज का हृदय टूटकर चकनाचूर हो गया. शिल्पी की मंशा का उसे ज्ञान नहीं था, परन्तु उसने जिस तरीके से उसके साथ घूमने से मना किया था, वह बहुत कठोर था. उसने शिल्पी को बाहर घूमने के लिए ही कहा था, कोई उसके साथ बलात्कार का प्रयत्न नहीं किया था, परन्तु शिल्पी के मन में क्या था, यह वह कैसे समझ सकता था? उसने जो कारण बताया था, एकमात्र वही कारण नहीं हो सकता था. इसके अलावा कोई और कारण होगा, जिससे शिल्पी ने उसके साथ बाहर जाने से मना किया होगा.

और यह कारण बहुत जल्दी ही मनोज को पता चल गया था. इसके अगले हफ्ते ही शिल्पी सुबह-सुबह तैयार होकर बाहर जाने लगी तो मनोज के हृदय में विजली गिर गयी. वह इतनी सुन्दर लग रही थी, जितनी पहले कभी नहीं लगी थी. ऐसा लग रहा था जैसे वह पहली बार किसी के साथ डेटिंग पर जा रही थी. उसका

चेहरा ही नहीं, हर अंग खिला-खिला था, जैसे वसंत के मौसम में फूलों की छटा खिलती है।

अपने हृदय की विकलता को वश में करते हुए उसने पूछा, “कहीं जा रही हो?”

“हां,” उसने अपनी आंखों को नचाते हुए कहा। मनोज के मन में ईर्ष्या के बादल मंडराने लगे। उसने दबी आवाज में पूछा, “कहां?”

“बस यूँ ही, कहीं घूमेंगे-फिरेंगे, फिर शाम का खाना खाकर लौटेंगे। सॉरी, आज तुम्हें अकेले ही खाना बनाकर खाना पड़ेगा।” उसने अपने कंधे पर बैग को टिकाते हुए कहा। उसकी बातों से लग रहा था, वह किसी के साथ घूमने जा रही थी, परन्तु किसके साथ, यह स्पष्ट नहीं था। मनोज ने पूछा, “किसी के साथ जा रही हो, या अकेले?” उसका पूछने का अधिकार नहीं था, परन्तु पूछ लिया।

“हां, एक दोस्त के साथ! अच्छा ओ.के. बाय, शाम को मिलूंगी।”

वह मनोज के हृदय के ऊपर एक भारी पत्थर रखकर उसके ऊपर से चलती हुई निकल गयी। तो शिल्पी का कोई दोस्त भी है? कौन होगा, उसके ऑफिस का कोई सहकर्मी या और कोई? वह अनुमान लगाने लगा। पहले तो नहीं था, वरना वह हर रविवार घूमने जाती उसके साथ। अभी-अभी बना होगा, तभी तो गई है। उसने एक आह भरी और कमरे में आकर बिस्तर पर लेटकर सोचने लगा। अपने और शिल्पी के बारे में... वह शिल्पी का दोस्त नहीं है। तभी तो शिल्पी ने उसके साथ बाहर जाने से मना कर दिया था। जान-पहचान को दोस्ती का नाम नहीं दिया जा सकता है, यह आज उसकी समझ में आया था।

अब वह शिल्पी का दोस्त कभी नहीं बन सकता था। दोस्त नहीं था, इसलिए प्रेमी बनने का प्रश्न ही नहीं उठता था। उसके सपनों के रंगीन फूल खिलने से पहले ही मुरझा गये।

इसके बावजूद वह शिल्पी का इंतजार करता, रोज शाम को। अब शिल्पी देर रात को लौटकर आती थी। कई बार तो मनोज एकाध झपकी मार लेता था, तब उसके आने की आहट सीढ़ियों पर सुनाई देती थी। वह अपने कमरे की खिड़की से उसे थिरकते हुए अपने कमरे की तरफ जाता हुआ देखता था। अपने कमरे का ताला खोलते हुए वह एक बार मनोज के कमरे की तरफ अवश्य देखती थी। संभवतः वह जानती थी कि मनोज अपने कमरे की बत्ती बंद करके खिड़की से उसे देख रहा होगा। फिर वह लापरवाही से अपने कमरे का ताला खोलकर अन्दर चली जाती और फिर मनोज के चारों तरफ अंधकार छा जाता।

उन दोनों के बीच बातों का सिलसिला लगभग खत्म हो चुका था। शिल्पी अब अपने कमरे में खाना नहीं बनाती थी। उसके कमरे पर भी नहीं आती थी। उसके पास समय ही नहीं था। प्रत्येक रविवार वह सारा दिन बाहर ही रहती थी। सप्ताह के बाकी दिनों में भी वह देर रात लौटकर आती थी। सुबह भी वह देर से उठती थी और तैयार होकर एकदम से भाग जाती थी। मनोज ने चाहा कि सुबह की चाय तो वह दोनों साथ-साथ पिया करें, परन्तु शिल्पी देर से सोकर उठने लगी थी और उसकी हिम्मत नहीं हुई कि वह जाकर शिल्पी से इसके बारे में कुछ कह सके। बात वही की वही रह गयी।

लगभग एक साल बीत गया। शिल्पी की बेरुखी से कई बार मनोज ने सोचा कि वह इस कमरे को छोड़कर कोई दूसरा कमरा ले ले, परन्तु फिर उसका मन ही उसे रोकता रहा। भले ही शिल्पी ने उसके प्यार, प्यार नहीं दोस्ती को टुकरा दिया था, परन्तु वह उसकी निगाहों के सामने थी। वह उसे देख सकता था। उन दोनों के बीच रिश्ता केवल हाथ-हैलो तक रह गया था। शिल्पी केवल उसे सुबह-सुबह ही दिखती थी, परन्तु तब वह इतनी जल्दी में होती थी कि उनके बीच कोई बात नहीं हो पाती थी। उससे बात करने में शायद शिल्पी को कोई रुचि भी नहीं थी। उसे थी, परन्तु उसके हाथ में वक्त के पंख नहीं थे कि वह उन्हें थाम लेता और शिल्पी को किसी दूसरी दिशा में उड़ने न देता।

वह भी एक रविवार था। बाहर मौसम खुशगवार था, परन्तु मनोज के कमरे में मौसम के फूल मुरझाये पड़े थे। वह स्वयं एक बिस्तर पर अलसाया सा लेटा था और विचारों में खोया हुआ था कि तभी उसके दरवाजे पर हल्की खटखट की आवाज सुनाई पड़ी। वह चौंककर उठ बैठा और कान लगाकर सुनने लगा, तभी दूसरी दस्तक हुई। उसने बिस्तर पर बैठे-बैठे ही पूछा, “कौन?”

“मैं हूँ, शिल्पी! क्या कर रहे हो? दरवाजा खोलो।” शिल्पी की मधुर आवाज ने उसके कानों में मिश्री घोल दी। वह हड़बड़ा कर उठा और फटाक से दरवाजा खोल दिया। बाहर शिल्पी अपने नैसर्गिक सौन्दर्य की आभा विखेरती हुई खड़ी थी। वह चकराकर रह गया।

“तुम!” उसके मुंह से निकला।

“हां मैं, क्या कर रहे हो कमरे में पड़े-पड़े? और तुम्हारे चेहरे में मुर्दनी क्यों छाई हुई? क्या हुआ, बीमार हो क्या? बताया क्यों नहीं?” शिल्पी सवाल पर सवाल दागे जा रही थी। मनोज ने निरीह भाव से उसे देखा। उसकी आंखों में करुणा का

सागर भरा हुआ था. उसकी दृष्टि जैसे शिल्पी से पूछ रही थी, 'यह सब तुम पूछ रही हो? यह सब कुछ तुम्हारे कारण ही तो हुआ है और तुम्हें पता ही नहीं. सामने वाले कमरे में रहते हुए भी तुमने कभी यह जानने का प्रयत्न नहीं किया कि तुम्हारे सामने वाले कमरे में एक व्यक्ति रहता है जो तुम्हें अच्छी तरह-जानता पहचानता है और जिसके साथ तुमने कुछ दिन हंस-बोलकर गुजारे हैं. क्या तुमने कभी यह जानने की कोशिश की कि वह किस दशा में रह रहा है? तुम तो अपने सुख-सपनों में खोई हुई थी, किसी और व्यक्ति के साथ जिसे संभवतः तुम प्यार करती हो. प्यार तो मैं भी तुम्हें करता था, परन्तु मेरा प्यार तुम तक पहुंचने के पहले ही किसी और का प्यार तुम्हारे हृदय में समा गया. मेरे प्यार के लिए तुम्हारे हृदय में जगह ही नहीं बची थी.'

मनोज यह सब सोच रहा था और उसे आश्चर्य भी हो रहा था कि आज शिल्पी बाहर क्यों नहीं गयी थी? जब से वह बाहर जाने लगी थी, आज पहली बार इसमें व्यवधान आया था. उसने पूछा, "तुम और यहां? बाहर नहीं गयी?" उसके स्वर में थोड़ी तलखी समा गयी थी.

"अरे, यार क्या बतायें?" शिल्पी ने बेतकल्लुफी से कहा और उसके कमरे में घुसते हुए कहा, "चलो, पहले चाय पिलाओ, फिर बात करते हैं." वह उसके बिस्तर पर लेट गयी जैसे बहुत आलस आ रहा हो. वह शिल्पी के व्यवहार से बहुत आश्चर्यचकित हो रहा है, परन्तु उसने चुपचाप चाय बनाई और उसके सामने रख दी. एक प्याला लेकर उसके सामने कुर्सी पर बैठ गया. शिल्पी बिस्तर पर ही उठकर बैठ गयी.

चाय पीते हुए उसने पूछा, "और बताओ, तुम्हारा कैसा चल रहा है? ऑफिस के काम में व्यस्त रहते हो या कुछ और..." वह हौले-से मुस्कराई, जैसे पूछ रही हो कि किसी लड़की को फंसाया या नहीं अब तक. वह उसका भाव समझ गया. परन्तु उसने बात को घुमाते हुए कहा-

"आज घर में कैसे? और मेरी याद कैसे आ गई?"

"मनोज, मैं तुमसे एक बात बताना चाहती हूं. मैं बहुत खुश हूं और चाहती हूं कि मेरी खुशी में तुम भी शामिल हो सको. मैं शादी कर रही हूं."

मनोज को लगा कहीं धमाका हुआ था. उसने चकराकर शिल्पी के चेहरे को निहारा. वह मुस्करा रही थी, परन्तु उस समय उसकी मुस्कान मनोज को किसी नागिन की मुस्कान लग रही थी, जो मुस्कराकर उसे डस रही थी और उसके दिल को कुतर-कुतरकर खा रही थी. ऐसा पहले कभी उसके साथ नहीं हुआ था. शिल्पी

के किसी भी कृत्य पर क्यों उसे तकलीफ होती है और क्यों बार-बार बिना किसी प्यार के उसका दिल चकनाचूर होता है. वह अच्छी तरह जानता है कि शिल्पी उसे प्यार नहीं करती थी, फिर क्यों वह शिल्पी को लेकर मायूसियों से भरा रहता है हर वक्त. क्या हासिल हो रहा है उसे इस सबसे? बेवकूफ कहीं का!

"किससे?" उसने मरे दिल से पूछा. हालांकि उसे पूछना चाहिए था, 'अच्छा, ये तो बहुत खुशी की बात है. कौन है वह खुशकिस्मत जिसकी जिन्दगी को रोशन करने जा रही हो तुम?' परन्तु कह नहीं सका. कह भी नहीं सकता था, क्योंकि उसका दिल जल रहा था. और जब आसपास कुछ जल रहा हो तो सिवाय आंच के कुछ और महसूस नहीं होता.

"तुम उसे नहीं जानते!" शिल्पी ने अपनी आंखें बन्द करते हुए कहा. वह अपनी बंद आंखों से जैसे अपने प्रियतम को साक्षात् देख रही थी. उसके आसपास की सभी वस्तुएं अदृश्य हो गयी थीं. अगर शिल्पी की निगाहों में कोई था तो उसका प्रियतम और कोई नहीं. उसकी आवाज़ में एक सुखद अहसास था और उस अहसास में डूबकर बोली वह, "बहुत सुन्दर है वह, बहुत ही अच्छा! मुझे बहुत प्यार करता है, बहुत. इतना कि मैं बता नहीं सकती कितना. मेरी बांहें छोटी पड़ जाती हैं उसके प्यार को समेटने में." और उसने अपनी बांहें हवा में इस तरह फैलायीं जैसे उसका प्यार सचमुच उसके सामने खड़ा हो और वह उसे समेट लेना चाहती थी.

परन्तु उसके सामने मनोज था और शिल्पी के प्रत्येक शब्द के साथ उसके हृदय में उतने ही घाव बनते जा रहे थे. उसके हृदय के घावों से खून रिस रहा था, परन्तु वह उस खून को रिसने से रोक नहीं सकता था. उसके वश में कुछ भी नहीं था. वह एक ऐसा प्राणी था, जिसके जीवन में केवल घायल होना ही बढ़ा था.

वह अपने हृदय के अन्दर और ज्यादा खून भर लेना चाहता था. पूछा, "कब कर रही हो शादी?"

"बहुत जल्दी!" वह हवा में तैरती-सी बोली, "आज वह अपने घर गया है, मम्मी-पापा से बात करने. दो दिन बाद लौटकर आएगा, फिर हम उसके घरवालों की सहमति से विवाह कर लेंगे. शायद इसी नवम्बर में...हम ज्यादा देर भी नहीं कर सकते?"

"क्यों?" अवनीश ने ऐसे पूछा, जैसे उसकी शादी में देरी होने से उसको फायदा मिलने वाला था.

"मैं तुम्हें बता नहीं सकती, परन्तु तुम समझ सकते हो?" उसने आंखें खोलकर कहा. वह समझ गया, शिल्पी को बताने की कोई आवश्यकता नहीं थी. वह गर्भवती

थी. मनोज कोई बच्चा नहीं था. आधुनिकता के नशे में आजकल के युवक-युवतियां किस हद तक जा सकते हैं, यह वह बहुत अच्छी तरह जानता था. ऐसे बहुत सारे लोगों के बारे में भी जानता था. वह स्वयं अभी तक इस चक्कर में नहीं पड़ा था, परन्तु जीवन के बारे में बहुत कुछ जानता था. शिल्पी के बारे में यह जानकर उसे और दुःख हुआ. वह शिल्पी को उस घायल चिड़िया की तरह देख रहा था, जो अपने जीवन में मस्त थी कि अचानक ही कहीं से एक तीर आकर उसके सीने में बिंध गया था. वह चिड़िया अपना दर्द केवल आंखों से प्रकट कर सकती थी और वैसा ही दर्द मनोज की आंखों में समाया हुआ था, परन्तु शिल्पी की आंखों में ऐसे रंग भरे हुए थे, जहां दर्द के रंग की पहचान संभव नहीं थी.

शिल्पी अपने रंगों में नहाती रही और मनोज अपने दर्द से मुब्बिला होता रहा. उसके रंग चटक हो रहे थे तो उसका भी दर्द बढ़ता जा रहा था.

एक सप्ताह बीत गया. शिल्पी फिर अगले रविवार को उसके पास आई. आज उसके सौन्दर्य को ग्रहण सा लगा था. एक हफ्ते में ही वह धूप में बिना पानी के सूखे फूल जैसी हो गयी थी. पता नहीं उसे क्या हो गया था. मनोज को शिल्पी जिस किसी रूप में मिलती थी, उसके आश्चर्य को बढ़ाती ही रहती थी.

एक सप्ताह में ही उसकी खुशी दुःख में बदल गयी थी. आज फिर वह मनोज के विस्तर पर लेटी थी, परन्तु आज उसकी आंखों में सपने नहीं थे, आज वह दुःख, कष्ट और पीड़ा से कराह रही थी. मनोज ने कुछ नहीं पूछा, परन्तु वह स्वयं ही बताने लगी-

“वह नहीं आया?” उसका स्वर डूबता सा लग रहा था. पिछले हफ्ते जो दर्द मनोज के हृदय में उमड़ रहा था, कुछ वैसा ही दर्द आज शिल्पी के स्वर से झलक रहा था. उसे खुशी नहीं हुई, जबकि उसको दर्द देनेवाली शिल्पी ही थी. आज शिल्पी के हृदय में पीड़ा का संचार हो रहा था, तो उसे खुशी होनी चाहिए थी, परन्तु नहीं हुई; क्योंकि वह शिल्पी को प्यार करता था. अभी भी करता था, क्योंकि वह उसका पहला प्यार थी.

“कौन नहीं आया?” समझते हुए भी उसने पूछा.

“वहीं, सोमेश!” शिल्पी ने ऐसे कहा, जैसे मनोज सोमेश के बारे में जानता था. वह जानता था, परन्तु प्रत्यक्ष नहीं। सोमेश वहीं व्यक्ति होगा, जिससे शिल्पी प्यार करती थी.

“कौन सोमेश?” उसने बात को आगे बढ़ाते हुए पूछा. उसमें मन में उत्सुकता थी और वह जानना चाहता था कि शिल्पी के साथ क्या हुआ था.

वह उठकर पलंग पर बैठ गयी और उसने अनायास मनोज की दोनों हथेलियों को अपने हाथों में थाम लिया, जैसे उसे किसी सहारे की आवश्यकता हो. शिल्पी ने मनोज के प्रश्न को नजरअंदाज करते हुए कहा.

“मुझे डर लग रहा है, मनोज? पता नहीं क्यों, ऐसा लग रहा है जैसे वह लौटकर नहीं आएगा!”

“ऐसा क्यों लग रहा है तुम्हें?” उसने शिल्पी के कोमल हाथों से अपनी हथेलियों को छुड़ाने का कोई प्रयास नहीं किया. वह उसके कोमल अहसास को महसूस करता रहा, साथ ही शिल्पी के दर्द को भी वह अपने हृदय में समेट लेना चाहता था.

“उसने कहा था कि दो दिन बाद लौटकर आएगा, परन्तु नहीं आया. कोई सूचना भी नहीं दी और अपना फोन बंद कर दिया. ऑफिस में भी कोई सूचना नहीं है.” वह निराश स्वर में बोली.

“उसके ऑफिस जाकर पता किया?”

“वह मेरे ऑफिस में ही काम करता है. उसके कमरे पर भी गई, परन्तु कमरे में ताला पड़ा है और मकान मालिक को पता नहीं कि कब लौटकर आयेगा. उसको बताकर भी नहीं गया था. मैं क्या करूं?”

अवनीश के मन में आया, कह दे, ‘ईतजार करो,’ परन्तु नहीं कहा. इससे शिल्पी के दिल को और अधिक चोट लगती. उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि किस प्रकार शिल्पी के हृदय को सांत्वना दे. वह खुद चोट खाया हुआ था. दूसरों के दर्द को महसूस कर सकता था, परन्तु उसे दूर नहीं कर सकता था.

“उसके घर का पता है?” कुछ सोचकर उसने कहा.

“हां, उस पते के नम्बर पर फोन किया तो पता चला कि नम्बर ही गलत है. हो सकता है, पता भी गलत हो? आदमी गलत हो तो सब कुछ गलत हो सकता है.”

मनोज को शिल्पी की बात पर आश्चर्य हुआ, क्या वह सोमेश को गलत समझ रही थी? शिल्पी का विश्वास धीरे-धीरे टूटता जा रहा था.

उस सारे दिन दोनों दुःखी रहे. इसके बाद हर रोज दोनों सुबह-शाम आपस में मिलकर एक दूसरे के दर्द को बांटने का प्रयास करते. वह अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से शिल्पी को सांत्वना के घूंट पिलाता. वह कुछ देर के लिए खुश हो जाती, परन्तु थोड़ी देर बाद उसके सिर पर दुःख के बादल मंडराने लगते. वह कहती, “उसने मुझसे छल किया. मेरे शरीर को भोगने के लिए प्यार का नाटक किया. मैं उसके जाल में फंस गयी. सुन्दर और मन को मोहने वाले पुरुष भी छल कर सकते



हैं, आज मुझे पता चला. अच्छी और मीठी बातें करनेवाले सदा अच्छे ही नहीं होते. किस पर विश्वास करें, किस पर नहीं. लड़कियों को लूटने के लिए लड़के जाने कैसे-कैसे छल करते हैं.” शिल्पी के मन के भाव बाहर आ रहे थे. मनोज ने सोचा-काश वह उस पर विश्वास करती. उसे पता चल जाता कि सारे लड़के छल नहीं करते.

मनोज उसके चेहरे में उभरते पीड़ा के भाव देखता रहा.

“अब मैं अपने घरवालों को क्या मुख दिखाऊंगी? मैंने उन्हें सोमेश के बारे में बता रखा था. अब जब उन्हें पता चलेगा कि वह मेरे पेट में अपना अंश देकर चला गया तो उनके दिल पर क्या गुजरेगी? किस प्रकार वह परिस्थितियों से समझौता करेंगे? मेरी ही समझ में नहीं आ रहा है कि इस मुसीबत से कैसे छुटकारा पाऊँ?”

आखिर मनोज ने कहा, “तुम इतना हताश क्यों हो रही हो? क्या पता वह आ जाये? तुम धीरज रखो और प्रतीक्षा करो. हो सकता है, वह किसी मुसीबत में हो और एक दिन अचानक आ जाये.”

“काश, वह अचानक आ जाता, परन्तु मैं जानती हूँ, मेरा हृदय जानता है कि वह कभी नहीं आयेगा. मेरे शरीर को भोगने के लिए जिस प्रकार वह बेचैन रहता था और तरह-तरह की बातें बनाता था, उनको याद करके अब मैं समझ सकती हूँ कि वह सब उसका नाटक था. उसको मुझसे कभी प्यार नहीं था. वह एक छलावा था और मेरे साथ छल करके गायब हो गया.”

‘मैंने तो तुमसे प्यार किया है, मेरे ऊपर विश्वास कर सकती हो. मैं कोई छलावा नहीं हूँ और कभी तुम्हारे साथ छल नहीं करूँगा.’ उसने मन ही मन सोचा और उसकी आंखों में इस तरह देखा जैसे उसके मन की बात शिल्पी की आंखों के रास्ते उसके मन में उतर रही थी.

मनोज के मन की बात शिल्पी के मन तक पहुंची या नहीं पहुंची, परन्तु उसने मनोज की आंखों में झांके हुए कहा, “मनोज, मैं तुम्हें इस शहर में सबसे करीबी मानती हूँ. मुझे खेद है कि मैंने तुम्हें कभी दोस्त नहीं माना, परन्तु आज मैं एक दोस्त के नाते तुमसे पूछ रही हूँ-मैं इस बच्चे का क्या करूँ?” उसने अपने पेट की तरफ इशारा करते हुए कहा. उसका पेट बहुत तो नहीं बढ़ा था, परन्तु देखकर ऐसा लगता था कि किसी सुखी-सम्पन्न और खाती-पीती लड़की का शरीर है.

मनोज उसको गर्भपात कराने की सलाह दे सकता था, परन्तु उसने नहीं दी. उसके मन में कुछ और ही चल रहा था. उसने अपने मन के भावों को भी शिल्पी

पर ज़ाहिर नहीं किया. शिल्पी ने ही आगे बताया, “मेरे पेट में उसका अंश है, उस दुष्ट के अंश को मैं जन्म नहीं देना चाहती. हालांकि उसमें मेरा भी अंश मिला हुआ है, परन्तु इसे जन्म देकर मैं जीवन भर अपने मन में कोई हीनभावना नहीं पालना चाहती.”

मनोज ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, “तुम हताश न हो, थोड़ा धैर्य रखो. मैं तुम्हारे साथ हूँ, लेकिन इस बच्चे को नष्ट करने के बारे में भी मत सोचो. हो सकता है, कोई रास्ता निकल आये.”

शिल्पी ने अपने कंधे पर रखे मनोज के हाथ को नहीं हटाया, बल्कि उसके स्पर्श से एक अनोखी सिहरन अपने बदन में महसूस की. उसकी आंखों में देखकर आंखों ही आंखों में पूछा, ‘अब क्या रास्ता बचा है?’

दिन बीतते रहे, मनोज हर पल शिल्पी के मन की हताशा को अपनी बातों से दूर करने का प्रयास करता रहा और हृदय में यह बात बहुत अच्छी तरह बिठा दी थी कि आगे जो होगा, अच्छा ही होगा. शिल्पी परेशान थी, परन्तु मनोज की बातों से उसके मन में धैर्य का संचार होता था. वह हर रोज अपने मन को उत्साह और उल्लास से भरती कि संभवतः उस दिन कोई अच्छी खबर आयेगी. सोमेश के आने की खबर...परन्तु सप्ताह-दर-सप्ताह बीतते रहे और सोमेश की कोई खबर नहीं आई. शिल्पी का पेट भी बढ़ता जा रहा था. वह चिन्तित रहने लगी थी. पेट बढ़ने के कारण उसने ऑफिस से छुट्टी ले रखी थी. एक दिन उसने अवनीश से अधीर होकर कहा-

“अब और इंतजार नहीं कर सकती मैं. बताओ, क्या है तुम्हारे मन में?”

मनोज ने कहा, “मेरे मन में जो है, वह मैं बाद में बताऊंगा, परन्तु पहले एक बार सोमेश के शहर जाकर पता कर लेते हैं. पता तो चले, आखिर क्या बात है और वह लौटकर क्यों नहीं आया?”

शिल्पी ने अपने सिर को नीचा करके कहा, “कोई फायदा नहीं होगा. ऑफिस की तरफ से पता कर लिया गया है कि उसका दिया हुआ पता भी गलत है.”

“फिर तुमने मुझसे बताया क्यों नहीं था?”

“मैं जानना चाहती थी कि तुम्हारे मन में क्या है, परन्तु तुमने अभी तक बताया नहीं.”

अवनीश ने संकोच करते हुए पूछा, “क्या तुम्हें मेरे ऊपर विश्वास है?”

वह सोचकर बोली, “विश्वास है, तभी तो अपनी व्यक्तिगत बातें भी तुम्हारे साथ बांटती हूँ, परन्तु क्या तुम मुझे प्यार करते हो?”

“यह क्यों पूछा तुमने? ऐसा तो मैंने कभी नहीं कहा?”

“तुम्हारी आंखों ने कहा, परन्तु मेरी आंखों ने उसे सही समय पर नहीं पहचाना. आज जब मैं तुम्हारे प्यार को पहचान रही हूँ तो मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं क्या करूँ. मैंने अपनी समझ को ताक पर रखकर अपने जीवन में ऐसा विष धोल लिया है, जिसको दूर करने के लिए संसार में कोई अमृत नहीं बना है.”

“नहीं, शिल्पी ऐसा मत सोचो, जीवन अगर ज़हर है, तो प्यार उसमें अमृत का काम करता है. इसीलिए मैंने तुमसे पूछा, क्या तुमको मेरे ऊपर विश्वास है. अगर है तो मैं तुम्हारा हाथ थामने के लिए तैयार हूँ. मैं सोमेश की जगह तो नहीं ले सकता, परन्तु इतना वायदा करता हूँ कि तुम्हारे माँ-बाप के सामने तुम्हारी इज़्ज़त सुरक्षित रहेगी और समाज में तुम्हारे ऊपर बदनामी का कोई धब्बा नहीं लगने दूँगा.”

शिल्पी की आंखों में आंसू झलकने लगे. उसने बढ़कर उसके सिर पर हाथ रखा तो वह उसकी तरफ झुकती हुई बोली, “तुम अपने घरवालों को कैसे...?”

मनोज ने उसकी बात काट दी. कहा, “मैंने अपनी मम्मी को बता दिया है कि मैं एक लड़की को प्यार करता हूँ.”

“परन्तु इस बच्चे का क्या होगा?” शिल्पी के मन में दुविधा थी.

“यह बच्चा तुम्हारे पेट में हैं, तो यह हमारा बच्चा है. मैंने इसके बारे में भी माँ को बता दिया है और उन्होंने पिताजी को भी मना लिया है. उनकी तरफ से कोई आपत्ति नहीं है. बस तुम्हारी हाँ का इंतजार है.” उसने दृढ़ स्वर में कहा.

शिल्पी का सिर उसके सीने से टिक गया और उसने महसूस किया कि कुछ गरम-गरम तरल-सा उसके सीने पर गिर रहा है. यह शिल्पी के आंसू थे. इन आंसुओं में ही शिल्पी की ‘हां’ थी.



## सेब

रामचरन का बड़ा लड़का जब सोलह साल की उमर में किसी गंभीर बीमारी से चल बसा, तो उसने यह सोचकर संतोष कर लिया था कि भगवान को यही मंजूर था. बुढ़ापे में दो बेटों का सुख उसके भाग्य में नहीं था. तब वह खुद चालीस के पास था और काठी से मजबूत था. किसानों का काम करते-करते उसका बदन कस गया था, पर बेटे की मौत ने उसे मन से तोड़ दिया था. मन के टूटते ही वह तन से भी जर्जर होने लगा था. बस रामचरन और उसकी बुढ़िया को यही संतोष था कि अभी उनके एक बेटा और था, जो उस वक्त दस साल का था.

बड़े बेटे के इलाज़ में उसने कोई कसर न उठा रखी थी. घर का अनाज बेचकर, गहने गिरवी रखकर, कर्ज़ लेकर यथासंभव गांव जिले के हर छोटे-बड़े डॉक्टर, हकीम, वैद्य, ओझा-गुनिया सबसे इलाज़ करवाया. आस-पास के अस्पतालों में ले जाकर दिखाया, परन्तु किसी की पकड़ में उसका मर्ज़ न आया. निजी अस्पताल या शहर के बड़े अस्पताल में इलाज़ करवाने की उसकी औकात न थी, लिहाजा बेटा एक दिन मर गया और पति-पत्नी हाय करके रह गए. किसानों में जो पैदा होता था, खा-पीकर उससे जो बचता, बेचकर कर्ज़ चुकाते; परन्तु जब कर्ज़ का मर्ज़ बढ़ता गया तो बूढ़े-बुढ़िया दूसरों के खेतों में मज़दूरी करके कुछ अतिरिक्त आमदनी कर लेते.

दिन बीते. दोनों ने कड़ी मेहनत करके कर्ज़ का बोझ उतार दिया और छोटे बेटे के लालन-पालन में लग गए. एक बेटा खोने के बाद दूसरे बेटे के प्रति उनका मोह बढ़ गया था. लाड़-प्यार में वह बड़ा तो हो रहा था, परन्तु बिगड़ भी रहा था. स्कूल उसने बचपन में ही छोड़ दिया था. बस गांव-घर में घूमता रहता था, खेलता था और खा-खाकर मस्त जवान हो रहा था. सारा दिन मटरगश्ती करने में ही

उसको आनंद आता था. मां-बाप कुछ न कहते थे, सोचते, जिम्मेदारी आने पर संभल जायेगा और घर के काम में हाथ बंटायेगा. एक बेटे की मौत का गम झेल चुके थे, दूसरा बेटा किसी प्रकार भी खोने का खतरा नहीं उठाना चाहते थे. अतः वह जैसे चाहता था, रह रहा था. मां-बाप की आंखों का वह तारा था.

संतोष आज बीस साल का कड़ियल जवान हो गया था. भरपूर खानपान और चिंतामुक्त जीवन से अच्छा खासा तंदुरस्त जवान था. अब भी वह घर का कोई काम नहीं करता था, न मां-बाप उसे कुछ करने के लिए कहते थे. जवान बेटे को देखकर उनकी आंखें जुड़ा जाती थीं. वह दुगुने उत्साह से घर-बाहर का काम करते और बेटे को धेले भर की तकलीफ न देते. रामचरन और उसकी पत्नी की कड़ी मेहनत से खेती में भरपूर पैदावार होती थी. खाने भर के लिए अन्न बचाकर बाकी वह बेच लेते थे. पैसे जोड़ना भी ज़रूरी था. बेटा जवान हो चुका था. अब उसकी शादी करने की उमर हो चुकी थी. बेटे की शादी के सपने देख-देखकर रामचरन और उसकी पत्नी परबतिया दिन-रात सुख-सागर में डूबते-उतराते रहते थे.

पहले बेटे की मौत का भयावह सपना उनकी आंखों और मन के पर्दे से गायब हो चुका था. अब उनके सामने जीवन के नए खुशनुमा दृश्य थे, तरह-तरह के रंग थे. उन्हें देखकर अपनी आंखों में टंडक का अहसास करते थे और भगवान को धन्यवाद देते थे कि भगवान ने अगर एक बेटे को छीनकर उनके जीवन में कुछ कष्ट दिए थे तो दूसरे बेटे को निरोग और स्वस्थ बनाकर उन्होंने बाकी कष्ट दूर कर दिए थे. प्रत्येक रात को खाना खा-पीकर सोने के पहले जब रामचरन चारपाई पर बैठकर बीड़ी पीता, तो परबतिया उसकी चारपाई के सिरहाने नीचे ज़मीन पर बैठ जाती और कहती-

“देखो न? अपना संतोष कितना जवान हो गया है.”

“हूँ! सब भगवान की किरपा है.” वह सापेक्ष भाव से कहता.

“अब उसकी शादी कर देनी चाहिए.” बुढ़िया उत्साह से कहती.

“हां, सोचता तो मैं भी हूँ, परन्तु कुछ पैसे और जुड़ जाएं. बहू के लिए गहना-गुरिया बनवाने में कम पैसा थोड़े ही लगेगा.”

“हां, मेरे तो सारे गहने बड़कू के इलाज़ में विक गये थे.” बुढ़िया ने एक आह भरकर कहा. उसके स्वर में खरखराहट भरी आर्द्रता भर गयी.

रामचरन कुछ न बोला. बीती पीड़ा को वह बढ़ाना नहीं चाहता था. समय की मार ने उसे इतना समझदार अवश्य बना दिया था कि बीते हुए कल को भुला

देना ही अच्छा होता है. बीता हुआ कल अगर कष्टमय हो तो उसकी यादों से हम अपने जीवन को सुखमय नहीं बना सकते.

कुछ देर सोचने के बाद बुढ़िया ने कहा, “पैसे जोड़ते-जोड़ते तो वर्षों बीत जाएंगे. न हो तो कुछ कर्ज़ा-पानी लेकर ब्याह कर दिया जाय. मुझसे अब घर-बाहर का काम नहीं होता. बहू आकर अपना घर संभाले, तो हम राम-नाम लेकर बाकी का जीवन सुख से बितायें. सारी उमर खटती रही हूँ, कभी एक पल को चैन नहीं मिला. बहू आएगी तो बेटा भी खेती-किसानी के काम में हाथ बंटाएगा.” परबतिया ने उसांस भरकर कहा.

“तो मैंने कौन से सारी उमर सुख के पेड़े खाए हैं. तेरे साथ ही मैंने भी खून जलाया है. बेटा बड़ा हो गया, तो देखो अब कौन सा सुख देता है?”

“काहे नहीं देगा, पाल-पोसकर बड़ा किया है तो क्या हमारे बुढ़ापे की लाठी नहीं बनेगा.” बुढ़िया बहुत उल्लास से भरी थी.

“यही सोचकर थोड़ा दुःख होता है. इतना बड़ा हो गया है, परन्तु अपने हाथ से गिलास उठाकर पानी नहीं पिया है. एकदम से गृहस्थी और खेती का काम कैसे संभाल सकेगा.”

“सब कर लेगा. जिसके ऊपर पड़ती है तो वह सब कर लेता है. संतोष भी धीरे-धीरे सब संभाल लेगा. पेट की रोटी आदमी को सारे काम सिखा देती है.”

“भगवान करे, ऐसा ही हो.” रामचरन ने इत्मीनान की सांस लेते हुए कहा. इसी प्रकार रोज उन दोनों के बीच बातें होतीं और दोनों भावी जीवन के काल्पनिक सुख के दरिया में डूबकर आनंद लेते रहते.

सदैव वहीं नहीं होता, जो मनुष्य सोचता है या जैसा वह करना चाहता है. रामचरन के जीवन में दूसरे बेटे को पाल-पोस कर बड़ा करने का सुख तो बड़ा था, परन्तु...भाग्य बड़ा बलवान होता है. उसके आगे मनुष्य की रत्ती भर भी सुनवाई नहीं होती.

एक दिन संतोष ने अपनी मां से कहा, “अम्मा! मेरे दाएं पांव में दर्द होता है. कभी-कभी तो बहुत तेज होता है, बर्दाश्त के बाहर हो जाता है.”

“दाएं पांव में कहां?”

संतोष ने हाथ रखकर बताया. दर्द उसके घुटने के नीचे मांसपेशियों में होता था. मां ने कड़वे तेल की मालिश कर दी और कहा, “थोड़ा आराम करो, ठीक हो जाएगा.” उसने आराम किया, परन्तु दर्द कम नहीं हुआ.

रामचरन को पता चला तो उसने निश्चिन्त भाव से कहा, “अरे कुछ नहीं, घूमता-फिरता रहता है, कहीं मोच आ गयी होगी. बाम लगा दो, ठीक हो जाएगा.” बाम भी लगाई गई, परन्तु संतोष के पैर का दर्द कम होने का नाम ही नहीं ले रहा था. भूख की तरह बढ़ता ही जा रहा था. गांव-घर के लोगों को पता चला तो सभी ने कोई न कोई देहाती नुस्खा बताया. सभी आजमाये गये, परन्तु संतोष के पैर में पता नहीं कौन-सा कीड़ा घुस गया था, जो उसके मांस को अंदर ही अंदर खाए जा रहा था. कुछ ऐसा ही अहसास संतोष को पीड़ा के दौरान होता था.

दर्द लगातार बढ़ता गया, तो रामचरन संतोष को साइकिल पर बिठाकर कस्बे के डॉक्टर के पास ले गया. उसने पूछताछ की और कुछ दवाइयां दे दीं. एक खुराक वही पर खिलाई गयी. दवा खाने के बाद दोनों वही बैठे थे कि संतोष ने उल्टी की शिकायत की- “बापू, लगता है उल्टी होगी.”

“दवा का असर होगा. अच्छा, बाहर नाली के किनारे बैठ जाओ, उल्टी आए तो कर लेना.” रामचरन ने संतोष को सहारा देकर उठाया और बाहर की तरफ ले चला. परन्तु संतोष जैसे ही क्लिनिक के दरवाजे पर पहुंचा, उसने उल्टी करनी प्रारंभ कर दी. उल्टी का रंग देखकर रामचरन के साथ-साथ डॉक्टर के भी होश उड़ गए. संतोष खून की उल्टी कर रहा था. खून के साथ-साथ बड़े-बड़े थक्के भी निकल रहे थे, जैसे उसका कलेजा कट-कटकर बाहर निकल रहा था. रामचरन घबड़ा गया और असहाय भाव से डॉक्टर की तरफ देखने लगा.

“इसको टी.बी. की बीमारी है क्या?” डाक्टर ने रामचरन की तरफ मुंह पर हाथ रखते हुए पूछा.

“नहीं साहब, आज तक कभी इसको खून की उल्टी नहीं हुई. पहली बार ऐसा हुआ है.”

“ऐसा कैसे हो सकता है? टी.बी. की बीमारी में पहले लंबी खांसी होती है, फिर धीरे-धीरे खांसी आने पर बलगम के साथ खून आता है. उससे पता चल जाता है कि टी.बी. की बीमारी के लक्षण हैं. परन्तु इतना सारा खून और कलेजे के टुकड़े गंभीर टी.बी. की बीमारी में ही गिर सकते हैं. तुम्हें शायद पता न चला हो.” डॉक्टर ने अविश्वास के भाव से कहा.

रामचरन खुद हैरान था. सर्दी-जुखाम-खांसी की बीमारी तो गांवों में आम बीमारी है, परन्तु संतोष को कभी भी लंबी खांसी नहीं हुई. होती तो क्या उसे पता न चलता. हां, बलगम में खून आना उसने नहीं देखा. हो सकता है, संतोष ने यह

बात छिपाई हो, डर के मारे न बताया हो. या उसे भी इसकी गंभीरता का पता न रहा हो. उसने कहा-

“साहब, मेरी तो समझ में कुछ नहीं आ रहा. इसको कभी खांसी-खुर्रा भी नहीं हुआ, वरना पता चल जाता. अंदर की बात इसने छिपाई हो तो नहीं कह सकता.”

उल्टी रुकते ही संतोष अर्द्ध-बेहोशी की हालत में वही बरामदे में लुढ़क गया था. रामचरन बेचारा क्या कर सकता था. वह निरंतर डॉक्टर को देखे जा रहा था, जैसे असहाय भक्त मुसीबत के समय भगवान की शरण में जाता है. डॉक्टर ने उससे कहा, “इसे तुरन्त जिला अस्पताल लेकर जाओ. एक्स-रे से ही पता चलेगा कि क्या हुआ है. हां, जाने के पहले खून साफ कर दो.” कहकर डॉक्टर केबिन के अंदर चला गया.

रामचरन ने संतोष को वही पड़ा रहने दिया. क्लिनिक की बाल्टी में नलके से पानी भरकर लाया और फर्श से खून साफ किया. फिर संतोष की तरफ मुखातिब हुआ. वह खड़ा होना तो दूर, बैठने के भी काबिल नहीं था. गांव के एक परिचित की दूकान पास में ही थी. वहां पर अपनी साइकिल रख दी और सारी बात बताने के बाद बोला-

“भैया, यह साइकिल तो चाहे यही पड़ी रहने देना, परन्तु मेरे घर खबर ज़रूर करवा देना कि मैं संतोष को लेकर जिला अस्पताल जा रहा हूं. भरती करवाना पड़ेगा. संतोष की अम्मा को बोलना कि घर में जो भी पैसे हों, लेकर तुरन्त किसी के साथ शहर चली आए. अस्पताल के गेट पर मैं उसे ढूंढ़ लूंगा. और भैया, मैं तो अचानक ही बड़ी मुसीबत में फंस गया हूं, संभव हो तो हजार रुपये उधार दे दो.”

दुकानदार रहमदिल आदमी था. उसने बिना कुछ सोचे-विचारे हजार रुपये निकालकर रामचरन के हाथ पर धर दिये; वरना सुबह-सुबह दुकानदार के गल्ले से पैसे निकलवाना बहुत मुश्किल होता है.

कस्बे से शहर के लिए बस जाती थी, परन्तु उसका एक निर्धारित समय था. रामचरन उतने समय तक इंतजार नहीं कर सकता था. उसके बेटे के जीवन-मृत्यु का प्रश्न था. उसने तुरन्त एक जीप किराए पर ली. आमतौर पर वहां से शहर के लिए तीन सौ रुपये में जीप किराए पर मिल जाती थी, परन्तु रामचरन की बेबसी और मजबूरी देखकर एकमात्र जीपवाला भी नखरे दिखाने लगा. रामचरन की जल्दबाजी से उसे मामले की गंभीरता का एहसास हो गया था. उसने पूरे पांच सौ

बताये. मरता क्या न करता? बेटे की जान गले में अटकी हुई थी. देर नहीं कर सकता था. पांच सौ देने पड़े, तब भी जीपवाला लापरवाही के सारे हथकंडे अपनाते हुए जीप लेकर चला, जैसे वह रामचरन पर बहुत बड़ा अहसान कर रहा था. हालांकि कस्बे के बाहर निकलते ही ड्राइवर ने इस तरह जीप दौड़ाई जैसे किसी रेस में भाग ले रहा हो और एक घंटे के अंदर-ही-अंदर रामचरन को संतोष के साथ अस्पताल के गेट पर पहुंचा दिया.

पूछताछ करने के बाद रामचरन संतोष को इमरजेंसी वार्ड में लेकर गया. अब तक संतोष को कुछ होश आ गया था, परन्तु वह बहुत कमजोरी महसूस कर रहा था. बिना सहारे के चल नहीं पाता था. उसे एक तरफ बिठाकर रामचरन ने पर्ची कटवाई, वार्ड ब्याय से बात की, उसके हाथ में बीस रुपये का नोट रखा, तब कहीं जाकर एक स्ट्रैचर पर लादकर संतोष को एक जगह पर टिका दिया गया.

काफी देर बाद डॉक्टर आया. संतोष को देखकर पूछा, “क्या हुआ है?”

रामचरन हाथ जोड़कर बोला, “साहब खून की उल्टी हुई है.”

“कब?”

“आज ही...”

“पहले भी कभी हुई थी?”

“नहीं, आज पहली बार हुई है!”

डॉक्टर ने पर्ची पर कुछ लिखकर रामचरन को पकड़ा दिया और चला गया. वार्ड ब्याय ने बताया कि जनरल वार्ड के फलां नम्बर बेड पर लेकर जाओ. बाद में इसका एक्स-रे होगा.

“भैया, आप मुझे बताते रहना. मैं अनपढ़ आदमी हूं.”

“ठीक है, पचास रुपये निकालो, मैं सब करवा दूंगा.” वार्ड ब्याय ने अपनी आंखों में लालच की भूख को बढ़ाते हुए कहा. रामचरन ने अपनी सहूलियत के लिए तुरन्त पचास रुपये उसे निकाल कर दे दिए. वार्ड ब्याय ने जनरल वार्ड में ले जाकर संतोष को उसके बिस्तर पर लिटा दिया और रामचरन से बोला, “तुम चिंता मत करना, मैं बीच-बीच में आता रहूंगा.”

“भैया, ज्यादा टाइम मत लगाना. और एक्स-रे कब होगा?”

“मैं अभी लौटकर आता हूं. फिर ले चलूंगा.”

आधे घंटे बाद वार्ड ब्याय लौटकर आया, तो रामचरन की सांस में सांस आई. उसने आशा भरी निगाहों से वार्ड ब्याय को देखा. वार्ड ब्याय ने कहा, “चलो, एक्स-रे करवा देते हैं.”

संतोष को बेड से उठाकर स्ट्रैचर पर लादा गया. वह खड़ा होने के काबिल नहीं था. उसकी सांस धौंकनी की तरह चल रही थी, जैसे फेफड़ों के अंदर तेज गति से कोई पंखा चल रहा था और उसकी हवा संतोष के मुंह के रास्ते बाहर निकल रही थी.

एक्स-रे करने के लिए जब संतोष को खड़ा किया गया तो वह अपने बूते पर खड़ा नहीं हो पा रहा था. उसके शरीर में जैसे जान ही नहीं थी. खून जैसे निचुड़ गया था. मुख पीला पड़ गया था. रामचरन के दिल में एक हूक-सी उठी. हाय! उसका हीरो जैसा बेटा...क्या हो गया है उसको? एक ही दिन में मौत के मुंह पर आकर बैठ गया है. किस दुश्मन की नज़र लग गयी है उसे? पता नहीं क्या होगा?

वार्ड ब्याय की सहायता से संतोष को दीवार के सहारे खड़ा किया गया. एक तरफ से रामचरन ने और दूसरी तरफ से वार्ड ब्याय ने उसे थाम रखा था, तब कहीं जाकर उसका एक्स-रे हो पाया. बताया गया कि एक्स-रे रिपोर्ट दो घंटे बाद प्राप्त होगी. संतोष को वापस बिस्तर पर लाकर लिटा दिया गया. रामचरन बिस्तर के बगल में एक लोहे के स्टूल पर बैठ गया.

जनरल वार्ड में बेतरह कोलाहल था- मरीजों की कराहें थीं, तो उनके परिजनों की किच-किच करने की आवाजें. कहीं रुदन था, तो कहीं हास्य. जो मरीज़ ठीक हो रहे थे, उनके परिजन आपस में हंसी-मजाक कर रहे थे, जो मरीज़ गंभीर रूप से बीमार थे, उनके परिजनों के मुंह लटके हुए थे. कुछ तो रो रहे थे, तो कुछ सिसकियां ले रहे थे. कुछ ने अपनी पीड़ा को हृदय के अंदर दबा रखा था. कोई अपने सुख में खुश था, तो कोई अपने दुःख का मातम मना रहा था.

रामचरन को बस अपने बेटे की चिंता थी. उसका ध्यान किसी और बात की तरफ नहीं था. अच्छे-खासे जवान बेटे के साथ क्या हो गया कि अचानक ही खून की उल्टियां होने लगीं. वह एक अनपढ़ ग्रामीण व्यक्ति था, जादू और टोने-टोटके में विश्वास करता था. क्या पता किसी दुश्मन ने उसके बेटे के ऊपर टोना कर दिया हो, परन्तु कौन था वह दुश्मन? उसके दिमाग में गांव के प्रत्येक नर-नारी और परिचितों, रिश्तेदारों के चित्र घूमने लगे, परन्तु उसकी समझ में न आया कि उसका इतना बड़ा दुश्मन कौन हो सकता था, जो उसके बेटे की जान लेने पर उतारू हो जाए?

संतोष कुछ बोल नहीं पा रहा था. रामचरन ने एक बार पूछा, “कुछ खाओगे? पानी पियोगे?” थोड़ी देर पहले रामचरन पार्ले बिस्कुट का एक पैकेट ले आया था.

संतोष ने उसे ही खाकर थोड़ा पानी पिया और गहरी सांसें लेता हुआ आंखें मूंदकर लेटा रहा.

रामचरन बीच-बीच में जाकर गेट तक देख आता था कि परबतिया आई या नहीं. फिर आकर संतोष के पास बैठ जाता. डूबे दिल से उसका मुरझाया हुआ चेहरा देखता, कुछ बात करने का प्रयत्न करता, परन्तु संतोष के शरीर में इतनी ताकत भी नहीं बची थी कि वह बात कर सके. बड़ी मुश्किल से सांस ले पा रहा था. संतोष के मन में क्या चल रहा था, वह कुछ सोचने-समझने की स्थिति में था भी या नहीं, रामचरन को पता नहीं था. परन्तु जवान बेटे की इतनी बुरी हालत देखकर उसकी जान निकलती जा रही थी. एक बेटे की मौत वह देख चुका था, दूसरा बेटा भी मौत की खाट पर लेटा था. उसके बचने की कितनी उम्मीद थी, यह तो केवल डॉक्टर ही बता सकते थे. उसके सोचने-समझने की शक्ति क्षीण हो चुकी थी. उसे बस एक ही डर सता रहा था कि बेटा कहीं मौत के मुंह में न समा जाए.

दोपहर के बाद परबतिया भी गांव के एक आदमी के साथ अस्पताल आ पहुंची थी. रामचरन को कुछ सहारा मिला. बेटे का मुर्दा-चेहरा देखकर परबतिया का कलेजा फट गया. वह फफक कर रो पड़ी, परन्तु वार्ड ब्याय के मना करने पर चुपके-चुपके रोने लगी. तब तक एक्स-रे रिपोर्ट भी मिल गयी थी. परबतिया को संतोष के पास बिठाकर रामचरन डॉक्टर को एक्स-रे दिखाने चला गया. डॉक्टर ने एक्स-रे देखा तो चौंक पड़ा- “आयं! यह क्या?”

“क्या हुआ?” के भाव से रामचरन डॉक्टर का हैरान चेहरा देख रहा था.

“संतोष कौन है और कब से बीमार है यह?” डॉक्टर ने एक्स-रे को मेज पर अपने सामने रखते हुए कहा.

“मेरा बेटा है साहब! क्या हुआ है उसको?” रामचरन ने शंका से दबी हुई आवाज़ में पूछा.

“तुमको नहीं पता?” डॉक्टर ने हैरानी से पूछा, “तुम्हारे बेटे को टी.बी. की बीमारी अंतिम अवस्था में है. उसके फेफड़े और कलेजा पूरी तरह से खत्म हो चुके हैं. कब से बीमार चल रहा है?”

“परन्तु साहब...!” रामचरन की समझ में न आया कि क्या कहे. उसकी आवाज़ हलक में अटक गयी. वह दीनता से डॉक्टर को बस देखता रह गया.

“तुम्हारे बेटे का बचना मुश्किल है, परन्तु इलाज़ तो करना है. ये दवाइयां मैं लिख रहा हूं. थोड़ी महंगी हैं, अस्पताल में नहीं मिलेंगी, बाहर से खरीदनी पड़ेंगी.

एक खुराक अभी दे देना और एक रात में खाने के बाद. और हां, देखो, इलाज़ लंबा चलेगा. कब तक...कुछ कह नहीं सकते, समझे?” डॉक्टर ने दवा की पर्ची और एक्स-रे का लिफाफा रामचरन को पकड़ाते हुए कहा.

रामचरन क्या समझता? उसके सामने मौत का भयानक मुंह खुला हुआ था, यमराज के दूत उसकी आंखों के सामने नाचते-गाते दिखाई पड़ रहे थे. इसके अलावा वह कुछ और नहीं समझ रहा था.

दवाइयां खरीदने के बाद जब वह संतोष के पास पहुंचा तो न कुछ बोलने की स्थिति में था, न सुनने की. वह धम् से बेटे के बिस्तर के एक कोने में बैठ गया. परबतिया लोहे के स्टूल पर बैठी थी. गांव से आया आदमी थोड़ी देर रुककर चला गया था.

“क्या हुआ?” परबतिया ने बेताबी से पूछा.

“कुछ नहीं?” किसी तरह उसके मुंह से बोल फूटे. वह कुछ कहने की स्थिति में नहीं था. तन से थका हुआ था, तो मन से परास्त हो चुका था. उसे कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था. संतोष की बीमारी के बारे में पत्नी को कुछ बताना उसने उचित नहीं समझा. सुनकर तो वह मर ही जाएगी. उसने कांपते हाथों से दवाइयां निकालकर संतोष को खिलाई और चुप बैठा रह गया.

दवाइयां खाने के कुछ देर बाद संतोष की आवाज़ फूटी. वह बोला, “बापू भूख लगी है.”

संतोष की आवाज़ सुनकर रामचरन का हृदय पुलक उठा. उसके सूखे चेहरे पर थोड़ी सी रौनक लौट आई. परबतिया भी झुककर बेटे का मुंह निहारने लगी. रामचरन ने उसका हाथ पकड़कर कहा, “क्या खाने का मन कर रहा है?”

“सेब खाने का मन कर रहा है.” संतोष ने धीरे-धीरे बताया.

रामचरन एक पल के लिए हिचक गया. दवाइयां लेने के बाद उसके पास बहुत कम पैसे बचे थे. परबतिया भी बहुत पैसे लेकर नहीं आयी थी. डॉक्टर ने बताया था कि इलाज़ लंबा चलेगा, पता नहीं कितना लंबा...महीने-दो महीने या उससे भी ज्यादा लग सकता है. दवाइयां कितनी महंगी हैं? पैसे कहां से आएंगे? उसे ही गांव जाकर एक खेत रेहन रखना पड़ेगा, तब कुछ इंतजाम हो पाएगा.

वह सोचने में मग्न था कि तभी संतोष की खीझभरी आवाज़ सुनाई पड़ी, “क्या हुआ बापू? जाकर लाते क्यों नहीं? क्या मरने के बाद सेब खिलाओगे?”

रामचरन के दिल को धक्का लगा. उसकी आंखों में आंसू आ गये. परबतिया भी रुआंसी हो गयी. उसने पति को झिंझोड़कर कहा, “जाओ न! बेटे की इच्छा भी पूरी नहीं करोगे?”

रामचरन ने एक बार कातर और करुण दृष्टि से बेटे को देखा. उसके बेटे के चेहरे पर मौत का साया मंडरा रहा था. वह स्पष्ट रूप से देख रहा था. इसके बावजूद संतोष के चेहरे पर चमक थी. कैसी थी यह चमक? क्या वैसी ही जैसी चिराग में बुझने के पहले होती है? उसकी आंखें क्या कहना चाहती थीं? क्या वह बाहर निकलने के लिए आतुर थीं. रामचरन की समझ में कुछ न आया और वह थके पांवों से बाहर निकल गया.

अस्पताल के बाहर फलों की कई दुकानें थीं, परन्तु रामचरन जानता था कि वहां फल महंगे मिलते हैं. सोचा, थोड़ा आगे जाकर चौक के बाजार से फल खरीदेगा तो सस्ते मिलेंगे और कुछ पैसे बच जाएंगे. सोचकर वह आगे बाजार की तरफ बढ़ गया.

रामचरन जब सेब लेकर लौट रहा था तो उसके पैर जैसे ज़मीन में धंसे जा रहे थे. उठने का नाम नहीं ले रहे थे. दिमाग में विचारों की उथल-पुथल मची थी, अच्छे-बुरे सभी प्रकार के विचार उसके मन-मस्तिष्क को मथे डाल रहे थे. विचारों के बोझ से उसका मन ही नहीं, तन भी थक चुका था. अचानक आई मुसीबत ने उसे झकझोर दिया था. सुबह से खाया-पिया भी कुछ नहीं था. बस भाग-दौड़ जारी थी. उसकी भूख-प्यास मर गयी थी. बेटे की बीमारी के बारे में सोचकर वह इतना व्यथित था कि भूख-प्यास की तरफ उसका ध्यान ही नहीं जा रहा था.

खरामा-खरामा वह जनरल वार्ड में पहुंचा तो वहां अजीब-सा सन्नाटा पसरा हुआ था. बस एक औरत के रोने की आवाज़ उसके कानों में पड़ी. एक तेज नज़र उसने चारों तरफ डाली. वार्ड के सारे मरीज़ चुप थे और उनके परिजनों के चेहरों पर मुर्दनी छायी हुई थी. रोने की आवाज़ उसकी बीबी की थी. एक दर्दनाक आशंका से उसका हृदय डूब गया. कोई अनहोनी हो चुकी थी. वह जल्दी से संतोष के बेड के पास पहुंचा और वहां का दृश्य देखकर उसका हृदय फट गया. सेब की थैली ज़मीन पर गिर गयी और वह धड़ाम से पलंग पर गिर गया.

रामचरन को देखते ही परबतिया की दबी हुई रुलाई जोरों से फूट पड़ी. वह जोर-जोर से रोने लगी. रामचरन के आंसू सूख चुके थे, परन्तु उसके मुंह से इतना निकला- “हाय राम!”

अस्पताल के पलंग पर उसका बेटा मरा पड़ा था. उसकी आंखें पूरी तरह खुली थीं जैसे छत को घूर रही थीं और मुंह भी पूरा खुला था, जैसे कुछ कहना चाह रहा था. रामचरन अपना दिल मसोहकर रह गया. उसे लगा, जैसे संतोष छत को नहीं उसे घूर रहा था और अपने खुले मुंह से कह रहा था, “क्या मरने के बाद सेब खिलाओगे?”

बाज़ार न जाकर अगर रामचरन गेट के सामने से सेब खरीदकर ले आता, तो उसे इतनी देर न लगती. तब संभवतः वह अपने बेटे की अंतिम इच्छा पूरी कर सकता था, परन्तु अब क्या हो सकता था? सेब लेने के लिए जाते समय उसने अपने बेटे के चेहरे पर मौत की चमक देखी थी, फिर भी कुछ समझ न पाया.

हाथ के तोते उड़ चुके थे. पक्षी पिंजरा खोलकर उड़ चुका था. रामचरन का मन अपराधबोध से ग्रस्त हो गया. वह अपने बेटे के प्राण बचाना तो दूर, उसकी अंतिम इच्छा भी पूरी न कर सका.



## शाश्वत प्रेम

**आ**नन्द के पारिवारिक संस्कारों ने सिखाया था कि जवानी के दिनों के प्रेम में स्थिरता नहीं होती. यह उस यात्री की तरह होता है जो अपना गंतव्य स्टेशन आते ही उतर कर अपने घर चला जाता है. जवानी का प्रेम किसी अंजाम तक नहीं पहुंचता है और अगर पहुंचता भी है तो उसके रास्ते में बहुत-सी रुकावटें आती हैं, और ऐसा प्रेम मंजिल तक पहुंचने के पहले ही लंगड़ा हो जाता है.

इसीलिए युवा जीवन में उनके मन में इस प्रेम के प्रति एक अविश्वसनीयता-सी बनी रही. फिर भी जवानी में होनेवाले प्रेम से वह बच नहीं सके. प्रेम किया, और विरह का दुःख सहा. इस प्रेम से उनको काफी कटु अनुभव हुए थे और इससे उनके मन में यह धारणा बन गई थी कि जवानी में किसी से शाश्वत प्रेम तो क्या साधारण प्रेम भी नहीं किया जा सकता. जवानी में किसी को चाहने या पाने की जिस भावना को हम प्रेम का नाम देते हैं, वह प्रेम नहीं; मात्र सौन्दर्य के आवरण में लिपटा हुआ शारीरिक आकर्षण होता है और यह आकर्षण स्वाभाविक तौर पर यौन आकर्षण होता है जो विपरीत लिंगीय होता है. इस आकर्षण से शारीरिक सम्बन्ध बनाये जा सकते हैं, परन्तु प्रेम नहीं किया जा सकता है. ऐसा प्रेम जिसे विद्वान शाश्वत प्रेम की संज्ञा से विभूषित करते हैं, वह जवानी में किसी से नहीं किया जा सकता है.

आनन्द चालीस वर्ष की उम्र पार कर रहे थे, परन्तु अब तक दाम्पत्य-सूत्र में नहीं बंधे थे. शिक्षा के साथ-साथ नौकरी भी उन्होंने यथासमय कर ली थी. अच्छी नौकरी थी और वह सुखी जीवन व्यतीत कर रहे थे. बस उनके जीवन में स्थायी प्रेम नहीं था, जिसकी संसार के हर प्राणी को आवश्यकता होती है. प्रेम के बिना जीवन मरुस्थल के समान होता है, जिसमें न तो बारिश की फुहारें होती हैं, न बादलों की शीतलता और न प्रकृति की हरियाली.

जवानी में वह बहुत सी लड़कियों और स्त्रियों के सम्पर्क में आए, उनसे प्रेम किया; परन्तु जिस प्रकार का स्थायित्व वह प्रेम में चाहते थे, वह किसी भी लड़की से प्राप्त नहीं हुआ. प्रेम में पड़ने के कुछ दिनों बाद ही उन्हें अहसास होने लगता कि लड़कियां भावनाओं में बहकर प्यार तो कर लेती हैं, परन्तु उसे स्थिरता नहीं दे पातीं. या तो वह मर्दों की चिकनी-चुपड़ी बातों में आकर शीघ्र ही पुरुष को अपना शरीर सौंप देती हैं या फिर जल्दी-से-जल्दी शादी करके घर बसा लेना चाहती हैं. और शादी के लिए मना करते ही वह उनसे दूर जाने की कोशिश करने लगती हैं.

वह प्रकृतिस्थ होकर लड़की के साथ समभाव से प्रेम करते, और चाहते कि वह भी उसी भाव से प्रेम की सीढ़ियों पर कदम रखती हुई उनके साथ जीवन में आगे बढ़े. परन्तु लड़कियां प्रेम की परिणति में अधिक दिलचस्पी लेतीं अर्थात् प्रेम का पाठ पढ़ते ही शादी के लिए बेचैन दिखतीं. उनके प्रेम में बड़ा विरोधाभास होता. बिना शादी के अपने शरीर को पुरुष को सौंपने में उन्हें कोई हिचक नहीं महसूस करती थीं, परन्तु उसकी परिणति वह शादी में ही चाहती थीं.

क्या बिना विवाह के स्त्री-पुरुष एक दूसरे को प्यार नहीं कर सकते? क्यों नहीं वह पति-पत्नी की तरह एक साथ रह सकते? अगर प्रेम शाश्वत है तो उसके लिए शादी के बंधन की आवश्यकता क्या है? यहीं पर आनन्द का उनकी महिला मित्र से मतभेद हो जाता, और फिर दोनों के रास्ते अलग होने में समय नहीं लगता.

अपवाद स्वरूप कुछ लड़कियां उनके साथ यह सोचकर रहने भी लगी थीं कि एक-न-एक दिन वह अपने प्रेम से आनन्द को विवाह-बंधन में बंधने के लिए मजबूर कर देंगी. परन्तु कुछ दिन साथ-साथ रहने के बाद जब उन्हें लगता कि वह अलग मिट्टी के बने हैं और उनसे शादी करनेवाले नहीं हैं, तो वह अलग हो गयीं.

अधेड़ावस्था में पहुंचकर अब उनके मन में चाहत पैदा हुई कि विवाह करके देख लिया जाये, संभवतः दाम्पत्य-जीवन में प्रवेश करने से उन्हें पता चल सके कि स्त्री और पुरुष के मध्य में शाश्वत प्रेम जैसा कोई प्रेम होता भी है या नहीं, या यह केवल विद्वानों के दिमाग की उपज है कि प्रेम शाश्वत होता है, और यह कभी नहीं मरता. इसको परखने के लिए उन्होंने विवाह करने का मन बनाया.

परन्तु इस उम्र में कौन उनके साथ विवाह करेगा? उनकी सभी भूतपूर्व प्रेमिकाओं की शादियां हो चुकी थीं. वह स्वेच्छा से उन्हें छोड़कर गयी थीं, और अब उनसे मिलकर अपने विवाहित जीवन में विष क्यों घोलेंगीं. उन्हें भी विवाहित महिलाओं से मिलकर कुछ हासिल होने वाला नहीं था. इस उम्र में अब जवान लड़कों की तरह वह लड़कियों के पीछे नहीं भाग सकते थे. तब क्या किसी



पत्रिका-अखबार में छपने वाले वैवाहिक विज्ञापनों की चश्मा लगाकर छान-बीन करें कि उनके लायक इस दुनिया में कोई महिला बची है या नहीं? कोई न कोई रास्ता उन्हें निकालना ही पड़ेगा. एकाकी जीवन अब उन्हें भारी लगने लगा था.

अपने विगत जीवन के विस्तृत फैलाव में उन्होंने एक नज़र डाली. सभी भूतपूर्व प्रेमिकाओं के चेहरे उन्हें हंसते-खिलखिलाते दिखे, जो अपने पतियों और बच्चों के साथ सुखमय जीवन व्यतीत कर रही थीं. मन की बगिया में सुखमय जीवन की झांकी देखकर उन्हें अच्छा लगा.

फिर सोचते-सोचते अचानक उन्हें अपने पड़ोस की एक लड़की की याद आई जो रोज उनके घर आया करती थी. वह उनका बहुत ख्याल रखती थी और उनके आगे-पीछे घूमती रहती थी और कई बार वह उसे डांट भी दिया करते थे कि उसके पास कोई दूसरा काम नहीं था क्या, जो दिन भर उनके घर में घुसी रहती थी. उनकी डांट खाकर भी वह हंसती रहती थी, जैसे भगवान ने उसे अनवरत हंसते रहने का वरदान दे रखा था. वह कभी दुःखी नहीं रहती थी.

वह लड़की आनन्द की मां के साथ चिपकी रहती और उनके घरेलू काम में हाथ बंटती थी और इस तरह आनन्द के आस-पास रहने का उसे मौका मिल जाया करता था. इन सब क्रियाओं के पीछे उस लड़की का क्या स्वार्थ था या उस लड़की के मन में क्या था, तब वह समझ नहीं पाये थे या समझा भी होगा तो उन्होंने उस लड़की को मात्र एक पागल लड़की समझा होगा, प्रेमिका नहीं और इस नाते वह उससे कभी खुलकर बात नहीं कर सके. उस लड़की ने भी कभी कुछ नहीं कहा, बस निःस्वार्थ उनकी सेवा करती रही.

उन्हें याद आया, उसका नाम नीलिमा था. यथासमय उसकी शादी हो गयी थी. शादी के बाद भी वह लड़की जब भी अपने मायके आती थी, उनके घर ज़रूर आती थी और उसी तरह से उनके आगे-पीछे घूमती रहती थी जैसे शादी के पहले करती थी. उस लड़की के मन में उनके प्रति सेवाभाव था या कोई प्रेम भावना, वह समझ नहीं सके; परन्तु आज जब उनके मन में प्रेम और शाश्वत प्रेम को लेकर एक उधेड़बुन चल रही थी तो उन्हें लग रहा था कि उस लड़की के मन में कहीं न कहीं उनके प्रति कोमल भाव अवश्य थे और वह उन्हें प्रेम करती थी, परन्तु वह उनकी भावनाओं को समझ नहीं पाए थे और दोनों सदा के लिए एक दूसरे से बिछड़ गये, परन्तु नहीं...पृथ्वी गोल है और यह अपनी धुरी पर चक्कर काटती रहती है.

उनके मन में नीलिमा से एक बार मिलने की चाहत पैदा हुई. क्यों हुई, यह वह स्वयं समझ नहीं पा रहे थे? शादीशुदा नीलिमा से मिलकर वह क्या प्राप्त करना

चाहते थे, परन्तु वह अपने मन की इच्छा दबा नहीं पाये. यह इच्छा इसलिए बलवती हो उठी थी, क्योंकि अब उन्हें अहसास हो रहा था कि नीलिमा उन्हें प्यार करती थी, परन्तु उन्होंने कभी नीलिमा को प्यार की नज़र से नहीं देखा था. वह परखना चाहते थे कि उनको देखकर अब नीलिमा के मन में कैसे भाव आयेंगे और वह उनको किस प्रकार का मान देगी. क्या उसके मन में अभी भी उनके प्रति कोमल भाव होंगे? वह यह भी जानने के लिए उत्सुक थे कि जो लड़कियां अपने युवा जीवन में किसी पुरुष को प्रेम करती हैं और उनकी शादी किसी अन्य पुरुष से हो जाती है, तो उनका वैवाहिक जीवन कैसा होता है? सफल होता है या नहीं? उत्सुकता थी, मन में प्रश्न थे और उन्होंने टान लिया था कि वह एक बार नीलिमा से अवश्य मिलेंगे; फिर अपने जीवन के अगले चरण के बारे में सोचेंगे.

नीलिमा की ससुराल का उन्हें पता नहीं था. उन्होंने स्वयं पुश्तैनी मकान को बेचकर सम्भ्रांत नई बस्ती में बंगलेनुमां मकान बनवा लिया था और नीलिमा के मायके से दूर रह रहे थे; परन्तु वह जानते थे कि नीलिमा के मायके में उसका बड़ा भाई रहता था. वह नीलिमा का पता बता सकता था.

उस दिन वह दफ़्तर से कुछ पहले ही निकल पड़े और कार को स्वयं चलाते हुए अपनी पुरानी बस्ती में पहुंचे. नीलिमा के मायके में जाकर उसके बड़े भाई से मिले और कुशलक्षेम पूछने के बाद उन्होंने नीलिमा का पता लिया. उसके बड़े भाई ने जब कागज पर नीलिमा का पता लिखकर दिया तो उसे पढ़कर उनका दिल इस तरह धड़का जैसे वह पहली बार नीलिमा को देख रहे हों और उनके दिल में नीलिमा के प्रति एक सुखद अनुभूति हुई हो.

वह उसी शहर में ब्याही थी और उनके मोहल्ले से कुछ ही दूरी पर उसका घर था. हालांकि वह पहले नीलिमा की ससुराल कभी नहीं गये थे, परन्तु आज वह दिल के हाथों मज़बूर थे और उसी दिन उन्होंने उसके घर जाने का निर्णय लिया.

नीलिमा के घर के दरवाजे पर खड़े होकर उन्होंने पहले इधर-उधर देखा. लोग अपनी धुन में गली में इधर से उधर और उधर से इधर आ-जा रहे थे. किसी ने उनकी तरफ ध्यान नहीं दिया. उन्होंने दरवाजे की घण्टी बजाई. थोड़ी देर में दरवाजा खुला और वह उनके सामने खड़ी थी. उसे देखकर उनके मन में एक जलतरंग सी बजी और उन्हें आश्चर्य हुआ कि यह जलतरंग उन दिनों उनके मन में क्यों नहीं बजी जब दोनों जवान थे और एक दूसरे के पास थे, मिला करते थे और उनके पास इतना समय था कि एक दूसरे के मन की बात को समझ सकते थे. नीलिमा

भी उन्हें देखकर हैरत में पड़ गयी. उसके मुंह से कोई आवाज़ नहीं निकली. दोनों ही आश्चर्य से एक दूसरे को कई पलों तक निहारते रहे जैसे दो बिछड़े प्रेमी कई युगों के बाद मिले हों, परन्तु क्या वह सचमुच एक दूसरे को प्रेम करते थे?

नीलिमा को जब होश आया तो उसने हाथ जोड़कर प्रणाम किया, “नमस्ते, आप यहां?”

उन्होंने अपनी गंभीर वाणी में कहा, “हां, मैं यहां और तुम्हें आश्चर्य हो रहा होगा कि मैं तुम्हारी ससुराल के घर पर आया हूं.”

“सचमुच! मैंने तो ऐसा कभी सपने में भी नहीं सोचा था.” वह विह्वल-सी थी, परन्तु उसकी आवाज़ में पुलक भरी खुशी भी थी, “आप अन्दर तो आइए.” आश्चर्य और विह्वलता में भी वह शिष्टाचार नहीं भूली थी.

उन्हें ड्राइंगरूम में बिठाकर वह चंचल हिरनी की तरह किचन में चली गयी. तब तक उन्होंने उसके घर का जायजा ले लिया था. उसके घर में अधिक सम्पन्नता नहीं तो विपन्नता भी नहीं थी. खाता-पीता खुशहाल परिवार लग रहा था. वह पानी लेकर आई तो उन्होंने फिर से नीलिमा को गौर से देखा. अब वह जवानी के दिनों की नीलिमा नहीं थी, विवाहिता स्त्रियों की तरह वह भी थोड़ा मोटी हो गयी थी, परन्तु इतनी मोटी नहीं कि भद्दी लगे. उसकी देहयष्टि अभी भी आकर्षक थी और उसके मुख-सौन्दर्य में कोई कमी नहीं आई थी. उसकी आंखों में अभी भी जवानी की चंचलता विराजमान थी. उन्हें अच्छा लगा कि वह दिलकश थी.

पानी पीकर उन्होंने कहा, “बैठो,”

“मैं चाय बनाकर लाती हूं.” वह चलने के लिए उद्यत हुई.

“नहीं, मेरे पास समय कम है. तुम बैठो, कुछ आवश्यक बातें करनी हैं.” उनके स्वर में गंभीरता थी. वह बैठ गयी और कौतूहल भरे मन से उनके चेहरे को ताकने लगी.

“देखो, नीलू, मैंने कभी तुमसे अंतरंग और आत्मीय बातें नहीं कीं. परन्तु आज मैं कुछ ख़ास बातें तुमसे करने आया हूं. क्यों और कैसे, इन प्रश्नों के चक्कर में मत पड़ना. बस मेरी बात सुनना और जो उचित लगे उत्तर देना. हां, अगर मेरी कोई बात तुम्हें बुरी लगे तो बता देना. अच्छा, पहले ये बताओ, तुम्हारे कितने बच्चे हैं और पति क्या करते हैं?”

वह शरमाती हुई बोली, “बस, एक ही बेटी है, कॉलेज में पढ़ती है. पतिदेव एक दूकान चलाते हैं. गुजारा हो जाता है.” कहते-कहते वह अपने में सिकुड़ गयी जैसे उसके बदन का कोई नाजुक अंग उधड़ गया हो.

उन्होंने उसके बदन की लहरों को महसूस करते हुए कहा, “क्या तुम विवाह के पहले मुझसे प्रेम करती थी?” यह बहुत सीधा सवाल था, बिल्कुल उस तीर की तरह जो सीधा हिरनी के सीने में जाकर बिंध जाता है. यह सवाल भी सीधा नीलिमा के सीने में जाकर चुभा था. इस प्रश्न का उसने अपनी जवानी में विवाह के पूर्व इंतजार किया था, परन्तु कभी सुनने को नहीं मिला था और आज जब वह वैवाहिक जीवन की बहुत सारी सीढ़ियां चढ़कर अधेड़ावस्था में प्रवेश कर चुकी थी, तब यह मन को अभिभूत और प्रफुल्लित कर देने वाला प्रश्न उसके कानों के रास्ते सीधे असावधान हृदय के अन्तर्स्थल में जा घुसा था. वह विस्फारित आंखों से अपने इष्टदेव को देखे जा रही थी और उसे आश्चर्य हो रहा था कि आज उसके भगवन् को यह क्या हो गया था? उनकी आंखें इतने वर्षों बाद कैसे खुली थीं? अब तक कहां सोए हुए थे?

उसकी समझ में यह भी नहीं आ रहा था कि वह उनकी बात का क्या जवाब दे? वह चकराकर रह गयी थी, परन्तु उसे जवाब तो देना ही था. भगवन् उससे पूछ रहे थे और भक्त होकर वह चुप कैसे रह सकती थी? उसने अपनी सांसों को खींचा और हृदय को कड़ा करते हुए कहा, “मैं अब एक विवाहिता हूं. मेरे पति हैं और मैं एक जवान बेटी की मां हूं.”

“मैं आज की नहीं, पहले की बात पूछ रहा हूं?”

“वह अब विगत है, एक भूली-बिसरी कहानी. परन्तु सच तो यह है कि मैं उसे भूल भी नहीं पाती हूं. आज भी जब मैं गाहे-बगाहे आपको याद करती हूं तो हृदय में एक मधुर स्पंदन होता है. नहीं होना चाहिए, परन्तु होता है और मुझे कोई आश्चर्य नहीं होता कि आपके लिए मेरे हृदय में अभी भी संगीत की मधुर धुन बजती है. आसमान में चांद चमकता है और तारे खिलते हैं. यह क्या है?”

“तो क्या तुम समझती हो कि प्रेम शाश्वत होता है?” उन्होंने उत्सुकता से नीलिमा की चमकती आंखों को देखते हुए पूछा. उसका चेहरा सुर्ख हो रहा था, बिल्कुल उस कन्या की तरह, जो पहली बार अपने प्रियतम के सामने बैठकर बात कर रही थी.

“शाश्वत, मतलब...?” वह हिचक गयी.

“मेरा पूछने का अर्थ यह है कि प्रेम क्या अमिट होता है और जिससे एक बार होता है, क्या उससे जीवन भर प्रेम किया जा सकता है? क्या यह बंधन अटूट होता है, अमिट होता है और जीवन भर कायम रहता है.”

“जहां तक मैं समझती हूं, प्रेम एक ऐसी भावना है जो अमिट होती है।”

“तो क्या तुम अपने पति से प्रेम नहीं करती?”

वह सोचने लगी और उसने सोचकर बहुत समझदारी से जवाब दिया, “प्रेम करती हूं, क्यों नहीं करूंगी. वह मेरे पति हैं और मैंने उनके साथ दाम्पत्य-जीवन बिताने के लिए सात फेरे लिए हैं. वह मेरी बेटी के पिता हैं तो निश्चित ही मैं उनसे प्यार करती हूं.”

“एक औरत एक साथ दो व्यक्तियों से कैसे प्रेम कर सकती है? अगर कर सकती है तो उसे प्यार नहीं कहा जा सकता है. वह केवल प्रेम का नाटक कर रही है और अपनी आवश्यकतानुसार अपने सुख के लिए उसका उपयोग कर रही है. ऐसा प्रेम शाश्वत कैसे हो सकता है?” उन्होंने स्पष्ट किया.

“प्रेम शाश्वत होता है या नहीं, इस पर मैं बहस नहीं कर सकती. एक औरत होने के नाते मैं इतना अवश्य जानती हूं कि प्रेम होता है और एक साथ कई व्यक्तियों से किया जा सकता है जैसे हम एक साथ ही मां, पिता, बहन, भाई, मित्र तथा अन्य रिश्तेदारों से प्रेम करते हैं, उसी प्रकार एक औरत दो पुरुषों या एक पुरुष दो औरतों से एक साथ प्रेम कर सकते हैं. इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है.” उसने आत्मविश्वास के साथ कहा.

उनके मन का भ्रम या दुविधा दूर नहीं हुई थी. पूछा, “तुम यह कैसे तय करोगी कि किस व्यक्ति से तुम अधिक प्रेम करती हो?”

“प्रेम कम या अधिक नहीं होता, परन्तु जिस व्यक्ति के साथ हम रहते हैं, उस पर हम जाहिर तौर पर अधिक प्यार उड़ेलते हैं. यह वास्तविकता है. और दूर रहने वाले व्यक्ति के साथ तन से दूर रहते हुए भी हम मन से जुड़े होते हैं. दूरी प्रेम में कमी नहीं लाती.”

“नीलू, तुम्हारी बातें सच हो सकती हैं, परन्तु पता नहीं क्यों मेरे मन में एक भटकन-सी है. मुझे लगता है कि प्रेम शाश्वत नहीं होता और जीवन भर हम एक व्यक्ति से एक समान प्यार नहीं कर सकते. इसके बहुत सारे कारण हो सकते हैं, पारिवारिक और परिस्थितिजन्य. मेरे जीवन में परिस्थितियों ने मुझे यह अनुभव प्रदान किया है कि स्त्री-पुरुष के प्रेम में स्थायित्व नहीं होता.”

नीलिमा हंसी. बहुत दिनों बाद आज वह उनके सामने हंसी थी. उसकी हंसी में भोलापन था, निश्छलता थी. उनको जवानी के वे दिन याद आ गये, जब नीलिमा उनके आगे-पीछे चक्कर लगाया करती थी और कभी-कदा वह खीझकर उसे डांट

दिया करते थे, तब भी वह इसी तरह हंसती थी, जैसे किसी ने उसे कोई चुटकुला सुना दिया हो. उनके हृदय में कुछ चटख गया. काश, इस हंसी के पीछे छिपे प्यार को तब वह पहचान पाते, तो आज नीलिमा उनकी होती. उन्होंने मन ही मन नीलिमा के सौन्दर्य और स्वभाव को परखने की कोशिश की और तब उन्हें लगा कि वह एक सुन्दर नारी ही नहीं, अच्छी पत्नी और सफल गृहणी भी होगी.

“आपको ऐसा इसलिए लग रहा है, क्योंकि आपने कभी किसी लड़की से सच्चा प्यार नहीं किया. आपके प्रेम में स्वार्थ था, चाहे भौतिक या मनोवैज्ञानिक. कोई न कोई स्वार्थ आपके प्रेम में अवश्य था. प्रेम जब स्वार्थ की भावना के वशीभूत होकर किया जाता है, तो उसको टूटने में समय नहीं लगता. आप स्थिर होकर किसी लड़की को प्रेम करते, उसके साथ किसी बंधन में बंधते, तब आपको पता चलता कि प्रेम में स्थायित्व भी है, और वह अटूट है. जिसे आप शाश्वत प्रेम का नाम देते हैं, वह प्रेम अटूट होता है. यह प्रेम एक सच्चाई है, जो हम जीवन में किसी न किसी से करते हैं.” नीलिमा ने बहुत टोस शब्दों में कहा. उन्हें लगा, नीलिमा केवल समझदार ही नहीं, बल्कि अपनी बात कहने का उसमें साहस भी है. फिर क्यों अपने अविवाहित जीवन में वह अपना प्यार उनसे व्यक्त नहीं कर पाई थी?

उन्होंने कातर दृष्टि से नीलिमा की आंखों में झांककर देखा. आनन्द की आंखों के भाव देखकर उसने अपनी पलकें बंद कर लीं और एक सर्द एहसास से कांप गयी. आनन्द ने हैले से उसका दायां हाथ पकड़ लिया. वह भय से कांप गयी.

उन्होंने पूछा—“क्या तुम अब भी मुझे प्यार करती हो?”

उसने कोई जवाब नहीं दिया, परन्तु अपनी पलकें खोलकर आनन्द को गौर से देखा, जैसे कह रही हो कि यह प्रश्न विवाह से पूर्व किया होता तो मैं इसका जवाब दे सकती थी. अब मैं क्या जवाब दूँ? आनन्द उसकी आंखों में छलकते हुए आंसुओं की विवशता समझ गये. उसकी हथेली को हल्के से दबाते हुए कहा, “मैं समझ गया? काश, जीवन के पूर्वार्द्ध में ही अगर इतनी छोटी सी बात मेरी समझ में आ जाती कि जवानी का प्रेम भी शाश्वत होता है, तो मैं इतना दुःखी नहीं होता. और अगर प्रेम शाश्वत नहीं है, तो भी इसे छोटी-छोटी चीजों और बातों से प्राप्त किया जा सकता है.”

नीलिमा ने बेहिचक उनसे कहा, “जो शब्द मैं शादी से पूर्व आपके मुख से सुनना चाहती थी, वह मुझे कभी सुनने को नहीं मिले; परन्तु इतने वर्ष बाद ही सही, अगर आपने मेरे प्रेम की गहराई को समझा और मेरे पास आए हैं तो मैं धन्य हो

गयी. मैं अब भी आपको उतना ही प्रेम करती हूँ, परन्तु प्रेम के लिए कोई भी समझदार नारी अपने परिवार को नहीं तोड़ सकती, पति को नहीं छोड़ सकती और बच्चों को बेसहारा और अनाथ नहीं कर सकती. आज की स्थिति में परिवार मेरे लिए प्रमुख है और आपका प्रेम गौण. मैं आपको मन ही मन चाह तो सकती हूँ, परन्तु आपके लिए पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धों का परित्याग नहीं कर सकती. कोई भी प्रेम इतना बड़ा बलिदान नहीं मांगता.”

“मैं समझ सकता हूँ.” उन्होंने असहाय भाव से कहा, फिर जैसे उन्हें कुछ याद आया हो, वह चौंककर बोले, “घर में कोई नहीं है क्या? तुम्हारी बेटी कहाँ है और पति कब आते हैं?” उन्होंने घड़ी की तरफ देखा, आठ बजनेवाले थे.

नीलिमा सावधान होकर बैठ गयी, “बेटी बस आने ही वाली होगी. उसने एक कोचिंग क्लास ज्वाइन कर रखी है. सिविल सर्विसेज की तैयारी कर रही है और वह दस-ग्यारह तक आते हैं. दूकान का काम है. देर हो जाती है.”

“अच्छा बताओ, तुम सुखी हो?” उन्होंने पूछा.

“फिलहाल मुझे कोई ऐसा कारण नहीं दिखाई देता जिससे मैं ये समझूँ कि मैं अपने जीवन से दुःखी हूँ. पति बहुत प्यार करते हैं. घर का पूरा ख्याल रखते हैं. बेटी भी सुन्दर, सुशील और समझदार है. छोटा परिवार है, रुपये-पैसे का अभाव नहीं है. बस, और क्या चाहिए जीवन में सुखी होने के लिए...?”

उन्होंने एक गहरी सांस ली और नीलिमा को देखते हुए सोचा- रुपया-पैसा और नौकरी तो उनके पास भी है, परन्तु वह सुखी नहीं हैं, क्यों? क्या सुख केवल भौतिक चीजों से नहीं मिलता? क्या सुख एक भाव है, जो मनुष्य की सोच के अनुसार उसे सुखी या दुःखी करता है? वह अपने को एक बुद्धिमान और समझदार व्यक्ति समझते थे, परन्तु नीलिमा के पास आकर उनकी बुद्धि के पेंच ढीले से लगने लगे थे. नीलिमा उनको प्रेम करती है, परन्तु उसको आनन्द से कोई प्रेम प्राप्त नहीं हुआ, फिर भी वह सुखी है? तो फिर किसी लड़की के साथ प्रेम करके और उसके साथ घर बसाकर वह सुखी क्यों नहीं हो सकते थे?

वह सोफे से उठकर खड़े हो गए और मन को शांत करते हुए उन्होंने कहा, “नीलू, क्या तुम समझती हो कि इस उम्र में मेरे लिए शादी करना उचित होगा?”

उसने कुछ सोचा और फिर कहा, “प्रेम और शादी के लिए उम्र बाधा नहीं है. बस इतना ध्यान रखिएगा कि जिस महिला से आप शादी करें, उसकी और आपकी वय में बहुत अंतर नहीं होना चाहिए, वरना उम्र का अन्तर बुढ़ापे में आपके लिए कष्टदायी बन जाएगा.”

आनन्द ने समझते हुए कहा, “मैं तुम्हारी बात का ख्याल रखूंगा. अच्छा, एक बात बताओ, मैं कभी-कभी अगर तुमसे मिलने आ जाऊँ तो क्या तुम्हें कोई आपत्ति होगी?”

“बिल्कुल नहीं,” वह उनके बिल्कुल पास खड़ी हो गयी, “आपसे मिलकर मुझे बहुत खुशी प्राप्त होगी. मैं जानती हूँ, आप मुझे या मेरे परिवार को किसी तरह का कोई नुकसान नहीं पहुंचावेंगे. मुझसे कोई अनावश्यक अपेक्षा नहीं करेंगे और मेरी बदनामी नहीं करेंगे. मैंने आपसे प्रेम किया था और मेरा आपके ऊपर अगाध विश्वास है.”

“धन्यवाद नीलू, मैं तुम्हारे विश्वास को कायम रखूंगा. मैं फिर तुमसे मिलने आऊंगा.”

“अगली बार मैं अपनी बेटी और पति से आपको मिलवाऊंगी.” उसकी आवाज़ में कोयल सी कूक थी.

“अवश्य! तो अब मैं चलता हूँ. भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि तुम सदा खुश और प्रसन्न रहो.”

“आपने चाय भी नहीं पी? आप पहली बार मेरे घर पर आए और मैं आपकी कोई सेवा न कर सकी, मुझे अफसोस रहेगा.”

“तुम्हारी चाय मुझ पर उधार रही. अगली बार चुकता कर देना.”

वह नीलिमा को आशीर्वाद देकर चले आए.

उस रात आनन्द बहुत ही सुकून की नींद सोये. सपने में उन्हें कई बार नीलिमा दिखाई दी, कभी परी की तरह उड़ती हुई, कभी किसी देवी की तरह एक आभामण्डल के बीच में हंसती-मुस्कराती वह उसे पकड़ने के लिए उसके पास जाते, परन्तु उनके पास आने के पहले ही वह आसमान में विलीन हो जाती.

सुबह जब उनकी नींद खुली थी तो रात के सपनों से वह बहुत अभिभूत थे. सपनों का प्रत्येक चित्र उनकी आंखों के सामने स्पष्ट था और अब खुली आंखों से वह सपनों का विश्लेषण कर रहे थे. नीलिमा का उनके सामने अनेक रूपों में आना और फिर उनकी पहुंच से दूर चले जाने का क्या अर्थ था. क्या वह उनकी पहुंच से दूर थी? अवश्य, क्योंकि अब वह एक शादीशुदा महिला थी. उसका पति था और एक प्यारी बेटी थी. हंसता-खेलता परिवार था. उसके जीवन में मैं अब आनन्द का कोई दखल नहीं था. इस बात को वह बहुत अच्छी तरह समझ रहे थे.

बीच-बीच में सप्ताह में एक बार वह नीलिमा से मिलते रहते थे, परन्तु उन्होंने अपने सपनों की बात नीलिमा को नहीं बताई. बताने का कोई अर्थ नहीं था. वह

उन्हें प्यार करती थी, परन्तु उस प्यार का अब उनके जीवन में कोई अर्थ नहीं था. उनके अपने जीवन में प्यार का अभाव था, इसलिए वह नीलिमा से मिलते थे. इससे उनके मन को प्यार तो नहीं प्राप्त होता था, परन्तु कुछ पल के लिए मानसिक संतोष अवश्य मिल जाता था.

इस मिलने-मिलाने के क्रम में धीरे-धीरे उन्होंने महसूस किया कि नीलिमा के प्रति उनकी चाहत बढ़ती जा रही थी. यह एक खतरनाक संकेत था. उनके प्रति नीलिमा के क्या भाव थे, उन्हें पता नहीं था.

नीलिमा को लेकर जब उनका मन अत्यधिक बेचैन रहने लगा तो उन्होंने अपने मन की बात उससे बता दी, “नीलू, बुरा मत मानना, परन्तु आजकल मेरा मन प्रतिक्षण तुम्हारे ही बारे में सोचता रहता है? जब तुम मेरे पास नहीं होती हो तो तुम्हें देखने का मन करता है और जब तुम मेरे पास होती हो तो तुमसे दूर जाने का मन नहीं करता. क्या तुम्हें नहीं लगता कि हम रोज मिलें और मिलते ही रहें. सप्ताह में एक बार मिलने से मन नहीं भरता.”

उसने अपनी आंखों को झुकाते हुए कहा- “लगता तो मुझे भी है, क्योंकि यह मानव का स्वभाव है. वह जिसके पास रहता है, उसके और पास आना चाहता है. परन्तु हम दोनों एक भिन्न धरातल पर खड़े हैं. इनका मिलना असंभव है. हम दोनों की एक दूसरे के प्रति यह चाहत बहुत खतरनाक है. आपका चाहे कुछ न बिगड़े, परन्तु मेरा घर-संसार उजड़ जाएगा. अब हम न तो जवान हैं, न गैर-जिम्मेदार. हम कोई ऐसा कदम नहीं उठा सकते हैं, कि हमारे घर-परिवार और बच्चों पर उसका असर पड़े.”

“तुम सच कहती हो, परन्तु सामाजिक और पारिवारिक बंधन भी मनुष्य को कभी-कभी सच्चा सुख और प्यार नहीं देते. हम जीवन भर प्रेम वहां तलाशते रहते हैं, जहां वह नहीं होता और जहां यह होता है, वहां हमारे बंधन हमें जाने नहीं देते. बताओ, मनुष्य करे तो क्या करे? उसका मन नहीं करता कि वह सच्चा और अटूट प्रेम प्राप्त करे और जीवन भर सुखी रहे?”

“मेरी-आपकी स्थितियां भिन्न-भिन्न हैं. आप किसी से भी प्यार करने का जोखिम उठा सकते हैं, परन्तु मैं ऐसा नहीं कर सकती.”

“अब मुझे लगता है कि अगर किसी को सच्चे मन से चाहा जाय तो शाश्वत प्यार की प्राप्ति हो सकती है.” वह नीलिमा की आंखों में देखते हुए बोले.

“क्या आपको विश्वास हो गया है कि पुरुष और स्त्री के बीच सच्चा और शाश्वत प्यार हो सकता है?” नीलिमा ने जिज्ञासावश पूछ लिया.

“नहीं, अब मेरा विश्वास बदल गया है. अब मैं जान गया हूं कि सच्चा और शाश्वत प्यार होता है, परन्तु जहां इसके होने की उम्मीद होती है, वहां नहीं मिलता. विडंबना यह है कि ऐसा प्यार मुझे वहां मिला, जहां इसके होने की मुझे कतई उम्मीद नहीं थी. मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं कि तुम्हारे रूप में मुझे यह प्रेम प्राप्त हो गया.” भावुक होकर उन्होंने नीलिमा के दोनों हाथ पकड़ लिए. वह सिहर कर अपने में सिमट गयी.

“परन्तु आप यह मत भूलिए कि मैं शादीशुदा हूं और मेरी अपने परिवार और बेटी के प्रति कुछ जिम्मेदारियां हैं.”

“नहीं नीलू, मैं इस बात को कभी नहीं भूलूंगा. तुम्हारे रूप में मुझे शाश्वत प्रेम की देवी के दर्शन हुए हैं, मैं तुम्हें अपवित्र नहीं करूंगा. परन्तु तुम्हारे प्रति प्रेम की भावना से मुझे जीवन की डगर पर आगे बढ़ने का हौसला प्राप्त होता रहेगा.”

“मुझे आशा है कि आप को प्रेम की देवी अवश्य प्राप्त होगी, जिसकी आपको सदैव से कामना रही है. आप एक बुद्धिमान पुरुष हैं, परन्तु जीवन की पगडण्डियों पर ज्ञान के सहारे नहीं, प्रेम और कर्तव्य के सहारे आगे बढ़ा जाता है.”

“सच कहती हो नीलिमा! इतनी छोटी-सी बात मेरी समझ में नहीं आ रही थी. तुम मुझसे छोटी हो, परन्तु ज्ञान और अनुभव में मुझसे बहुत बड़ी हो.” उन्होंने भावुक होकर नीलिमा के हाथों को जोर से दबा दिया. वह सिहर गयी, परन्तु कुछ सोचकर अपना हाथ आनन्द के हाथों से अलग नहीं किया.

वह बोल रहे थे, “जीवन के प्रथम भाग में ही अगर मनुष्य मनोविज्ञान और आदर्शों के चक्कर में न पड़कर जीवन की वास्तविकताओं और यथार्थ की सोच के बल पर आगे बढ़े तो वह सुखी रहता है. प्यार प्राप्त करने के लिए मैं थोड़े आदर्श का सहारा लेकर जीवन-क्षेत्र में प्रवेश करना चाहता था. अब मेरी समझ में आ गया है कि जो प्रेम आपको सुख दे, वहीं सच्चा और शाश्वत प्रेम है. प्रेम में कमियां ढूंढना सबसे बड़ी मूर्खता है. जीवन में एक साथ रहते हुए अगर प्रेम में कमी आ जाए, तो उसे एक दूसरे की भावनाओं को समझकर दूर किया जा सकता है.”

“अब और अधिक भटकने के बजाय आप किसी महिला का हाथ पकड़कर जीवन की जटिलताओं को सुलझाने का प्रयास कीजिए.” नीलिमा उनके हाथों के बीच दबी अपनी हथेलियों को छुड़ाकर उनकी उंगलियों को सहलाने लगी.

“हां, नीलिमा, तुम सच कह रही हो. अब मुझे तुम्हारे जीवन से दूर जाकर अपना जीवन स्वयं जीना होगा. मैं तुम्हारे जीवन में दखल देकर तुम्हारे परिवार और बेटी के भविष्य को बर्बाद करने का पाप अपने सिर नहीं ले सकता.”

इसके कुछ दिनों बाद आनन्द के विभाग द्वारा दो दिन का एक सेमीनार आयोजित किया गया. आनन्द आयोजन समिति के अध्यक्ष थे. भारत के विभिन्न नगरों से डेलीगेट्स आनेवाले थे. उनके लिए गाड़ी, आवास और खाने-पीने की व्यवस्था आनन्द के ही हाथों में थी. उन्हीं डेलीगेट्स में पास के नगर से एक महिला अधिकारी भी पधारी थीं. आयोजन समिति का अध्यक्ष होने के नाते आनन्द की उनसे कई बार फोन पर बात हुई और बाद में जब सेमीनार चल रहा था, तो आमने-सामने भी उनकी कई बार बातें हुई थीं. दोनों एक दूसरे से काफी घुल-मिल गये थे.

महिला का नाम विनीषा था. वह काफी विदुषी महिला थीं, कई भाषाओं की जानकार थीं. सेमीनार में उनका एक व्याख्यान भी था, जिसे उन्होंने बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया था. श्रोताओं ने बड़ी दिलचस्पी से उन्हें सुना. बाद में आनन्द ने उनको एकान्त में धन्यवाद दिया. वह गद्गद् होकर बोलीं, “आपका बहुत-बहुत धन्यवाद!”

“आपको यहां रुकने और आने-जाने में कोई परेशानी तो नहीं उठानी पड़ी?”

“नहीं, आपने बहुत अच्छे ढंग से हर चीज की व्यवस्था की है.”

फिर बातों के दौरान कुछ व्यक्तिगत बातें भी हुईं. विनीषा बहुत सुलझी हुई महिला थीं. अपने बारे में उन्होंने विस्तार से सब कुछ आनन्द को बताया. वैवाहिक जीवन के बारे में पूछे जाने पर विनीषा चुप रह गयीं, फिर हल्के से मुस्कराते हुए कहा, “पढ़ाई और कुछ पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाने के चक्कर में शादी की तरफ ध्यान नहीं गया. जब ध्यान गया तो उम्र निकल चुकी थी.” और वह शर्मीले संकोच से भर गयीं.

आनन्द के मन में एक हर्ष की लहर दौड़ गयी. उन्होंने अब ध्यान से विनीषा को देखा, वह एक आकर्षक महिला थीं. उम्र के लिहाज़ से कुछ मोटी हो गयी थीं, परन्तु उम्र आनन्द से कुछ कम ही होगी. उन्होंने विनीषा का बायोडाटा देखा था, परन्तु तब ध्यान नहीं दिया था कि उनकी जन्मतिथि क्या थी. उन्होंने सांत्वना भरे स्वर में कहा, “मुझे अफसोस है, मैंने आपसे व्यक्तिगत प्रश्न किया. यह बहुत दुःखदायी होता है.”

“नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है. यह भी जीवन का एक अंग है. मुझे कोई दुःख नहीं है. अच्छा, आप अपने बारे में बताइए. आपके कितने बच्चे हैं और पत्नी क्या करती है?”

आनन्द ने मुंह चुराते हुए कहा, “अब आपसे क्या छिपाना? मेरी भी वही स्थिति है जो आपकी. मैंने शादी नहीं की.”

“ओह! तो आप भी देश की बढ़ती हुई जनसंख्या से परेशान हैं.”

“जी!” आनन्द ने चौंकर कहा और फिर विनीषा की बात का अर्थ समझकर हंस पड़े. विनीषा भी हंस पड़ीं.

“तब तो आपकी हमारी खूब गटेगी.” विनीषा ने कहा. आनन्द ने सहमति जताई. उस रात का खाना दोनों ने साथ खाया. ढेर सारी बातें कीं. अगले दिन भी नाश्ता साथ किया. दोपहर के बाद विनीषा को जाना था. आनन्द ने कहा, “क्या इसके बाद मुलाकात संभव है?”

“अवश्य अगर हम दोनों चाहें तो...?”

“क्या आप चाहती हैं?”

“हां!” विनीषा मुस्कराते हुए कहा. इस मुस्कान में एक आमंत्रण था. आनन्द समझ गये. दोनों ने एक दूसरे का मोबाइल नम्बर लिया.

फिर उन दोनों का फोन पर प्रतिदिन वार्तालाप होने लगा. जितनी ज्यादा बातें वह करते थे, उतना ही अधिक उनके दिल एक दूसरे से खुलते जा रहे थे. फिर एक दिन आया कि उनके बीच में कोई व्यक्तिगत बात छिपी नहीं रही. उनके दिल आपस में जुड़ते जा रहे थे. वह मन ही मन एक दूसरे को चाहने लगे.

फोन पर रोजाना बात करने के अतिरिक्त वह दोनों रविवार के दिन मिल भी लेते थे, क्योंकि दोनों के नगर आप-पास थे और दो घण्टे के सफ़र के बाद दोनों एक दूसरे के यहां आ-जा सकते थे. विनीषा ही अपनी कार से आनन्द के यहां आ जाती थीं और दोनों पूरे दिन साथ-साथ बिताते थे.

दोनों कुंवारे थे और दोनों को ही सफल कैरियर के बावजूद एक मजबूत धरातल की ज़रूरत थी, जहां जीवन की भंवर में अपने पैर टिकाकर खड़े रह सकें. यह तभी संभव था, जब एक के हाथ में दूसरे का हाथ हो. उन्होंने आपस में एक दूसरे का हाथ थामने का निश्चय कर लिया.

अगली बार जब आनन्द नीलिमा से मिले, तो उन्होंने संकोच से कहा, “नीलू, तुम्हें जानकर खुशी होगी कि इन दिनों मैं एक महिला से मिल रहा हूं, मुझसे पांच साल छोटी होगी. उसने भी किन्हीं पारिवारिक परिस्थितियों के चलते विवाह नहीं किया था. अब जब शादी की उमर निकल गयी तो उसे चेतना आई है. संयोगवश मेरी उसकी मुलाकात कार्यालय द्वारा आयोजित एक सेमीनार में हुई थी.”

“आपने पहले नहीं बताया?” नीलिमा को कुछ दुःख हुआ.

“पहले बताना उचित नहीं था, जब तक कि सब कुछ सापेक्ष न हो रहा हो. जब मुझे लगा कि मेरी उसकी बात बन सकती है तो मैं इस बात को तुम्हें बता रहा हूं.”

“फिर...!” नीलिमा ने उत्सुकता से पूछा.

“उसकी पारिवारिक जिम्मेदारियां खत्म हो चुकी हैं, परन्तु स्वयं अकेली रह गयी है. अब वह जीवन में स्थायित्व चाहती है.”

“तो बात कहां तक बढ़ी है?”

“परिचय होने के बाद हम कई बार मिल चुके हैं. हम दोनों को एक दूसरे का साथ अच्छा लगता है. वह मेरे साथ बाहर जाने में संकोच नहीं करती. मेरी बातों को ध्यान से सुनती है और अपने जीवन की एक-एक बात मुझे बताती है. अभी मैंने कुछ स्पष्ट तौर पर कहा नहीं है, परन्तु मुझे लगता है कि हमने अपनी भावनाओं को एक दूसरे तक पहुंचा दिया है. हमें युवाओं की तरह मुख से कहने की आवश्यकता नहीं है. अपने हाव-भाव और तौर-तरीकों से हम अपने-अपने दिल की बात एक दूसरे से कह चुके हैं.”

“तो फिर अब देर न करें. जल्दी ही उससे स्पष्ट रूप से बात करके घर बसा लें. आपके हाथ से वैसे भी काफी वक्त निकल चुका है. अब और देरी मत कीजिए.”

“हां, अब मैं देर नहीं करूंगा, इसीलिए आज अन्तिम बार तुमसे मिल रहा हूं. तुमने मुझे मानसिक रूप से सहारा देकर मेरे लिए जो त्याग किया, उसका मैं जीवन भर शुकुगुजार रहूंगा. मुझे अच्छा लगता, अगर तुम मेरे जीवन में आती, परन्तु मुझे अब अफसोस नहीं है, क्योंकि मैंने तुम्हें खोकर भी दूसरे रूप में पा लिया है, एक देवी के रूप में. यही शाश्वत सत्य है, यही शाश्वत प्रेम है. प्रेम किसी के शरीर में नहीं होता, प्रेम एक भाव है, जिसे हम महसूस करते हैं और यह भावना शाश्वत होती है.”

उन्होंने भावुक होकर कहा और नीलिमा की उंगलियों को अनायास चूम लिया. शाश्वत प्रेम की निशानी!



## वह लड़की

वह अमीर घर का लड़का था. उसका बाप गांव का सबसे बड़ा किसान था और ज़मींदार कहलाता था. उसके बाप में ज़मींदारों वाले सारे अवगुण थे. वह क्रूर और अत्याचारी था. नौकरों का शोषण करता था और उनको कम-से-कम मज़दूरी देकर दुगुना-तिगुना काम करवाता था. वह अपने खेतों में काम करनेवाली औरतों का शारीरिक शोषण भी करता था. परन्तु कोई उसके अत्याचार के खिलाफ़ आवाज़ उठाने की हिम्मत नहीं कर सकता था, क्योंकि वह आधे से ज्यादा गांव के लोगों का पालनहार था. उनके घरों में तभी चूल्हा जलता था, जब ज़मींदार उनको औनी-पौनी मज़दूरी देता था.

उसका लड़का अभी छोटा था, परन्तु वह स्वभाव से बहुत विनम्र और भावुक था. बड़ा होकर पता नहीं कैसा बनेगा?

उसी गांव में एक लड़की थी.

वह लड़की भी बहुत छोटी थी, लगभग लड़के की हमउम्र. उसकी मां लड़के के बाप के खेतों में अपने पति के साथ करती थी. कभी-कभी ज़मींदार के घर पर भी गेहूं, चावल, दाल आदि साफ करने के लिए जाती थी. तब वह अपनी लड़की को साथ लेकर ज़मींदार के घर जाती थी. वहीं पर लड़के और लड़की की मुलाकात होती थी. वह दोनों साथ खेलते थे, धक्का-मुक्की करते थे और कभी-कभी तक्रार भी करते थे, परन्तु उनके बीच हाथापाई कभी नहीं होती थी, क्योंकि लड़के को डर लगता था कि लड़की के कोमल बदन में कहीं चोट न लग जाए और लड़की डरती थी कि लड़का नाराज़ न हो जाए. वह बड़े घर का लड़का था, इतना ज्ञान उस लड़की को था.

लड़के को लड़की बहुत अच्छी लगती थी, स्वभाव से भी और चेहरे से भी. वह अपने घर से चुराकर उसे अच्छी-अच्छी खाने की चीजें दिया करता था. ऐसी

चीजें, जो लड़की के घर में कभी नहीं बनती थीं और उसने उन चीजों को कभी सपने में भी नहीं देखा था। वह बड़े चाव से उन चीजों को खाती थी और कभी-कभी अपना जूटा लड़के को भी खिला देती थी, परन्तु लड़का इस बात का बुरा नहीं मानता था। वह बड़े प्यार से लड़की के हाथ की चीज़ खा लेता था, जैसे वह लड़की अपने घर से उसके लिए बनाकर लाई हो।

लड़की को लड़का इसलिए भी पसंद था, क्योंकि खेल में गलती होने पर भी लड़का न तो उसे डांटता था, न कभी मारता था; जबकि घर में उससे छोटी-से-छोटी गलती होने पर उसकी मां और बाप न केवल डांटते थे, बल्कि कभी-कभी हाथ उठा देते थे। तब वह सोचती थी, काश, वह लड़का उसका बाप होता तो उसे कितना प्यार करता। या वह उसकी मां होती तो अच्छी-अच्छी चीजें बनाकर खिलाती।

दोनों साथ-साथ जवान हुए। जवानी में लड़की का रूप और ज्यादा निखर गया और उसके चांद से चेहरे पर लज्जा के भाव तैरने लगे। वह लड़के से भी शरमाने लगी थी। लड़का उसके रूप पर मुग्ध था और जब उसे देखता तो देखता ही रह जाता, जैसे पूर्णिमा की शीतल रात को कोई पथिक आसमान में चांद को ताकता रह जाता है और अपने गंतव्य का उसे ध्यान नहीं रहता।

लड़की को देखते ही लड़के के दिल में कुछ-कुछ होने लगता था। हृदय की मीठी धड़कन उसे लड़की की तरफ खींचती, परन्तु वह उससे कुछ कह न पाता। बस निगाहों ही निगाहों में उन दोनों में बात होती। वह लड़की को देखता और लड़की उसे देखकर शरमाती, फिर दोनों शरमाते और नज़रें चुरा-चुराकर एक दूसरे को देखते।

लड़का समझ गया कि लड़की उसे प्यार करती है और उसका हृदय भी धड़क-धड़क कर यही बात बार-बार कह रहा था कि वह भी लड़की को प्यार करने लगा है।

लड़का चाहता तो बहला-फुसलाकर लड़की की अस्मत लूट सकता था। वह जवान हो चुका था। लड़की भी जवान थी और उस पर फ़िदा थी। वह लड़के को मना नहीं कर सकती थी और लड़का जो चाहता, उसे तुरन्त मिल जाता।

परन्तु लड़का अलग स्वभाव का था। बाप का कोई अवगुण उसमें नहीं था। वह भावुक था, सहृदय था और किसी के प्रति उसके मन में बुरे विचार नहीं आते थे। चूंकि लड़की को वह अत्यधिक प्यार करता था, किसी भी प्रकार से उसे कोई तकलीफ़ पहुंचाने का खयाल उसके मन में नहीं आता था। उसने लड़की को छुआ

अवश्य था, परन्तु उसके साथ कोई गलत हरकत नहीं की थी। लड़की उसे फूल की तरह कोमल लगती थी और वह डरता था कि कहीं जोर से उसे छू दिया तो वह पंखुड़ियों की तरह टूट जायेगी।

लड़का इण्टर पास कर चुका था। उसका बाप उसे उच्च शिक्षा देकर बड़ा आदमी बनाना चाहता था। उसने लड़के से कहा कि वह शहर जाकर पढ़ाई करे और हॉस्टल में रहे। लड़का भी पढ़ने का इच्छुक था। उसने एतराज नहीं किया; परन्तु शहर जाने के पहले उसने लड़की से कहा, “मैं शहर पढ़ाई करने जा रहा हूं। एक साल बाद गर्मी की छुट्टियों में आऊंगा। तुम मेरा इंतजार करोगी?”

“हां, करूंगी。” उसने सच्चे मन से कहा।

“मुझे याद करके दुःखी मत होना。” लड़के ने कहा।

“और तुम भी!” लड़की ने भरे गले से कहा। दोनों एक दूसरे को तसल्ली दे रहे थे, परन्तु अन्दर से दोनों ही अधीर हो रहे थे।

और लड़का चला गया...

एक साल लम्बा समय होता है। लड़की रात-दिन लड़के की यादों में खोई रहती थी। उसके पास और कोई काम नहीं था।

लड़की की सुन्दरता गांव के लोगों की आंखों में गड़ती थी। चूंकि वह गरीब मां-बाप की बेटी थी, इसलिए सभी लोग उसे बुरी नज़र से देखते थे और मौके की तलाश में रहते थे कि कब उसे गपक जाएं। इसी डर के कारण मां उसे अपने साथ खेतों में काम करने के लिए नहीं ले जाती थी।

उसकी मां लड़के के बाप के घर भी अकेले जाती थी, क्योंकि वह ज़मींदार की बुरी नीयत से वाकिफ़ थी। एक बार उसकी नज़र लड़की पर पड़ जाती तो वह किसी भी हालत में उसे नहीं बचा सकती थी। दूसरे ही पल लड़की की इज़्ज़त तार-तार हो जाती। लिहाज़ा वह लड़की को घर में ही रहने की हिदायत देती थी।

लेकिन गरीब की बेटी उस जंगली फूल की तरह होती है, जिसकी खुशबू को शरारती हवा उड़ा-उड़ाकर बहुत दूर तक पहुंचा देती है। लड़की की सुन्दरता के चर्चे गांव के हर जवान-बूढ़े की जुबान पर थे और जल्दी ही लड़के के वहशी, क्रूर और अत्याचारी बाप तक भी जा पहुंची।

लड़की के मां-बाप उसकी शादी की चिन्ता में घुले जा रहे थे। वह अच्छी तरह जानते थे कि गरीब लड़की की सुन्दरता और उसकी जवानी मां-बाप के पैरों में कांटे की तरह चुभती है। उसे जितनी जल्दी निकाल दें, दर्द उतना ही कम होगा। वह लड़की के लिए अच्छा-सा लड़का तलाश ही रहे थे कि एक दिन ज़मींदार ने लड़की



की मां से कहा, “सुना है, तुम्हारी लड़की बड़ी हो गयी है. उसे काम पर क्यों नहीं लाती?”

लड़की की मां अचकचा गयी. कुछ न सूझा तो बोली, “जी, वह बीमार रहती है!”

“क्या बीमारी है उसे?” ज़मींदार ने पूछा.

“जी, पता नहीं!” मां ने कहा और जाने लगी. ज़मींदार समझ गया, वह झूठ बोल रही थी. बोला-

“उसे मेरे पास लेकर आओ. मैं शहर ले जाकर अच्छे डॉक्टर से उसका इलाज़ करवा दूंगा.”

“अच्छा!” लड़की की मां डर गयी. दहलते दिल से वह वापस घर आई. वह इतना डर गई थी कि बुखार से ग्रस्त हो गयी. कई दिनों तक काम पर नहीं गई, न लड़की को ज़मींदार की हवेली में लेकर गई. छिपकर घर में ही बैठी रही.

लड़के का बाप समझ गया-सीधी उंगली से घी नहीं निकलेगा.

एक शाम जब लड़की के मां-बाप खेतों से थके-हारे लौटे तो लड़की घर पर मौजूद नहीं थी. मां-बाप सन्नु रह गये. अनहोनी की शंका से वह घबरा गये. मां रोने लगी. बाप ने समझाया, “चुप रहो, रोओगी तो सबको पता चल जायेगा. लड़की बदनाम हो जायेगी.”

मां चुप हो गयी. गांव में दिया-बत्ती जल गये थे. लड़की के मां-बाप चोरी-छिपे सारे गांव में लड़की को तलाशते रहे, परन्तु वह कहीं नहीं मिली. मिल भी नहीं सकती थी, क्योंकि वह जहां नहीं थी, वहां वे ढूंढ़ रहे थे और जहां उसके होने की प्रबल संभावना थी, उधर जाने की उनकी हिम्मत नहीं थी. पूरी शंका के बावजूद वह दोनों ज़मींदार की हवेली की तरफ नहीं गये. मन को झूठी दिलासा देने के लिए लड़की को खेत, खलिहान, जंगल और गांव के अंदर ढूंढ़ते रहे. आधी रात तक ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वह थककर चकनाचूर हो गये तो निराश होकर घर लौट आए.

सारी रात बाप घर के एक कोने में घुटने के बीच सिर दिये बैठा रहा. मां आंगन की मिट्टी में लेट-लेटकर रोती रही. रोते-रोते ज़मींदार की सात पुस्तों को कोस रही थी. उसने कहा, “मेरी बेटी की जो दुर्गति उसने की है और मैं जिस तरह अपनी औलाद के लिए रो रही हूं, भगवान करे, वह भी मरते दम तक अपनी औलाद का मुंह देखने के लिए तरसता रहे. कोई उसके बेटे को अगवा कर ले और वह ढूंढ़ता मर जाये, परन्तु उसका बेटा न मिले.”

दूसरी सुबह आश्चर्यजनक रूप से लड़की घर लौट आई. वह बड़ी खराब हालत में थी और स्वयं चलकर घर नहीं आ सकती थी. अवश्य किसी ने लाकर उसे दरवाजे तक छोड़ा था.

लड़की के सारे कपड़े फटे हुए थे. उसके चेहरे पर ही नहीं, छाती और बाकी सभी अंगों में खरोंच के निशान थे. फटे हुए कपड़े उसके प्रत्येक अंग को शर्मनाक हद तक उधेड़े हुए थे. उसकी जांघों के बीच से खून निकलकर कपड़ों और जांघों पर सूख गया था. लगता था, उसके ऊपर किसी आदमखोर भेड़िये ने आक्रमण किया था. लड़की ने स्वयं को बचाने के लिए बहुत संघर्ष किया था, परन्तु बचा नहीं पाई थी.

लड़की की बुरी अवस्था देखकर बाप शर्म के मारे एक तरफ जा बैठा. मां उसको सीने से भींचकर रोती-कलपती रही. इस दुःख में कोई उनको सांत्वना देनेवाला नहीं था. पड़ोस में वह किसी को बता भी नहीं सकते थे, न किसी से मदद मांग सकते थे. उनका दर्द उनके सीने में तड़प रहा था.

मां ने गर्म पानी से लड़की के घावों को धोया और जो भी घरेलू इलाज संभव थे, किए. और कोई चारा गरीब बेबस मां के पास नहीं था. बाप तो शर्म के मारे लड़की के पास तक नहीं फटका.

घरेलू उपचार से एक महीने के अन्दर लड़की की शारीरिक अवस्था में संतोषजनक सुधार हुआ और वह चलने-फिरने लायक हो गयी, परन्तु उसकी मानसिक दशा काफी खराब थी. वह बौराई-सी एक जगह बैठी रहती, पथराई आंखों से सबको देखती, जैसे किसी को पहचानती ही न हो. वह किसी से बोलती भी नहीं थी, न किसी की बात का जवाब देती. पता नहीं कौन-सा तूफान उसके दिमाग में लगातार कहर ढा रहा था, जिससे वह उबर नहीं पा रही थी. मां उसकी दुर्दशा और अपनी बेबसी पर रोती. बाप के हाथ में कुछ था नहीं कि वह लड़की की मानसिक दशा में सुधार के लिए कुछ करता.

एक साल पूरा होने जा रहा था. लड़की के मन में पता नहीं क्या चल रहा था. एक दिन वह अपने आप उठी, और कुएं से पानी भरकर लाई, फिर नहाने बैठ गयी. खूब मल-मलकर नहाई, साबुन से बालों को धोया और सूखने पर उनमें सुगन्धित तेल लगाया, परन्तु चोटी नहीं की, उन्हें खुला ही छोड़ दिया. ऐसा लगता था जैसे काले-घने बालों ने उसकी गर्दन और पीठ पर बसेरा कर रखा हो.

मां उसे आश्चर्यमिश्रित खुशी से देख रही थी, परन्तु कुछ पूछा नहीं.

लड़की ने जैसे उस दिन कोई अच्छा सपना देखा था, या उसके अन्तर्मन से कोई आवाज़ आई थी. उसी के वशीभूत होकर वह यह सब कर रही थी. सज-

धजकर जब वह तैयार हो गयी तो उसने अपनी मां से कहा, “मां, मैं एक काम से बाहर जा रही हूँ. तुम मेरी चिन्ता मत करना. मैं अब ठीक हूँ. शाम तक वापस आ जाऊँगी.”

लड़की बहुत दिनों बाद बोली थी. मां खुशी के मारे पागल हो गयी. बाप की आंखों में आंसू आ गये. उन्होंने भगवान को धन्यवाद दिया.

“परन्तु तुम कहां जा रही हो?” मां ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछा.

“शाम को लौटकर बताऊँगी.” उसने कहा. मां ने उसकी खुशी के लिए कुछ और नहीं पूछा. लड़की चली गई.

गांव से शहर जाने वाला रास्ता कच्चा था, परन्तु दो मील जागे जाकर वह पक्की सड़क से मिल गया था. लड़की उस पर चलती हुई गांव की सरहद पार करके काफी दूर आ गई थी. चारों तरफ हरे-भरे खेत और बाग थे. प्रकृति की छटा आंखों को लुभाती थी, परन्तु लड़की इन सबसे अप्रभावित आगे बढ़ती जा रही थी. वह थी, उसकी यादें थीं और उसका अनजाना गंतव्य.

कुछ दूर चलकर एक नाला था, जिसके ऊपर पुल नहीं था, परन्तु नाला सूखा था और लोग उसे पार करके दूसरी तरफ जा सकते थे. लड़की नाले के पास आकर रुक गई. इधर-उधर देखा, आस-पास कोई नहीं था. सड़क के किनारे एक घना बबूल का पेड़ था. वह पेड़ के तने से लगकर बैठ गई. उसकी निगाहें शहर की ओर जाने वाले रास्ते को एकटक ताक रही थीं.

इसे संयोग कहें या भाग्य का चमत्कार कि उसी दोपहर के बाद वह लड़का शहर से आता हुआ दिखाई दिया. वह चटकदार रंगोंवाले कपड़े पहने था. उसकी आंखों पर काला चश्मा चढ़ा हुआ था. उसके कंधे से एक बैग लटक रहा था और वह फिल्मी हीरो की तरह लचकता-मटकता गुनगुनाता हुआ अपने गांव की तरफ बढ़ रहा था.

लड़के को देखकर लड़की पेड़ के नीचे से निकलकर सड़क पर आ गई. लड़का पास आया. दोनों ने एक दूसरे को पहचाना और एक साथ दोनों के दिल तेजी से धड़कने लगे.

“तुम यहां!” लड़के ने आश्चर्य से पूछा.

“हां, तुमने कहा था न, मेरा इंतजार करना. मैं तुम्हारा इंतजार कर रही थी!” लड़की ने निगाहों को झुकाकर कहा.

“क्या तुम रोज़ आकर यहां मेरा इंतज़ार करती थी?”

“इंतज़ार तो रोज़ करती थी, परन्तु यहां आज ही आई हूँ, पहली बार!”

“क्या तुम्हें पता था कि मैं आज शहर से आनेवाला हूँ?”

“हां, मेरा मन कह रहा था.”

“इसका मतलब है, तुम मुझसे सच्चा प्यार करती हो.” लड़का उत्तेजित हो गया और आगे बढ़कर लड़की को अपनी बांहों के घेरे में लेना चाहा, परन्तु वह छिटककर लड़के की पकड़ से दूर हो गई. जल्दी से बोली, “मुझे मत छुओ! मैं अपवित्र हो चुकी हूँ और अब तुम्हारे प्यार के काबिल नहीं रही.”

लड़के के दिल को असहनीय धक्का लगा. वह सकते की-सी हालत में कुछ पल खड़ा रहा, फिर लगभग चीखते हुए बोला, “क्या? किसने किया तुम्हें अपवित्र? इस गांव में किसकी इतनी हिम्मत है कि मेरी प्रिया की इज्जत पर हाथ डाल सके. बताओ मुझे, कौन है वह?”

लड़की ने अपनी जलती हुई आंखों से उसे देखते हुए कहा, “बर्दाश्त कर पाओगे?”

“हां, तुम बताओ.” उसने तैश में कहा.

“वह तुम्हारा बाप है!” लड़की ने बेहिचक बता दिया.

“मेरा बाप?” लड़के की आवाज़ अचानक ही बुझी आग की तरह ठंडी हो गई.

“हां, उसने अपने लटैतों से मुझे उठवा लिया था. मैं चीखती-चिल्लाती रही, दया की भीख मांगती रही, परन्तु वह नहीं माना और जानते हो, जब मैंने उससे कहा कि मैं उसके बेटे को प्यार करती हूँ, उसकी अमानत हूँ तो वह एक भयानक दैत्य की तरह हंसा था. बोला था, ‘अच्छा, तुम मेरी बहू बनने का सपना देख रही हो. कोई बात नहीं. बेटा तो यहां नहीं है, आओ, ससुर के साथ सुहागरात मना लो.’ मैंने हर प्रकार से कोशिश की कि आपके प्यार की रक्षा कर सकूँ, परन्तु बाज ने चिड़िया के पंख नोंचकर उखाड़ फेंके और उसके बदन को नोंच-नोंचकर लहलुहान कर दिया. मैं मर जाती, परन्तु तुमने इंतज़ार करने के लिए कहा था. आज मेरा इंतज़ार ख़त्म हुआ.”

बाप की करतूत सुनकर लड़के का हृदय कांप गया. क्रोध से उसका शरीर कांपने लगा, परन्तु कुछ क्षण बाद शांत हो गया. बाप से लड़ने की हिम्मत वह नहीं जुटा सकता था. वह बहुत ही कोमल हृदय था.

शांतिपूर्वक उसने कुछ विचार किया और कहा, “क्या तुम मेरे साथ चलने के लिए तैयार हो?”

“कहां?”

“कहीं भी, परन्तु इस गांव से दूर, जहां मेरा जालिम बाप नहीं होगा. तुमको मेरा प्यार पाने के लिए अपने मां-बाप, गांव और घर को छोड़ना होगा. क्या तुम यह त्याग कर सकती हो?”

“मैं तो तुम्हारा प्यार पाने के लिए कुछ भी कर सकती हूं, परन्तु तुम क्यों एक अपवित्र लड़की के लिए अपने मां-बाप और ज़मीन-जायदाद को ठुकराना चाहते हो? क्यों इतना बड़ा त्याग कर रहे हो?”

“क्योंकि मैं तुम्हें प्यार करता हूं और इस गांव में रहते हुए मैं तुम्हारा प्यार कभी नहीं पा सकता.”

“परन्तु मैं अपवित्र हो चुकी हूं!” लड़की ने जोर देते हुए कहा.

“इससे कोई फर्क नहीं पड़ता. प्यार कभी अपवित्र नहीं होता, शरीर भी नहीं. वह केवल गंदा होता है. गंदे शरीर को धो-पोंछकर साफ़ किया जा सकता है. धोने के बाद वह पहले की तरह पवित्र हो जाता है. तुम मेरे लिए अक्षत कुंवारी लड़की हो, जिसे मैं प्यार करता हूं. क्या तुम मेरे साथ चलने के लिए तैयार हो?”

लड़की तैयार थी. वह बस लड़के को परख रही थी. उसने सिर झुकाकर हां कहा और लड़के ने उसका दायां हाथ पकड़कर अपनी तरफ खींच लिया. दोनों एक दूसरे के साथ चिपके खड़े रहे और जब उनकी सांसें थमीं तो शहर की तरफ रवाना हो गये.

उनके जाने के बाद गांव में हंगामा मचना ही था.

लड़की के मां-बाप को पता नहीं चला कि लड़की के साथ क्या हुआ था, परन्तु नियत तिथि पर जब लड़का गांव नहीं पहुंचा तो दो दिन इंतज़ार करने के बाद उसका बाप उसे ढूंढ़ने के लिए शहर गया. वहां पता चला कि वह तो तीन दिन पहले ही गांव चला गया था. ज़मींदार की समझ में नहीं आया कि लड़का कहां चला गया, परन्तु जब उसे पता चला कि लड़की भी गांव में नहीं है, तो वह सब कुछ समझ गया.

ज़मींदार ने अपने तमाम आदमी चारों तरफ दौड़ा दिये, परन्तु लड़के-लड़की का कहीं पता नहीं चला. ज़मींदार बौखला-सा गया. परन्तु उसके वश में कुछ नहीं था. लड़की की मां ने राहत की सांस ली कि लड़की ज़मींदार के लड़के साथ भागी है, तो सुरक्षित होगी.

ज़मींदार ने लड़के की तलाश में हजारों रुपये बर्बाद कर दिए, परन्तु लड़का नहीं मिला. वह थक-हारकर बैठ गया, परन्तु वारिस की चिन्ता में वह दिन-रात घुलने लगा. लड़के की मां की हालत भी अच्छी नहीं थी. वह भी रात-दिन रोती रहती थी.

ज़मींदार को लड़का भले न मिला हो, परन्तु लड़का अपने गांव की एक-एक खबर रखता था. एक दिन उसने लड़की से कहा, “पिताजी मरणासन्न हैं!”

लड़की दिल की भली थी. अब तक उसके दो बच्चे हो गए थे और वह मां बन गयी थी. बच्चों के प्रति वह मां का दर्द समझती थी. ज़मींदार ने उसकी इज़्ज़त लूटी थी. उसके मन में घृणा का लावा उबलना चाहिए था, परन्तु ज़मींदार की हालत सुनकर लड़के से बोली, “हो सके तो एक बार चले जाओ. बाप का दिल है, वह पश्चाताप की आग में जल रहा होगा. मरते समय मिल आओगे तो उनकी आत्मा को शांति मिल जायेगी.”

लड़के ने आश्चर्य से लड़की को देखा, “यह तुम कह रही हो? उसी ने तुम्हारी आत्मा को तकलीफ़ पहुंचाई थी, भूल गयी क्या?”

“उसने एक कुंवारी लड़की की आत्मा को तकलीफ़ पहुंचाई थी. उसके दिल में अभी भी उसके लिए नफ़रत की आग जल रही है. परन्तु मैं अब एक मां भी हूं. मैं एक मां के नाते कह रही हूं, जाकर मिल आओ.”

“नहीं, अभी नहीं जाऊंगा. मैं उसका मरा मुंह भी नहीं देखना चाहता, परन्तु तुमसे वायदा करता हूं, जब वह मर जाएगा, तो मां से मिलने अवश्य जाऊंगा. मां के प्रति मैं दोषी हूं. उन्होंने तो कोई अपराध नहीं किया था. मेरे बाप के अपराध की सजा वह क्यों भुगतें?”

लड़की लाख कोशिशों के बाद भी लड़के को नहीं मना पाई.

ज़मींदार उसके बाद अधिक दिनों तक जिन्दा नहीं रहा. उसके मरते ही उसके कुटुंबी और रिश्तेदार उसकी सम्पत्ति को लूटने के लिए उसके घर में जमा हो गए. लड़के की मां अकेली और बूढ़ी थी. वह क्या करती?

लड़के को जब इन हालात के बारे में पता चला तो वह लड़की और अपने दोनों बच्चों को साथ लेकर अचानक गांव पहुंचा. लोगों ने हैरत से देखा, और सभी की आंखों में ऐसे भाव तैरने लगे जैसे कोई भूत आ गया हो. सभी आपस में खुसुर-पुसुर करने लगे, परन्तु खुलकर कोई नहीं बोला.

लड़का अपनी हवेली पहुंचा. कुटुंबी और रिश्तेदार उसे देखते ही दाएं-बाएं हो गए. वह मां के पास पहुंचा. वह अधमरी-सी हो गयी थी. एक तो बेटे का गम और दूसरा पति के मरने का गम. एक साथ दो-दो गम. उसका शरीर भी दम तोड़ने लगा था.

बेटे और बहू ने जैसे ही उसके पांव छुए, तो वह खुशी की अधिकता के कारण कुछ बोल ही न पाई. बेचारी सांस रोककर उन्हें देखती रही. पहले अपलक बेटे को

देखती रही, फिर लड़की को देखा और उनसे चिपक कर खड़े दो बच्चों को देखा तो सब कुछ समझ गयी. उसने लपककर पोता-पोती की गले लगा लिया और फफक कर रोने लगी.

उस खुशी को बयां करने के लिए कोई शब्द नहीं थे. लड़के की मां को जो असीम खुशी प्राप्त हुई थी, उस खुशी के सहारे अब वह बहुत दिनों तक जिन्दा रहने वाली थी.

कहना न होगा, उससे दुगुनी खुशियां लड़की के घर भी पहुंच गयी थीं.

